# तत्वार्थसूत्र-टीका.

## सर्वार्थसिध्दि वचनिका.

( पंडित जयचंदजी-कृता )

---

प्रकाशक

कल्लाप्पा भरमाप्पा निटवे.

कोल्हापूर-सिटि. "जैनेंद्र प्रेस"

वैशाख शुक्ला ३ शके १८३३. कीमत ४ रुपये.

# तत्त्वार्थसूत्राणामनुक्रमः



## प्रथमोऽध्यायः

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे प्रथमोऽध्यायः

---

## अथ द्वितीयोऽध्यायः

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे द्वितीयोऽध्यायः

## अथ तृतीयोऽध्यायः

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे तृतीयोऽध्यायः

—o—

## अथ चतुर्थोऽध्यायः

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे पञ्चमोऽध्यायः

———×——

## अथ षष्ठोऽध्यायः

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे सप्तमोऽध्यायः

---

## अथ अष्टमोऽध्यायः

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रेऽष्टमोऽध्यायः

## अथ नवमोऽध्यायः

——○——

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥

# ॥ अथ तत्त्वार्थसूत्रकी सर्वार्थसिद्धिटीका ॥

दोहा— श्रीवृषभादि जिनेश्वर । अंत नाम शुभ वीर ॥ मन वच काय विशुद्धकरि । वंदौं परमशरीर ॥ १ ॥
करमधराधर भेदि जिन । मरम चराचर पाय ॥ धरमवरावर कर नमूं । सुगुरुपरापरपाय ॥ २ ॥
शब्दब्रह्मकूं मैं नमूं । स्यात्पदमुद्रित सोय ॥ कहै चराचर वस्तुको । सत्यारथ मल धोय ॥ ३ ॥
आप्त मूल आगमतणूं । एकदेश जु अनूप ॥ तत्त्वारथ शासन सही । करौं वचनिकारूप ॥ ४ ॥

ऐसैं आप्तआगमका नमस्काररूप मंगल करि श्रीउमास्वामी नाम आचार्यविरचित जो दशाध्यायरूप तत्त्वार्थशास्त्र, ताकी देशभाषामय वचनिका लिखिये है। तहां ऐसा संबंधकी सूचना है। जो श्रीवर्धमान अंतिमतीर्थंकरकूं निर्वाण भये पीछैं, तीन केवली तथा पांच श्रुतकेवली इस पंचमकालविषैं भये। तिनिमैं अंतके श्रुतकेवली श्रीभद्रबाहुस्वामीकूं देवलोक गये पीछै कालदोषतैं केतेइक मुनि शिथिलाचारी भये। तिनिका संप्रदाय चल्या। तिनिमैं केतेइक वर्ष पीछैं एक देवर्धिगण नाम साधु भया। तिहि विचारी, जो, हमारा संप्रदाय तौ बहुत वध्या, परंतु शिथिलाचारी कहावे हैं, सो यह युक्त नही। तथा आगामी हमतैं भी हीनाचारी होयेंगे। सो ऐसा करिये;

जो, इस शिथिलाचारकूं कोई बुद्धिकल्पित न कहै। तब तिसके साधनेनिमित्त सूत्ररचना करी। चौरासी सूत्र रचे। तिनिमैं श्रीवर्द्धमानस्वामी अर गौतमगणधरका प्रश्नोत्तरका प्रसंग ल्याय शिथिलाचार पोषणेके हेतु दृष्टांत युक्ति बणाय प्रवृत्ति करी। तिनि सूत्रके आचारांग आदि नाम धरे। तिनिमैं केतेइक विपरीत कथन किये। केवली कवलाहार करै। स्त्रीकूं मोक्ष होय। स्त्री तीर्थंकर भये। परिग्रहसहितकूं मोक्ष होय। साधु उपकरण, वस्त्र, पात्र आदि चौदह राखै। तथा रोग ग्लानि आदिकरि पीडित साधु होय तौ मद्यमांससहतका आहार करै तौ दोष नांहीं, इत्यादि लिख्या। तथा तिनिकी साधक कल्पितकथा बणाय लिखी। एक साधूकौं मोदकका भोजन करतांही आत्मनिंदा करी तब केवलज्ञान उपज्या। एक कन्याकौं उपाश्रयमें बुहारी देतैंही केवलज्ञान उपज्या। एक साधु रोगी गुरुको कांधे ले चल्या, आखडता चाल्या, गुरु लाठी कीदई, तब आत्मनिंदा करी ताकूं केवलज्ञान उपज्या। तब गुरु वाकै पगां पड्या। मरुदेवीकूं हस्तीपरी चढेंही केवलज्ञान उपज्या। इत्यादि विरुद्धकथा तथा श्रीवर्द्धमानस्वामी ब्राह्मणीके गर्भमैं आये, तब इंद्र वहांतैं काढि सिद्धारथ राजाकी राणीके गर्भमैं थापे। तथा तिनिकूं केवल उपजे पीछै गोसाला नाम गरुड्याकूं दीक्षा दीई, सो वानैं तप बहुत कीया, वाकै ज्ञान वध्या, रिद्धि फुरि, तब भगवा-

नसूं वाद कीया, तब वादमैं हाऱ्या, सो भगवानसूं कषायकरि तेजोलेश्या चलाई। सो भगवानकै पेचसका रोग हुवा, तब भगवानकै खेद बहुत हुवा, तब साधांनैं कही, एक राजाकी राणी विलावकै निमित्ति कूकडा कबूतर मारि भुलस्या है, सो वै हमारै तांई ल्यावो, तब यहु रोग मिटि जासी। तब एक साध वह ल्याया, भगवान् खाया, तब रोग मिट्या। इत्यादि अनेक कल्पित- कथा लिखी॥ अर श्वेतवस्त्र, यात्रा, दंड आदि भेष धारि श्वेतांवर कहाये। पीछै तिनिकी संप्रदा- यमैं केई समझवार भये। तिनिनैं विचार, ऐसे विरुद्धकथन तौ लोक प्रमाण करसी नही। तब तिनिके साधनेकूं प्रमाणनयकी युक्ति वणाय नयविवक्षा खडी करि जैसैं तैसैं साधी। तथापि कहां तांई साधै। तब कोई संप्रदायी तिनि सूत्रनिमैं अत्यंत विरुद्ध देखे तिनिकूं तौ अप्रमाण ठहराय गोपि किये, कमि राखे। तिनिमैं भी केईकनैं पैंतालीस राखे। केईकनैं बत्तीस राखे। ऐसे परस्पर विरोध वध्या। तब अनेक गच्छ भये, सो अबतांई प्रसिद्ध हैं। इनिकै आचारविचारका कछु ठिकाणा नांही। इनहीमैं ढुंडिये भये हैं। ते निपट ही निंद्य आचरण धाऱ्या हैं। सो कालदोष है। कछू अचिरज नही, जैनमतकी गौणता इस कालमैं होणी है! ताके निमित्त ऐसैंही बणै॥

बहुरि भद्रबाहुस्वामीपीछैं दिगंबरसंप्रदायमैं केतेक वर्ष तौ अंगनिके पाठी रहे। पीछै अंगज्ञा-

नकी व्युच्छित्ति भई, अरु आचार यथावत् रहवोही कीया। पीछैं दिगंबरनिका आचार कठिन, सो कालदोषतैं यथावत् आचारी विरले रह गये। तथापि संप्रदायमैं अन्यथा प्ररूपणा तौ न भई। तहां श्रीवर्द्धमानस्वामीकों निर्वाण गये पीछे छहसे तियासी वर्ष पीछे दूसरे भद्रबाहू नाम आचार्य भये। तिनिके पीछे केतेइक वर्ष पीछैं दिगंबरनिकैं गुरुनिके नामधारक च्यार शाखा भई। नंदी, सेन, देव, सिंह ऐसे। इनिमैं नंदिसंप्रदायमैं श्रीकुंदकुंद मुनि तथा श्रीउमास्वामी मुनि तथा नेमिचंद्र, पूज्यपाद, विद्यानंदी, वसुनंदी आदि बडेबडे आचार्य भये। तिनिनैं विचारि; जो शिथिलाचारी श्वेतांबरनिका संप्रदाय तौ बहुत वध्या, सो तौ कालदोष है। परंतु यथार्थ मोक्षमार्गकी प्ररूपणा चलि जाय ऐसे ग्रंथ रचिये तौ केई निकटभव्य होय ते यथार्थ समझि श्रद्धा करै। यथाशक्ति चारित्र ग्रहण करै, तौ यह बडा उपकार है। ऐसैं विचारि केईक मोक्षमार्गकी प्ररूपणाके ग्रंथ रचे। तत्त्वार्थसूत्र, पंचास्तिकाय, प्रवचनसार, समयसार, मूलाचार, गोमटसार, त्रिलोकसार, लब्धिसार, क्षपणासार, आदिक तथा तिनिका अर्थ अविच्छेद होनेके अर्थि तिनिकी टीका करी। बहुरि दूसरा सेनसंप्रदायमैं भूतबली, पुष्पदंत, वृषभसेन, सिद्धसेन, समंतभद्र, जिनसेन, गुणभद्र आदि बडेबडे आचार्य भये। तिनिनैं षट्खंडसूत्र, धवल, जयधवल, महाधवल तथा

प्राकृत आदिपुराण आदि ग्रंथ रचे । तथा सिद्धसेन, समंतभद्र आदि स्याद्वादविद्याके अधिकारी भये । तत्त्वार्थसूत्रानिकी महाभाष्य रची । और ग्रंथ वडे वडे रचे । जिनसेननैं आदिपुराण संस्कृत रच्या । गुणभद्रनैं उत्तरपुराण संस्कृत रच्या । बहुरि इसही संप्रदायमैं काष्ठासंघ प्रवर्त्या । बहुरि देवसंप्रदायमैं अकलंकदेव भये । ते स्याद्वादविद्याके अधिकारी भये । तिनिनैं प्रमाणप्रकरण रचे । औरभी केई भये, तिनिनैं वडे वडे ग्रंथ रचे । सोमदेवनैं यशस्तिलक काव्य कीया । बहुरि सिंहसंप्रदायमैं वादीभसिंह आदि मुनि भये । तिनिनैं वडे वडे ग्रंथ वणाये । ऐसे च्यारोंही संप्रदायमैं यथार्थ प्ररूपणा तथा आचार चल्या आया । बहुरि अब इस निकृष्टकालमैं दिगंबरनिका संप्रदायमैं यथावत् आचारका तौ अभावही है । जो कहीं है तौ दूर क्षेत्रमैं होगा । बहुरि मोक्षमार्गकी प्ररूपणा तौ ग्रंथनिके माहात्म्यतैं वर्तै है । तहां मेरै ऐसा विचार भया; जो श्रीउमास्वामिकृत दशाध्यायीरूप तत्त्वार्थशास्त्र है, ताकी संस्कृतटीका तौ गंधहस्तिमहाभाष्य है । अर लघुटीका सर्वार्थसिद्धि, तत्त्वार्थवार्तिक—ताकूं राजवार्तिकभी कहै है—तथा श्लोकवार्तिक है । ते तौ पंडितानिके समझनें पढनें लायक है । मंदबुद्धिनिका प्रवेश नांही । तातैं याकी संक्षेपार्थरूप देशभाषामय वचनिका करिये तौ मंदिबुद्धि हू वांचि समझै । तत्त्वार्थकी श्रद्धा करै तौ वडा उपकार है । यहू जानि वचनिकाका

प्रारंभ कीया है। तहां मुख्य तौ सर्वार्थसिद्धि नाम संस्कृत टीकाका आश्रय है। बहुरि जहां जहां विशेष लिख्या है सो तत्त्वार्थवार्तिक श्लोकवार्तिकका आश्रय जानना। याविषैं कहीं भूलि चूक होय तौ विशेषज्ञानी सोधियो ॥

तहां प्रथमही सर्वार्थसिद्धिटीकाकार मंगल अर्थि आप्तका असाधारणविशेषणरूप श्लोक रच्या है, सो लिखिये हैं ॥

मोक्षमार्गस्य नेतारं। भेत्तारं कर्मभूभृताम् ॥
ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां। वन्दे तद्गुणलब्धये ॥ १ ॥

याका अर्थ— मोक्षमार्गके प्रवर्तावनहारे, कर्मरूप पर्वतके भेदनहारे, समस्ततत्त्वनिके जाननहारेकों मैरे तिनि गुणनकी प्राप्तीके अर्थि मैं वंदौ हौं।

भावार्थ— इस शास्त्रविषैं मोक्षमार्गका उपदेश है। सो जो घातिकर्मका नाशकरि सर्वज्ञ वीतराग भया होय, सोही मोक्षमार्गका प्रवर्तावनहारा आप्त है। तिसहीकूं नमस्कार किया है। जातैं सर्वज्ञवीतरागका प्रवर्तायाही मोक्षमार्ग प्रमाणसिध्द होय। काहेतैं? जातैं जो सर्वज्ञ न होय तौ अज्ञानतैं अयथार्थभी कहै। तथा रागद्वेषसहित होय तौ क्रोध, मान, माया, लोभ आदि

कषायतैं अन्यथा कहै। सो प्रमाण नांहीं। तातैं सर्वकौं जाणै, काहूतैं रागद्वेष न होय, ताहीके वचन प्रमाण होय। वैही वस्तूका स्वरूप यथार्थ प्ररूपै। याहीतैं ऐसे विशेषणयुक्तकों नमस्कार कीया। सो ऐसे तीर्थंकर तथा सामान्यकेवली अरहंत भगवान् हैं। इनहीकूं परमगुरु कहिये। बहुरि जिनिके एकदेश घातिकर्मका नाश एकदेशपणैं परोक्षसमस्ततत्त्वनिका संक्षेपज्ञान है, तथा तिस संबंधी रागद्वेषभी जिनके नाही है ते अपरगुरु जानने। ते गणधरादि सूत्रकारपर्यंत आचार्य जानने। बहुरि जे सर्वथा एकांततत्त्वका प्ररूपण करे हैं ते गुरु नांही हैं तिनिके वचन प्रमाणविरुध्द हैं, ते अपने तथा परके घातक हैं, तिनिकौं नमस्कार भी युक्त नांही ॥

अथवा इहां ऐसा आशय जानना। जो सर्वज्ञ वीतराग आप्त होय सोही शास्त्रकी उत्पत्ति तथा शास्त्रका यथार्थज्ञान होनेकौं कारण है। ताते शास्त्रकी आदिविषैं निर्विघ्नपणैं शास्त्रकी समाप्तीकै अर्थी ऐसेही विशेषणयुक्तकौं नमस्कार करना योग्य है॥ इहां कोई कहै, आप्तके नमस्कारतैं पापका नाश होय है तातैं विघ्नका उपशम होय तब शास्त्रकी समाप्ति निर्विघ्नपणैं होय है। तातैं ताकूं नमस्कार योग्य है॥ ताकूं कहिये; पापका नाश तौ पात्रदानादिकतैंभी होय है सो आप्तका नमस्कारका नियम कहां रह्या? कोई कहै; परमसंगल आप्तका नमस्कारही है। सो यहभी न

कहनां। धर्मके अंग हैं ते सर्वही मंगल हैं॥ कोई कहै; नास्तिकताका परिहार तौ आप्तकूं नमस्कार कीयें होय है, याहीतैं श्रध्दानी पुरुष शास्त्रकों आदरे है। ताकूं कहिये, नास्तिकताका परिहार तौ मोक्षमार्गके समर्थन करनेतैंही होय है। आप्तके नमस्कारका नियम कैसें रहै? कोई कहै; शिष्टाचार पालनेकौं आप्तकूं नमस्कार करनांही। तहांभी एही उत्तर। तातैं यहूही युक्त है, शास्त्रकी उत्पत्ति तथा ताका ज्ञान होनेंकूं आप्तही कारण है। ताही हेतूतैं आप्तकूं नमस्कार युक्त है, ऐसा आशय जानना॥ इहां कोई कहै; वक्ताका सम्यग्ज्ञानही शास्त्रकी उत्पत्ति तथा ज्ञान होनेकूं कारण है, आप्तकाही नियम कैसें कहौ हौ? तहां ऐसा उत्तर, जो वक्ताका सम्यग्ज्ञानभी गुरूपदेशके आधीन है। गणधरदेवनकै भी सर्वज्ञके वचनके अनुसार सम्यग्ज्ञान है। तातैं आप्तहीका नियम है॥ बहुरि इहां कोई पूछै; तुम तत्त्वार्थशास्त्रकी वचनिका करौ हौ, सो याकूं तत्त्वार्थशास्त्र ऐसा नाम कैसें आया? ताका उत्तर, शास्त्रका लक्षण यामैं पाइए है। कैसें? सोही कहिये है। अक्षरनिके समुदायकूं तौ पद कहिये। बहुरि पदनिके समुदायकूं सूत्र कहिये ताकूं वाक्यभी कहिये, योगभी कहिये, लक्षणभी कहिये। बहुरि सूत्रके समूहकूं प्रकरण कहिये। बहुरि प्रकरणके समुदायकूं आह्निक कहिये। बहुरि आह्निकके समूहकूं अध्याय कहिये। अध्यायके समूहकूं शास्त्र

कहिये। ऐसा शास्त्रका लक्षण यामैं पाइए है तातैं शास्त्र कहिये। बहुरि यामैं निर्बाध तत्त्वार्थका प्ररूपण है तातैं तत्त्वार्थशास्त्र कहिये। बहुरि शास्त्राभासमैं ऐसा लक्षण होय तौ तहां तत्त्वार्थका प्ररूपण नांही तातैं ते शास्त्र नांही ॥ इहां कोई पूछे याउपरांति और शास्त्रकूं शास्त्रसंज्ञा कैसी आवैगी? ताका उत्तर; जो और शास्त्र तत्त्वार्थके प्ररूपणके हैं ते सर्वही याके एकदेश हैं। बहुरि द्वादशांग है सो महाशास्त्र है। यासारिखे अनेक शास्त्र तामैं गर्भित है। ऐसैं यहु तत्त्वार्थशास्त्र सर्वज्ञवीतराग मोक्षमार्गका प्रवर्तक पुरुषकूं सिद्ध होतैं प्रवर्त्या है। तातैं पुरुषकृत कहिये। ऐसा पुरुष वंदनायोग्य है ॥

इहां मीमांसकमतका आश्रय ले अन्यवादी कहै, जो, शब्द सर्वथानित्य कूटस्थ सर्वदेशमैं व्यापक एक है सो तामैं वर्ण पद वाक्य सर्व शाश्वते वसे हैं। पुरुष वक्ता है सो ताकी व्यक्तीकूं प्रगट करै है। तातैं वेद अनादिनिधन अपौरुषेय आगम है। पुरुषकृत नांही। ताका समाधान। शब्द है सो तौ पुद्गलद्रव्यका पर्याय है। श्रोत्र इंद्रियकरि ग्रह्याजाय है, जड है। यामैं स्वयमेव वर्णपदवाक्यरूप होना संभवै नांही। पुरुषके अनादि कर्मके संयोगतैं पुद्गलमयशरीरका संबंध है। तथा अंगोपांग नामा नामकर्मके उदयतैं हृदय कंठ मूर्द्ध जिव्हा दंत नासिका ओष्ठ तालु आदि अक्षरनिके उच्चार

करनेयोग्य स्थान बणे हैं। तिनमैं पुरुषकी इच्छा वा विनां इच्छा अक्षरात्मक वचन प्रवर्तें हैं। ऐसैं शब्द सर्वथानित्य कहनां प्रमाणविरुद्ध है। पुद्गलद्रव्य द्रव्यअपेक्षा तौ नित्य है बहुरि पर्यायअपेक्षा अनित्य है। सो शब्द पुरुषके निमित्ततैं वर्णात्मक होय परिणमै है। श्रोत्र इंद्रियगेचार होय है। सर्वथानित्य तौ प्रमाणगोचर नांही। तातैं पौरुषेयही आगम प्रमाणसिद्ध है। याका संवाद श्लोकवार्तिकमैं है तहांतैं समझना। बहुरि मीमांसक कहै हैं; जो हमारे आम्नाय अकृत्रिम हैं तथापि जैमिनीय आदि आप्तके कहै सूत्र प्रमाणभूत हैं। तातैं तुमारे सर्वज्ञ वीतरागके प्ररूपे सूत्र कहौ हौ सो यह प्रमाणसिद्ध नांही। ताका समाधान—सूत्रका व्याख्याता सर्वज्ञ वीतराग न होय तौ वाके वचन प्रमाण नांही। अकृत्रिम आम्नाय पुरुषविनांही आपआपने अर्थकों कहै नांही। तातैं यथोक्त पुरुष आम्नायका कहनहारा चाहिये। तुमभी प्रमाणका विशेषण ऐसाही करो हौ, जो प्रमाण निर्दोषकारणतैं उपजै है। तातैं काहेकौ अपौरुषेयपणां निष्कारण पोषणां॥ बहुरि इहां मीमांसक कहै, जो, तुमनैं आप्तका विशेषण सर्वज्ञ कह्या सो सर्वज्ञका जनावनहारा ज्ञापक प्रमाण नांही। इंद्रियनितैं सर्वज्ञ दिखता नांही। कोई ताका एकदेश चिन्ह दिखता नांही। सर्वज्ञसमान कोई वस्तु नांही। किसी अर्थका संबंध नांही। वेदमैं लिख्या नाही। ऐसे पांचूही प्रमाणकै गोचर नाही, अभावही सिद्ध होय

है। ताकूं कहिये, जो, सर्वज्ञका ज्ञापक प्रमाण है। सूक्ष्म जे परमाणु तथा धर्मादिक, अंतरित जे रामरावणादिक, दूर जे मेरुपर्वतादिक इन पदार्थनिका उपदेश सत्यार्थ है सो इनका प्रत्यक्ष देखनहारा सर्वज्ञ है तिसपूर्वक है। ए इंद्रियगोचर नांही। इनका चिन्हभी प्रत्यक्ष नांही। बहुरि असर्वज्ञका उपदेशपूर्वक नांही। साक्षात् देखै है ताके कहे सत्यार्थ है। जैसे नदी, द्वीप, देश, कोई साक्षात् देखै ताके कहे सत्यार्थ मानिये तैसैंही सर्वपदार्थ सर्वज्ञके कहे सत्यार्थ हैं॥ कोई कहे धर्म अधर्मकाभी निर्णय करना, सकलवस्तूका साक्षात् ज्ञातातांई कहा प्रयोजन है? ताकूं कहिये है। सर्वज्ञविना धर्म अधर्मकाभी निर्णय होता नांही। धर्म अधर्मका फल स्वर्ग मोक्ष नरक संसार कहिये है सो धर्म अधर्मका फलकै अरु धर्म अधर्मकै साक्षात्संबंध देख्या होय ताहीका कह्या सत्यार्थ होय। सो सर्वका ज्ञाताविना यह संबंध दिखै नांही। बहुरि मीमांसककूं पूछिये, तुम सर्वज्ञका जनावनहारा ज्ञायक प्रमाणका निषेध करौ हौ; सो सर्व प्राणीनि संबंधी करौ हौ कि तुमसंबंधी करौ हौ? जो सर्व प्राणीनि संबंधी निषेध करौ हौ तौ सर्वक्षेत्रकालके प्राणी तुमनैं देखिलीये, तब तुमही सर्वज्ञ भये। सर्वज्ञका अभाव काहेकूं कहौ। बहुरि तुमही संबंधी कहौ हौ तौ युक्त नांही। तुमकूं पूछे है, समुद्रमें जल केते घडा है? जो न बतावोगे तौ सर्वज्ञका अभाव मति कहौ॥

बहुरि सांख्यमती तथा नैयायिकमती कहै, जो, सर्वज्ञ तौ माननां परंतु कर्मका नाशकरि सर्वज्ञ होय है यह बणै नाहीं । ईश्वर तौ सर्वथा सदामुक्त है, सदाही सर्वज्ञ है । ताकूं कहिये, जो ऐसा सर्वज्ञ ईश्वर जो शरीररहित कहोगे तौ मोक्षमार्गका उपदेशक न बणैगा, शरीरविना वचनकी प्रवृत्ति नांही । बहुरि शरीरसहित कहोगे तौ शरीरकर्मकाही कीया होहै । यासंबंधी सुखदुःखादिक सर्व वाकै ठहरैंगे । तातैं घातिकर्मका नाशकरि सर्वज्ञ होय । ताकै अघाति कर्मका उदय रहै । तेतैं शरीरसहित अवस्थान रहै । तातैं वचनकी प्रवृत्ति विना इच्छा होय । ताहीतैं मोक्षमार्गका उपदेश प्रवर्तै यह युक्त है ॥ याका विशेष वर्णन आगैं होयगा ॥ बहुरि बौद्ध सर्वज्ञ तौ मानै परंतु तत्त्वका स्वरूप सर्वथाक्षणिक स्थापै । यातैं ताकै तौ मोक्षमार्गका उपदेशकी प्रवृत्ति संभवैही नांही ॥ बहुरि नास्तिकवादीकै कछुही संभवै नाही ॥ इनि सर्वमतनिका संवाद श्लोकवार्तिकविषैं कीया है तहांतैं जाननां । इहां ग्रंथविस्तार वधिजाय तातैं संक्षेप लिख्या है ॥ आगै सर्वार्थसिद्धि टीकाकार सूत्रका प्रारंभका संबंध कहै हैं ॥

कोई भव्य, निकट है सिद्धि जाकै, ऐसा बुद्धिमान् अपने हितका इच्छक है । सो किसी मुनिनके रहनेयोग्य स्थानक उद्यान, परम रमणीक जहां सिंहव्याघ्रादिक क्रूर जीव नाहीं, भले

जीवनिका रहनेका ठिकाणां, ताविषैं मुनिनिकी सभाविषैं बैठे, विनाही वचन अपनें सरीरहीकी शांतमुद्राकरि मानूं मूर्तिक मोक्षमार्गकों निरूपण करते, युक्ति तथा आगमविषैं प्रवीण, परका हित कहनाही है एक कार्य जिनकै, भले भले बडे पुरुषनिकरि सेवने योग्य, जे निर्ग्रंथआचार्यनिमैं प्रधान, तिनिहि प्राप्त होयकरि विनयसहित पूछता हुवा– हे भगवान् या आत्माका हित कहां है? आचार्य कहते भये आत्माका हित मोक्ष है। तब फेरी शिष्य पूछी जो, मोक्षका कहां स्वरूप है? अरु याकी प्राप्तिका उपाय कहां है? तब आचार्य कहै है जो, यह आत्मा जब समस्तकर्म-मलकलंकरहित होय तब शरीरकरिभी रहित होय, तब छद्मस्थके चिंतवनमें न आवै, अरु स्वभाव-हीतैं भये ऐसे ज्ञानादि गुण जामैं पाइए, तथा निराबाध सुखस्वरूप अविनश्वर आत्माकीही इस संसार अवस्थातैं अन्य जो अवस्था सो मोक्ष है। सो यहु मोक्ष अत्यंत परोक्ष है। यातैं छद्मस्थ जे अन्यवादी, आपकूं तीर्थंकर मानैं ते याके स्वरूपकूं न पहूंचती जो वाणी ताकरि अन्यथा कल्पै है ॥ प्रथम तौ सांख्यमती कहै है– पुरुषका स्वरूप चैतन्य है। सो स्वरूप ज्ञेयाकारके जाननैतैं पराङ्मुख है, ऐसा मोक्ष कहै है। सो यह कहनां छताही अणछतारूप है। जातैं निराकार है सो जडवत् है, गधाके सींगवत् कल्पना है ॥ बहुरि वैशेषिकमती कहै है– आत्माविषैं बुद्धि इच्छा द्वेष

धर्म अधर्म सुख दुःख संस्कार यत्न गुण है। तिनिका सर्वथा नाश होय है सो मोक्ष है। सो यहूभी कल्पना झूटी हैं। विशेषनिकरि शून्य तौं अवस्तु हैं॥ बहुरि बौद्धमती कहै है- जैसे दीपग बुझि जाय प्रकाशरहित होय जाय। तैसे आत्माभी ज्ञानादिप्रकाशरहित होय जाय तब निर्वाण कहिये। सो यहूभी कहनां गधाके सींगसारिखा तिनिकें वचनकरिही आवै है॥ आदिशब्दतैं वेदांती ऐसा कहै है जो जैसे घट फूटिजाय तब घटका आकाश प्रगट होय तैसे देहका अभाव होय तब सर्वही प्राणी परमब्रह्ममैं लय होय जाय है। ब्रह्मका रूप आनंदस्वरूप है। जहां अत्यंत सुख है, ज्ञानहीकरि ग्राह्य है, इंद्रियगोचर नांही सो मोक्षविषैं पाइए है ऐसा कहै है। सोभी कहना यथार्थ नांही। जातैं प्राणी तौ जुदे जुदे अपने स्वरूपमैं तिष्ठै है। परब्रह्ममैं लीन होना कैसै संभवै? इनकूं आदि जे अनेक मत हैं ते अपनी अपनी बुद्धितैं अनेक कल्पनां करै हैं। सो मोक्षका स्वरूप यथार्थ सूत्रकार आगै कहसी सो जाननां॥ बहुरि या मोक्षकी प्राप्तिके उपायप्रति भी अन्यवादी विसंवाद करै हैं। केईक कहै हैं चारित्रादिककी अपेक्षा नांही। केईक कहै हैं ज्ञानचारित्रविना श्रद्धानमात्रहीतैं मोक्ष हो है। केइक कहै हैं ज्ञानरहित चारित्रमात्रहीतैं मोक्ष होय है ऐसे कहै हैं। सो यहु कहनां अयुक्त है। जैसैं रोगीकै रोगके दूरि होनेके कारन जे औषधका ज्ञान, श्रद्धान, आचरण,

ते जुदे जुदे रोगकूं दूरी न करि सकै तैसैं मोक्षकी प्राप्तिके उपायभूत जे ज्ञान, श्रद्धान, चारित्र, ते जुदे जुदे मोक्षकूं न करि सकै हैं। तीनोंकी एकता है सोही मोक्षके प्राप्तिका उपाय है। सोही सूत्रकार जो श्रीउमास्वामी आचार्य सो सूत्र कहै है। यह सूत्र उपयोगस्वरूप आत्माकी सिद्धि होतैं ताके सुननेकी ग्रहणकरनेकी इच्छा होतैं प्रवर्तै है ॥

इहां नास्तिकमती कहै है—जो, पृथ्वी—अप—तेज—वायूका परिणामविशेष सोस्वरूप चेतनात्मक आत्मा है। सकललोकप्रसिद्ध यह मूर्ति है यातैं जुदा कोई और आत्मा नांही। तातैं कौनकै सर्वज्ञवीतरागपणां होय? वा कौनकै मोक्ष होय? वा कौनकैं मोक्षमार्गका कहनां वा प्रवर्तनां वा प्राप्तिकी इच्छा होय? बहुरि ये सर्वही नांही तब मोक्षमार्गका सूत्र काहेकूं वर्तै। ताकूं कहिये है, हे नास्तिक! स्वसंवेदनज्ञानतैं आत्मा देखि, प्रत्यक्ष है कि नांही? जो आत्मा नांही है तौ "मै हौं" यहु स्वसंवेदनज्ञान कौनकै है?। बहुरि नास्तिक कहै यहु स्वसंवेदन भ्रमरूप है। ताकूं कहियें, सदा बाधाकरि रहित होय ताकूं भ्रमरूप कैसे कहिये? तथा भ्रमभी आत्माविनां जडके होय नांही। बहुरि पृथ्वी आदि जडविषैं यहु स्वसंवेदन संभवै नांही। जो या स्वसंवेदनके लोप मानिये तौ काहूकै अपने इष्टतत्त्व साधनेकी व्यवस्था न ठहरै। तातैं पृथ्वी आदि स्वरूप जो देह तातैं आत्मा चेतनस्वरूप

भिन्न तत्त्वही है ऐसा माननां। जातैं चेतनका उपादान कारण चेतनही होय। जडका उपादान कारण जडही होय। ऐसे न मानिये तौ पृथ्वी आदि तत्त्वभी तेरै न्यारे न ठहरै। सजातीय विजातीय तत्त्वकी व्यवस्था न ठहरै। एकतत्त्व ठरहै तौ नास्तिक च्यारि तत्त्व कहै है ताकी प्रतिज्ञा बाधित होय। बहुरि नास्तिक कहै जो चैतन्य गर्भादिमरणपर्यंत है, अनादि अनंत नांही। तातैं तत्त्व नांही। ताकूं कहिये द्रव्यतैं अनादि अनंतस्वरूप आत्मा है। पर्यायतैं अनित्यभी है। सर्वथा अनित्यही माननां बाधासहित है। द्रव्य अपेक्षाभी अनादि अनंत नित्य न मानिये तौ तत्त्वकी व्यवस्थाही न ठहरै ॥

बहुरि बौद्धमती सर्ववस्तु सर्वथा क्षणिक मानै है। ताकै बंधमोक्षादिक न संभवै। करै औरही, फल औरही भोगवै, तब बंधमोक्षादिका आश्रयी द्रव्य नित्य मानैं विनां सर्वव्यवस्थाका कहनां प्रलापमात्र है ॥ बहुरि सांख्य पुरुषकों सदा शिव कहै है, ताकै बंधमोक्षकी कथनी कहा? प्रकृतिकै बंधमोक्ष है, तौ प्रकृतितैं जड है ताकै बंधमोक्ष कहनांभी प्रलापही है ॥ बहुरि नैयायिक वैशेषिक गुणकै गुणीकै सर्वथा भेद मानि अर समवाय संबंधसूं एकता मानै है। सो गुण गुणी समवाय ये तीन पदार्थ भये। तहां जीव तौ गुणी, अर ज्ञान गुण, समवाय जीवकूं ज्ञानी कीया। तब जीव

तौ जड ठहऱ्या। बंधमोक्ष जडकै कहना निरर्थक है। बहुरि समवाय गुणगुणीकै एकता करी, तब समवायभी तौ जीवतै एक हुवा चाहिये तौ याकूं एक कूंण करैगा। जो दूसरा समवाय मानिये तौ अनवस्था आवै। तातैं यहभी कहनां सबाध है॥ बहुरि अद्वैतब्रह्म मानि बंधमोक्ष बतावै तौ कैसैं बनैं। बंध तौ अविद्यासूं उपजै है ब्रह्मकै अविद्या लागै नांही। न्यारा तत्त्व मानिये तौ द्वैतता आवै। अवस्तु मानिये तौ अवस्तूकी कथनी कहा? तातैं यहभी माननां सबाध है। तातैं जैनमत स्याद्वाद है। वस्तुका स्वरूप अनंतधर्मात्मक कहै है। यामैं सर्वज्ञ वक्ता तथा गणधरादि यतीनिकी परंपरातैं यथार्थ कथनी है। तामैं बंध, मोक्ष, तथा बंध करनेवाला, छूटनेवाला आदि सर्व व्यवस्था संभवै है। जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश, काल ये छह द्रव्य हैं। तिनिमैं जीव तौ अनंतानंत है। पुद्गल तिनितैभी अनंतानंत गुणे हैं। धर्म अधर्म आकाश एक एक द्रव्य हैं। काल असंख्याते द्रव्य हैं। इनि सबनिकै एक एक द्रव्यके तीन कालसंबंधी अनंते अनंते पर्याय हैं। सो इनिकी कथनी सद्रूप, असद्रूप, एकरूप, अनेकरूप, भेदरूप, अभेदरूप, नित्यरूप, अनित्यरूप, शुद्धरूप, अशुद्धरूप इत्यादि नयविवक्षातैं कथंचित् सर्व संभवै हैं। बहुरि निमित्तनैमित्तिकभावतैं पांच तत्त्वकी प्रवृत्ति होय आस्रव, संवर, निर्जरा, बंध, मोक्ष। आस्रवबंधके भेद पुण्यपाप हैं। ऐसैं कथंचित् सर्व

निर्बाध जैसैं वस्तु विद्यमान है तैसैंही ताकी कथनी है, कल्पित नांही । तातैं तत्त्वार्थसूत्रविषैं वस्तुका कथन यथार्थ है। ताका प्रथमसूत्र ऐसा—

॥ सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः ॥ १ ॥

याका अर्थ—सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यक्चारित्र ए तीनूं हैं ते भेले भयें एक मोक्षमार्ग है ॥ इहां सम्यक् ऐसा पद अव्युत्पन्नपक्ष अपेक्षातौ रूढ है। बहुरि व्युत्पन्नपक्ष अपेक्षा ' अंचु ' धातु गति अर्थ तथा पूजन अर्थविषैं प्रवर्तें है, कर्ता अर्थविषैं ' क्किप् ' प्रत्यय है, तातैं इहां प्रशंसा अर्थ ग्रहण कीया है । बहुरि यह सम्यक्पदकी प्रत्येक समाप्ति करना तीनांउपरि लगावना । तब ऐसैं कहिये, सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यक्चारित्र । इनि तीनांहीका स्वरूप लक्षणथकी वा प्रकार भेदथकी तौ सूत्रकार आगैं कहसी। इस सूत्रमें नाममात्र कहे। बहुरि टीकाकार व्याख्यान करै हैं। पदार्थनिका यथार्थज्ञानके विषयविषैं श्रद्धानका ग्रहणके अर्थि तौ दर्शनकै सम्यक् विशेपण है। बहुरि जिसजिस प्रकार जीवादिक पदार्थकी व्यवस्था है, तिसतिस प्रकार निश्चयकरि जानना, सो सम्यग्ज्ञान है। याकै सम्यक् विशेषण विमोह संशय विपर्ययकी निवृत्तिकै अर्थि है । बहुरि संसारके कारण जे मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय, योग इनितैं भये आस्रव बंध तिनकी प्रवृत्ति प्रति उद्यमी जो

सम्यग्ज्ञानी पुरुष, ताकै कर्मका जातैं ग्रहण होय ऐसी जो क्रिया ताका निमित्त जो क्रिया, ताका त्याग, सो सम्यक्चारित्र है । तथा कर्मनिका 'आ' कहिये ईषत् 'दान' कहिये खंडन ताका निमित्त जो क्रिया ताका त्याग, आत्माकै एकदेशकर्मक्षपणांका कारण परिणामविशेष ताकाभी त्याग, तथा कर्मनिका समस्तपणैं क्षयकारणपरिणाम चौदह गुणस्थानके अंतसमयवर्ती सो सम्यक् निवृत्तिरूप चारित्र है, ऐसाभी अर्थ है ॥ याकै अज्ञानपूर्वक चारित्रकी निवृत्तिकै अर्थि सम्यक् विशेषण है । जातैं इनि तीननिकी निरुक्ति ऐसी है, 'पश्यति' कहिये जो श्रद्धान करै सो दर्शन है, इहांतो कर्तृसाधन भया । तहां करनहारा आत्मा है सोही दर्शन है । बहुरि 'दृश्यते अनेन' कहिये श्रद्धिये याकरी सो दर्शन, इहां करणसाधन भया । बहुरि 'दृष्टिमात्रं' कहिये श्रद्धाना सो दर्शन, इहां भावसाधन भया । दर्शनक्रियाहीकूं दर्शन कह्या । ऐसैंही 'जानाति' कहिये जो जानै सो ज्ञान, इहां कर्तृसाधन भया । जानने वाला आत्माहीकूं ज्ञान कह्या । बहुरि 'ज्ञायते अनेन ज्ञानं' जाकरि जानिये सो ज्ञान, इहां करणसाधन भया । बहुरि 'ज्ञप्तिमात्रं ज्ञानं' जाननां सो ज्ञान, इहां भावसाधन भया । जाननरूप क्रियाकूं ज्ञान कह्या । बहुरि 'चरति इति चारित्रं' इहां आचरण करै सो चारित्र है, ऐसैं कर्तृसाधन भया । जातैं आत्माही चारित्र है । बहुरि 'चर्यते अनेन' इहां

जाकरि आचरण करिये सो चारित्र है, ऐसैं करणसाधन भया । बहुरि 'चरणमात्रं चारित्रं' इहां भावसाधन भया । ऐसैं आचरनेहीकूं चारित्र कह्या ॥

इहां अन्यवादी सर्वथा एकांती तर्क करै— जो ऐसैं कहतैं· सोही कर्ता, सोही करण आया· सो तौ विरुद्ध है । विरुद्ध दोय भाव एककूं होय नांही । ताकूं कहिये, तेरे सर्वथा एकांत पक्ष है, जातैं विरोध भासै है । स्याद्वादीनिकै परिणामपरिणामीकै भेदविवक्षाकरि विरोध नांही है । जैसैं अग्नि अपने दाहपरिणामकरि इंधनकूं दग्ध करै है तैसैं इहांभी जाननां । ऐसैं कह्या— जो कर्ता करण क्रियारूप तीन भाव ते पर्यायपर्यायीकै एकपणां अनेकपणांप्रति अनेकांतकी विवक्षाकरि स्वतंत्रपरतंत्रकी विवक्षा एकभी वस्तुविषैं अनेक स्वतंत्र कर्ता परतंत्र करणादि भावविषैं विरोध नांही है ॥ बहुरि इहां कोई पूछे ज्ञानका ग्रहण आदिविषैं चाहिये । जातैं ज्ञानकरि पहलै जानिये, पीछै ताविषैं श्रद्धान होय है । बहुरि व्याकरणका ऐसा न्याय है जो द्वंद्वसमासविषैं जाके अल्प अक्षर होय सो पहली कहनां । ताकूं कहिये यह युक्त नांही । दर्शन ज्ञानकी एककाल उत्पत्ति है । जा समय दर्शनमोहका उपशम तथा क्षयोपशम तथा क्षयतैं आत्माकै सम्यग्दर्शन भाव होय है, ताही समय मतिअज्ञान श्रुतअज्ञानको अभाव होय, मतिज्ञान श्रुतज्ञान होय है । जैसैं सूर्यके बादला दूर

होतैं प्रताप प्रकाश दोऊ एककाल प्रकट होय तैसैं इहांभी जाननां । बहुरि व्याकरणका न्याय है, जो, जाके अल्प अक्षर होय, तातैं जो पूज्य प्रधान होय सो पहली आवै । सो ज्ञानकूं सम्यग्दर्शन सम्यक्रूप करै है, तब सम्यग्ज्ञान नाम पावै है । तातैं सम्यग्दर्शन पूज्य प्रधान है । तातैं पहलै सम्यग्दर्शनही चाहिये । बहुरि सम्यग्ज्ञानपूर्वक चारित्र सम्यक् होय है । तातैं चारित्रकै पहलै ज्ञान कह्या ॥ बहुरि मोक्ष सर्वकर्मका अत्यंत अभाव होय ताकूं कहिये । बहुरि ताकी प्राप्तिका उपाय ताकूं मार्ग कहिये । ऐसैं मोक्षमार्गशब्दका अर्थ जाननां ॥

इहां मार्गशब्दकै एकवचन कह्या, सो सम्यग्दर्शनादिक तीन हैं, तिनिकी एकता होय सो साक्षात् मोक्षमार्ग है ऐसैं जनावनेके अर्थि है । जुदे जुदे मोक्षमार्ग नांही । इहां साक्षातपदतैं ऐसा जनावै है, जो तीनूंनिका एकदेश परंपरा मोक्षका कारण है । अर पूर्णता साक्षात् मोक्षका कारण है ॥ बहुरि यहु मोक्षमार्गका स्वरूप विशेषरूप असाधारण जाननां । सामान्यपनैं कालक्षेत्रादिकभी मोक्षप्रति कारण हैं । तातैं सम्यग्दर्शनादिकही मोक्षमार्ग है यह नियम जाननां । बहुरि ऐसा नियम न कहनां, जो, ये मोक्षमार्गही है । ऐसैं कहतें ए स्वर्गादि अभ्युदयके मार्ग न ठहरै । तातैं पूर्वोक्तही कहनां ॥ कोई कहै तपभी मोक्षका मार्ग है, यहभी क्यौं न कह्या? ताका उत्तर जो, तप

है सो चारित्रस्वरूप है । सो चारित्रमें आयगया ॥ कोई कहै, सम्यग्दर्शनादि मोक्षके कारण हैं तौ केवलज्ञान उपजै ताहीसमय मोक्ष हुवा चाहिये । ताकूं कहिये, जो, अघातिकर्मके नाश करनेंकी शक्ति आत्माकी सम्यग्दर्शनादिककी सहकारिणी है। तथा आयुःकर्मकी स्थिति अवशेष रहै है। तातैं केवलीका अवस्थान रहै है। वह शक्ति सहकारिकारण मिलै तब मोक्ष होय है। बहुरि या सूत्रकी सामर्थ्यतैं मिथ्यादर्शन मिथ्याज्ञान मिथ्याचारित्र संसारके कारण हैं ऐसाभी सिद्ध हो है ॥

आगें आदिविषैं कह्या जो सम्यग्दर्शन ताका लक्षणनिर्देशके अर्थि सूत्र कहे हैं ॥

॥ तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ॥ २ ॥

याका अर्थ—– तत्त्वकरि निश्चय किया जो अर्थ ताका जो श्रद्धान सो सम्यग्दर्शन है ॥ 'तत्' ऐसा शब्द सर्वनाम पद है तातैं सामान्यवाचक है। याके भाव अर्थविषैं त्वप्रत्यय होय है। तब तत्त्व ऐसा भया । याका यहु अर्थ, जो, जा वस्तूका जैसा भाव तैसाही ताका होना ताकूं तत्त्व कहिये ॥ बहुरि "अर्यते इति अर्थः" जो प्रमाणनयकरि निश्चय कीजिये ताकूं अर्थ कहिये। सो तत्त्व कहिये यथावस्थितस्वरूपकरि निश्चय निर्बाध होय सो तत्त्वार्थ ऐसैं अनेकांतस्वरूप प्रमाणनयसिद्ध है, ताकूं तत्त्वार्थ कहिये ॥ अथवा तत्त्व कहिये यथावस्थित वस्तु, सोही अर्थ

कहिये निश्चय कीजिये सो तत्त्वार्थ अभेदविवक्षाकरि ऐसाभी अर्थ है । याका श्रद्धान कहिये प्रतीति रुचि ताकूं तत्त्वार्थश्रद्धान कहिये। तत्त्वार्थ जीवादिक हैं ते आगैं कहसी ॥

इहां प्रश्न— जो 'दृशि' ऐसा धातु है सो देखनेके अर्थविषैं है । तातैं श्रद्धान अर्थ कैसैं होय? ताका उत्तर-- धातुनिके अनेक अर्थ हैं। तातैं दोष नांही। बहुरि कहै, जो, प्रसिद्ध अर्थ तौ देखनाही है, ताकूं क्यों छोडिये? ताकूं कहिये, इहां मोक्षमार्गका प्रकरण है, सो यामैं मोक्षका कारण आत्माका परिणाम है । सोही लैणा युक्त हैं । देखना अर्थ लीजिये तौ देखणां तौ चक्षु आदि निमित्तकरि अभव्य आदि सर्व जीवनिकै है। सो सर्वहीकै मोक्षका कारणपणा आवै । तातैं वह अर्थ न लियां । इहां प्रश्न जो, अर्थश्रद्धान ऐसाही क्यों न कह्या? ताका उत्तर— जो, ऐसैं कहै सर्व अर्थग्रहणका प्रसंग आवै। अर्थ नाम धनकाभी है । तथा अर्थ नाम प्रयोजनकाभी है। तथा सामान्यअर्थकाभी नाम है । तिनिकाभी श्रद्धान सम्यग्दर्शन ठहरै । तातैं तिनितैं भिन्न दिखावनेके अर्थि अर्थका तत्त्व विशेषण कीया है । बहुरि प्रश्न जो, तत्त्वश्रद्धान ऐसाही क्यों न कह्या? ताका उत्तर-- ऐसैं कहै अनर्थ जे सर्वथैकांतवादिनिकरि कल्पित, ताका प्रसंग आवै है। तथा भावमात्रका प्रसंग आवै है। केई वादी सत्ता तथा गुणत्व तथा कर्मत्व इनिकूंही तत्त्व कहै हैं।

अथवा तत्त्व एकपणांहीकूं कहै हैं, ताका प्रसंग आवै। केई ऐसैं कहे हैं- जो, सवर्वस्तु एक पुरुषही है। तातैं तिनि सर्वनितैं भिन्न अनेकांतात्मक वस्तूका स्वरूप है, ऐसैं जनावनेके अर्थि तत्त्वार्थका ग्रहण कीया है ॥

ऐसा तत्त्वार्थश्रद्धानस्वरूप सम्यग्दर्शन है, सो दोय प्रकार है । एक सरागसम्यक्त्व, एक वीतरागसम्यक्त्व । तहां प्रशम, संवेग, अनुकंपा, आस्तिक्य इनि च्यारि भावनिकरि प्रगट होय; सो तौ सरागसम्यग्दर्शन है । तहां अनंतानुबंधी कषायकी चौकडीसंबंधी रागद्वेषादिकका तथा मिथ्यात्व सम्यङ्मिथ्यात्वका जहा उदय नांही ताकूं प्रशम कहिये। बहुरि पंचपरिवर्तनरूप जो संसार तातैं भय उपजना ताकूं संवेग कहिये । बहुरि त्रस स्थावर प्राणीनिविषैं दया होनां ताकूं अनुकंपा कहिये। बहुरि जीवादि तत्त्वनिविषैं युक्ति आगमकरि जैसाका तैसा अंगीकार करनां माननां ताकूं आस्तिक्य कहिये । ए च्यारी चिन्ह सम्यग्दर्शनकूं जनावै हैं, ए सम्यग्दर्शनके कार्य हैं । तातैं कार्यकरि कारणका अनुमान होय है । तहां अपनें तो स्वसंवेदनतैं जाने जाय है । अर परके कायवचनके क्रियाविशेषतैं जाने जाय है। सम्यग्दर्शनविनां मिथ्यादृष्टीके ऐसैं होय नांही । इहां कोई कहै, क्रोधका उपशम तौ मिथ्यादृष्टीकैभी कोईकै होय है, ताकैभी प्रशम आवै है । ताकूं

कहिये— मिथ्यादृष्टिनिकै अनंतानुबंधी मानका उदय है । सर्वथा एकांततत्त्व मिथ्या है, ताविषैं सत्यार्थका अभिमान है । बहुरि अनेकांतात्मकतत्त्वविषैं द्वेषका अवश्य सद्भाव है । बहुरि स्थावरजीवनिका घात निःशंकपणें करै है । तातैं प्रशमभी नांही, अर संवेग अनुकंपाभी नांही । कोई कहै— स्थावरजीवनिका घात तौ अज्ञानतैं सम्यग्दृष्टीकैभी होय है, तौ ताकै अनुकंपा कैसैं कहियें? ताका उत्तर— जो सम्यग्दृष्टीकै जीवतत्त्वका ज्ञान है, सो अज्ञानतैं तौ घातविषैं प्रवृत्ति नांही । चारित्रमोहके उदयतैं अविरतिप्रमादतैं घात होय, तहां एह अपनां अपराध मानै । ऐसा तौ नाही, जो ए जीवही नाही तथा जीवनिके घाततैं कहा बिगाड है? । जो ऐसा मानै, तौ मिथ्यात्वकाही सद्भाव है ॥

बहुरि कहै, जो, वाकै अपने माने तत्त्वविषैं आस्तिक्य है । ताका उत्तर— मिथ्यादृष्टि तत्त्वकौं सर्वथा एकांत श्रद्धै है । तहां आस्तिक्य है सो मिथ्यात्व अतिदृढ भया । जातैं सर्वथा एकांत वस्तुका स्वरूप नाही । प्रत्यक्षादि प्रमाणकरि बाधित है । तातैं जे सर्वथा एकांत श्रद्धान करै हैं ते अर्हतके मततैं बाह्य हैं, मिथ्यादृष्टी हैं, नास्तिक हैं । बहुरि प्रश्न जो, सम्यग्दर्शनके चिन्ह प्रशमादिक कहे तिनिकौं आपकै स्वसंवेदनगोचर कहे तिनितैं सम्यक्तका अनुमान करना कह्या तौ

तत्त्वार्थश्रद्धानहीकूं स्वसंवेदनगोचर क्यों न कह्या? ताका उत्तर— जो, तत्त्वार्थश्रद्धानरूप जो सम्यग्दर्शन है सो दर्शनमोहके उपशम क्षयोपशम क्षयतैं जो आत्मस्वरूपका लाभ होय ताकूं कहिये है। सो यहु छद्मस्थकै स्वसंवेदनगोचर नाही अर प्रशमादि स्वसंवेदनगोचर है। तातैं इनितैं सम्यग्दर्शनका अनुमान करनां। ए अभेदविवक्षातैं सम्यग्दर्शनतैं अभिन्न है। तथापि भेदविवक्षातैं भिन्न है। जातैं ए सम्यग्दर्शनके कार्य है तातैं कार्यतैं कारणका अनुमान हो है। केई वादी सम्यग्ज्ञानहीकों सम्यग्दर्शन कहै हैं। तिनप्रति ज्ञानतैं भेद जनावनेकै अर्थ सम्यग्दर्शनके कार्य जे प्रशमादिक ते जुदे कहिये। तिनितैं ताकूं जुदा जानिये ॥

कोई कहै— प्रशमादिक मिथ्यादृष्टिसम्यग्दृष्टीकी कायादिकी क्रियाका व्यवहार समान दीखै तहां कैसैं निर्णय होय? ताका उत्तर— जो आपकै जैसे दीखै तैसे पैलाकाभी परीक्षाकरि निर्णय करनां। बहुरि वीतरागकै सम्यग्दर्शन अपने आत्माके विशुद्धपरिणामतैंही गम्य है। तहां प्रशमादिकका अधिकार नाही। ऐसैं तत्त्वार्थश्रद्धान दर्शनमोहरहित आत्माका परिणाम है सो सम्यग्दर्शन है। यातैं केई अन्यवादी इच्छादिक कर्मके परिणामकूं सम्यग्दर्शन कहै हैं तिनिका निराकरण भया। जातैं कर्मका परिणाम कर्मअभावरूप जो मोक्ष ताका कारण होय नाही ॥

आगै यहु सम्यग्दर्शन जीवादि तत्त्वार्थगोचर है सो कैसैं उपजै है? ऐसा प्रश्न होतैं, सूत्र कहै हैं—

॥ तन्निसर्गादधिगमाद्वा ॥ ३ ॥

याका अर्थ— तत् कहिये सो सम्यग्दर्शन निसर्गतैं अर अधिगमतैं उपजै है । निसर्ग स्वभावकूं कहिये । अधिगम अर्थके ज्ञानकूं कहिये । इनि दोऊकूं सम्यग्दर्शनकी उत्पत्तिरूप क्रियाके कारणकरि कहे । ऐसैं सम्यग्दर्शन है सो निसर्ग वा अधिगम इन दोऊनितैं उपजै है ऐसा जानना। इहां प्रश्न— निसर्गज सम्यग्दर्शनविषैं अर्थका ज्ञान है कि नांही? जो है तो यहभी अधिगमज भया । बहुरि जो अर्थावबोध नाही है तौ विनांजाने तत्त्वार्थविषैं श्रद्धान कैसे भया । ताका उत्तर— दोनूही सम्यग्दर्शनविषैं अंतरंगकारण तौ दर्शनमोहका उपशम क्षयोपशम क्षय तीनूंही समान हैं। ताके होतैं जो बाह्य परोपदेशविनां होय ताकूं तौ निसर्गज कहिये । बहुरि जो परोपदेशपूर्वक होय ताकूं अधिगमज कहिये इनिमैं यह भेद है ॥ इहां सूत्रविषैं तत् ऐसा शब्दका ग्रहण, सो पहले सूत्रमें सम्यग्दर्शन कह्या है, ताके ग्रहण अर्थि कह्या है । कोई कहै— लगता सूत्रविषैं कह्या सो विना तत् शब्दही ग्रहण होय है । ताकूं कहिये, मोक्षमार्गका प्रकरण है अर मोक्षमार्ग प्रधान है,

तातैं विना तत् शब्द ताका ग्रहणका प्रसंग आवै है। तातैं याके प्रसंग दूरि करनेकों तत् शब्द है। जातैं ज्ञानचारित्र ए दोय हेतु नांही बणै है। कैसै? केवलज्ञान तौ श्रुतज्ञानपूर्वक है, तातैं निसर्गपणां नांही संभवै। बहुरि श्रुतज्ञान परोपदेशपूर्वकही है। स्वयंबुद्धकै श्रुतज्ञान हो है सोभी जन्मांतरके उपदेशपूर्वक है। तातैं याकैभी निसर्गजपनां नांही। बहुरि मति अवधि मनःपर्ययज्ञान निसर्गजही हैं। इनिकै अधिगमजपनां नाही। कोई कहै-- ज्ञानसामान्य तौ दोय हेतुतैं उपजै ऐसा आया। ताका उत्तर इहां सामान्य अपेक्षा नाही विशेषापेक्षा है। दर्शनके भेदनिकी अपेक्षा तीनूं प्रकारके कैं दोऊ हेतु संभवे हैं। तैसैं ज्ञानके भेदनिमैं जुदा जुदाकै दोऊ हेतु नाही। बहुरि चारित्र है सो अधिगमजही है। जातैं श्रुतज्ञानपूर्वक है। तातैं मोक्षमार्गका संबंध न लैनेकूं इहां तत् शब्द कह्या है ॥

बहुरि प्रश्न— जो निसर्गभी ज्ञानका नाम, अधिगमभी ज्ञानहीका नाम, उपदेश विना उपदेशकाही भेद है। ऐसैं होतैं ज्ञानहीतैं सम्यक्त्वका उपजना ठहऱ्या। तब ज्ञान कारण ठहऱ्या। अरु सिद्धांत ऐसा है, जो सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान युगपत् होय है। सो यहु कैसैं? ताका उत्तर— सम्यग्दर्शनके उपजावने योग्य ज्ञान ज्ञानावरणीयके विशेषतैं बाह्य परोपदेशतैं पहलै होय है।

तिसतैं सम्यग्दर्शन उपजै है। पीछै सम्यग्दर्शन होय तब सम्यग्ज्ञान नाम पावै। तातैं यहु अपेक्षा जाननी। याकी उत्पत्तीका विशेष ऐसा है— अंतरंग तौ दर्शनमोहका उपशम क्षयोपशम क्षय होय। बहुरि बाह्य द्रव्य क्षेत्र काल भावादि समस्त कारण मिलै तब उत्पत्ति होय ॥ इहां कोई पूछै— दर्शनमोहका उपशमादिक कारण है, तौ सर्वही प्राणिनिकै सदांही क्यों न होय? ताका उत्तर— दर्शनमोहका उपशमादि करणहाराभी प्रतिपक्षी द्रव्य क्षेत्र काल भाव हैं। ते कौंन सो कहिये? जिनेंद्रबिंबादिक तौ द्रव्य हैं। समवसरणादिक क्षेत्र हैं। अर्द्धपुद्गलपरिवर्तनादिक काल है। अधःप्रवृत्तिकरणादिक भाव हैं। इनिके होतैं दर्शनमोहादिकका उपशमादि हो है। सो इनिका निमित्त होनां भव्य जीवहीकै है। अभव्यकै नाहीं होय है। यह वस्तुस्वभाव है। ऐसैं निकटभव्यकै दर्शनमोहका उपशमादिक अंतरंग कारण होतैं बाह्य निसर्ग तथा अधिगम ज्ञान होतैं सम्यग्दर्शनकी उत्पत्ति होय है ॥

आगैं तत्त्व कहा है? ऐसा प्रश्न होतैं तत्त्वकौं कहै हैं—

जीवाजीवास्रवबन्धसँवरनिर्जरामोक्षास्तत्त्वम् ॥ ४ ॥

याका अर्थ— जीव, अजीव, आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा, मोक्ष ये सात हैं ते तत्त्व हैं ॥

तहां चेतनालक्षण तौ जीव है । सो चेतना ज्ञानचेतना, कर्मचेतना, कर्मफलचेतना ऐसें अनेकरूप है। यातैं उलटा चेतनारहित होय सो अजीव है । शुभअशुभ कर्मका आगमनका द्वाररूप आस्रव है। जीव अर कर्मके प्रदेश एकक्षेत्रावगाहसंबंधरूप बंध है । आस्रवका रुकनां सो संवर है। एकदेशकर्मका क्षय सो निर्जरा है। समस्तकर्मका वियोग (क्षय) सो मोक्ष है। इनिका विस्ताररूप व्याख्यान आगैं होयगा । तिनिमैं सर्वफलका आत्मा आश्रय है, तातैं सूत्रमैं आदिविषैं जीव कह्या । ताके उपकारी अजीव है, तातैं ताकै लगताही अजीव कह्या । जीव अजीव दोऊनिके संबंधतैं आस्रव है, तातैं ताकै अनंतर आस्रव कह्या । आस्रवपूर्वक बंध हो है, तातैं ताकै लगता बंध कह्या। संवर होतैं बंधका अभाव हो है, तातैं ताकै लगताही संवर कह्या । संवरपूर्वक निर्जरा होय है, तातैं ताकै लगता निर्जरा कह्या। अंतकेविषैं मोक्षकी प्राप्ति है, तातैं अंतमैं मोक्ष कह्या। ऐसैं इनिका पाठका अनुक्रम है ॥

इहां कोई कहै— पुण्यपापका ग्रहण यामैं करणां योग्य था, अन्य आचार्यनिनैं नव पदार्थ कहे हैं। ताकूं कहिये— पुण्यपाप आस्रवबंधमैं गर्भित हैं, तातैं तिनिका ग्रहण न किया । फेरि कहै, जो, ऐसैं है तौ आस्रवादिकभी जीवअजीवविषैं गर्भित हैं, दोयही तत्त्व कहने थे । ताका

समाधान-- जो, इहां प्रयोजनविशेष है सोही कहिये है। इहां प्रकरण मोक्षका है, तातैं मोक्ष तौ अवश्य कह्या ही चाहिये। वहुरि मोक्ष है सो संसारपूर्वक है । संसारके प्रधानकारण आस्रव वंध हैं, सो कहनांही। वहुरि मोक्षके प्रधानहेतु संवरनिर्जरा हैं, तेभी कहनाही । यातैं प्रधानकारण कार्यके अपेक्षा इनिकूं जुदे कहे। सामान्यमैं अंतर्भूत हैं तोऊ विशेषका कहना प्रयोजन आश्रय है । जैसैं सेनाविषैं क्षत्रिय भेले होय तव कहै ' सर्व आये तथा फणाणे वडे सुभट हैं तेभी आये ' ऐसैं इहांभी जाननां ॥ वहुरि कोई तर्क करै, सूत्रविषैं तत्त्वशब्द तौ भाववाची एकवचन नपुंसकलिंग है । वहुरि जीवादिक द्रव्यवाचक वहुवंचन पुरुषलिंग धर्‍या सो यहु कैसैं? ताका उत्तर— जो, द्रव्य भाव तौ अभेदरूप है, तातैं दोष नांही। वहुरि लिंग संख्या तत्त्वशब्द भाववाची है, तहां एकवचनही होय है, तथा नपुंसकलिंगी है, तातैं अपनी लिंगसंख्याकौं छोडै नांही, तातैं दोष नांही । ऐसैं ही आदिसूत्रविषैं जाननां ॥

इहां विशेष कहिये हैं— मोक्षमार्गके प्रकरणमैं श्रद्धानके विषय सातही तत्त्व हैं। अन्यवादी केई तत्त्व एकही कहै हैं । केई प्रकृतिपुरुष दोय कही इनिके पचीस भेद कहै हैं। केई द्रव्यगुणादि सप्त पदार्थ कहै। केई पृथ्वी आदि पंच तत्त्व कहै हैं। केई प्रमाणप्रमेय आदि षोडश पदार्थ कहै हैं।

तथा एकद्रव्य अनंतपर्यायात्मक है । ऐसैं अनंत द्रव्य हैं ॥ तहां आचार्य मध्यमप्रस्थान विचारि कहै हैं । संक्षेप कहै तौ विशेष ज्ञानीही समझै । विस्तार कहै तौ कहांताई कहै । तातैं अवश्य श्रद्धानका विषय थे ते कहे । केई कहै हैं, एक जीवही तत्त्वार्थ है; सो अयुक्त है । परकूं जीवकी सिद्धि वचनतैं कराई है । वचन है सो अजीव है । जो वचनकूंभी जीव कहिये, तौ याकै स्वसंवेदन चाहिए, सो नांही । बहुरि वह कहै, दूजा जीव होय तौ ताकै स्वसंवेदन कहिये एकही परमात्मा है, सो अविद्याकरि बहुत दीखै है । ताका उत्तर — जो, जीव तौ बहुत हैं, तोकूं एक अविद्याकरि दीखै है । जो तू कहै 'मोसिवाय दूजा कोई नांही' तौ दूजाभी कहै, मोसिवाय और कोई नांही । तौ एकै कहै सर्वशून्यता आवै है । जो कहै 'मोसिवाई' दूजा है कि नांही? ऐसा संशय है । तौ अद्वैतकाभी निर्णय न होयगा । जो कहै, 'आगमतैं एक पुरुषकी सिद्धि है' ताकूं कहिये, हमारे आगमतैं नानापुरुषकी सिद्धि है । प्रत्यक्षप्रमाणतैं हमारा आगम तौ सिद्ध हो है । अर एक पुरुष कहनहारा आगम प्रत्यक्षप्रमाणतैं मिलै नाही । बहुरि जैसैं वचन अजीव है, तैसैं अजीवभी पृथ्वी आदि बहुत हैं । बहुरि जीवकै कायादिककी क्रियारूप आस्रव है । बहुरि बंध है सो पुरुषकाभी धर्म है । जातैं जडकाही धर्म होय तौ पुरुष बंधका फल काहेकूं पावै । बहुरि संवर निर्जरा मोक्ष हैं तेभी

जीवके धर्म हैं। ऐसैं पांचौंही तत्त्व जीव अजीव इनि दोऊनिके धर्म हैं ते श्रद्धानके ज्ञानके चारित्रके विषय हैं। अन्य सर्वविषय इनिमैं अंतर्भूत हैं ॥

आगैं कहै हैं, कि, याप्रकार कहे जे सम्यग्दर्शनादिक तथा जीवादिक तत्त्व तिनिका लोकव्यवहारविषैं व्यभिचार आवै है। नाममात्रकूंभी जीव कहै हैं। स्थापनामात्रकूंभी जीव कहै हैं। द्रव्यकूंभी जीव कहै हैं। भावकूंभी जीव कहै हैं। तातैं तिनिका यथार्थस्वरूप समझेंविना अन्यथापनां आवै है। ताके निराकरण अर्थ सूत्र कहै हैं—

**नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः ॥ ५ ॥**

याका अर्थ— नाम, स्थापना, द्रव्य, भाव इनि च्यारिनिकरि तिनि जीवादिकपदार्थनिका न्यास कहिये निक्षेप है। जो वस्तुमैं जो गुण न पाईए ताविषैं लोकव्यवहारप्रवृत्तिके अर्थि अपने उपयोगतैं नाम करना, ताकूं नाम कहिये। इहां गुणशब्दतैं द्रव्य कर्म जाति ए सर्वभी ग्रहण करणा। तहां जातिद्वार नाम तौ जैसैं गऊ अश्व घट है। गुणद्वार जैसैं काहूकूं धवलगुणकै द्वार धवल कहिये। कर्मद्वार जैसैं चलतेकू चलता कहिये। द्रव्यद्वार जैसैं कुंडल द्रव्य पहरै होय, ताकूं कुंडली कहिये, तथा दंड लिये होय ताकूं दंडी कहिये। इनिविना वक्ता इच्छातैं वस्तुका

नाम धरै, ताकूं नामनिक्षेप कहिये। जैसैं पुरुषका हाथी सिंह नाम धऱ्या तहां हाथीके तथा सिंहके द्रव्य गुण क्रिया जति कछुभी न पाइये, तहां वक्ताकी इच्छाही प्रधान है। इहां कोई पूछे— नामका व्यवहार अनादिरूढ है, जैसैं जाति ऐसा जातीका नाम, गुण ऐसा गुणका नाम, कर्म ऐसा कर्मका नाम इत्यादि ए नाम कैसे हैं? ताका उत्तर— जो, अनादिहीतैं वक्ता हैं, अनादिहीतैं ये नाम हैं। प्रधानगुणपणांका विशेष है, तहां वक्ता वस्तूके गुण आदि प्रधानकरि किसीका नाम कहै, तहां तौ तिस हेतूतैं नाम जाननां॥ बहुरि जहां अपनी इच्छाहीकौं प्रधान करै, गुणादिकका आश्रय न ले, तहां नामनिक्षेप जाननां॥ बहुरि बौद्धमती कहै हैं— जो, नामविषैं वक्ताकी इच्छाही कारण है, गुणादिक तौ वस्तूके निजस्वभाव नांही, कल्पित हैं। सो यहु अयुक्त है। गुणादिक तौ प्रतीतिसिद्ध हैं। प्रतीतिका लोप करनां प्रमाण नांही॥

वस्तूकेविषैं अन्यवस्तुसूं समान परिणाम हैं ताकूं जाति कहिये हैं। जैसैं गऊजातिकरि सर्व गऊ समान हैं॥ बहुरि गुणपर्यायके आश्रयकूं द्रव्य कहिये। जैसैं पीततादि गुण कुंडलादि पर्यायका आश्रय सुवर्ण। बहुरि पीतता आदिकौं गुण कहिये। बहुरि कर्म क्रियाकूं कहिये। जैसैं चलताकूं चलता कहिये। ऐसैं ये प्रतीतिसिद्ध हैं। इनकी विशेष चरचा श्लोकवार्तिकतैं जाननी॥ बहुरि

काष्ठपुस्त चित्रकर्म अक्षनिक्षेप इनि आदिविषैं सो यहु है ऐसैं स्थापन कीजिये ताकूं स्थापनानिक्षेप कहिये ॥ इहां प्रयोजन ऐसा— जो पहलै नाम लेयकै पीछैं अन्यवस्तुविषैं अन्यकी प्रतिष्ठा करनी। ताके भेद दोय, एक सद्भावस्थापना, एक असद्भावस्थापना। तहां भावरूप जो वस्तु, ताकै समान प्रतिमा जामैं मुख्य आकार ऐसा होय, जो 'देखनेवालेकै भावरूपकी बुद्धि उपजि आवै' ताकूं सद्भावस्थापना कहिये। बहुरि मुख्य आकारशून्य वस्तुमात्र होय ताकूं असद्भावस्थापना कहिये। जामैं पैलाके उपदेशहीतैं सो यहु भावरूप है ऐसैं जानी जाय ॥ इहां ऐसा जानना—जो नामनिक्षेपविषैं तौ लोककै आदर तथा उपकारकी वांछा न होय है अरु स्थापनानिक्षेपविषैं आदर उपकारकी वांछा देखिये है। तहां कोई स्थापना तौ लोक ऐसी करै है, जो घने काल रहवो करै। बहुरि कोई ऐसी करै है, जो अल्पकालही रहै ॥ इहां कोई पूछै—अरहंतादिकका असद्भावस्थापन अन्यवस्तुविषैं कीजिये कि नांही? ताका उत्तर—जो, इस हुंडावसर्पिणी कालविषैं न करिये। जातैं अन्यमती अतदाकार मूर्ति अनेक देवनिकी स्थापन करै हैं। तहां यह निश्चय न होय, जो, यह मूर्ति कौनकी है। तातैं मुख्य आकार जामैं करिये, देखतेही वीतरागमुद्राकी बुद्धि उपजि आवै ऐसीही अरहंतादिककी स्थापना युक्त है। ऐसैं वसुनंदिसिद्धांतचक्रवर्ती आदिके वचन हैं। उनिने मने करी है। मुख्यआकारविषैंभी

काष्ठादिकके स्थापनतैं संघभेद पडिगया है तौ अतदाकारकी कहा बात है? ॥

बहुरि गुण जाकूं परिणमावैगा तथा जो गुणरूप परिणमवैगा ताकूं द्रव्य कहिये । इहां अर्थ ऐसा जाननां-- जो वस्तु अगिली पर्यायप्रति आपही सन्मुख होय, ताकूं द्रव्य कहिये । ताके भेद दोय, एक आगमद्रव्यनिक्षेप, एक नोआगमद्रव्यनिक्षेप । तहां जाके निक्षेप करिये तिस वस्तूका कथनका शास्त्रका जाननहारा आत्मा तिस शास्त्रविषैं जा काल उपयोगरहित होय ता आत्माकूं तिस वस्तूका आगमद्रव्यनिक्षेप कहिये । बहुरि नोआगमद्रव्यनिक्षेपके तीन भेद । एक तौ ज्ञायकशरीर ताकै अतीत अनागत वर्तमानकरि तीन भेद हैं । दूजा भाविनोआगमद्रव्यनिक्षेप । तीजा तिन दोऊनितैं जुदा ताकूं तद्व्यतिरिक्त कहिये । ताकाभी कर्मनोकर्मकरि भेद दोय । तहां जिस वस्तूका निक्षेप करिये ताका व्याख्यानका शास्त्रका जाननेवाले पुरुषका शरीर वर्तमानकूंभी वाका निक्षेप कहिये; बहुरि आगामी जेतै काल रहेगा ताकूंभी कहिये, बहुरि जीवपर्याय छोडे पीछे मृतकशरीर है ताकूंभी कहिये । जातैं लोकमैं ऐसा व्यवहार है जो मृतकशरीरकूंभी कहै जो यह फलाणां पुरुष है । बहुरि जा वस्तूका निक्षेप करिये ताहीकूं अगली पर्यायकी अपेक्षा लेय पहलैही कहिये जो यह फलाणा वस्तु है ताकूं भाविनोआगमद्रव्यनिक्षेप कहिये । बहुरि जाका निक्षेप करिये

ताका कारण ज्ञानावरणादि द्रव्यकर्मकूं ताका तद्व्यतिरिक्त कर्मद्रव्यनिक्षेप कहिये । बहुरि आहारादि पुद्गलके स्कंध जे शरीरादिरूप परिणवनेकूं बाह्यकारण तिनिकूं तद्व्यतिरिक्त नोकर्मद्रव्यनिक्षेप कहिये ॥

बहुरि वर्तमान जिस पर्यायकरि सहित जो द्रव्य होय ताकूं भावनिक्षेप कहिये । ताके दोय भेद; एक आगमभाव, एक नोआगमभाव । तहां जा वस्तूका निक्षेप करिये ताका कथनका शास्त्रका जाननेवाला पुरुषका जिस काल वा शास्त्रविषैं उपयोग होय तिस काल वा वस्तूका आगमभावनिक्षेप वा पुरुषकों कहिये ॥ बहुरि जो वस्तु जिस पर्यायविषैं वर्तमानकालमैं है ताकूं नोआगमभावनिक्षेप कहिये । इहां उदाहरण कहिये हैं । जैसैं जीव ऐसा शब्दका अर्थ स्थापिये तहां जीवनगुणादिककी अपेक्षाविना अजीवका किसीका; नाम जीव ऐसा कहिये ताकूं जीवका नामनिक्षेप कहिये । तथा जीवके विशेषपर्यायपरि लगाईये तब मनुष्यादि जीवनिक्षेप कहिये । बहुरि काष्ठचित्रामादिक मूर्तिविषैं जीव ऐसा तथा मनुष्यादिजीव ऐसा स्थापन करना सो स्थापनाजीव है । बहुरि द्रव्यजीव दोय प्रकार । तहां जीवके कथनका शास्त्र जाननेवाला पुरुष तिस शास्त्रविषैं उपयोगरहित होय ताकूं आगमद्रव्यजीवनिक्षेप कहिये ॥

बहुरि नोआगमद्रव्यजीव तीन प्रकार । तहां जीवके कथनके शास्त्रकूं जाननेवाला पुरुषका

शरीर भूत भविष्य वर्तमान तीन प्रकारकूं नोआगमद्रव्यका पहला भेद ज्ञायकशरीर नोआगमद्रव्यजीव कहिये । तथा मनुष्यजीवादिककाभी ऐसैही जाननां । बहुरि सामान्यजीव नोआगमभाविद्रव्य तौ हैही नाही। जातैं जीवनभावकरि सदा विद्यमान है। बहुरि विशेष अपेक्षा मनुष्यादि भाविनोआगमद्रव्यजीवपरि लागाईये । तहां कोई जीव मनुष्यपर्यायविषैं देव आयुकर्म बांध्या, तहां अवश्य देव होयगा। तहां मनुष्यपर्यायविषैंही देव कहनां ताकूं भाविनोआगमदेवजीव कहिये । बहुरि तद्व्यतिरिक्तके भेद दोय। तहां सामान्यजीवअपेक्षा तौ किसी कर्मकै उदयतैं जीव होता नांही । बहुरि विशेषजीवअपेक्षा मनुष्यनामा नामकर्मके द्रव्यकूं मनुष्यनाम तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यमनुष्यजीव कहिये सो तद्व्यतिरिक्तका भेद है । बहुरि मनुष्य आहारादिक करै है तिनितैं शरीरवृद्धि होय है यहु नोकर्म है । तातैं आहारादिककूं तद्व्यतिरिक्तका दूसरा भेद नोकर्मद्रव्यजीव कहिये ॥

बहुरि भावजीवभी दोय प्रकार है । तहां जीवके कथनका शास्त्रका जाननेवाला पुरुष जिस काल उस शास्त्रविषैं उपयोगसहित होय ताकूं आगमभावजीव कहिये। विशेषापेक्षाकरि मनुष्यजीवका कथनका शास्त्रका जाननेवाला तिसविषैं उपयोगसहित होय तब मनुष्यआगमभावजीव निक्षेप

कहनां । बहुरि जीवपर्यायकरि सदाविद्यमान है सो नोआगमभावजीव है । विशेषापेक्षाकरि मनुष्यजीवपर्याय विद्यमान होय तब मनुष्यनोआगमभावजीव है। ऐसैही अन्य जीवादिपदार्थनिकै निक्षेपविधि लगावणां। इहां प्रयोजन ऐसा जो लोकव्यवहारमैं कोई नामका भाव समझिजाय तथा स्थापनाकूं भावादिक जानै तौ ताकै यथार्थ समझावनै निमित्ति यह निक्षेपविधि है। ऐसा जाननां ॥ बहुरि सूत्रविषैं तत् शब्द है सो सम्यग्दर्शनादिक तथा जीवादिपदार्थ सर्वहीके ग्रहणके अर्थि है । सर्वहीपरि निक्षेप लगावणें । द्रव्यार्थिकनयतैं तो नाम स्थापना द्रव्य ए तीन निक्षेप हैं । बहुरि पर्यायार्थिकनयकरि भावनिक्षेप है ॥

आगै नामादिनिक्षेपविधिकरि थापे जे आकाररूप सम्यग्दर्शनादिक तथा जीवादिकपदार्थ तिनिका यथार्थ अधिगम काहेतैं होय है? ऐसा प्रश्न होतैं सूत्र कहै हैं—

॥ प्रमाणनयैरधिगमः ॥ ६ ॥

याका अर्थ— प्रमाण नय इनिकरि जीवादिक पदार्थनिका अधिगम हो है ॥ नाम आदि निक्षेपविधिकरि अंगीकार करे जे जीवादिक तिनिका यथार्थस्वरूपका ज्ञान प्रत्यक्ष परोक्ष प्रमाणकरि तथा द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिक नयनिकरि होय है । तहां प्रमाणनयनिका लक्षण तथा भेद तौ आगै

कहसी। तहां प्रमाण दोय प्रकार हैं। एक स्वार्थ एक परार्थ। तहां स्वार्थ तौ ज्ञानस्वरूप कहिये। बहुरि परार्थ वचनरूप कहिये। तामैं च्यारि ज्ञान तौ स्वार्थरूप हैं। बहुरि श्रुतप्रमाण ज्ञानरूपभी है वचनरूपभी है। तातैं स्वार्थपरार्थ दोऊ प्रकार है। बहुरि श्रुतप्रमाणके भेद विकल्प हैं ते नय हैं। इहां कोई पूछे नयशब्दके अक्षर थोडे हैं तातैं द्वंद्वसमासमैं पूर्वनिपात चाहिये। ताका उत्तर— प्रमाण प्रधान है, पूज्य है। सर्व नय हैं ते प्रमाणके अंग हैं। जातैं ऐसैं कह्या है वस्तूकों प्रमाणतैं ग्रहण करि बहुरि सत्त्व असत्त्व, नित्य अनित्य इत्यादि परिणामके विशेषतैं अर्थका अवधारण करना सो नय है। बहुरि प्रमाण सकल धर्म अर धर्मीकूं विषय करै है। सोही कह्या है सकलादेश तौ प्रमाणाधीन है। बहुरि विकलादेश नयाधीन है। तातैं प्रमाणहीका पूर्वनिपात युक्त है॥ बहुरि नयके दोय भेद कहे। तहां पर्यायार्थिक नयकरि तौ भावतत्त्व ग्रहण करनां। बहुरि नाम स्थापना द्रव्य ये तीन द्रव्यार्थिकनयकरि ग्रहण करना। जातैं द्रव्यार्थिक है सो सामान्यकूं ग्रहण करै है। द्रव्य है विषय प्रयोजन जाका ताकूं द्रव्यार्थिक कहिये। पर्याय है विषय प्रयोजन जाका ताकूं पर्यायार्थिक कहिये। ये सर्व भेले प्रमाणकरि जानै॥

इहां प्रश्न— जो, जीवादिकका अधिगम तौ प्रमाणनयनितैं करिये। बहुरि प्रमाणनयनिका

अधिगम काहेतैं करिये? जो अन्यप्रमाणनयनितैं करिये तौ अनवस्था दूषण होयगा। बहुरि आपही करिये तौ सर्वही पदार्थनिका आपहीतैं होगा, प्रमाणनय निष्फल हौंहिगे ॥ ताका उत्तर — जो, प्रमाणनयनिका अधिगम अभ्यास अपेक्षातौ आपहीतैं कह्या है। अर विना अभ्यास अपेक्षा परतैं कह्या है। तातैं दोष नांही ॥ बहुरि प्रश्न — जो, प्रमाण तौ अंशीकूं ग्रहण करै अरु नय अंशकूं ग्रहण करै सो अंशनितैं जुदा पदार्थ तौ अंशी भासता नाही। अंशनिके समुदायविषैं अंशीकी कल्पना है। एहु कल्पना है सो असत्यार्थ है। ताका उत्तर — प्रथम तौ प्रत्यक्षबुद्धिविषैं अंशी स्थूल स्थिर एक साक्षात् प्रतिभासै है, ताकूं कल्पित कैसै कहिये? बहुरि जो कल्पित होय तौ एककल्पनातैं द्वितीय कल्पना होतै ताका सद्भाव इंद्रियगोचर कैसै रहै? बहुरि कल्पितकै अर्थ क्रियाशक्ति काहेतैं होय? बहुरि कल्पित प्रत्यक्ष ज्ञानमैं स्पष्ट कैसे भासै? तातैं अंशनिका समुदायरूप अंशी सत्यार्थ है कल्पित नांही। अंशअंशिविषैं कथंचित् भेद है कथंचित् अभेद है। ते सर्वथा भेदही तथा अभेदही मानै है तिनिकी मानिवेमैं दूषण आवै है। स्याद्वादीनिकै दूषण नांही। इहां उदाहरण — जैसैं एक मनुष्यजीव नाम वस्तु है; ताके देहविषैं मस्तक, ललाट, कांन, नांक, नेत्र, मुख, होठ, गला, कांधा, भुजा, हस्त, अंगुली, छाती, उदर, नाभी, नितंब, लिंग, जांघ, गोडे, पीडी, टकूंण्या,

पग, पगथली अंगुली आदि अंग हैं, उपांग हैं । तिनिकूं अवयवभी कहिये । अंशभी कहिये । धर्मभी कहिये । बहुरि गोश सावला आदि वर्ण हैं तिनिकूं गुण कहिये । बाल, कुमार, जुवान, बूढा आदि अवस्थाकूं पर्याय कहिये । सो सर्वका समुदाय कथंचिद्भेदाभेदरूप वस्तु है । ताकूं अवयवी कहिये, अंगी कहिये, अंशी कहिये, धर्मी कहिये । ऐसैं अंशीकूं कल्पित कैसै कहिये? कल्पित होगा तौ प्रत्यक्षबुद्धीमैं स्पष्ट कैसै भासेगा? बहुरि अनेक कार्य करनेकी शक्तिरूप जो अर्थक्रियाकी शक्ति कैसै होगी? सर्वथाभेदरूप अंशनिहीमैं पुरुषके करनेयोग्य कार्यकी शक्ति नांही। बहुरि इस मनुष्य नाम अंशीकी कल्पना छूटि अन्यवस्तूकी कल्पना होतैं वह मनुष्यवस्तु उत्तरकाल जैसाका तैसा काहेकूं रहता? तातैं अंशी सत्यार्थ है । सोही प्रमाणगोचर भेदाभेदरूप भासै है। बहुरि नय हैं ते अंशनिकूं ग्रहण करै है। तहां मनुष्य गौणरूप होय है। जब केवल एक अभेदमात्र अंशी नांमा अंशकूं ग्रहण करै तब तौ द्रव्यार्थिकनय है। तहां अभेदपक्ष मुख्य है, भेदपक्ष गौण है। बहुरि जब भेदरूप अंशनिकूं जुदे जुदे ग्रहण करै तहां पर्यायार्थिकनय है । इहां अभेदरूप गौण है, भेदपक्ष मुख्य है। तहांभी किसी एक अंशकूं मुख्य करै तब दूसरा अंश गौण हो है । ऐसै सर्वही जीवादिक पदार्थ प्रमाणनयकरि सत्यार्थ प्रतिभासै हैं । जो सर्वथाएकांतकी पक्ष है सो कल्पना

मिथ्या है। जातैं कल्पनामात्रही है। मिथ्यात्वकर्मके उदयतैं यह निपजै है। वस्तुस्वरूप कल्पित है नांही। बहुरि नय हैं ते श्रुतज्ञानके अंश हैं। मति अवधि मनःपर्यय ज्ञानके अंश नांही। तातैं वचनके निमित्ततैं उपज्या जो परोक्ष श्रुतज्ञान ताहीके विशेष संभवै, प्रत्यक्षके विशेष संभवै नाही। बहुरि प्रमाणनयकरि भया जो अपनां स्वरूपका आकार तथा अन्यपदार्थका आकारसहित निश्चय ताकूं अधिगम कहिये। सो यहू प्रमाणका कथंचित् अभेदरूप फल है ॥

केई वेदांतवादी तथा विज्ञानाद्वैतवादी अपनां स्वरूपका निश्चयकों ई अधिगम कहे हैं। केई परका निश्चयकों ई कहे हैं। तिनिका कहना बाधासहित हैं। केई ज्ञानकों अर्थके आकारसमान होनेकों प्रमाण कहे हैं। ताका अभेदरूप अधिगमकूं फल कहे हैं। सो भी सर्वथा एकांतवादिनिकै बणैं नांही। ज्ञान अर्थसमान होय नांही। ज्ञान तौ ज्ञानही है। अपनी स्वच्छतातैं अन्य अर्थकों जानै है, तहां तदाकारभी कहिये। बहुरि कोई नेत्र आदि इंद्रियनिकूं प्रमाण कहै हैं। तेभी विना समझ्या कहै हैं। अचेतन इंद्रिय प्रमाण कैसैं होय? बहुरि भावइंद्रिय ज्ञानरूप हैं ते प्रमाणके भेदनिमैं हैं ही ॥

बहुरि प्रमाणनयकरि अधिगम कह्या सोभी ज्ञानात्मकके तथा शब्दात्मकके भेदकरि दोय

प्रकार है । तहां ज्ञानात्मक तौ पंचप्रकार ज्ञान है, सो आगे कहसी । बहुरि शब्दात्मक है सो विधिनिपेधस्वरूप है । तहां कोई शब्द तौ प्रश्नके वशतैं विधिविषैंही प्रवर्तैं है । जैसैं समस्तवस्तु अपने द्रव्य क्षेत्र काल भावकरि अस्तित्वस्वरूपही है । तथा कोई शब्द निषेधविषैं प्रवर्तैं है । जैसैं समस्त वस्तु परके द्रव्य क्षेत्र काल भावकरि नास्तित्वस्वरूपही है । तथा कोई शब्द विधिनिषेध दोऊविषैं प्रवर्तैं है । जैसैं समस्त वस्तु अपने तथा परके द्रव्य क्षेत्र काल भावकरि अनुक्रमतैं अस्तिनास्ति स्वरूप है । तथा कोई शब्द विधिनिषेध दोऊकूं अवक्तव्य कहै है । जैसैं समस्त वस्तु अपने वा परके द्रव्य क्षेत्र काल भावकरि एक काल अस्तित्वनास्तित्वस्वरूप है । परंतु एककाल दोऊ कहे जाते नांही, तातैं अवक्तव्यस्वरूप है । तथा कोई शब्द विधिनिषेधकूं क्रमकरि कहै है । एककाल न कह्या जाय है तातैं विधिअवक्तव्य निषेधअवक्तव्य तथा विधिनिषेधअवक्तव्यविषैं प्रवर्तैं है । जैसैं समस्तवस्तु अपने चतुष्टयकरि अस्तित्वरूप है, वक्तव्य है, एककाल स्वपरचतुष्टयकरि अवक्तव्यस्वरूप है । तातैं अस्तिअवक्तव्य ऐसा कहिये । तथा ऐसैही परके चतुष्टयकरि नास्तिस्वरूप वक्तव्य है । एककाल स्वपरचतुष्टयकरि अवक्तव्य है । तातैं नास्तिअवक्तव्य ऐसा कहिये । तथा ऐसेही क्रमकरि अस्तिनास्तिस्वरूपकरि वक्तव्य है । एककाल दोऊकरि अवक्तव्य है ऐसै

अस्तिनास्तिअवक्तव्य ऐसा कहिये। ऐसैं विधिनिषेधके सप्तभंगतैं शब्द वस्तूकों साधै हैं ॥

केई बौद्धमती ऐसै कहै हैं, जो, वस्तूका निजस्वरूप तौ वचनगोचर नांही, प्रत्यक्षगोचर है। तातैं अवक्तव्यही है। सो यहु सर्वथा एकांतकरि युक्त नांही। सर्व वस्तु समानपरिणाम असमानपरिणामरूप हैं। तहां जे समानपरिणाम हैं ते तौ वचनगोचर हैं। बहुरि सर्वथा असमानपरिणाम शुद्धद्रव्यके शुद्ध पर्याय अर गुरुलघुगुणके अविभागप्रतिच्छेदरूप पर्याय है। सो यहु काहु द्रव्यके समान नांही। तातैं वचनगोचर नांही। जातैं वचनका परिणाम तौ संख्यातही है। अरु ए असमानपरिणाम अनंतानंत हैं। तातैं वचनमैं इनिकी संज्ञा वधै नांही। तातैं अवक्तव्यही है। ऐसैं वक्तव्यावक्तव्यरूप वस्तुका स्वरूप है। बहुरि वाक्यविषैं ऐसैंही है ऐसा नियमवचनभी चाहिये। जातैं नियम कह्याविना, वचन कह्याही न कह्यासमान है ॥ अरु नियम कहै अन्यका निषेध होय है। तातैं अपने अर्थका नियम करनेकूं अन्यशब्दका सहाय चाहिये। बहुरि अनेकांतके प्रकाशनेकूं स्यात् शब्दका प्रयोगभी अवश्य चाहिये। जातैं सर्वथा एकांतका निराकरण कथंचित् वचनतैं होय है। सो याका वाचक स्यात् ऐसा निपातशब्द है। सो सर्वनय तथा प्रमाणके वाक्यके आदि कहना। इहां उदाहरण— स्यादस्त्येव जीवादिः स्वद्रव्यक्षेत्रकालभावात्।

स्यान्नास्त्येव जीवादिः परद्रव्यक्षेत्रकालभावात्। स्यादस्तिनास्त्येव जीवादिः क्रमेण स्वपरद्रव्यक्षेत्रकालभावात्। स्यादवक्तव्य एव जीवादिः युगपत् स्वपरद्रव्यक्षेत्रकालभावात्। स्यादस्त्यवक्तव्य एव जीवादिः स्वचतुष्टयाद्युगपत्स्वपरचतुष्टयाच्च। स्यान्नास्त्यवक्तव्य एव जीवादिः परचतुष्टयात् युगपत्स्वपरचतुष्टयाच्च। स्यादस्तिनास्त्यवक्तव्य एव जीवादिः क्रमेण स्वपरचतुष्टयात् युगपत्स्वपरचतुष्टयाच्च। इत्यादि सर्वपदार्थनिके वाक्य जानने ॥

बहुरि प्रमाणवाक्य तौ सकलादेशी है। अरु नयवाक्य विकालदेशी है। सो सकलादेश तौ प्रमाणके आधीन है। बहुरि विकालदेश नयके आधीन है। सो कैसे सो कहिये हैं, सकलादेश है सो अशेषधर्मात्मक जो वस्तु ताहि युगपत् कालादिकरि अभेदवृत्तिकरि अथवा अभेद उपचारकरि कहै हैं। जातैं यह प्रमाणकै आधीन है। बहुरि विकलादेश है सो अनुक्रमकरि भेदोपचारकरि अथवा भेदप्राधान्यकरि कहै है। जातैं यह नयाधीन है। तहां जो आस्तित्व आदि धर्मनिकूं कालादिककरि भेदविवक्षा करै तब एकही शब्दकै अनेक अर्थकी प्रतीति उपजावनेका अभाव है। तातैं क्रमकरि कहै है। बहुरि जो तहां अस्तित्व आदि धर्म कालादिकरि अभेदवृत्तिकरि कहने तब एकही शब्दकरि अनेक धर्मकी प्रतीति उपजावनेकी मुख्यताकरि कहै तहां यौगपद्य है। ते काल आदि कौन?

१ काल, २ आत्मरूप, ३ अर्थ, ४ संबंध, ५ उपकार, ६ गुणिदेश, ७ संसर्ग, ८ शब्द, ऐसे ए आठ हैं। तहां उदाहरण— 'स्याज्जीवादि वस्तु अस्त्येव' ऐसा वाक्य है। याका अर्थ कथंचिज्जीवादि वस्तु है सो अस्तिरूपही है। तहां जो काल अस्तित्वका है सोही काल अवशेष अनंतधर्मका एकवस्तुविषैं है, ऐसैं तौ कालकरि अभेदवृत्ति है। बहुरि जोही वस्तुका अस्तित्वकै तद्गुणपणां आत्मरूप है सोही अनंतगुणनिकाभी है। ऐसैं आत्मरूपकरि अभेदवृत्ति है। बहुरि जोही द्रव्यनाम आधार अस्तित्वका है सोही अन्यपर्यायनिका है। ऐसैं अर्थकरि अभेदवृत्ति है। बहुरि जोही कथंचित् तादात्म्यस्वरूप अभेद भावसंबंध अस्तित्वका है सोही समस्त विशेषनिका है ऐसै संबंधकरि अभेदवृत्ति है। बहुरि जोही आपमैं अनुरक्त करनां उपकार अस्तित्वका है सोही समस्त अन्यगुणनिका है। ऐसै उपकारकरि अभेदवृत्ति है। बहुरि जोही गुणीका देश अस्तित्वका है सोही अन्य गुणनिका है। ऐसै गुणिदेशकरि अभेदवृत्ति है। बहुरि जोही एकवस्तुत्वस्वरूपकरि अस्तित्वका संसर्ग है सोही अन्य समस्तधर्मनिका है ऐसैं संसर्गकरि अभेदवृत्ति है। बहुरि जोही अस्ति ऐसा शब्द अस्तित्वधर्मस्वरूप वस्तूका वाचक है सोही बाकीके अशेषधर्मस्वरूप वस्तूका वाचक है ऐसै शब्दकरि अभेदवृत्ति है। ऐसैं पर्यायार्थिक गौण होतैं द्रव्यार्थिकपणांके प्रधानपणातैं प्राप्त होय है।

बहुरि द्रव्यार्थिक गौणकरि पर्यायार्थिक प्राधान्य होतैं गुणनिकी कालादिक अष्टप्रकारकी अभेदवृत्ति नांही संभवै है। सोही कहिये हैं। क्षणक्षणप्रति औरऔरपणांकी प्राप्ति है। जातैं सर्वका काल भिन्नभिन्न है। नानागुण एकवस्तुविषैं एककाल संभवै नाही। जो संभवै तौ ताके आधाररूप वस्तुकेभी तेतेही भेद होय जाय, तातैं कालकरि भेदवृत्ति है। बहुरि तिनि गुणनिका आत्मरूपभी भिन्न है। अभिन्न होय तो भेद कैसैं कहा जाय? यामैं विरोध है। तातैं आत्मरूपकरि भेदवृत्ति है। बहुरि तिनिका आश्रयभी जुदा जुदाही है। जो जुदा न होय तौ नानागुणका आश्रय वस्तु न ठहरै ऐसे आश्रयकरि भेदवृत्ति है। बहुरि संबंधीके भेदकरि भेद देखिये है। जातैं अनेकसंबंधीनिकरि एकवस्तुविषैं संबंध बणैं नांही तातैं संबंधकरि भेदवृत्ति है। बहुरि तिनि गुणनिकरि कीया उपकार प्रतिनियत जुदा जुदा है। तातैं अनेक हैं। याहीतैं उपकारकरि भेदवृत्ति है। बहुरि गुणीका देश है सो गुणगुणप्रति भेदरूप है। अभेदरूप कहिये तौ भिन्नपदार्थके गुणतैंभी अभेदका प्रसंग आवै। तातैं गुणिदेशतैंभी भेदवृत्ति है। बहुरि संसर्गका संसर्गिप्रति भेद है। जो अभेदही कहिये तौ संसर्गीके भेदका विरोध आवै तातैं संसर्गतैंभी भेदवृत्ति है। बहुरि शब्दके विषयप्रति नानापणां है। सर्वगुणनिका एकही शब्द वाचक होय तौ सर्वपदार्थनिका एकशब्द वाचक ठहरै तब अन्यशब्दकै

निरर्थकपणां आवै । ऐसैं परमार्थतैं अस्तित्वादि गुणनिका एकवस्तुविषैं अभेदका असंभव होतैं कालादिककरि अभेदोपचार कीजिये है । ऐसैं अभेदवृत्ति अभेदोपचार भेदवृत्ति भेदोपचार इनि दोऊनितैं एकशब्द अनंतधर्मात्मक एक जीवादि वस्तुका यहु स्यात् शब्द है सो द्योतक है ॥

इहां प्रश्न— जो, शास्त्रनिमैं तौ स्यात् शब्द वाक्यवाक्यप्रति सुण्या नांही । तुम कैसैं कहौ हौ? जो सर्ववस्तुकौ स्यात् शब्दतैं साधिये। ताका उत्तर— जो, शास्त्रमैं याका प्रयोग जहां नांही है तहां स्याद्वादी अर्थकरि सर्वशब्दनिपरि लगाय ले है। जातैं वस्तुस्वरूप अनेकांतात्मकही है तातैं वस्तुके जाननेंवाले स्यात् शब्दकौं जानिले हैं ऐसैं श्लोकवार्तिकमैं कह्या है । बहुरि इहां अन्य उदाहरण कहिये है ।जैसैं कोई एक मनुष्यनामा वस्तु है सो गुणपर्यायनिके समुदायरूप तौ द्रव्य है । बहुरि याका देहप्रमाण संकोच विस्तार लीये क्षेत्र है । बहुरि गर्भतैं ले मरणपर्यंत याका काल है। बहुरि जेती गुणपर्यायनिकी अवस्था याकै हैं ते भाव हैं । ऐसै द्रव्यादि चतुष्टय यामैं पाईये है । तहां कालादिककरि अभेदवृत्तिकरि कहिये तब जेतैं काल आयुर्बलपर्यंत मनुष्यपणा नामा गुण है, तेतैंही काल अन्य याके सर्वधर्म हैं, ऐसैं कालकरि अभेदवृत्ति । तथा है जोही मनुष्यपणांकै मनुष्यरूप करणां आत्मरूप है, सोही अन्य अनेक गुणनिकै है । ऐसैं आत्मरूपकरि

अभेदवृत्ति है। तथा जोही आधार द्रव्यनामा अर्थ मनुष्यपणाका है सोही अन्य याके पर्यायनिका है ऐसैं अर्थकरि अभेदवृत्ति है। तथा जोही अभिन्नभावरूप तादात्म्यलक्षण संबंध मनुष्यपणाके है, सोही अन्य सर्व गुणनिकै है, ऐसैं संबंधकरि अभेदवृत्ति है। तथा जोही उपकार मनुष्यपणांकरि अपने स्वरूप करणां है, सोही अन्य अवशेषगुणनिकरि कीजिये है, ऐसैं उपकारकरि अभेदवृत्ति है। तथा जोही गुणीका देश मनुष्यपणांका है सोही अन्य गुणनिका है ऐसैं गुणिदेशकरि अभेदवृत्ति है। तथा जोही एक वस्तुस्वरूपकरि मनुष्यपणांका संसर्ग है, सोही अन्य अवशेष धर्मनिका है, ऐसैं संसर्गकरि अभेदवृत्ति है। तथा जोही मनुष्य ऐसा शब्द मनुष्यस्वरूप वस्तूका वाचक है, सोही अन्य अवशेष अनेक धर्मोंका है, ऐसैं शब्दकरि अभेदवृत्ति है ॥ ऐसैं पर्यायार्थिकनयके गौण होते द्रव्यार्थिकनयकी प्रधानतातैं अभेदवृत्ति वर्णै है ॥

बहुरि द्रव्यार्थिक नय गौण होतै पर्यायार्थिक प्रधान करतै कालादिककी अभेदवृत्ति अष्टप्रकार न संभवै है, सोभी कहिये है। क्षणक्षणप्रति मनुष्यपणां और और गुणपर्यायरूप है। तातैं सर्वगुणपर्यायनिका भिन्न काल है। एककाल एकमनुष्यपणांविषैं अनेकगुण संभवै नाही। जो संभवै तौ गुणनिका आश्रयरूप जो मनुष्यनामा वस्तु सो जेते गुणपर्याय है तेते ठहरै। तातैं

कालकरि भेदवृत्ति है। तथा अनेक गुणपर्यायनिकरि कीया उपकारभी जुदा जुदा है । जो एकही मानिये तौ एक मनुष्यपणांही उपकार ठहरै। ऐसै उपकारकरि भेदवृत्ति है। तथा गुणिका देश है सो गुणगुणप्रति भेदरूपही कहिये । जो एकही कहिये तौ मनुष्यपणांहीका देश ठहरै अन्यका न ठहरै तातैं गुणिदेशकरिभी भेदवृत्ति है । तथा संसर्गकाभी प्रतिसंसर्ग गुणपर्यायनितैं भेदही है, एकही होय तौ अन्यका संसर्ग न ठहरे, तातैं संसर्गकरिभी भेदवृत्ति है। तथा शब्दभी सर्वगुणपर्यायनिका जुदा जुदा वाचक है । एक मनुष्यपणां ऐसाही वचन होय तौ सर्वकै एकशब्दवाच्यपणाकी प्राप्ति आवै। ऐसैं मनुष्यपणांनै आदि देकरि सर्वही गुणपर्यायनिकै एक मनुष्यनाम वस्तुविषैं अभेदवृत्तीका असंभव होते भिन्नभिन्न स्वरूपनिकै भेदवृत्ति भेदका उपचार करिये । ऐसैं इनि दोऊ भेदवृत्ति भेदोपचार, अभेदवृत्ति अभेदोपचारतैं एकशब्दकरि एक मनुष्यादि वस्तु अनेकधर्मात्मपणांकूं स्यात्कार है सो प्रगट करनेवाला है ॥

सो याके सप्तभंग हैं सो कैसे उपजे हैं? ताका उदाहरण कहिये हैं । जैसे एक घटनामा वस्तु है सो कथंचित् घट है, कथंचित् अघट है, कथंचित् घट अघट है, कथंचित् अवक्तव्य है, कथंचित् घट अवक्तव्य है, कथंचित् अघट अवक्तव्य है, कथंचित् घट अघट अवक्तव्य है । ऐसे

विधिनिषेधकी मुख्य गौणविवक्षाकरि निरूपण करनां। तहां याकी अपेक्षा प्रगट करिये है । तहां अपने स्वरूपकरि कथंचित् घट है । परके स्वरूपकरि कथंचित् अघट है । तहां घटका ज्ञान तथा घटका अभिधान कहिये संज्ञाकी प्रवृत्तिका कारण जो घटाकार चिन्ह, सो तौ घटका स्वात्मा कहिये स्वरूप है। बहुरि जहां घटका ज्ञान तथा घटका नामकी प्रवृत्तीकूं कारण नांही ऐसा पटादिक, सो परात्मा कहिये परका स्वरूप है । सो अपने स्वरूपका ग्रहण परस्वरूपका त्यागकी व्यवस्थारूपही वस्तूका वस्तुपनां है । जो आपविषैं परते जुदा रहनेका परिणाम न होय तौ सर्व पर घटस्वरूप होय जाय । अथवा परतैं जुदा होतेभी अपने स्वरूपका ग्रहणका परिणाम न होय तौ गदहाके सींगवत् अवस्तु होय। ऐसे ये विधिनिषेधरूप दोय भंग भये, ताके सात कहि लेने ॥ १ ॥

बहुरि नाम स्थापना द्रव्य भावनिविषैं जाकी विवक्षा करिये, सो तौ घटका स्वात्मा है । जाकी विवक्षा न करिये सो परात्मा है । तहां विवक्षितस्वरूपकरि घट है । अविवक्षित स्वरूपकरि अघट है । जो अन्यस्वरूपभी घट होय विवक्षितस्वरूपकरि नहीं होय तौ नामादिकका व्यवहारका लोप होय। ऐसे ये च्यारिनिके दोय दोय भंग होय ॥ २ ॥ अथवा विवक्षित घटशब्दवाच्यसमानाकार जे घट तिनिका सामान्यका जे विशेषाकार घट तिनिविषैं कोई एक विशेष ग्रहण करिये

ताविषैं जो न्यारा आकार है, सो तौ घटका स्वात्मा है, अन्य सर्व परात्मा है । तहां अपना जुदा रूपकरि घट है । अन्यरूपकरि अघट है । जो अन्यरूपकरिभी घट होय तौ सर्व घट एक घटमात्र होय। तब सामान्याश्रय व्यवहारका लोप होय । ऐसै ये दोय भंग भये । इहां जेते विशेष घटाकार होय तेतेही विधिनिषेधके भंग होय ॥ ३ ॥ अथवा तिसही घटविशेपविषैं कालांतरस्थायी होते पूर्व उत्तर कपालादि कुशूलांत अवस्थाका समूह सो घटकै परात्मा । वहुरि ताकै मध्यवर्ती घट सो स्वात्मा । सो तिस स्वात्माकरि घट है । जातैं ताविषैं ताके कर्म वा गुण दीखै है । वहुरि अन्यस्वरूपकरि अघट है । जो कपालादि·कुशूलांत स्वरूपकरिभी घट होय तौ घटअवस्थाविपैंभी तिनिकी प्राप्ति होय । उपजायवा निमित्त तथा विनाशकै निमित्त पुरुषका उद्यम निष्फल होय। तथा अंतरालवर्ती पर्याय घटस्वरूपकरिभी घट न होय तौ घटकरि करनेयोग्य फल न होय। ऐसै ये दोय भंग भये ॥ ४ ॥ अथवा क्षण क्षण प्रति द्रव्यके परिणामकै उपचय अपचय भेदतैं अर्थांतरपना होय है। यातैं ऋजुसूत्रनयकी अपेक्षातैं वर्तमानस्वभावकरि घट है । अतीत अनागत स्वभावकरि अघट है । ऐसैं न होय तौ वर्तमानकीज्यौं अतीत अनागत स्वभावकरिभी घट होय तव एकसमयमात्र सर्वस्वभाव होय । वहुरि अतीत अनागतकीज्यौं वर्तमान स्वभावभी होय तौ वर्तमानघटस्वभावका अभाव होते

घटका आश्रयरूप व्यवहारका अभाव होय । जैसे विनस्या तथा नांही उपज्यां घटकै घटका व्यवहारका अभाव है तैसे यहभी ठहरै ऐसे दोय भंग यह भये ॥ ५ ॥ अथवा तिस वर्तमान घटविषैं रूपादिकका समुदाय परस्पर उपकार करनेवाला है । ताविषैं पृथुबुध्नोदरादि आकार है सो घटका स्वात्मा है । अन्य सर्व परात्मा है । तिस आकार तौ घट है । अन्य आकारकरि अघट है । घटका व्यवहार तिसही आकारतैं है । तिस विना अभाव है । तो पृथुबुध्नोदराद्याकारकरिभी घट न होय तौ घट काहेका ? । बहुरि जो इतर आकारकरि घट होय तौ आकारशून्यविषैंभी घटव्यवहारकी प्राप्ति आवै । ऐसे ये दोय भंग हैं ॥ ६ ॥ अथवा रूपादिकका संनिवेश जो रचनाविशेष आकार तहां नेत्रकरि घट ग्रहण होय है । ता व्यवहारविषैं रूपको प्रधानकरि घट ग्रहण कीजिये तहां रूप घटका स्वात्मा है । बहुरि वामैं रसादिक हैं ते परात्मा हैं । सो घटरूपकरि तौ घट है रसादिककरि अघट है । जातैं ते रसादिक न्यारे न्यारे इंद्रियनिकरि ग्राह्य हैं । जो नेत्रकरि घट ग्रहण कीजिये है तैसे रसादिकभी ग्रहण करै तौ सर्वकै रूपपणांका प्रसंग आवै तौ अन्य इंद्रियनिकी कल्पना निरर्थक होय । बहुरि रसादिककीज्यों रूपभी घट ऐसा नेत्र नांही ग्रहण करै तौ नेत्रगोचरता या घटमैं न होय । ऐसे ये दोय भंग भये ॥ ७ ॥ अथवा शब्दके भेदतैं अर्थका भेद अवश्य है । इस न्यायकरि घट कुट शब्दनिकै अर्थभेद है ।

तातैं घटनेतैं तौ घट नाम है । बहुरि कुटिलतातैं कुट नाम है । तातैं तिस क्रियारूप परिणतिके समयही तिस शब्दकी प्रवृत्ति हो है । इस न्यायतैं घटनक्रियाविषैं कर्तापणां है सोही घटका स्वात्मा है। कुटिलतादिक परात्मा है । तहां घटक्रियापरिणतिक्षणहीमैं घट है । अन्यक्रियामैं अघट है । जो घटनक्रियापरिणति मुख्यकरिभी घट न होय तौ घटव्यवहारकी निवृत्ति होय । बहुरि जो अन्यक्रिया अपेक्षाभी घट होय तौ तिस क्रियाकरि रहित जे पटादिक तिनिविषैंभी घटशब्दकी वृत्ति होय । ऐसे ये दोय भंग भये ॥ ८ ॥ अथवा घट शब्द उच्चारते उपज्या जो घटकै आकार उपयोग ज्ञान सो तौ घटका स्वात्मा है । अरु बाह्य घटाकार है सो परात्मा है । बाह्य घटके अभाव होतैंभी घटका व्यवहार है । सो घट उपयोगाकारकरि घट है । बाह्याकारकरि अघट है । जो उपयोगाकार घटस्वरूपकरिभी अघट होय तौ वक्ता श्रोताके हेतुफलभूत जो उपयोगाकार घटके अभावतैं तिस आधीन व्यवहारका अभाव होय । बहुरि जो उपयोगतैं दूरिवर्ती जो बाह्य घटभी घट होय तौ पटादिककैभी घटका प्रसंग होय । ऐसे ये दोय भंग भये ॥ ९ ॥ अथवा चैतन्यशक्तिका दोय आकार हैं । एक ज्ञानाकार है एक ज्ञेयाकार है । तहां ज्ञेयतैं जुड्या नांही ऐसा आरसाका विनां प्रतिबिंब आकारवत् तौ ज्ञानाकार है । बहुरि ज्ञेयतैं जुड्या प्रतिबिंबसहित आरसका आकारवत

ज्ञेयाकार है। तहां घट ज्ञेयाकाररूप ज्ञान तो घटका स्वात्मा है। घटका व्यवहार याहीतैं चलै है। बहुरि विना घटाकार ज्ञान है सो परात्मा है। जातैं सर्वज्ञेयतैं साधारण है। सो घट ज्ञेयाकारकरि तौ घट है। विना घटाकार ज्ञानकरि अघट है। जो ज्ञेयाकारकरिभी घट न होय तौ तिसके आश्रय जो करणेयोग्य कार्य है ताका निरास होय। बहुरि ज्ञानाकारकरिभी घट होय तौ पटादिकका आकारभी ज्ञानका आकार है सोभी घट ठहरै। ऐसै ये दोय भंग हैं॥ १० ॥

ऐसैही इनके पांच पांच भंग और कहिये तब सात सात भंग होय, सोभी दिखाईये हैं। एक घट तथा अघट दोय कहे ते परस्पर भिन्न नांही हैं। जो जुदे होय तो एक आधारपणांकरि दोऊके नामकी तथा दोऊके ज्ञानकी एक घट वस्तुविर्षे वृत्ति न होय, घटपटवत्। तातैं परस्पर अविनाभाव होते दोऊमैं एकका अभाव होते दोऊका अभाव होय। तब इसके आश्रय जो व्यवहार ताका लोप होय। तातैं यहु घट है सो घट अघट दोऊ स्वरूप है। सो अनुक्रमकरि वचनगोचर है ॥ ३ ॥ बहुरि जो घट अघट दोऊ स्वरूप वस्तुकूं घटही कहिये तौ अघटका ग्रहण न होय। अघटही कहिये तौ घटका ग्रहण न होय। एकही शब्दकरि एककाल दोऊ कहे न जाय तातैं अवक्तव्य है ॥ ४ ॥ बहुरि घटस्वरूपकी मुख्यताकरि कह्या जो वक्तव्य तथा

युगपत् न कह्या जाय ताकी मुख्यताकरि घट अवक्तव्य है ॥ ५ ॥ तैसैं कह्या प्रकारकरि अघट अवक्तव्य है ॥ ६ ॥ बहुरि तैसैं क्रमकरि दोऊ कहे जाय युगपत् कहे न जाय ताकरि घट अघट अवक्तव्य है ॥ ७ ॥ ऐसैं यहु सप्तभंगी सम्यग्दर्शनादिक तथा जीवादिक पदार्थनिविषैं द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिक नयका मुख्यगौणभेदकरि लगाइये तब अनंत वस्तु तथा अनंत धर्मके परस्पर विधिनिषेधतैं अनंत सप्तभंगी होय हैं। इनिहीका सर्वथा एकांत अभिप्राय होय तब मिथ्यावाद है ॥

बहुरि वचनरूप प्रमाणसप्तभंगी तथा नयसप्तभंगी होय है ॥ इहां प्रमाणविषय तौ अनंतधर्मात्मक वस्तु है । तहां एकही वस्तुका वचनकै सर्वधर्मनिकी अभेदवृत्तिकरि तथा अन्यवस्तुके अभेदके उपचारकरि प्रमाणसप्तभंगी होय है । बहुरि नयका विषय एकधर्म है तातैं तिस धर्मकी भेदवृत्तिकरि तथा अन्यनयका विषय जो अन्यधर्म ताके भेदके उपचारकरि नयसप्तभंगी होय है । इहां कोई पूछै, अनेकांतही है ऐसैभी एकांत आवै है तब अनेकातही कैसे रह्या? ताका उत्तर— यहु सत्य है, जो अनेकांत है सोभी अनेकांतही है। जातैं प्रमाणवचनकरि तौ अनेकांतही है। नयवचनकरि एकांतही है। ऐसैं एकांतही सम्यक् है जातैं प्रमाणकी सापेक्षा भई। बहुरि जहां निरपेक्ष एकांत है सो मिथ्या है। इहां कोई कहै, अनेकांत तौ छलमात्र है। पैलेकी युक्ति बाधनेकूं छलका अवलंबन है । तहां

कहिये छलका लक्षण तौ अर्थका विकल्प उपजाय पैलेका वचन खंडन करना है। सो अनेकांत ऐसैं नाहीं। जातैं दोय धर्मकी प्रधान गौणकी अपेक्षाकरि वस्तु जैसैं है तैसैं कहै है, यामैं छल कहा? बहुरि कोई कहै, दोय पक्ष साधना तौ संशयका कारण है। ताकूं कहिये, जो, संशयका स्वरूप तौ दोऊ पक्षका निश्चय न होय तहां है। अनेकांतविषैं तौ दोऊ पक्षके विषय प्रत्यक्ष निश्चित हैं। तातैं संशयके कारण नांही। बहुरि विरोधभी नांही। जातैं नयकरि ग्रहे जे विरुद्धधर्म तिनिका मुख्यगौणकथनके भेदतैं सर्वथा भेद नांही है। जैसैं एकही पुरुषविषैं पितापणां पुत्रपणां इत्यादिक विरुद्धधर्म हैं, तिनिके कहनेकी मुख्यगौणविवक्षाकरि विरोध नांही तैसैं इहांभी जाननां॥

आगैं प्रमाणनयनिकरि जाणे जे जीवादिक पदार्थ, तिनिके अधिगमका अन्य उपाय दिखावनेकै अर्थि सूत्र कहे हैं—

॥ निर्देशस्वामित्वसाधनाधिकरणस्थितिविधानतः ॥ ७ ॥

याका अर्थ— निर्देश, स्वामित्व, साधन, अधिकरण, स्थिति, विधान इनि छह अनुयोगकरिभी सम्यग्दर्शन आदि तथा जीव आदि पदार्थनिका अधिगम होय है॥ तहां निर्देश तौ स्वरूपका कहनां। स्वामित्व कहिये अधिपतिपनां। साधन कहिये उत्पत्तिका कारण। अधिकरण

कहिये अधिष्ठान आधार । स्थिति कहिये कालका प्रमाण । विधान कहिये प्रकार । ऐसे इनिका द्वंद्वसमासकरि बहुवचनरूप करण अर्थ प्रमाणनयकीज्यों जाननां । संक्षेपतैं तौ अधिगमका उपाय प्रमाणनय कहे । बहुरि मध्यमस्थानतैं शिष्यके आशयके वशकरि इनि निर्देश आदि अनुयोगनिकरि कहना । तहां कहा वस्तु है? कौनकै है? काहेकरि है? कौनविषैं है, कितेककाल है? कै प्रकार है? ऐसे छह प्रश्न होतैं, इनिका उत्तर कहनां ते निर्देशादिक हैं। उदाहरण— सम्यग्दर्शन कहा है? ऐसैं प्रश्न होतैं तत्त्वार्थश्रद्धान है सो सम्यग्दर्शन है। अथवा याके नाम, स्थापना, द्रव्य, भाव कहने सो निर्देश है। बहुरि सम्यग्दर्शन कौनकै है? ऐसा प्रश्न होतैं सामान्यकरि तौ जीवकै है ऐसा कहना ॥

बहुरि विशेषकरि कहना तब गतिके अनुवादकरि नरकगतिविषैं सर्वपृथ्वीनिमैं नारकी जीवनिकै पर्याप्तककै औपशमिक क्षायोपशमिक है । बहुरि पहली पृथ्वीविषैं पर्याप्तक अपर्याप्तक जीवनिकै क्षायिक अरु क्षायोपशमिक है। बहुरि तिर्यग्गतिविषे तिर्यंच पर्याप्तककै औपशमिक होय है। बहुरि क्षायिक क्षायोपशमिक पर्याप्तक अपर्याप्तक दोऊनिहीकै होय है । बहुरि तिर्यंचणीकै क्षायिक नांही है । औपशमिक क्षायोपशमिक पर्याप्तककैही होय है । अपर्याप्तककै नांही होय है। ऐसेही मनुष्यगतिविषैं पर्याप्तक अपर्याप्तककै क्षायिक क्षायोपशमिक है। बहुरि औपशमिक पर्याप्तकहीकै

होय है। वहुरि मनुष्यणीकै तीनूही हैं। सो पर्याप्तकहीकै है अपर्याप्तककै नांही है। बहुरि याकै क्षायिकसम्यक्त्व भाव वेदकरिही है। बहुरि देवगतिविषै देव पर्याप्तक अपर्याप्तकनिकै तीनूंही है। तहां औपशमिक अपर्याप्तककै चारित्रमोहका उपशमकरि उपशमश्रेणीविषैं मरण करै तिनिकै द्वितीयोपशम होय। यह प्रथमोपशम अपर्याप्तमैं काहूकैही न होय है। बहुरि भवनवासी व्यंतर ज्योतिषी देवनिकै अरु इनिकी देवांगनाकै अर सौधर्म ईशानकी कल्पवासिनी देवांगनानिकै क्षायिक तौ होयही नांही। अरु इनिकै पर्याप्तकनिकै औपशमिक क्षायोपशमिक है॥

बहुरि इंद्रियानुवादकरि संज्ञी पंचेंद्रियजीवनिकै तीनूंही हैं। अन्यकै नाही है॥ बहुरि कायके अनुवादकरि त्रसकायिकजीवनिकै तीनूंही हैं। अन्यकै नांही हैं॥ बहुरि योगके अनुवादकरि मन वचन काय तीनूंही योगकै तीनूंही हैं। अयोगीनकै क्षायिकही है॥ बहुरि वेदके अनुवादकरि तीनूंही वेदवालेकै तीनूंही हैं। वेदरहितकै औपशमिक क्षायिकही है॥ बहुरि कषायके अनुवादकरि क्रोध मान माया लोभ च्यार्यों कषायवालेकै तीनूंही हैं। कषायरहितकै औपशमिक क्षायिक हैं॥ बहुरि ज्ञानके अनुवादकरि मति आदि पांचूही ज्ञानवालेकै सामान्यकरि तीनूंही हैं। केवलज्ञानीनिकै क्षायिकही है॥ बहुरि संयमके अनुवादकरि सामयिकच्छेदोपस्थापनासंयमीनिकै तीनूंही हैं।

परिहारविशुद्धिवालेकै औपशमिक नांही है, अन्य दोय हैं। सूक्ष्मसांपराय यथाख्यात संयमीनिकै औपशमिक क्षायिक है। संयतासंयतकै अरु असंयतके तीनूंही हैं ॥ बहुरि दर्शनके अनुवादकरि चक्षु अचक्षु अवधिदर्शनवालेकै तीनूंही हैं। केवलदर्शनवालोंकै क्षायिकही है ॥ लेश्याके अनुवादकरि छहू लेश्यावालोंकै तीनूं होय हैं। लेश्यारहितकै क्षायिकही है ॥ बहुरि भव्यानुवादकरि भव्यकै तीनूंही हैं। अभव्यकै नांही है ॥ बहुरि सम्यक्त्वके अनुवादकरि जहां जो सम्यग्दर्शन तहां सोही जाननां ॥ बहुरि संज्ञीके अनुवादकरि संज्ञीनिकै तीनूंही हैं। असंज्ञीनिकै नांही है। दोऊनितैं रहितकै क्षायिकही है ॥ आहारकके अनुवादकरि आहारकनिकै तीनूंही हैं। अनाहारकनिकै छद्मस्थकै तीनूंही हैं। केवली समुद्घातसहितकै क्षायिकही है ॥ ऐसै चौदह मार्गणाभेदकरि सम्यग्दर्शनका स्वामित्व कह्या ॥

बहुरि सम्यग्दर्शन काहेकरि उपजै है? ऐसैं पूछै याका साधन कहै हैं ॥ तहां साधन दोय प्रकारका है। अभ्यंतर, बाह्य। तहां अभ्यंतर तौ दर्शनमोहकर्मका उपशम क्षय क्षयोपशम ये तीन हैं। बहुरि बाह्य नारकी जीवनिकै तीसरी पृथिवीताांई तौ कोई जीवकै जातिस्मरण है, कोईकै धर्मका श्रवण है, कोईकै तहांसंबंधी वेदनादुःख है। बहुरि चवथी पृथिवीतैं लगाय सातमीतांई जातिस्मरण

अरु वेदनाका अनुभव ये दोयही कारण हैं । वहुरि तिर्यंचनिकै कोईकै जातिस्मरण है, कोईकै धर्मश्रवण है, कोईकै जिनबिंबका दर्शन है। वहुरि मनुष्यनिकैभी तैसेंही है। वहुरि देवनिकै कोईकै जातिस्मरण है । कोईकै धर्मश्रवण है । कोईकै तीर्थंकरकेवलीनिका कल्याणिकादिकी महिमाका दर्शन है। कोईकै देवनिकी ऋद्धीका देखना है, सो आनतकै पहली सहस्रारस्वर्गताईं है । वहुरि आनत प्राणत आरण अच्युतनिकै देवऋद्धिदर्शनविनां अन्य तीन कारण हैं। वहुरि नवग्रैवेयकवासीनिकै केईकै जातिस्मरण है, केईकै धर्मश्रवण है । वहुरि अनुदिश अनुत्तर विमानवासीनिकै यहु कल्पना नाही है। तहां सम्यग्दर्शनवालेही उपजै हैं ॥

वहुरि सम्यग्दर्शनका अधिकरण कहा है? ऐसैं पूछे कहै हैं। अधिकरण दोय प्रकार है। बाह्य अभ्यंतर। तहां अभ्यंतर तौ स्वस्वामिसंबंधकै योग्य आत्माही है। जातैं कारकनिकी प्रवृत्ति विवक्षातैं है। वहुरि बाह्य अधिकरण एक राजू चोडी चोदा राजू उंची लोकनाडी है। सम्यग्दर्शन त्रसनाडीहीमैं पाईए है॥ वहुरि सम्यग्दर्शनकी स्थिति केती है? ऐसैं पूछै, कहै हैं। औपशमिककी जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्तकी है। क्षायिककी संसारी जीवकै जघन्य अंतर्मुहूर्तकी, उत्कृष्ट तेतीस सागर अर अंतर्मुहूर्त अधिक आठ वर्ष घाटि दोय कोडि पूर्व अधिक है। अरु मुक्तजीवकै सादि अनंत काल है ।' वहुरि

क्षायोपशमिककी जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट छ्यासठि सागरोपमकी है ॥ बहुरि सम्यग्दर्शन केते प्रकार है? ऐसे पूछे कहे हैं। तहां सामान्यतैं तौ सम्यग्दर्शन एक है। बहुरि निसर्गज अधिगमज भेदतैं दोय प्रकार है। बहुरि औपशमिक-क्षायिक-क्षायोपशमिक-भेदतैं तीन प्रकार है। ऐसे शब्दतैं तौ संख्यातभेत है॥ बहुरि अर्थतैं असंख्यात तथा अनंत भेद हो है। ते श्रद्धाता श्रद्धान करनेयोग्य वस्तुके भेदतैं जानने॥ ऐसैं विधान कह्या॥ ऐसैं निर्देशादिककी विधि ज्ञानचारित्रविषैं बहुरि जीव आदि पदार्थनिविषैं आगमके अनुसार लगावणी॥

इहां विशेष कहिये हैं। ये निर्देशादिक श्रुतप्रमाणके विशेष व्यवहार अशुद्धद्रव्यार्थिककूं कह्या है। सो शब्दात्मक तथा ज्ञानात्मक दोऊही प्रकार जाननें। इनितैं अधिगम जीवादिकका होय है॥ बहुरि कोई अन्यवादी कहै — वस्तुका स्वरूप तौ वचनगोचर नांही, निर्देश काहेका करिये? ताकूं कहिये— यह तेरा कहना सत्य है की नाही? जो कहेगा सत्य है तौ वस्तूका कहनाभी सत्य है। बहुरि कहैगा मेरा कहनाभी असत्य है, तौ काहेकूं कहै। असत्यकूं कौन अंगीकार करैगा?। बहुरि कोई वादी कहै, काहूकै काहूका संबंध नाही, तातैं कोईका कोई स्वामी नांही, तातैं स्वामित्व कहना अयुक्त है। ताकूं कहिये— जो, संबंध न होय तौ सर्वव्यवहारका लोप होय। तातैं

कथंचित् संबंध प्रमाणसिद्ध है । तहां द्रव्य क्षेत्र काल भावकी प्रत्यासत्ति कहिये निकटताका विशेष है, सो संबंध है। तहां कोई पर्यायके कोई पर्यायकरि समवायतैं निकटता है । ताकूं द्रव्यप्रत्यासत्ति कहिये। जैसैं स्मरणके अर अनुभवके एक आत्माविषैं समवाय है। ऐसैं न होय तौ जाका अनुभव पूर्व होय ताहीका स्मरण कैसैं होय? बहुरि बुगलाकी पंक्तीकै अर जलकै क्षेत्रप्रत्यासत्ति है । बहुरि सहचर जे सम्यग्दर्शन ज्ञानसामान्य तथा शरीरविषैं जीव अर स्पर्शविशेष तथा पहली पीछै उदय होय ऐसे भरणी कृत्तिका नक्षत्र तथा कृत्तिका रोहिणी नक्षत्र इनिकै कालप्रत्यासत्ति है । तथा गऊ गवयका एकरूप तथा केवलीसिद्धके केवलज्ञान एकस्वरूपपणां ऐसे भावप्रत्यासत्ति है ॥ सो यहु प्रत्यासत्ति है, सोही संबंध है । यामैं बाधा नांही । तातैं जो संबंध है सोही स्वामीपणांकी सिद्धि करै है । बहुरि यहु संबंध है सोही कार्यकारणभावकी सिद्धि करै है । ऐसैं न होय तौ मोक्षका उपायादिक सर्वव्यवहारका लोप होय। तातैं साधनभी प्रमाणसिद्ध है॥

बहुरि आधार-आधेयभाव द्रव्यगुणादिकका प्रसिद्धही है। बहुरि स्थिति है सोभी प्रमाणसिद्ध है। सर्वथा क्षणस्थायीही तत्त्वकूं माने सर्वव्यवहारका लोप होय। ऐसैंही विधान प्रमाणसिद्ध है । जो एकप्रकारही वस्तु मानिये तौ प्रत्यक्ष अनेक वस्तु है ते कैसे लोप करिये? अर प्रत्यक्षकूं असत्य

मानिये तब शून्यताका प्रसंग आवै । तातैं निर्देश आदिकरि जीव आदि पदार्थनिका अधिगम करनां ॥ इहां उदाहरण— निश्चय व्यवहार तौ नय, अरु दोऊ युगपत् प्रमाण इनिकरि करणां, तहां निश्चयनय तौ इहां एवंभूतकूं कह्या है । बहुरि व्यवहार अशुद्ध द्रव्यार्थिककूं कह्या है । तहां निश्चयनयतैं तौ अनादिपारिणामिक जो चैतन्यरूप जीवतत्त्व, ताकरि परिणमता होय, ताकूं जीव कहिये । बहुरि व्यवहारनयकरि औपशमिक आदि च्यारि भावस्वरूप जीवकूं कहै हैं । बहुरि निश्चयतैं तौ अपने चैतन्य परिणामका स्वामी है ॥ व्यवहारतैं च्यार्यों भावनिका स्वामी है । बहुरि निश्चयतैं तौ जीवत्वपरिणामका साधन है । व्यवहारतैं च्यार्योंही भावनिका साधन है । बहुरि निश्चयतैं अपने प्रदेशनिकै आधार है । व्यवहारतैं शरीरकै आधार है । बहुरि निश्चयतैं जीवन समयस्थिति है । व्यवहारतैं दोय समय आदि स्थिति है तथा अनादि सांत स्थिति है । बहुरि निश्चयतैं अनंतविधान है । व्यवहारतैं नारक आदि संख्यात असंख्यात अनंत विधान है । बहुरि प्रमाणतैं दोऊ नयका समुदायरूप स्वभाव है । इत्यादि जीवादि पदार्थनिविषैं आगमतैं अविरोध निर्देशादिका उदाहरण जाननां ॥

आगै, कह्या इनिहीकरि जीवादिकका अधिगम होय है, कि औरभी अधिगमका उपाय है? ऐसैं पूछैं कहै हैं कि औरभी है, ऐसा सूत्र कहै हैं—

## ॥ सत्सङ्ख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभावाल्पबहुत्वैश्च ॥ ८ ॥

याका अर्थ — सत, संख्या, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अंतर, भाव, अल्पबहुत्व इनि आठ अनुयोगनिकरिभी जीवादिक पदार्थनिका अधिगम होय है ॥ तहां सत् ऐसा आस्तित्वका निर्देश है। सत् शब्द प्रशंसादिकवाचीभी है, सो इहां न लेणां। बहुरि संख्या भेदनिकी गणना है। क्षेत्र निवासकूं कहिये सो वर्तमानकालका लेणा। स्पर्शन त्रिकालगोचर है। बहुरि काल निश्चयव्यवहारकरि दोयप्रकार है, ताका निर्णय आगै कहसी। बहुरि अंतर विरहकालकूं कहिये। भाव औपशमिक आदि स्वरूप है। अल्पबहुत्व परस्पर अपेक्षाकरि थोरा घणां विशेषकी प्रतिपत्ति करनां। इन आठ अनुयोगनिकरि सम्यग्दर्शनादिक बहुरि जीवादिक पदार्थनिका अधिगम जाननां ॥ इहां प्रश्न— जो, पहले सूत्रमैं निर्देशका ग्रहण है ताहीतैं सत्का ग्रहण सिद्ध भया। बहुरि विधानके ग्रहणतैं संख्याकी प्राप्ति भई। अधिकरणके ग्रहणतैं क्षेत्रका अर स्पर्शनका ज्ञान होय है। स्थितिके ग्रहणतैं कालका ग्रहण आया। भावका ग्रहण नामादि निक्षेपविषैं हैही। फेरि इनिका ग्रहण इन सूत्रमैं कौन अर्थि किया? ताका समाधान आचार्य कहै हैं— जो, यह तौ सत्य है। पहले सूत्रतैं सिद्ध तौ होय है। परंतु तत्त्वार्थका उपदेश भेदकरि दीजिये है। सो शिष्यके आशयतैं है। जातैं केई शिष्य तौ

संक्षेपरुचिवाले हैं थोरेमें बहुत समझे । बहुरि केई शिष्य विस्ताररुचिवाले हैं, बहुत कहै समझैं। बहुरि केई शिष्य मध्यमरुचिवाले हैं, बहुतसंक्षेपतैंभी नाही समझैं बहुताविस्तार कीयेभी नाही समझैं। बहुरि सत्पुरुषनिकै कहनेका प्रयास है सो सर्वही प्राणीनिके उपकारकै अर्थ है । यातैं अधिगमका उपाय भेदकरि कह्या है। जो ऐसैं न कहै तौ प्रमाणनयनिकरिही अधिगमकी सिद्धि हो है। अन्य कहना निष्प्रयोजन ठहरै। तातैं भेदकरि कहनां युक्त है ॥

तहां जीवद्रव्यकूं आश्रयकरि सत आदि अनुयोग द्वार निरूपण करिये हैं। जीव हैं ते चौदह गुणस्थाननिविषैं व्यवस्थित हैं । तिनिके नाम— १ मिथ्यादृष्टि । २ सासादनसम्यग्दृष्टि । ३ सम्यङ्मिथ्यादृष्टि । ४ असंयतसम्यग्दृष्टि । ५ संयतासंयत । ६ प्रमत्तसंयत । ७ अप्रमत्तसंयत। ८ अपूर्वकरण गुणस्थानविषैं उपशमक क्षपक । ९ अनिवृत्ति बादर सांपरायस्थानविषैं उपशमक क्षपक । १० सूक्ष्मसांपरायस्थानविषैं उपशमक क्षपक । ११ उपशांतकषाय वीतराग छद्मस्थ । १२ क्षीणकषाय वीतरागछद्मस्थ । १३ सयोगकेवली । १४ अयोगकेवली । ऐसै चौदह गुणस्थान जानने । बहुरि इनिकूं जीवसमास संज्ञाभी कही है । सो इनिके निरूपणाके अर्थि चौदह मार्गणास्थान जानने। तिनिके नाम— गति ४। इंद्रिय ५। काय ६। योग १५। वेद ३। कषाय

२५ । ज्ञान ८ । संयम ७ । दर्शन ४ । लेश्या ६ । भव्य २ । सम्यक्त ६ । संज्ञी २ । आहारक २ ऐसै ॥

तहां सत्प्ररूपणा दोय प्रकार है । सामान्यकरि, विशेषकरि । तहां सामान्यकरि तौ गुणस्थानविषैं कहिये । विशेषकरि मार्गणाविषैं कहिये । तहां प्रथमही सामान्यकरि तौ मिथ्यादृष्टि सत्रूप है । सासादनसम्यग्दृष्टि सत्स्वरूप है । ऐसैं चौदहही गुणस्थान सत्स्वरूप कहने । बहुरि विशेषकरि गतिके अनुवादकरि नरकगतिविषैं सर्व पृथिवीनिविषैं आदिके च्यारि गुणस्थान हैं । बहुरि तिर्यंच गतिविषैं च्यारि आदिके संयतासंयतकरि अधिक ऐसैं पांच हैं । मनुष्यगतिविषैं चौदहही हैं । देवगतिविषैं नरकवत् च्यारि हैं ॥

बहुरि इंद्रियके अनुवादकरि एकेंद्रियतैं लगाय चतुरिंद्रियपर्यंत एक मिथ्यादृष्टिगुणस्थान है । पंचेंद्रियविषैं चौदहही हैं ॥

बहुरि कायके अनुवादकरि पृथिवीकाय आदि वनस्पतिपर्यन्त पांच स्थावरकायविषैं एक मिथ्यादृष्टिगुणस्थानही है । त्रसकायविषैं चौदहही हैं ॥

योगके अनुवादकरि मन वचन काय तीनूंही योगविषैं तेरह गुणस्थान हैं । तातैं आगैं चौदहवा अयोगकेवलीमैं योग नांही है ॥

वेदके अनुवादकरि तीनूंही वेदनिमें मिथ्यादृष्टितें लगाय अनिवृत्तिबादरतांई नव गुणस्थान हैं। वेदरहित गुणस्थान अनिवृत्तिबादरतें लगाय अयोगकेवलीपर्यंत छह गुणस्थान हैं। इहां अनिवृत्ति बादरसांपरायके छह भाग कीये। तहां तीन भाग आदिकैमें वेद है। अंतके तीन भाग वेदरहित। तातें दोऊ जायगा गिण्या॥

कषायके अनुवादकरि क्रोध-मान-मायाविषें तौ मिथ्यादृष्टि आदि अनिवृत्तिबादरसांपरायतांई नव गुणस्थान हैं। लोभ कषायविषें तेही सूक्ष्मसांपराय अधिक दश गुणस्थान हैं। बहुरि कषायरहित उपशांतकषायतें लगाय अयोगकेवलीतांई च्यारि गुणस्थान हैं॥

ज्ञानके अनुवादकरि मति-अज्ञान, श्रुत-अज्ञान विभंग इनि तीनविषें मिथ्यादृष्टि सासादनसम्यग्दृष्टि हैं। मति श्रुत अवधि इनि तीन ज्ञाननिविषें असंयतसम्यग्दृष्टि आदि क्षीणकषायपर्यंत नव गुणस्थान हैं। मनःपर्यय ज्ञानविषें प्रमत्तसंयत आदि क्षीणकषायपर्यंत सात गुणस्थान हैं। केवलज्ञानविषें सयोगकेवली अयोगकेवली दोय गुणस्थान हैं॥

संयमके अनुवादकरि संयमी तौ प्रमत्त आदि अयोगकेवलीतांई। तहां सामयिक छेदोपस्थापनशुद्धि संयमी तौ प्रमत्तसंयत आदि अनिवृत्तिबादरसांपराय गुणस्थानतांई च्यारि हैं। परिहारविशुद्धिसंयमी

अप्रमत्त है, प्रमत्तसंयतभी है। सूक्ष्मसांपरायशुद्धिसंयमी एक सूक्ष्मसांपरायस्थानही है। यथाख्यातविहारशुद्धिसंयमी उपशांतकषाय आदि अयोगकेवलीतांई च्यारि गुणस्थान हैं। संयतासंयत एक संयतासंयत गुणस्थानविषैंही है। असंयत, मिथ्यादृष्टि आदि च्यारि गुणस्थान आदिकेविषैंही है॥

दर्शनके अनुवादकरि चक्षुअचक्षु दर्शनविषैं मिथ्यादृष्टि आदि क्षीणकषायपर्यंत बारह गुणस्थान हैं। अवधिदर्शनविषैं असंयतसम्यग्दृष्टि आदि क्षीणकषायपर्यंत नव गुणस्थान हैं। केवलदर्शनविषैं सयोगकेवली अयोगकेवली हैं॥

लेश्याके अनुवादकरि कृष्ण नील कापोत लेश्याविषैं मिथ्यादृष्टि आदि असंयत सम्यग्दृष्टीपर्यन्त हैं। तेज पद्मलेश्याविषैं मिथ्यादृष्टि आदि अप्रमत्तपर्यन्त सात हैं। शुक्ललेश्याविषैं मिथ्यादृष्टि आदि सयोगकेवलीपर्यंत तेरह हैं। लेश्यारहित अयोगकेवली है॥

भव्यके अनुवादकरि भव्यविषैं चौदहही हैं। अभव्यविषैं आदिका एकही है। सम्यक्त्वके अनुवादकरि क्षायिकसम्यक्त्वविषैं असंयतसम्यग्दृष्ट्यादि अयोगकेवलीपर्यंत ग्यारह हैं। क्षायोपशमिकसम्यक्त्वविषैं असंयतसम्यग्दृष्ट्यादि अप्रमत्तपर्यंत च्यार हैं। औपशमिकसम्यक्त्वविषैं असंयतसम्यग्दृष्टि आदि उपशांत कषायपर्यंत आठ हैं। सासादनसम्यग्दृष्टि सम्यग्मिथ्यादृष्टि मिथ्यादृष्टि अपने अपने गुणस्थान हैं॥

संज्ञीके अनुवादकरि संज्ञीकेविषैं आदितैं लगाय बारह गुणस्थान हैं। असंज्ञीकेविषैं एक मिथ्यादृष्टिही है। दोऊतैं रहित सयोगकेवली अयोगकेवली है॥

आहारकके अनुवादकरि आहारकविषैं मिथ्यादृष्टि आदि सयोगकेवलीपर्यंत तेरह हैं। अनाहारकविषैं विग्रहगतिविषैं मिथ्यादृष्टि सासादनसम्यग्दृष्टि असंयतसम्यग्दृष्टि ए तीन गुणस्थान हैं। समुद्घातसहित सयोगकेवली है अर अयोगकेवली है। बहुरि सिद्धपरमेष्ठी हैं ते अतीतगुणस्थान हैं। ऐसैं सत्की प्ररूपणा तौ कही ॥

अब संख्याप्ररूपणा कहिये हैं। सो भेदनिके गणनाकूं संख्या कहिये हैं। सो दोय प्रकार। सामान्यकरि गुणस्थानविषैं, विशेपकरि मार्गणानिविषैं। तहां सामान्यकरि मिथ्यादृष्टि जीव तौ अनंतानंत हैं। सासादनसम्यग्दृष्टि सम्यङ्मिथ्यादृष्टि असंयतसम्यग्दृष्टि संयतासंयत पल्यके असंख्यातवै भागपरिमाण हैं। प्रमत्तसंयत पृथक्त कोडिसंख्या हैं। इहां पृथक्त ऐसी आगममें संज्ञा है। सो तीन कोडीके उपरि नवकोडीकै नीचै जाननी। ते ५९३९८२०६ हैं। अप्रमत्तसंयतसंख्या है ते प्रमत्तसंयतनितैं आधे हैं। ते २९६९९१०३ हैं। बहुरि च्यारि उपशमश्रेणीवाले प्रवेशकरि तौ एक अथवा दोय तीन आदि उत्कृष्ट चोवनतांई हैं। बहुरि इनिका सर्वकालके भेले होय तब संख्यात हैं।

एक गुणस्थानके २९९ । च्यारिनिके जोडिये तब ११९६ होय । च्यारि क्षपक श्रेणीवाले बहुरि अयोगकेवली प्रवेशकरि एक दोय तीन आदि उत्कृष्ट एकसो आठतांई अपनां अपनां कालके भेले होय तब संख्यात होय । एक गुणस्थानमैं ५९८ । पांच गुणस्थानके जोडिये तब २९९० होय । सयोगकेवली प्रवेशकरि एक दोय तीन आदि उत्कृष्ट एकसो आठतांई हैं । या गुणस्थानके भेले होय तब पृथक्त्व लाख होय हैं ते ८९८५०२ होय । ऐसैं प्रमत्तसंयततैं लगाय अयोगकेवलीपर्यंत सर्वसंयमी जोडिये तब नवकोडि तीन घाटि होय हैं । ८९९९९९९७ ॥

बहुरि विशेषकरि गतिके अनुवादकरि नरकगतिविषैं पहली पृथिवीविषैं नारकी जीव मिथ्यादृष्टि असंख्यात जगच्छ्रेणीपरिमाण हैं । सो जगत् प्रतरके असंख्यातवै भाग हैं । बहुरि दूसरी पृथिवीतैं लगाय सातमीतांई मिथ्यादृष्टि श्रेणीकै असंख्यातवै भाग परिमाण हैं । सो असंख्यातवां भाग असंख्यात कोडि योजनके प्रदेश होय तेते जानने । बहुरि सर्वही पृथिवीनिविषैं सासादनसम्यग्दृष्टि सम्यङ्मिथ्यादृष्टि असंयतसम्यग्दृष्टि पल्योपमकै असंख्यातवै भाग परिमाण हैं । बहुरि तिर्यंचगतिविषैं तिर्यंचजीव मिथ्यादृष्टि अनंतानंत हैं । सासादनसम्यग्दृष्टि आदि संयतासंयततांई पल्यकै असंख्यातवै भाग परिमाण हैं । मनुष्यगतिविषैं मनुष्य मिथ्यादृष्टि श्रेणीकै

असंख्यातवै भाग हैं । सो असंख्यातवा भाग असंख्यातकोडि योजनके प्रदेशमात्र जाननां । सासादनसम्यग्दृष्टि आदि संयतासंयततांई संख्यात हैं । ते सासादनविषैं बावन कोडि हैं । मिश्रविषैं एकसो च्यारि कोडि हैं । असंयत सातसैं कोडि हैं । संयतासंयत तेरह कोडि हैं । बहुरि प्रमत्तसंयत आदिकी संख्या सामान्योक्त कहिये गुणस्थाननिमैं कही सो संख्या जाननी ॥

देवगतिविषैं देव मिथ्यादृष्टि असंख्यात श्रेणीपरिमाण हैं । सो प्रतरके असंख्यातवै भाग हैं। सासादनसम्यग्दृष्टि सम्यङ्मिथ्यादृष्टि असंयतसम्यग्दृष्टि पल्योपमके असंख्यातवै भागपरिमाण हैं ॥

इंद्रियके अनुवादकरि एकेंद्रिय मिथ्यादृष्टि अनंतानंत हैं । द्वींद्रिय त्रींद्रिय चतुरिंद्रिय असंख्यात श्रेणीपरिमाण हैं । सो प्रतरके असंख्यातवै भाग हैं । पंचेंद्रियविषैं मिथ्यादृष्टि असंख्यात श्रेणीपरिमाण हैं । सो प्रतरकै असंख्यातवै भाग हैं । सासादनसम्यग्दृष्टि आदि अयोगकेवलीपर्यंत गुणस्थानवत् संख्या जाननी ॥

कायके अनुवादकरि पृथिवीकायिक अप्कायिक तेजस्कायिक वायुकायिक असंख्यातलोक परिमाण हैं । वनस्पतिकायिक अनंतानंत हैं । त्रसकायिककी संख्या पंचेंद्रियवत् जाननी ॥

योगका अनुवादकरि मनोयोगी वचनयोगी मिथ्यादृष्टि असंख्यातश्रेणीपरिमाण हैं । ते प्रतरकै

असंख्यातवै भाग हैं। काययोगीनिविषैं मिथ्यादृष्टि अनंतानंत हैं । तीनूं योगवाले सासादनसम्यग्दृष्टि आदि संयतासंयततांई तौ पल्यके असंख्यातवै भागपरिमाण हैं । प्रमत्तसंयत आदि सयोगकेवलीतांई संख्यात हैं। अयोगेकवली गुणस्थानवत् संख्या ॥

वेदके अनुवादकरि स्त्रीवेद पुरुषवेदवाले मिथ्यादृष्टि असंख्यातश्रेणीपरिमाण हैं । प्रतरकै असंख्यातवै भाग हैं । नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि अनंतानंत हैं । बहुरि स्त्रीवेदी नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि आदि संयतासंयततांई गुणस्थानवत् संख्या है। प्रमत्तसंयत आदि अनिवृत्तिबादरसांपरायतांई संख्यात हैं । पुरुषवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि संयतासंयततांई गुणस्थानवत् संख्या है। प्रमत्तसंयत आदि अनिवृत्तिबादरसांपरायतांई गुणस्थानवत् संख्या है । वेदरहित अनिवृत्तिबादरसांपराय आदि अयोगकेवलीतांई सामान्योक्त कहिये गुणस्थानवत् संख्या है ॥

कषायके अनुवादकरि क्रोधमानमायाविषैं मिथ्यादृष्टि आदि संयतासंयततांई गुणस्थानवत् संख्या है। प्रमत्तसंयत आदि अनिवृत्तिबादरसांपरायतांई संख्यात हैं। लोभकषायवालेका पहलै कह्या सोही अनुक्रम है। विशेष यह, जो, सूक्ष्मसांपरायसंयतका गुणस्थानवत् संख्या है । कषायरहित उपशांतकषाय आदि अयोगकेवलीतांई गुणस्थानवत् संख्या है ॥

ज्ञानके अनुवादकरि मति-अज्ञान श्रुत-अज्ञानवाले मिथ्यादृष्टि सासादनसम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थानवत् संख्या है। विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि असंख्यातश्रेणीपरिमाण हैं। ते प्रतरके असंख्यातवै भाग हैं। सासादनसम्यग्दृष्टि पल्योपमकै असंख्यातवै भाग हैं। मतिश्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि आदि क्षीणकषायतांई गुणस्थानवत् संख्या है। अवधिज्ञानी असंयतसमग्दृष्टि आदि संयतासंयततांई गुणस्थानवत् संख्या है। प्रमत्तसंयत आदि क्षीणकपायतांई संख्यात हैं। मनःपर्ययज्ञानी प्रमत्तसंयत आदि क्षीणकषायतांई संख्यात हैं। केवलज्ञानी अयोगी सयोगी गुणस्थानवत् संख्या है॥

संयमके अनुवादकरि सामयिकच्छेदोपस्थापनाशुद्धि संयतप्रमत्त आदि अनिवृत्तिबादरसांपरायतांई गुणस्थानवत् संख्या है। परिहारविशुद्धिसंयत प्रमत्त अप्रमत्त संख्यात हैं। सूक्ष्मसांपरायशुद्धिसंयत यथाख्यात विहारशुद्धिसंयत संयतासंयत असंयतकी गुणस्थानवत् संख्या है॥

दर्शनके अनुवादकरि चक्षुर्दर्शनवाले मिथ्यादृष्टि असंख्यातश्रेणीपरिमाण हैं। ते प्रतरके असंख्यातवै भाग हैं। अचक्षुर्दर्शनवाले मिथ्यादृष्टि अनंतानंत हैं। दोऊही सासादनसम्यग्दृष्टि आदि क्षीणकषायतांई सामान्योक्त कहिये गुणस्थानवत् है। अवधिदर्शनवाले अवधिज्ञानिवत् हैं। केवलदर्शनवाले केवलज्ञानीवत् हैं॥

लेश्याके अनुवादकरि कृष्ण–नील–कापोतलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि आदि असंयतसम्यग्दृष्टितांई गुणस्थानवत् संख्या है । पीतपद्मलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि आदि संयतासंयततांई स्त्रीवेदवत् है । प्रमत्त अप्रमत्त संयत संख्यात हैं । शुक्ललेश्यावाले मिथ्यादृष्टि आदि संयतासंयततांई पल्योपमके असंख्यातवै भाग हैं । प्रमत्त अप्रमत्त संयत संख्यात हैं । अपूर्वकरण आदि सयोगकेवलीतांई गुणस्थानवत् संख्या है । अलेश्यावाला गुणस्थानवत् संख्या है ॥

भव्यके अनुवादकरि भव्यविषैं मिथ्यादृष्टि आदि अयोगकेवलीपर्यंत गुणस्थानवत् संख्या है। अभव्य अनंत हैं ॥

सम्यक्त्वके अनुवादकरि क्षायिकसम्यक्त्वविषैं असंयतसम्यग्दृष्टि पल्यकै असंख्यातवै भाग हैं । संयतासंयत आदि उपशांतकषायपर्यंत मनुष्य संख्यात हैं । च्यारि क्षपकश्रेणीवाला सयोगकेवली अयोगकेवली गुणस्थानवत् है । क्षायोपशमिक सम्यग्दृष्टिविषैं असंयतसम्यग्दृष्टि आदि अप्रमत्ततांई गुणस्थानवत् । औपशमिकसम्यक्त्वविषैं असंयतसम्यग्दृष्टि असंयतासंयत पल्योपमके संख्यातवै भाग हैं । प्रमत्ताप्रमत्त संयत संख्यात हैं । च्यारि औपशमिक गुणस्थानवत् संख्या है । सासादनसम्यग्दृष्टि सम्यङ्मिथ्यादृष्टि मिथ्यादृष्टि गुणस्थानवत् संख्या है ॥

संज्ञीके अनुवादकरि संज्ञीविषैं मिथ्यादृष्टि आदि क्षीणकषायपर्यंत चक्षुर्दर्शनिवत् संख्या है। असंज्ञी मिथ्यादृष्टि अनंतानंत हैं। दोऊरहित गुणस्थानवत् संख्या है ॥

आहारकके अनुवादकरि आहारकनिविषैं मिथ्यादृष्टि आदि सयोगकेवलीपर्यंत गुणस्थानवत् संख्या। अनाहारकनिविषैं मिथ्यादृष्टि सासादनसम्यग्दृष्टि असंयत सम्यग्दृष्टि गुणस्थानवत् संख्या। सयोगकेवली संख्यात हैं। अयोगकेवली गुणस्थानवत् संख्या है। ऐसै संख्याका निर्णय कीया ॥

अब क्षेत्रप्ररूपणा कहिये हैं। तहां क्षेत्र दोय प्रकार है। सामान्यकरि गुणस्थाननिका विशेषकरि मार्गणाका। तहां सामान्यकरि मिथ्यादृष्टिनिका सर्वलोक क्षेत्र है। सासादनसम्यग्दृष्टि आदि अयोगकेवलीपर्यंतनिका लोकका असंख्यातवा भाग है। सयोगकेवलीनिका लोकका असंख्यातवा भाग है। अथवा समुद्धातके प्रतर अपेक्षा लोकके असंख्यात बहुभाग है। पूरण अपेक्षा सर्वलोक है ॥ विशेषकरि गतिके अनुवादकरि नरकगतिविषैं सर्व पृथिवीनिविषैं नारकीनिका च्यार गुणस्थाननिविषैं लोकका असंख्यातवा भाग है। तिर्यंचगतिविषैं तिर्यंचनिका मिथ्यादृष्टि आदि संयतासंयततांई गुणस्थानवत् क्षेत्र है। मनुष्यगतिविषैं मनुष्यनिका मिथ्यादृष्टि आदि सयोगकेवलीपर्यंतनिका लोककै असंख्यातवै भाग है। सयोगकेवलीनिका गुणस्थानवत् क्षेत्र है।

देवगतिविषैं देवनिका च्यारि गुणस्थानविषैं लोकके असंख्यातवै भाग है । इंद्रियके अनुवादकरि एकेंद्रियनिका क्षेत्र सर्वलोक है । विकलत्रयका लोकका असंख्यातवा भाग है । पंचेंद्रियनिका मनुष्यवत् है । इहां कोई पूछै, मनुष्य तौ अढाई द्वीपमेंही उपजे हैं । पंचेंद्रिय त्रसनाडीमें उपजै हैं । मनुष्यवत् कैसै कह्या? ताका समाधान— जो, पंचेंद्रिय केतेक इनिके उपजनेके ठिकाणेही उपजै हैं । सर्वत्र त्रसनाडीमें नांही उपजे हैं । तातैं लोकका असंख्यातवा भागही है ॥

कायके अनुवादकरि पृथिवीकायिक आदि वनस्पतिपर्यंतका सर्वलोक क्षेत्र है । त्रसकायिकका पंचेंद्रियवत् क्षेत्र है ॥

योगका अनुवादकरि वचन मनोयोगवाले मिथ्यादृष्टि आदि सयोगकेवलीपर्यंतनिका लोकके असंख्यातवै भाग है । काययोगीनिका मिथ्यादृष्टि आदि सयोगकेवलीपर्यंतनिका अर अयोगकेवलीनिका गुणस्थानवत् क्षेत्र है । वेदके अनुवादकरि स्त्रीपुरुषवेदीनिका मिथ्यादृष्टि आदि अनिवृत्तिबादरपर्यंतनिका लोकके असंख्यातवा भाग है । नपुंसकवेदनिका मिथ्यादृष्टि आदि अनिवृत्तिबादरपर्यंतनिका अरु वेदरहितनिका गुणस्थानवत् क्षेत्र है ॥

कषायके अनुवादकरि क्रोध मान माया कषायवालेनिका अर लोभ कषायवालेनिका

मिथ्यादृष्टि आदि अनिवृत्तिबादरपर्यंतनिका अर सूक्ष्मसांपरायीनिका अर कषायरहितानिका गुणस्थानवत् क्षेत्र है ॥

ज्ञानके अनुवादकरि मतिअज्ञान श्रुतअज्ञानवालेनिका मिथ्यादृष्टि सासादनसम्यग्दृष्टिवालेनिका गुणस्थानवत् क्षेत्र है। विभंगज्ञानीनिका मिथ्यादृष्टि सासादनसम्यग्दृष्टीनिका लोकका असंख्यातवा भाग है। मति-श्रुत-अवधिज्ञानीनिका असंयतसम्यग्दृष्टि आदि क्षीणकषायपर्यंतनिका अर मनःपर्ययज्ञानीनिका प्रमत्तसंयत आदि क्षीणकषायपर्यंतनिका अर केवलज्ञानी अयोगीनिका गुणस्थानवत क्षेत्र है ॥

संयमके अनुवादकरि सामायिक च्छेदोपस्थापनशुद्धि संयतनिका च्यारि गुणस्थाननिका अर परिहारविशुद्धिसंयत प्रमत्त अप्रमत्तनिका अर सूक्ष्मसांपराय शुद्धसंयतनिका अर यथाख्यात विहारशुद्धसंयतका च्यारि गुणस्थाननिका अर संयतासंयतका अर असंयतके च्यारि गुणस्थाननिका गुणस्थानवत् क्षेत्र है ॥

दर्शनके अनुवादकरि चक्षुर्दर्शनवालेनिका मिथ्यादृष्टि आदि क्षीणकषायपर्यंतनिका लोकका असंख्यातवा भाग है। अचक्षुर्दर्शनवालेनिका मिथ्यादृष्टि आदि क्षीणकषायपर्यंतनिका गुणस्थानवत्

क्षेत्र है। अवधिदर्शनवालेनिका अवधिज्ञानीवत् है। केवलदर्शनवालेनिका केवलज्ञानीवत् है॥

लेश्याके अनुवादकरि कृष्ण–नील–कापोतलेश्यावालेनिका मिथ्यादृष्टि आदि असंयतसम्यग्दृष्टिपर्यंतनिका गुणस्थानवत् क्षेत्र है। पीत–पद्मलेश्यावालेनिका मिथ्यादृष्टि आदि अप्रमत्तसंयतपर्यंतनिका लोकका असंख्यातवा भाग है। शुक्ललेश्यावालेनिका मिथ्यादृष्टि आदि क्षीणकषायपर्यंतनिका लोकका असंख्यातवा भाग है। सयोगकेवलीनिका अर लेश्यारहित अयोगकेवलीनिका गुणस्थानवत् क्षेत्र है॥

भव्यके अनुवादकरि भव्यनिका चौदहही गुणस्थानका सामान्योक्त कहिये गुणस्थानवत् क्षेत्र है। अभव्यनिका सर्वलोक है॥

सम्यक्त्वके अनुवादकरि क्षायिकसम्यग्दृष्टिनिका असंयतसम्यग्दृष्टि आदि अयोगकेवलीपर्यंतनिका अर क्षायोपशमिकसम्यग्दृष्टिनिका असंयतसम्यग्दृष्टि आदि अप्रमत्तसंयतपर्यंतनिका अर औपशमिकसम्यग्दृष्टिनिका असंयतसम्यग्दृष्टि आदि उपशांतकषायपर्यंतनिका अर सासादनसम्यग्दृष्टिनिका अर सम्यङ्मिथ्यादृष्टिनिका अर मिथ्यादृष्टिनिका गुणस्थानवत् क्षेत्र है॥

संज्ञीके अनुवादकरि चक्षुर्दर्शनवत् तौ संज्ञीनिका क्षेत्र है। अर असंज्ञीनिका सर्वलोक है। तिन दोऊनितैं रहितनिका गुणस्थानवत् क्षेत्र है॥

आहारकके अनुवादकरि आहारकनिका मिथ्यादृष्टि आदि क्षीणकषायपर्यंतनिका गुणस्थानवत् क्षेत्र है । सयोगकेवलीनिका लोककै असंख्यातवै भाग है । अनाहारकनिका मिथ्यादृष्टि सासादनसम्यग्दृष्टि असंयतसम्यग्दृष्टि अयोगकेवलीनिका गुणस्थानवत् क्षेत्र है । सयोगकेवलीनिका लोकका असंख्यातवा भाग है । अर प्रतर अपेक्षा अर पूरण अपेक्षा सर्वलोक है । ऐसैं क्षेत्रका निर्णय कीया ॥

आगैं स्पर्शन कहिये हैं । तहां लोकके एक एक राजू घनरूप खंड कल्पिये तब तीनसै तियालीस राजू होय । ताविषैं जीव स्पर्शन करै है । सो च्यारि प्रकार है । स्वस्थानविहार अपेक्षा, परस्थानविहार अपेक्षा, मारणांतिकसमुद्घात अपेक्षा, उत्पाद अपेक्षा । सो कहिये हैं । सो प्ररूपणा दोय प्रकार है । सामान्यकरि गुणस्थाननिविषैं, विशेषकरि मार्गणानिविषैं । तहां प्रथमही सामान्यकरि मिथ्यादृष्टिनिकरि सर्वलोक स्पर्शिये है । सासादनसम्यग्दृष्टिनिकरि लोकका असंख्यातवा भाग स्वस्थानविहारकी अपेक्षा है । अर परस्थानविहार अपेक्षा सासादनवर्ती देव तीसरी पृथिवीतांई विहार करै सो दोय राजू तौ ए भये । अर अच्युतस्वर्गतांई ऊपरी विहार करै तातैं छह राजू ए भये । ऐसैं आठ राजू स्पर्शै । ऐसैं इनिकूं आठ चतुर्दश भाग कहे । तहां त्रसनाडी चोदह राजू है । सो

तीनसे तिथालीस भागमैं चौदह भाग लिये, तिनिमैंसूं आठ भाग तथा द्वादश भाग कहे, तहां तेता राजू जाननां । इहां सासादनमैं बारह भागभी कहे हैं, ते मारणांतिक अपेक्षा हैं । सो सासादनवाला सातवी पृथिवीविना छठी पृथिवीतैं मारणांतिक करै सो मध्यलोकमैं आवै, सो पांच राजू तौ ए भये। अरु मध्यलोकतैं बादरपृथिवीकायिकादिविषैं सासादनवाला उपजै तब मारणांतिक समुद्घातकरि लोकका अंततांई स्पर्शै, सो सात राजू ये भये । ऐसैं बारह राजू स्पर्शै है। सो देशोन कहिये किछू घाटि स्पर्शै है । बहुरि सम्यङ्मिथ्यादृष्टिनिकरि अर असंयतसम्यग्दृष्टिनिकरि लोकका असंख्यातवा भाग स्पर्शीये है । अथवा चौदह भागमैंसूं आठ भाग किछू घाटि स्पर्शीये है । सो अच्युतदेवका परस्थानविहार अपेक्षा है। बहुरि संयतासंयतवालेका लोकका असंख्यातवा भाग स्पर्श है। अथवा चौदह भागमैंसूं छह भाग किछू घाटि है । इहां अच्युतस्वर्गमैं उपजै सो मारणांतिक समुद्घात करै, ताकी अपेक्षा है। बहुरि प्रमत्तसंयत आदि अयोगकेवलीपर्यंतनिका क्षेत्रवत् स्पर्शन है ॥

विशेषकरि गतिका अनुवादकरि प्रथमपृथिवीविषैं नारकीनिकै च्यारि गुणस्थानवालेकै लोकका असंख्यातवा भाग स्पर्श है । दूसरीतैं लगाय छठी पृथिवीतांईके नारकीनिकै मिथ्यादृष्टीनिकै सासादनसम्यग्दृष्टीनिकै लोकका असंख्यातवा भाग स्पर्श है। अर चौदह भागमैंसूं एक भाग दोय

भाग तीन भाग च्यारि भाग पांच भाग किछू घाटि है । यहू मारणांतिक अपेक्षा है । सम्यङ्मिथ्यादृष्टि असंयतसम्यग्दृष्टिनिकै लोकका असंख्यातवा भाग स्पर्श है। बहुरि सातमी पृथिवीवाले मिथ्यादृष्टिनिकै लोकका असंख्यातवा भाग है । अर छह भाग देशोन चोदह भागमैंसूं है सो मारणांतिक अपेक्षा है । बहुरि तीन गुणस्थानवालेकै लोकका असंख्यातवा भाग है । बहुरि तिर्यंचगतिविषैं तिर्यंचमिथ्यादृष्टिनिकै सर्वलोक है । सासादनसम्यग्दृष्टिनिकै लोककै असंख्यातवा भाग है । असंयतसम्यग्दृष्टि संयतासंयतनिकै लोकका असंख्यातवा भाग है । अर चोदह भागमैंसूं छह भाग कछु घाटि मारणांतिक अपेक्षा है । बहुरि मनुष्यगतिविषैं मिथ्यादृष्टि मनुष्यलोकका असंख्यातवा भाग स्पर्शै है । अर मारणांतिक अपेक्षा सर्वलोक स्पर्शै है । सासादनसम्यग्दृष्टि लोकका असंख्यातवा भाग स्पर्शै है । चोदह भागमैंसूं सात भाग किछू घाटि मरणांतिक अपेक्षा स्पर्शै है । सम्यङ्मिथ्यादृष्टि आदि अयोगकेवलीपर्यंतनिकै क्षेत्रवत् स्पर्शन है । देवगतिविषैं देव मिथ्यादृष्टि सासादनसम्यग्दृष्टि लोकका असंख्यातवा भाग स्पर्शै हैं। अर चौदह भागमैंसूं आठ भाग नव भाग देशोन परस्थानविहार अपेक्षा तीसरी पृथिवीताईं गमन मारणातिक अपेक्षा लोकके अग्रभागविषैं उपजै तब स्पर्शै । सम्यङ्मिथ्यादृष्टि असंयतसम्यग्दृष्टि लोकका असंख्यातवा भाग स्पर्शै । चौदह भागमैंसूं आठ भाग

परस्थानविहार अपेक्षा स्पर्शै किछू घाटि ॥

इंद्रियनिके अनुवादकरि मिथ्यादृष्टि एकेंद्रिय सर्वलोक स्पर्शै । विकलत्रय लोकका असंख्यातवा भाग स्पर्शै । मारणांतिक अपेक्षा सर्वलोक स्पर्शै । पंचेंद्रियविषैं मिथ्यादृष्टि लोकका असंख्यातवा भाग स्पर्शै । परस्थानविहार अपेक्षा चौदह भागमैंसूं आठ भाग देशोन मारणांतिक अपेक्षा सर्वलोक स्पर्शै । बहुरि सासादन आदि सर्वगुणस्थानवर्तीकै गुणस्थानवत् स्पर्शन है ॥

कायके अनुवादकरि स्थावरकायिक तौ सर्वलोक स्पर्शै है त्रसकायिकनिकै पंचेंद्रियवत् स्पर्शन है ॥

योगके अनुवादकरि वचनमनोयोगीनिकै मिथ्यादृष्टिनिकै लोकका असंख्यातवा भाग स्पर्शै है । अर चौदह भागमैंसूं आठ भाग देशोन है । अर सर्वलोकभी है । अर सासादनसम्यग्दृष्टि आदि क्षीणकषायपर्यंतनिकै गुणस्थानवत् स्पर्शन है । सयोगकेवलीनिकै लोकका असंख्यातवा भाग है । काययोगीनिकै मिथ्यादृष्टि आदि सयोगकेवलीपर्यंतनिकै अर अयोगकेवलीनिकै गुणस्थानवत् स्पर्शन है ॥

वेदके अनुवादकरि स्त्रीपुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि लोककै असंख्यातवा भाग स्पर्शै है । अर चौदह भागमैंसूं आठ भाग नव भाग देशोन स्पर्शै है । अथवा सर्वलोकभी स्पर्शै है । सासादनसम्यग्दृष्टि

लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्शै है । अर चौदा भागमैंसूं आठ भाग नव भाग देशोन स्पर्शै है। सम्यङ्मिथ्यादृष्टि आदि अनिवृत्तिबादरसांपरायपर्यंतनिकै गुणस्थानवत् स्पर्शन है । नपुंसक वेदविषैं मिथ्यादृष्टि सासादनसम्यग्दृष्टीनिकै गुणस्थानवत् स्पर्शन है । सम्यङ्मिथ्यादृष्टीनिकै लोकका असंख्यातवां भाग है। असंयतसम्यग्दृष्टि संयतासंयत लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्शै है अर चौदह भागमैंसूं छह भाग देशोन मारणांतिक अपेक्षा स्पर्शै है। प्रमत्तसंयत आदि अनिवृत्तिबादरसांपरायपर्यंतवाले अर वेदरहितनिकै गुणस्थानवत् स्पर्शन है ॥

कषायकै अनुवादकरि च्यारि कषायवालेनिकै अर कषायरहितनिकै गुणस्थानवत् स्पर्शन है। ज्ञानके अनुवादकरि मति अज्ञान श्रुतअज्ञानवाले मिथ्यादृष्टि सासादनसम्यग्दृष्टिनिकै गुणस्थानवत् स्पर्शन है। विभंगज्ञानीकै मिथ्यादृष्टीनिकै असंख्यातवां भाग है । अर चोदह भागमैंसूं आठ भाग देशोन हैअर सर्वलोकभी है । सासादनसम्यग्दृष्टीनिकै गुणस्थानवत स्पर्शन है। मति श्रुत अवधि मनःपर्यय केवलज्ञानीनिकै गुणस्थानवत् स्पर्शन है ॥

सँयमके अनुवादकरि सर्वसंयमीनिकै अर संयतासंयतनिकै अर असंयतनिकै गुणस्थानवत् स्पर्शन है ॥

दर्शनके अनुवादकरि चक्षुर्दर्शनवाले मिथ्यादृष्टि आदि क्षीणकषायपर्यंतनिकै पंचेंद्रियवत् स्पर्शन है । अचक्षुर्दर्शनवालेनिके मिथ्यादृष्टि आदि क्षीणकषायपर्यंतनिकै अवधिदर्शन केवलदर्शनवालेनिकै गुणस्थानवत् स्पर्शन है ॥

लेश्याके अनुवादकरि कृष्ण-नील-कापोतलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि सर्वलोक स्पर्शै हैं । सासादनसम्यग्दृष्टि लोकका असंख्यातवा भाग स्पर्शै हैं । अर पांच भाग च्यारि भाग देशोन चौदह भागमैंसूं स्पर्शै हैं । इहां कोई पूछै है, जो, बारह भाग क्यों न कहे? ताका समाधान— जो, नरकमैं अवस्थितलेश्या है । छठी पृथ्वीवाला मारणांतिक करै सो मध्यलोकमैं आवै पांच राजू स्पर्शै । अर जिनिके मतमैं सासादनवाला एकेंद्रियविषैं नाहीं उपजै, तिनिके मतकी अपेक्षा बारह भाग नांही कहे हैं । अर सम्यङ्मिथ्यादृष्टि असंयतसम्यग्दृष्टि लोककै असंख्यातवां भाग स्पर्शै है । पीतलेश्यावाला मिथ्यादृष्टि सासादनसम्यग्दृष्टि लोकका असंख्यातवां भाग अर चौदह भागमैंसूं आठ भाग नव भाग देशोन स्पर्शै है । सम्यङ्मिथ्यादृष्टि असंयतसम्यग्दृष्टि लोकका असंख्यातवा भाग अर चोदह भागमैंसूं आठ भाग देशोन स्पर्शै है । संयतासंयत लोकका असंख्यातवा भाग अर मारणांतिक अपेक्षा प्रथमस्वर्गका ड्योढ राजूतांई स्पर्शै । तातैं अध्यर्धदेशोन चौदह भागमैंसूं

कह्या। अर प्रमत्त अप्रमत्त संयत लोकका असंख्यातवा भाग स्पर्शै । पद्मलेश्यावाला मिथ्यादृष्टि आदि असंयतसम्यग्दृष्टिपर्यंत लोकका असंख्यातवा भाग स्पर्शै । अर आठ भाग देशोन चौदहमैंसूं अर संयतासंयत लोकका असंख्यातवा भाग अर चौदह भागमैंसूं पांच भाग देशोन स्पर्शै। प्रमत्त अप्रमत्त संयत लोकका असंख्यातवा भाग स्पर्शै । शुक्लेश्यावाला मिथ्यादृष्टि आदि संयतासंयतपर्यंत लोकका असंख्यातवा भाग अर चौदह भागमैंसूं छह भाग देशोन स्पर्शै । प्रमत्त आदि सयोगकेवलीपर्यंतनिकै अर लेश्यारहितनिकै गुणस्थानवत् स्पर्शन है ॥

भव्यके अनुवादकरि भव्यनिकै मिथ्यादृष्टि आदि अयोगकेवलीपर्यंतनिकै गुणस्थानवत् स्पर्शन है। अभव्य सर्वलोक स्पर्शै है ॥

सम्यक्तके अनुवादकरि क्षायिकसम्यग्दृष्टीनिके असंयतसम्यग्दृष्टि आदि अयोगकेवलीपर्यंतनिके गुणस्थानवत् स्पर्शन है । विशेष यहु, जो, संयतासंयतनिका लोकका असंख्यातवा भागही है। क्षायोपशमिकसम्यग्दृष्टिनिका गुणस्थानवत् स्पर्शन है। औपशमिकसम्यक्त्ववालेनिका असंयतसम्यग्दृष्टीनिका गुणस्थानवत् । अन्यका लोकका असंख्यातवा भाग स्पर्शन है । सासादनसम्यग्दृष्टि सम्यङ्मिथ्यादृष्टीनिका गुणस्थानवत् स्पर्शन है ॥

संज्ञीके अनुवादकरि संज्ञीनिका चक्षुर्दर्शनिवत् । असंज्ञी सर्वलोक स्पर्शे हैं । तिनि दोऊनिकरि रहितका गुणस्थानवत् स्पर्शन है ॥

आहारकके अनुवादकरि आहारकनिका मिथ्यादृष्टि आदि क्षीणकषायपर्यंतनिका गुणस्थानवत् स्पर्शन है। सयोगकेवलीनिका लोकका असंख्यातवा भाग है। अनाहारकविषै मिथ्यादृष्टि सर्वलोक स्पर्शे है। सासादनसम्यग्दृष्टि लोकका असंख्यातवा भाग अर चौदा भागमैंसूं ग्यारह भाग देशोन स्पर्शे है । सो छठी पृथिवीतें मध्यलोकमैं उपजै, ताकै उत्पाद अपेक्षा तौ पांच राजू, अर अच्युततैं मध्यलोकमैं आय उपजै, ताकै उत्पाद अपेक्षा छह ऐसैं ग्यारह राजू कहे मारणांतिक अपेक्षा बारह राजू होय है । परंतु मारणांतिकमैं अनाहारक नांही । तातैं उत्पाद अपेक्षा ग्यारह है । असंयतसम्यग्दृष्टि लोकका असंख्यातवा भाग स्पर्शे है। अर चोदह भागमैंसूं छह भाग देशोन स्पर्शे है। सयोगकेवली लोकका असंख्यातवा भाग अर सर्वलोक स्पर्शे है । अयोगकेवलीनिका लोकका असंख्यातवा भाग स्पर्शन है। ऐसैं स्पर्शनका व्याख्यान कीया ॥

आगै कालका निरूपण करिये हैं । सो दोय प्रकार है । सामान्यकरि गुणस्थानविषैं विशेषकरि मार्गणानिविषैं । तहां सामान्यकरि मिथ्यादृष्टीका नानाजीवापेक्षा सर्वकाल है । एक

जीवकी अपेक्षा तीन भंग हैं । अभव्यकै तौ अनादि अनंत है । भव्यकै अनादि सांत है, सादि सांत है । तहां सादि सांत जघन्य तौ अंतमुहूर्त है । उत्कृष्ट अर्द्धपुद्गलपरिवर्तन कछू घाटि है । बहुरि सासादनसम्यग्दृष्टीका नानाजीवकी अपेक्षा जघन्य तौ एकसमय है । उत्कृष्ट पल्योपमकै असंख्यातवै भाग है । एकजीव अपेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह आवली है । सम्यङ्मिथ्यादृष्टीका नानाजीवकी अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपमकै असंख्यातवै भाग है । एक जीव अपेक्षा जघन्यभी उत्कृष्टभी अंतर्मुहूर्त है । असंयत सम्यग्दृष्टीको नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है । एकजीवकी अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तेतीस सागर कछू अधिक । बहुरि संयतासंयतको नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है । एकजीवकी अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कोडिपूर्व कछू घाटि । प्रमत्त अप्रमत्त संयतको नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है । एकजीवकी अपेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त है । बहुरि च्यारि उपशमश्रेणीवाला गुणस्थाननिका नानाजीवकी अपेक्षा अर एक जीवकी अपेक्षा जघन्य तौ एकसमय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त है । बहुरि च्यारि क्षपकश्रेणीवाला आठवां नवमां दशमां बारहमा गुणस्थानका बहुरि अयोगकेवलीका नानाजीवकी अपेक्षा अर एकजीवकी अपेक्षा जघन्यभी अरु उत्कृष्टभी अंतर्मुहूर्त है । बहुरि सयोगकेवलीनिका नानाजीवकी

अपेक्षा तौ सर्वकाल है। एकजीवकी अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट कोडिपूर्व कछु घाटि है ॥

विशेषकरि गतिके अनुवादकरि नरकगतिविषैं नारकीनिकै सातूंही पृथ्वीविषैं मिथ्यादृष्टिका नानाजीवकी अपेक्षा तौ सर्वकाल है। एकजीव अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट एक सागर, तीन सागर, सात सागर, दश सागर, सतरा सागर, बाईस सागर, तेतीस सागर, यथासंख्य अनुक्रमतैं आयुपरिमाण है। सासादनसम्यग्दृष्टि अर सम्यङ्मिथ्यादृष्टीका गुणस्थानवत् काल है। असंयतसम्यग्दृष्टिका नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है। एकजीव अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट आयुःप्रमाण किछु घाटि। तिर्यग्गतिविषैं तिर्यंचनिकै नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है। एकजीव अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंतकाल है। सो असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन है। सासादनसम्यग्दृष्टि अर सम्यग्मिथ्यादृष्टीका अरु संयतासंयतका गुणस्थानवत् काल है। असंयतसम्यग्दृष्टीका नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है। एकजीवकी अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्य है। मनुष्यगतिविषैं मनुष्यनिकै मिथ्यादृष्टिका नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है। एक जीव अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्य पृथक्त्व कोडी पूर्व अधिक है। सासादनसम्यग्दृष्टीका नानाजीवकी अपेक्षा जघन्य एकसमय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त है। एक जीव अपेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह आवली है।

सम्यग्मिथ्यादृष्टीका नानाजीवकी अपेक्षा एक जीवकी अपेक्षा जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त काल है। असंयतसम्यग्दृष्टीका नानाकीवकी अपेक्षा सर्वकाल है। एकजीव अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट तीन पल्य किछु अधिक है। बाकीके गुणस्थाननिका गुणस्थानवत् काल है॥ देवगतिविषैं देवनिके मिथ्यादृष्टीका नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है एकजीवप्रति जघन्य अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट इकतीस सागरोपम है। सासादनसम्यग्दृष्टीका अर सम्यग्मिथ्यादृष्टीका गुणस्थानवत् काल है। असंयतसम्यग्दृष्टीका नानाजीव अपेक्षा सर्वकाल है। एक जीव अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट तेतीस सागरोपम है॥

इंद्रियके अनुवादकरि एकेंद्रियनिका नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है। एकजीवकी अपेक्षा जघन्य क्षुद्रभव उत्कृष्ट अनंत काल सो असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन है। विकलत्रयका नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है। एक जीव अपेक्षा जघन्य क्षुद्रभव उत्कृष्ट संख्यात हजार वर्ष है। पंचेंद्रियविषैं मिथ्यादृष्टीका नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है। एकजीवकी अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट हजार सागर पृथक्त्व कोडी पूर्व अधिक है। सासादन आदि सर्व गुणस्थाननिका गुणस्थानवत् काल है॥

कायके अनुवादकरि पृथिवी अप् तेज वायुकायिकका नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है। एकजीव अपेक्षा जघन्य क्षुद्रभव उत्कृष्ट असंख्यात लोकपरिमाण काल है। वनस्पतिकायिकका

एकेंद्रियवत् काल है । त्रसकायिकनिविषैं मिथ्यादृष्टिका नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है । एकजीवकी अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त है । उत्कृष्ट दोय हजार सागर पृथक्त्व कोडी पूर्व अधिक है। बाकीके गुणस्थाननिका पंचेंद्रियवत् काल है ॥

योगके अनुवादकरि वचनमनोयोगीनिविषैं मिथ्यादृष्टि असंयतसम्यग्दृष्टि संयतासंयत प्रमत्त अप्रमत्त संयत सयोगकेवलीनिका नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है । एकजीवकी अपेक्षा जघन्य एकसमय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त सासादनसम्यग्दृष्टीका गुणस्थानवत् सम्यग्मिथ्यादृष्टीका नानाजीवकी अपेक्षा जघन्य एकसमय उत्कृष्ट पल्योपमकै असंख्यातवै भाग काल है। एकजीवकी अपेक्षा जघन्य तौ एक समय है । उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त है । च्यारि उपशमकनिका च्यारि क्षपकनिका नानाजीवकी अपेक्षा एकजीवकी अपेक्षा जघन्य एकसमय है । उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त काल है । काययोगीनिविषैं मिथ्यादृष्टीका नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है। एकजीवकी अपेक्षा जघन्य एकसमय है। उत्कृष्ट अनंतकाल है। सो असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन है । अवशेष गुणस्थाननिका मनोयोगिवत् काल है। अयोगीनिका गुणस्थानवत् काल है ॥

वेदके अनुवादकरि स्त्रीवेदविषैं मिथ्यादृष्टिका नानाजीव अपेक्षा सर्वकाल है। एकजीव अपेक्षा

जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पृथक्त्व सौ पल्य काल है। सासादनसम्यग्दृष्टि आदि अनिवृत्तिबादरसांपरायपर्यंतनिका गुणस्थानवत् काल है । तहां विशेप यहु— जो, असंयतसम्यग्दृष्टिका नानाजीव अपेक्षा सर्वकाल है। एकजीवकी अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त है उत्कृष्ट पचावनपल्य कछु घाटि काल है। पुरुषवेदविषैं मिथ्यादृष्टिका नानाजीव अपेक्षा सर्वकाल है। एकजीव अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट पृथक्त्व सौ सागर है। सासादन सम्यग्दृष्टि आदि अनिवृत्तिबादरसांपरायपर्यंतनिका गुणस्थानवत् काल है। नपुंसकवेदविषैं मिथ्यादृष्टिका नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है। एकजीव अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट अनंतकाल है सो असंख्यातपुद्गलपरिवर्तन है। सासादनसम्यग्दृष्टि आदि अनिवृत्तिबादरसांपरायपर्यंतनिका गुणस्थानवत् है। विशेप यहु है जो, असंयतसम्यग्दृष्टिका नानाजीव अपेक्षा सर्वकाल है। एक जीव अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट तेतीस सागर कछु घाटि काल है। वेदरहितनिका गुणस्थानवत् काल है॥

कषायके अनुवादकरि च्यारि कषायनिविषैं मिथ्यादृष्टि आदि अप्रमत्तपर्यंतनिका मनोयोगिवत् काल है। दोय उपशमश्रेणीका दोय क्षपकश्रेणीका गुणस्थाननिका अर केवललोभका अर कषायरहितनिका गुणस्थानवत् काल है॥

ज्ञानके अनुवादकरि मति अज्ञान श्रुतअज्ञानवाले मिथ्यादृष्टि सासादनसम्यग्दृष्टीनिका गुणस्थानवत् काल है। विभंगज्ञानीविषैं मिथ्यादृष्टिका नानावीव अपेक्षा सर्वकाल है। एकजीव अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट तेतीस सागर किछु घाटि है। सासादनसम्यग्दृष्टीका गुणस्थानवत् काल है। मति-श्रुत-अवधि-मनःपर्ययज्ञानीनिका अर केवलज्ञानीनिका गुणस्थानवत् काल है॥

संयमके अनुवादकरि सामायिक च्छेदोपस्थापन परिहारविशुद्धि सूक्ष्मसांपराय यथाख्यात शुद्धिसंयतनिका अर संयतासंयतनिका अर असंयत च्यारि गुणस्थाननिका गुणस्थानवत् काल है॥

दर्शनके अनुवादकरि चक्षुर्दर्शनवालेनिविषैं मिथ्यादृष्टिका नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है। एक जीव अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त है उत्कृष्ट दोय हजार सागर है। सासादनसम्यग्दृष्टिनिका क्षीणकषायपर्यंतनिका गुणस्थानवत् काल है। अचक्षुर्दर्शनवालेनिविषैं मिथ्यादृष्टि आदि क्षीणकषायपर्यंतनिका गुणस्थानवत् काल है। अवधि केवलदर्शनवालेनिका अवधि केवलज्ञानिवत् काल है॥

लेश्याके अनुवादकरि कृष्णनीलकापोतलेश्याविषैं मिथ्यादृष्टिका नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है। एकजीवकी अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट तेतीस सागर सतरा सागर सात सागर कछु अधिक है, सो नरक अपेक्षा है। सासादनकौ अर सम्यग्मिथ्यादृष्टिकौ गुणस्थानवत् काल है।

असंयतसम्यग्दृष्टिकौ नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है। एकजीवकी अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट तेतीस सागर सतरा सागर सात सागर कछु घाटि है। पीतपद्मलेश्याविषैं मिथ्यादृष्टि असंयतसम्यग्दृष्टिको नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है। एकजीवकी अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट दोय सागर अठारह सागर किछु अधिक है सो स्वर्ग अपेक्षा है। सासादन सम्यग्मिथ्यादृष्टिको गुणस्थानवत् काल है। संयतासंयत प्रमत्त अप्रमत्त संयतनिको नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है। एकजीव अपेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त है। शुक्ललेश्याविषैं मिथ्यादृष्टिको नानाजीव अपेक्षा सर्वकाल है। एकजीव अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट इकतीस सागर किछु अधिक है। सासादनसम्यग्दृष्टि आदि सयोगकेवलीपर्यंतनिका अर लेश्यारहितका गुणस्थानवत् काल है। विशेष यहु जो, संयतासंयतका नानाजीव अपेक्षा सर्वकाल है। एकजीव अपेक्षा जघन्य एकसमय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त है॥

भव्यके अनुवादकरि भव्यविषैं मिथ्यादृष्टिका नानाजीव अपेक्षा सर्वकाल है। एकजीव अपेक्षा दोय भंग हैं। अनादि सांत। तहां सादि सांत जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट अर्धपुद्गलपरिवर्तन कछु घाटि है। सासादन आदि केवलीपर्यंतनिका गुणस्थानवत् काल है। अभव्यनिका अनादि अनंत काल है॥

सम्यक्त्वके अनुवादकरि क्षायिकसम्यग्दृष्टीनिका असंयतसम्यग्दृष्टि आदि अयोगकेवलीपर्यंतानिका गुणस्थानवत् काल है। क्षायोपशमिक सम्यग्दृष्टीनिका च्यार्यों गुणस्थाननिका गुणस्थानवत् काल है। औपशमिक सम्यक्त्वविषैं असंयतसम्यग्दृष्टि संयतासंयत इनि दोऊनिका नानाजीवकी अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट पल्योपमकै असंख्यातवा भाग है। एकजीव अपेक्षा जघन्यभी उत्कृष्टभी अंतर्मुहूर्त है। प्रमत्त अप्रमत्त संयतका अर च्यारि उपशमश्रेणीवालेका नानाजीवकी अपेक्षा एकजीवकी अपेक्षा जघन्य तौ एक समय है उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त है। सासादनसम्यग्दृष्टि सम्यङ्मिथ्यादृष्टिनिका गुणस्थानवत् काल है ॥

संज्ञीके अनुवादकरि मिथ्यादृष्टि आदि अनिवृत्तिबादरपर्यंतनिका पुरुषवेदवत् काल है। अवशेषका गुणस्थानवत् काल है। असंज्ञीनिका मिथ्यादृष्टिका नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ क्षुद्रभवमात्र है। सासके अठारहै भाग अर उत्कृष्ट अनंतकाल है। सो असंख्यातपुद्गलपरिवर्तन है। दोऊ नामकरि रहितनिका गुणस्थानवत् काल है ॥

आहारकका अनुवादकरि आहारकविषैं मिथ्यादृष्टिका नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है। एकजीवअपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है उत्कृष्ट अंगुलकै असंख्यातवा भाग है सो असंख्यातासंख्यात

उत्सर्पिणी अवसर्पिणी परिमाण है । अंगुलिकै प्रदेश अर इनिके समय समान हैं । अवशेषनिका गुणस्थानवत् काल है। अनाहारकविषैं मिथ्यादृष्टिका नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है। एकजीवकी अपेक्षा जघन्य तौ एकसमय है। उत्कृष्ट तीन समय है । सासादनसम्यग्दृष्टि असंयतसम्यग्दृष्टिका नानाजीवकी अपेक्षा जघन्य एकसमय है। उत्कृष्ट आवलीकै असंख्यातवां भाग है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ एकसमय है उत्कृष्ट दोय समय है। सयोगकेवलीका नानाजीवकी अपेक्षा जघन्य तौ तीन समय है। उत्कृष्ट असंख्यातसमय है। एकजीव अपेक्षा जघन्य अर उत्कृष्ट तीन समय है। अयोगकेवलीका गुणस्थानवत् काल है। ऐसैं कालका वर्णन कीया है ॥

आगैं अंतरका निरूपण करिये हैं। तहां विवक्षित गुणकै अन्यगुण पलट न होतैं फिर तिसही गुणकी प्राप्तितैं पहलै वीचिका काल सो अंतर है । सो दोय प्रकार कहिये है । सामान्यकरि तौ गुणस्थानविषैं, विशेषकरि मार्गणाविषैं । तहां सामान्यकरि मिथ्यादृष्टिका नानाजीवकी अपेक्षा अंतर नाही है । एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है । उत्कृष्ट एकसोबत्तीस सागर देशोन कहिये किछु घाटि है। सासादनसम्यग्दृष्टिका अंतर नानाजीवकी अपेक्षा जघन्य तौ एक समय, उत्कृष्ट पल्यका असंख्यातवा भाग है । एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ पल्यका असंख्यातवा भाग,

उत्कृष्ट अर्द्धपुद्गलपरिवर्तन देशोन है। सम्यग्मिथ्यादृष्टिका अंतर नानाजीवकी अपेक्षा सासादनवत् है। एकजीव अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट अर्द्धपुद्गलपरिवर्तन देशोन है। असंयतसम्यग्दृष्टि आदि अप्रमत्तसंयतपर्यंतनिका नानाजीवकी अपेक्षा तौ अंतर नाही है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट अर्द्धपुद्गलपरिवर्तन देशोन है। च्यारि उपशमश्रेणीवालानिका नानाजीवकी अपेक्षा जघन्य तौ एकसमय है। उत्कृष्ट पृथक्त्व वर्ष है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट अर्द्धपुद्गलपरिवर्तन देशोन है। अर च्यारि क्षपकश्रेणीवालानिका अर अयोगकेवलीनिका नानाजीव अपेक्षा जघन्य तौ एकसमय, उत्कृष्ट छह महीना है। एकजीव अपेक्षा अंतर नांही है। अर सयोगकेवलीका नानाजीव अपेक्षा अर एकजीव अपेक्षा अंतर नांही है ॥

विशेषकरि गतिके अनुवादकरि नरकगतिविषैं नारकीनिका सात पृथिवीविषैं मिथ्यादृष्टि असंयतसम्यग्दृष्टिका नानाजीव अपेक्षा अंतर नाही। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट एक सागर तीन सागर सात सागर दश सागर सतरा सागर बाईस सागर तेतीस सागर देशोन है। सासादनसम्यग्दृष्टि सम्यग्मिथ्यादृष्टिका नानाजीवकी अपेक्षा जघन्य तौ एकसमय है। उत्कृष्ट पल्यका असंख्यातवा भाग है। एकजीव अपेक्षा जघन्य पल्यका असंख्यातवा भाग अर अंतर्मुहूर्त

है। उत्कृष्ट एक तीन सात दश सतरा बाईस तेतीस सागर देशोन है । तिर्यंच गतिविषैं तिर्यंचनिकै मिथ्यादृष्टीका नानाजीवकी अपेक्षा अंतर नाही है। एकजीव अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त है । उत्कृष्ट तीन पल्य देशोन है। सासादनसम्यग्दृष्टि आदि च्यारीनिका गुणस्थानवत् अंतर है। मनुष्यगतिविषैं मनुष्यनिकै मिथ्यादृष्टिका तिर्यंचवत्। सासादनसम्यग्दृष्टीका अर सम्यग्मिथ्यादृष्टीका नानाजीवकी अपेक्षा गुणस्थानवत् अंतर है । एकजीव अपेक्षा जघन्य पल्योपमका असंख्यातवा भाग अर अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट तीन पल्य पृथक्त्व कोडिपूर्व अधिक है । असंयतसम्यग्दृष्टिका नानाजीवकी अपेक्षा अंतर नांही है । एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है । उत्कृष्ट तीन पल्य पृथक्त्व कोडिपूर्व अधिक है । संयतासंयत प्रमत्तअप्रमत्त संयतका नानाजीवकी अपेक्षा अंतर नांही है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट पृथक्त्व कोडिपूर्व है। च्यारि उपशमश्रेणीवालेनिका नानाजीवकी अपेक्षा गुणस्थानवत् एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट पृथक्त्वकोडिपूर्व है। अवशेषनिका गुणस्थानवत् अंतर है । देवगतिविषैं देवनिकै मिथ्यादृष्टि असंयतसम्यग्दृष्टिका नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट इकतीस सागर देशोन है। सासादनसम्यग्दृष्टि सम्यग्मिथ्यादृष्टिका नानाजीवकी अपेक्षा गुणस्थानवत् है। एकजीव

अपेक्षा जघन्य पल्यका असंख्यातवा भाग अर अंतर्मुहूर्त है, उत्कृष्ट इकतीस सागर है, सो देशोन है॥

इंद्रियके अनुवादकरि एकेंद्रियनिका नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है । एकजीवकी अपेक्षा जघन्य क्षुद्रभव है। उत्कृष्ट दोय हजार सागर पृथक्त्वकोडिपूर्व अधिक है। विकलत्रयका नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है । एकजीव अपेक्षा जघन्य क्षुद्रभव है । उत्कृष्ट अनंतकाल है । सो असंख्यातपुद्गलपरिवर्तन है । ऐसैं इंद्रियप्रति अंतर कह्या । गुणस्थान अपेक्षा एक मिथ्यात्वही है तातैं अंतर नांही है। पंचेंद्रियविषैं मिथ्यादृष्टिका अंतर गुणस्थानवत् । सासादनसम्यग्दृष्टिका अर सम्यग्मिथ्यादृष्टिका नानाजीवकी अपेक्षा गुणस्थानवत् । एकजीवकी अपेक्षा जघन्य पल्यका असंख्यातवा भाग अर अंतर्मुहूर्त है । उत्कृष्ट हजार सागर पृथक्त्वकोडिपूर्व अधिक है । असंयतसम्यग्दृष्टि आदि अप्रमत्तपर्यंतनिका नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है । एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट हजार सागर पृथक्त्वकोडिपूर्व अधिक है । च्यारि उपशमश्रेणीवालानिका नानाजीवकी अपेक्षा गुणस्थानवत् अंतर है । एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट हजार सागर पृथक्त्वकोडिपूर्व अधिक है। अवशेषनिका गुणस्थानवत् अंतर है ॥

कायके अनुवादकरि पृथिवी अप तेज वायु कायिकनिकै नानाजीव अपेक्षा अंतर नाही है ।

एकजीव अपेक्षा जघन्य क्षुद्रभव उत्कृष्ट अनंतकाल है सो असंख्यातपुद्गलपरिवर्तन है । वनस्पतिकायिकनिकै नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है । एकजीव अपेक्षा जघन्य क्षुद्रभव उत्कृष्ट असंख्यातलोक । इहां असंख्यातलोककै प्रदेश हैं ते ते कालके समय ग्रहण है । ऐसैं काय अपेक्षा अंतर कह्या ॥ गुणस्थान अपेक्षा अंतर नांही है । त्रसकायिकविषैं मिथ्यादृष्टिका गुणस्थानवत् अंतर है । सासादनसम्यग्दृष्टि अर सम्यग्मिथ्यादृष्टिका नानाजीवकी अपेक्षा गुणस्थानवत् । एकजीव अपेक्षा जघन्य पल्यका असंख्यातवा भाग है । अर अंतर्मुहूर्त है । उत्कृष्ट दोय हजार सागर पृथक्त्वकोडिपूर्व अधिक है । असंयतसम्यग्दृष्टि आदि अप्रमत्तपर्यंतनिका नानाजीवकी अपेक्षा अंतर नांही है । एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है, उत्कृष्ट दोय हजार सागर पृथक्त्वकोडिपूर्व अधिक है । च्यारि उपशमश्रेणीवालाका नानाजीवकी अपेक्षा गुणस्थानवत् अंतर है । एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट दोय हजार सागर पृथक्त्वकोडिपूर्व अधिक है । अवशेषनिका पंचेंद्रियवत् अंतर है ॥

योगके अनुवादकरि काय वचन मन योगिनिकै मिथ्यादृष्टि आदि असंयतसम्यग्दृष्टि संयतासंयत प्रमत्त अप्रमत्तसंयत सयोगकेवलीनिकै नानाजीवकी अपेक्षा एकजीवकी अपेक्षा अंतर

नांही है । सासादनसम्यग्दृष्टि सम्यग्मिथ्यादृष्टिनिका नानाजीवकी अपेक्षा गुणस्थानवत् अंतर है। एकजीवकी अपेक्षा अंतर नांही है। च्यारि उपशमश्रेणीवालेनिका नानाजीवकी अपेक्षा गुणस्थानवत् अंतर है । एकजीव अपेक्षा अतर नांही है । च्यारि क्षपकवालेनिकै अर अयोगकेवलीनिकै गुणस्थानवत् अंतर है। एकजीव अपेक्षा अंतर नांही है॥

वेदके अनुवादकरि स्त्रीवेदविषैं मिथ्यादृष्टिकै नानाजीवकी अपेक्षा अंतर नांही है । एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है । उत्कृष्ट पंचावन पल्य किछु घाटि है । सासादनसम्यग्दृष्टि अर सम्यग्मिथ्यादृष्टिका नानाजीव अपेक्षा गुणस्थानवत् है । एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ पल्यका असंख्यातवा भाग है अर अंतर्मुहूर्त है । उत्कृष्ट पृथक्त्व सौपल्य है । असंयतसम्यग्दृष्टि आदि अप्रमत्तपर्यंतनिका नानाजीवकी अपेक्षा अंतर नांही है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट पृथक्त्व सौपल्य है । दोय उपशमश्रेणीवालाका नानाजीवकी अपेक्षा गुणस्थानवत् । एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है । उत्कृष्ट पृथक्त्व सौपल्य है । दोय क्षपकश्रेणीवालाका नानाजीवकी अपेक्षा जघन्य एकसमय उत्कृष्ट पृथक्त्व वर्ष है । एकजीव अपेक्षा अंतर नांही है । पुरुषवेदविषैं मिथ्यादृष्टिका गुणस्थानवत्। सासादनसम्यग्दृष्टि अर सम्यग्मिथ्यादृष्टिका नानाजीव

अपेक्षा गुणस्थानवत् एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ पल्योपमकै असंख्यातवा भाग अर अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट पृथक्त्व सौ सागर है। असंयतसम्यग्दृष्टि आदि अप्रमत्तसंयतपर्यंतनिका नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट पृथक्त्व सौ सागर है। दोय उपशमश्रेणीवालानिका नानाजीव अपेक्षा गुणस्थानवत्। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट पृथक्त्व सौ सागर है। दोय क्षपकश्रेणीवालानिका नानाजीवकी अपेक्षा जघन्य एकसमय है। उत्कृष्ट एकवर्ष कछु अधिक है। एकजीव अपेक्षा अंतर नांही है। नपुंसकवेदविपैं मिथ्यादृष्टिका नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट तेतीस सागर देशोन है। सासादनसम्यग्दृष्टि आदि अनिवृत्ति उपशमपर्यंतनिका गुणस्थानवत् अंतर है। अर दोय क्षपकश्रेणीवालानिका स्त्रीवेदवत् है। वेदरहित अनिवृत्ति बादरसांपराय उपशमक सूक्ष्मसांपराय उपशमकका नानाजीव अपेक्षा गुणस्थानवत है। एकजीव अपेक्षा जघन्य अरु उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त है। उपशांतकपायका नानाजीव अपेक्षा गुणस्थानवत् है। एकजीवकी अपेक्षा अंतर नांही है। अवशेप गुणस्थानवत् अंतर है ॥

कपायकै अनुवादकरि क्रोध मान माया लोभ कपायकै मिथ्यादृष्टि आदि अनिवृत्ति

उपशमश्रेणीवालातांई मनोयोगीवत् अंतर है । अर दोय क्षपकश्रेणीवालानिका नानाजीव अपेक्षा जघन्य एकसमय उत्कृष्ट एकवर्ष किछु अधिक । केवललोभसूक्ष्मसांपरायोपशमकका नानाजीव अपेक्षा गुणस्थानवत् । एकजीव अपेक्षा अंतर नांही है । सूक्ष्मसांपराय क्षपकश्रेणीवालाका गुणस्थानवत् । कषायरहित च्यारि गुणस्थाननिविषैं उपशांतकषायका नानाजीव अपेक्षा गुणस्थानवत् । एकजीव अपेक्षा अंतर नांही । अवशेष तीन गुणस्थाननिका गुणस्थानवत् अंतर है ॥

ज्ञानके अनुवादकरि मतिअज्ञान श्रुतअज्ञान विभंगज्ञानवालेविषैं मिथ्यादृष्टिका नानाजीव अपेक्षा एकजीव अपेक्षा अंतर नांही है । सासादनसम्यग्दृष्टिका नानाजीवकी अपेक्षा गुणस्थानवत् । एकजीव अपेक्षा अंतर नांही है । मति-श्रुत-अवधिज्ञानवालेविषैं असंयतसम्यग्दृष्टीका नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है । एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है । उत्कृष्ट कोडिपूर्व देशोन है । संयतासंयतका नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है । एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है । उत्कृष्ट छयासठि सागरोपम किछु अधिक है । प्रमत्त अप्रमत्तसंयतका नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है । एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तेतीस सागरोपम किछु अधिक है । च्यारि उपशमश्रेणीवालेनिका नानाजीवकी अपेक्षा गुणस्थानवत् है । एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ

अंतर्मुहूर्त है । उत्कृष्ट छयासठी सागरोपम कछु अधिक है । च्यारि क्षपकश्रेणीवालानिका गुणस्थानवत् अंतर है। तहां विशेष यहु- अवधिज्ञानीनिका नानाजीव अपेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पृथक्त्व वर्ष । एकजीव अपेक्षा अंतर नांही है । मनःपर्ययज्ञानीनिका प्रमत्त अप्रमत्त-संयमीनिका नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है । एकजीव अपेक्षा जघन्यभी उत्कृष्टभी अंतर्मुहूर्त है । च्यारि उपशमश्रेणीवालेनिका नानाजीव अपेक्षा गुणस्थानवत् । एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है । उत्कृष्ट कोडिपूर्व किछु घाटि है । च्यारि क्षपकश्रेणीवालानिका अवधिज्ञानीवत् अंतर है । दोऊके केवलज्ञानीनिका गुणस्थानवत् अंतर है ॥

संयमके अनुवादकरि सामयिक च्छेदोपस्थापना शुद्धसंयमिविषैं प्रमत्त अप्रमत्त संयमीका नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है । एकजीव अपेक्षा जघन्यभी उत्कृष्टभी अंतर्मुहूर्त है । दोऊ उपशमश्रेणीवालाका नानाजीव अपेक्षा गुणस्थानवत् अंतर है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है । उत्कृष्ट कोडिपूर्व कछु घाटि है । दोऊ क्षपकश्रेणीवालानिका गुणस्थानवत् अंतर है । परिहारविशुद्धि संयमी प्रमत्त अप्रमत्तका नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है । एकजीव अपेक्षा जघन्यभी उत्कृष्टभी अंतर्मुहूर्त है । सूक्ष्मसांपरायसंयमविषैं उपशमश्रेणीवालाका नानाजीव

अपेक्षा गुणस्थानवत् । एकजीव अपेक्षा अंतर नांही है । क्षपकश्रेणीवाळाका गुणस्थानवत् अंतर है । यथाख्यातसंयमविषैं अकषायवत् अंतर जाननां । संयतासंयतका नानाजीव अपेक्षा एकजीव अपेक्षा अंतर नांही है । असंयतविषैं मिथ्यादृष्टिका नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है । एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है । उत्कृष्ट तेतीस सागर देशोन है । अवशेष तीनूं गुणस्थाननिका गुणस्थानवत् अंतर है ॥

दर्शनके अनुवादकरि चक्षुर्दर्शनवालेविषैं मिथ्यादृष्टिका गुणस्थानवत् अंतर है। सासादनसम्यग्दृष्टि सम्यग्मिथ्यादृष्टिका नानाजीव अपेक्षा गुणस्थानवत् है । एकजीव अपेक्षा जघन्य पल्यकै असंख्यातवैं भाग अर अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट दोय हजार सागर कछु घाटि है। असंयतसम्यग्दृष्टि आदि अप्रमत्तसंयतपर्यंतनिका नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट दोय हजार सागर कछु घाटि है। च्यारि उपशमश्रेणीवालानिका नानाजीव अपेक्षा गुणस्थानवत् है। एकजीवकी अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट दोय हजार सागर देशोन है। च्यारि क्षपकश्रेणीवालानिका गुणस्थानवत् है। अचक्षुर्दर्शनविषैं मिथ्यादृष्टि आदि क्षीणकषायपर्यंतनिका गुणस्थानवत् है । अवधिदर्शनवालेका अवधिज्ञानीवत् है। केवलदर्शनवालेका केवलज्ञानीवत् है ॥

लेश्याके अनुवादकरि कृष्ण नील कापोत लेश्यावालेनिविषैं मिथ्यादृष्टि असंयतसम्यग्दृष्टिकै नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट तेतीस सागर सतरा सागर सात सागर कछु घाटि है। सो नारकी अपेक्षा है। सासादनसम्यग्दृष्टि सम्यङ्मिथ्यादृष्टिका नानाजीव अपेक्षा सामान्यवत् है। एकजीव अपेक्षा जघन्य पल्योपमका असंख्यातवा भाग है। अंतर्मुहूर्तभी है। उत्कृष्ट तेतीस सागर सतरा सागर सात सागर है। सो कछु घाटि है। पीतपद्मलेश्याविषैं मिथ्यादृष्टि असंयतसम्यग्दृष्टिका नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट दोय सागर अठारा सागर कछु अधिक है। सासादन सम्यग्दृष्टि सम्यग्मिथ्यादृष्टिका नानाजीव अपेक्षा गुणस्थानवत् है। एकजीव अपेक्षा जघन्य पल्यका असंख्यातवा भाग है। अर अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट दोय सागर अठारा सागर कछु अधिक है। संयतासंयत प्रमत्त अप्रमत्त संयतका नानाजीवकी अपेक्षा एकजीवकी अपेक्षा अंतर नांही है। शुक्ललेश्यावालाविषैं मिथ्यादृष्टि असंयतसम्यग्दृष्टिका नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट इकतीस सागर कछु घाटि है। सासादनसम्यग्दृष्टि सम्यङ्मिथ्यादृष्टिका नानाजीव अपेक्षा अंतर गुणस्थानवत् है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ पल्यकै

असंख्यातवैं भाग है। अर अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट इकतीस सागर कछु घाटि है। संयतासंयत अर प्रमत्तसंयतका पीतलेश्यावत् है। अप्रमत्तसंयतका नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है। एकजीव अपेक्षा जघन्यभी उत्कृष्टभी अंतर्मुहूर्त है। तीन उपशमश्रेणीवालानिका नानाजीव अपेक्षा गुणस्थानवत् है। एकजीव अपेक्षा जघन्यभी उत्कृष्टभी अंतर्मुहूर्त है। उपशांत कषायका नानाजीव अपेक्षा गुणस्थानवत् है। एकजीव अपेक्षा अंतर नांही है। च्यारि क्षपकश्रेणीवालानिका अर सयोगकेवलीनिका अर लेश्यारहितका गुणस्थानवत् अंतर है ॥

भव्यके अनुवादकरि भव्यविषैं मिथ्यादृष्टि आदि अयोगकेवलीपर्यंतनिका गुणस्थानवत् अंतर है। अभव्यनिका नानाजीव अपेक्षा एकजीव अपेक्षा अंतर नांही है ॥

सम्यक्त्वके अनुवादकरि क्षायिक सम्यग्दृष्टिविषैं असंयतसम्यग्दृष्टीका नानाजीवके अपेक्षा अंतर नांही है। एकजीव प्रति जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट कोडिपूर्व कछु घाटि है। संयतासंयत अर प्रमत्त अप्रमत्त संयतनिका नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट तेतीस सागर कछु अधिक है। च्यारि उपशमश्रेणीवालानिका नानाजीव अपेक्षा गुणस्थानवत् है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट तेतीस

सागर कछु अधिक है। अवशेषनिका गुणस्थानवत् अंतर है। क्षायोपशमिक सम्यग्दृष्टीनिविषैं असंयतसम्यग्दृष्टीका नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट कोडिपूर्व देशोन है। संयतासंयतका नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है उत्कृष्ट छ्यासठि सागरोपम देशोन है। प्रमत्त अप्रमत्त संयतका नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट तेतीस सागर कछु अधिक है। औपशमिक सम्यग्दृष्टिनिविषैं असंयतसम्यग्दृष्टिका नानाजीवकी अपेक्षा जघन्य तौ एकसमय है। उत्कृष्ट सात राति दिन है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्टभी अंतर्मुहूर्त है। संयतासंयतका नानाजीव अपेक्षा जघन्य तौ एकसमय है। उत्कृष्ट चौदह राति दिनका अंतर है। एकजीव अपेक्षा जघन्यभी उत्कृष्टभी अंतर्मुहूर्त है। प्रमत्त अप्रमत्त संयतका नानाजीव अपेक्षा जघन्य तौ एकसमय है। उत्कृष्ट पंदरह राति दिन है। एकजीव अपेक्षा जघन्यभी उत्कृष्टभी अंतर्मुहूर्त है। तीन उपशमश्रेणीवालानिका नानाजीव अपेक्षा जघन्य तौ एकसमय है। उत्कृष्ट पृथक्त्ववर्षका अंतर है। एकजीव अपेक्षा जघन्यभी उत्कृष्टभी अंतर्मुहूर्त है। उपशांतकषायका नानाजीव अपेक्षा गुणस्थानवत् है।

एकजीव अपेक्षा अंतर नांही है। सासादनसम्यग्दृष्टि मिथ्यादृष्टिका नानाजीव अपेक्षा जघन्य तौ एकसमय है। उत्कृष्ट पल्यकै असंख्यातवैं भाग है। एकजीव अपेक्षा अंनर नांही है। मिथ्यादृष्टिका नानाजीव अपेक्षा अर एकजीव अपेक्षा अंतर नांही है॥

संज्ञीके अनुवादकरि संज्ञीनिविषैं मिथ्यादृष्टिका गुणस्थानवत् अंतर है। सासादनसम्यग्दृष्टि सम्यग्मिथ्यादृष्टिका नानाजीव अपेक्षा गुणस्थानवत् अंतर है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ पल्यका असंख्यातवा भाग अर अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट पृथक्त्व सौ सागर है। असंयत सम्यग्दृष्टि आदि अप्रमत्ततांई नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट पृथक्त्व सौ सागर है। च्यारि उपशमश्रेणीवालेनिका नानाजीव अपेक्षा गुणस्थानवत् अंतर है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट पृथक्त्व सौ सागर है। च्यारि क्षपकश्रेणीवालेनिका गुणस्थानवत् अंतर है। असंज्ञीके नानाजीव अपेक्षा एकजीव अपेक्षा अंतर नांही है। दोऊ नामकरि रहितनिका गुणस्थानवत् अंतर है॥

आहारके अनुवादकरि आहारकनिविषैं मिथ्यादृष्टिका गुणस्थानवत् अंतर है। सासादन-सम्यग्दृष्टि–सम्यग्मिथ्यादृष्टिका नानाजीव अपेक्षा गुणस्थानवत् अंतर है। एकजीव अपेक्षा जघन्य

तौ पल्योपमका असंख्यातवा भाग अर अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट अंगुलका असंख्यातवा भाग आकाशके प्रदेश जेते हैं तेते समय हैं। ते असंख्यातासंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काल है। असंयतसम्यग्दृष्टि आदि अप्रमत्तगुणस्थानपर्यंत नानाजीवकी अपेक्षा अंतर नांही है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट अंगुलका असंख्यातवा भाग है। ते असंख्यातासंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणीके समयप्रमाण हैं। च्यारि उपशमश्रेणीवालानिका नानाजीवकी अपेक्षा गुणस्थानवत् अंतर है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट अंगुलका असंख्यातवा भाग है। सो असंख्यातासंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणीके समयप्रमाण है। च्यारि क्षपकश्रेणीवालानिका अर सयोगकेवलीनिका गुणस्थानवत् अंतर है। अनाहारकनिविषैं मिथ्यादृष्टिका नानाजीव अपेक्षा एकजीव अपेक्षा अंतर नांही है। सासादनसम्यग्दृष्टीका नानाजीवकी अपेक्षा जघन्य तौ एकसमय है। उत्कृष्ट पल्यके असंख्यातवैं भाग है। एकजीव अपेक्षा अंतर नांही है। असंयतसम्यग्दृष्टिका नानाजीव अपेक्षा जघन्य एकसमय है। उत्कृष्ट पृथक्त्व महीना है। एकजीव अपेक्षा अंतर नांही है। सयोगकेवलीका नानाजीवकी अपेक्षा जघन्य तौ एकसमय है। उत्कृष्ट पृथक्त्व वर्ष है। एकजीव अपेक्षा अंतर नांही है। ऐसैं अंतरका निश्चय कीया॥

आगै भावकूं प्रगट कीजिये ॥ तहां भाव दोय प्रकार। सामान्यकरि गुणस्थान, विशेषकरि मार्गणा। तहां प्रथमही सामान्यकरि मिथ्यादृष्टि तौ औदयिक भाव है। सासादनसम्यग्दृष्टि पारिणामिक भाव है। सम्यग्मिथ्यादृष्टि क्षायोपशमिक भाव है। असंयतसम्यग्दृष्टि औपशमिक अथवा क्षायिक अथवा क्षायोपशमिक भाव है। इहां असंयतपणां है सो औदयिकभावकरि है। संयतासंयत प्रमत्तसंयत अप्रमत्तसंयत ऐसै क्षायोपशमिक भाव है। च्यारि उपशमश्रेणीवाला औपशमिक भाव है। च्यारि क्षपकश्रेणीवालानिंविषैं अर सयोगकेवली अयोगकेवलीनिविषैं क्षायिक भाव है ॥

विशेषकरि गतिके अनुवादकरि नरकगतिविषैं प्रथमपृथिवीविषैं नारकी मिथ्यादृष्टि आदि असंयतसम्यग्दृष्टिपर्यंतनिके गुणस्थानवत् भाव है। दूसरी पृथिवी आदि सातमीपर्यंत मिथ्यादृष्टि सासादन सम्यङ्मिथ्यादृष्टीनिकै गुणस्थानवत्। असंयतसम्यग्दृष्टिकै औपशमिक क्षायोपशमिकभाव है। असंयत है सो औदयिकभावकरि है। तिर्यंचगतिविषैं तिर्यंचनिकै मिथ्यादृष्टि संयतासंयत पर्यंतनिकै गुणस्थानवत् भाव है। मनुष्यगतिविषैं मिथ्यादृष्टि आदि अयोगकेवलीपर्यंतनिके गुणस्थानवत् भाव है। देवगतिविषैं देवनिकै मिथ्यादृष्टि आदि असंयतसम्यग्दृष्टिपर्यंतनिकै गुणस्थानवत् भाव है ॥

इंद्रियके अनुवादकरि एकेंद्रिय विकलत्रयनिकै औदयिकभाव है। पंचेंद्रियनिविषैं मिथ्यादृष्टि आदि अयोगकेवलीपर्यंतनिकै गुणस्थानवत् भाव है॥

कायके अनुवादकरि स्थावरकायिकनिकै औदयिक भाव है। त्रसकायिकनिकै गुणस्थानवत् भाव है॥

योगके अनुवादकरि कायवचनमनोयोगीनिकै मिथ्यादृष्टि आदि सयोगकेवलीपर्यंतनिकै अर अयोगकेवलीनिकै गुणस्थानवत् भाव है॥

वेदके अनुवादकरि स्त्रीपुरुषनपुंसकवेदीनिकै अर वेदरहितनिकै गुणस्थानवत् भाव है॥

कषायानुवादकरि क्रोधमानमायालोभकषायवालेनिकै अर कषायरहितनिकै गुणस्थानवत् भाव है॥

ज्ञानके अनुवादकरि मति अज्ञान श्रुत अज्ञान विभंगज्ञानवालेनिकै अर मतिश्रुत अवधि मनःपर्यय केवलज्ञानीनिकै गुणस्थानवत् भाव है॥

संयमका अनुवादकरि सर्वही संयतनिकै अर संयतासंयतनिकै अर असंयतनिकै गुणस्थानवत् भाव है॥

दर्शनानुवादकरि चक्षुर्दर्शन-अचक्षुर्दर्शन-अवधिदर्शन-केवलदर्शनवालेनिकै गुणस्थानवत् भाव है॥

लेश्याके अनुवादकरि छहू लेश्यावालेनिकै अर लेश्यारहितनिकै गुणस्थानवत् भाव है॥

भव्यके अनुवादकरि भव्यनिकै मिथ्यादृष्टि आदि अयोगकेवलीपर्यंतनिकै गुणस्थानवत् भाव है। अभव्यनिकै पारिणामिक भाव है ॥

सम्यक्त्वके अनुवादकरि क्षायिकसम्यग्दृष्टीविषैं असंयंतसम्यग्दृष्टीकै क्षायिकभाव तौ क्षायिकसम्यक्त्व है। अर असंयतपणां है सो औदयिकभावकरि है। संयतासंयत प्रमत्त अप्रमत्तसंयतनिकै क्षायोपशमिक भाव है। सम्यक्त्व क्षायिक है सो क्षायिकभावकरि है। च्यारि उपशमश्रेणीवालेनिकै औपशमिक भाव है। सम्यक्त्व इहां क्षायिकभावकरि हो है। अवशेषनिकै गुणस्थानवत् भाव है। क्षायोपशमिक सम्यग्दृष्टीविषैं असंयतसम्यग्दृष्टीकै क्षायोपशमिक भाव है सो तौ क्षायोपशमिक सम्यक्त्व है। असंयत है सो औदयिकभावकरि है। संयतासंयत प्रमत्त अप्रमत्तसंयतनिकै क्षायोपशमिक भाव है। क्षायोपशमिकसम्यक्त्व है। औपशमिकसम्यक्त्वविषैं असंयतसम्यग्दृष्टीकै औपशमिक भाव उपशमसम्यक्त्व है। असंयत है सो औदयिकभावकरि है। संयतासंयत प्रमत्त अप्रमत्तसंयतनिकै क्षायोपशमिक भाव है। सम्यक्त्व औपशमिक है। च्यारि उपशमश्रेणीवालानिकै औपशमिकभाव उपशमसम्यक्त्व है। सासादनसम्यग्दृष्टिकै पारिणामिक भाव है। सम्यग्मिथ्यादृष्टिकै क्षायोपशमिक भाव है। मिथ्यादृष्टीकै औदयिक भाव है ॥

संज्ञीके अनुवादकरि संज्ञीनिकै गुणस्थानवत्। असंज्ञीनिकै औदयिक भाव है। दोऊ संज्ञारहितनिकै गुणस्थानवत् भाव है ॥

आहारकके अनुवादकरि आहारकनिकै अर अनाहारकनिकै गुणस्थानवत् भाव है। ऐसैं भावका निरूपण मोहकर्म अपेक्षा उदाहरणरूप समाप्त भया ॥

आगै अल्पबहुत्वका वर्णन कीजिये है। सो दोय प्रकार। सामान्यकरि, विशेषकरि। तहां प्रथमही सामान्यकरि तीन उपशमश्रेणीवाला सर्वतैं स्तोक कहिये थोरा है॥ ते अपने अपने गुणस्थानकालविषैं प्रवेशकरि तुल्यसंख्या हैं। अर उपशांतकषायवालाभी तितनाही है। बहुरि तीन क्षपकश्रेणीवाला इनितैं संख्यातगुणा है। अर क्षीणकषाय छद्मस्थ वीतरागभी तितनाही है। अर सयोगकेवली अयोगकेवली प्रवेशकरि तुल्यसंख्या है। अर सयोगकेवली अपने कालविषैं भेले होय ते इनितैं संख्यातगुणां हैं। बहुरि अप्रमत्तसंयत संख्यातगुणां हैं। तिनितैं प्रमत्तसंयत संख्यातगुणां हैं। तिनितैं संयतासंयत असंख्यातगुणां है। तिनितैं सासादनसम्यग्दृष्टि असंख्यातगुणा हैं। तिनितैं सम्यग्मिथ्यादृष्टि असंख्यातगुणां हैं। तिनितैं असंयतसम्यग्दृष्टि असंख्यातगुणां हैं। तिनितैं मिथ्यादृष्टि अनंतगुणां हैं ॥

विशेषकरि गतिके अनुवादकरि नरकगतिविषैं सर्वपृथ्वीनिविषैं नारकी जीव सर्वतैं स्तोक सासादनसम्यग्दृष्टि हैं। तिनितैं संख्यातगुणां सम्यग्मिथ्यादृष्टि हैं। तिनितैं असंख्यातगुणां असंयतसम्यग्दृष्टि हैं। तिनितैं असंख्यातगुणां मिथ्यादृष्टि हैं। तिर्यंचगतिविषैं तिर्यंच सर्वतैं थोरा संयतासंयत हैं। अन्यकी संख्या गुणस्थानवत् है। मनुष्यगतिविषैं मनुष्यनिकै उपशमश्रेणीवाला आदिविषैं अर प्रमत्तसंयतनितांई गुणस्थानवत्। तिनितैं संख्यातगुणां संयतासंयत हैं। तिनितैं सासादनसम्यग्दृष्टि संख्यातगुणां हैं। तिनितैं संख्यातगुणां सम्यग्मिथ्यादृष्टि हैं। तिनितैं असंयतसम्यग्दृष्टि संख्यातगुणां हैं। तिनितैं मिथ्यादृष्टि असंख्यातगुणां हैं। देवगतिविषैं देवनिके नारकीवत् अलपबहुत्व है॥ इंद्रियके अनुवादकरि एकेंद्रिय विकलत्रयविषैं गुणस्थानभेद नांही। तातैं अलपबहुत्वका अभाव है॥ इंद्रिय अपेक्षा कहिये। तहां पंचेंद्रिय आदि एकेंद्रियपर्यंत उत्तरोत्तर बहुत्व है। पंचेंद्रियनिके गुणस्थानवत्। विशेष यहु जो मिथ्यादृष्टि असंख्यातगुणेही है॥

कायके अनुवादकरि स्थावरकायविषैं गुणस्थानभेद नांही, तातैं अलपबहुत्वका अभाव है। कायप्रति कहिये है, तहां सर्वतैं थोरा तेजस्कायिक हैं, तिनितैं बहुत पृथिवीकायिक हैं, तिनितैं बहुत अप्कायिक हैं, तिनितैं बहुत वातकायिक हैं, सर्वतैं अनंतगुणां वनस्पतिकायिके हैं। त्रसकायिकनिकै पंचेंद्रियवत् है॥

योगके अनुवादकरि वचनमनयोगीनिकै पंचेंद्रियवत् काययोगीनिकै गुणस्थानवत् अल्पबहुत है॥ वेदके अनुवादकरि स्त्रीपुरुषवेदीनिकै पंचेंद्रियवत्। नपुंसकवेदीनिकै अर वेदरहितानिकै गुणस्थानवत् अल्पबहुत्व है॥

कषायके अनुवादकरि क्रोधमानमायाकषायवालेनिकै पुरुषवेदवत्। विशेष यहु जो मिथ्यादृष्टि अनंतगुणा है। लोभकषायवालेनिकै दोय उपशमश्रेणीवाला तुल्यसंख्या है। अर क्षपकश्रेणीवाला तिनितैं संख्यातगुणां है। सूक्ष्मसांपराय शुद्धसंयत उपशमश्रेणीवाला विशेषकरि अधिक है। तिनितैं सूक्ष्मसांपराय क्षपकश्रेणीवाला संख्यातगुणां है। अवशेषनिकै गुणस्थानवत् है॥

ज्ञानके अनुवादकरि मतिअज्ञान श्रुतअज्ञानवालेनिविषैं सर्वतैं स्तोक सासादनसम्यग्दृष्टि है। तिनितैं अनंतगुणां मिथ्यादृष्टि है। विभंगज्ञानीनिविषैं सर्वतैं थोरा सासादनसम्यग्दृष्टि है। तिनितैं असंख्यातगुणां मिथ्यादृष्टि है। मतिश्रुतअवधिज्ञानीनिविषैं सर्वतैं स्तोक च्यारि उपशमश्रेणीवाला है। तिनितैं संख्यातगुणां क्षपकश्रेणीवाला है। तिनितैं संख्यातगुणां अप्रमत्तसंयत है। तिनितैं संख्यातगुणां प्रमत्तसंयत है। तिनितैं असंख्यातगुणां संयतासंयत है। तिनितैं असंख्यातगुणां असंयतसम्यग्दृष्टि है। मनःपर्ययज्ञानीनिविषैं सर्वतैं स्तोक च्यारि उपशमश्रेणीवाला

है। तिनितैं संख्यातगुणां क्षपकश्रेणीवाला है। तिनितैं संख्यातगुणां अप्रमत्तसंयत है। तिनितैं संख्यातगुणां प्रमत्तसंयत है। केवलज्ञानीनिविषैं अयोगकेवलीनितैं संख्यातगुणां सयोगकेवली है ॥

संयमके अनुवादकरि सामयिकच्छेदोपस्थापनशुद्धसंयतनिविषैं दोऊ उपशमश्रेणीवाला तुल्यसंख्या है। तिनितैं संख्यातगुणां क्षपकश्रेणीवाला है। तिनितैं संख्यातगुणां अप्रमत्तसंयत है। तिनितैं संख्यातगुणां प्रमत्तसंयत है। परिहारविशुद्धिसंयतनिविषैं अप्रमत्तनितैं संख्यातगुणां प्रमत्तसंयत है। सूक्ष्मसांपराय शुद्धसंयमीनिविषैं उपशमश्रेणीवालानितैं क्षपकश्रेणीवाला संख्यातगुणां है। यथाख्यातविहारशुद्धसंयतनिविषैं उपशांतकषायनितैं क्षीणकषायवाले संख्यातगुणां है। अयोगकेवली तितनेंही है। तिनितैं संख्यातगुणां सयोगकेवली है। संयतासंयतनिविषैं गुणस्थान एकही तातैं अल्पबहुत्व नांही। असंयतनिविषैं सर्वतैं स्तोक सासादनसम्यग्दृष्टि है। तिनितैं संख्यातगुणां सम्यग्मिथ्यादृष्टि है। तिनितैं असंयतसम्यग्दृष्टि असंख्यातगुणां है। तिनितैं अनंतगुणां मिथ्यादृष्टि है ॥

दर्शनके अनुवादकरि चक्षुर्दर्शनवालेनिकै मनोयोगीवत् है। अचक्षुर्दर्शनवालेनिकै काययोगीवत् है। अवधिदर्शनवालेनिकै अवधिज्ञानीवत् है। केवलदर्शनवालेनिकै केवलज्ञानीवत् है ॥

लेश्याके अनुवादकरि कृष्णनीलकापोतलेश्यावालेनिकै असंयतवत् है। पीतपद्मलेश्यावालेनिकै

सर्वतैं स्तोक अप्रमत्तसंयत है। तिनितैं संख्यातगुणां प्रमत्तसंयत है। ऐसैं अन्यगुणस्थानवाले पंचेंद्रियवत् है। शुक्लेश्यावालेनिकै सर्वतैं स्तोक उपशमश्रेणीवाला है। तिनितैं संख्यातगुणां क्षपकश्रेणीवाला है। तिनितैं संख्यातगुणां सयोगकेवली है। तिनितैं संख्यातगुणां अप्रमत्तसंयत है। तिनितैं संख्यातगुणां प्रमत्तसंयत है। तिनितैं असंख्यातगुणां संयतासंयत है। तिनितैं असंख्यातगुणां सासादनसम्यग्दृष्टि है। तिनितैं असंख्यातगुणां सम्यग्मिथ्यादृष्टि है। तिनितैं असंख्यातगुणां मिथ्यादृष्टि है। तिनितैं असंख्यातगुणां असंयतसम्यग्दृष्टि है॥

भव्यके अनुवादकरि भव्यनिके गुणस्थानवत् अल्पबहुत्व है। अभव्यनिकै अल्पबहुत्व नांही है॥

सम्यक्त्वके अनुवादकरि क्षायिकसम्यग्दृष्टीनिविषैं सर्वतैं स्तोक च्यारि उपशमश्रेणीवाला है। अन्य प्रमत्तसंयतनितांई गुणस्थानवत् है। तिनितैं संयतासंयत संख्यातगुणां है। तिनितैं असंख्यातगुणां असंयतसम्यग्दृष्टि है। क्षायोपशमिकसम्यग्दृष्टि है तिनिविषैं सर्वतैं स्तोक अप्रमत्तसंयत है। तिनितैं संख्यातगुणां प्रमत्तसंयत है। तिनितैं असंख्यातगुणां संयतासंयत है। तिनितैं असंख्यातगुणां असंयतसम्यग्दृष्टि है। औपशमिकसम्यग्दृष्टीनिविषैं सर्वतैं स्तोक च्यारि उपशमश्रेणीवाला है। तिनितैं संख्यातगुणां अप्रमत्तसंयत है। तिनितैं संख्यातगुणां प्रमत्तसंयत है।

तिनितैं असंख्यातगुणां संयतासंयत है। तिनितैं असंख्यातगुणां असंयतसम्यग्दृष्टि है। अवशेषनिकै अल्पबहुत्व नांही है। जातैं विवक्षित एक एक गुणस्थानही है ॥

संज्ञीका अनुवादकरि संज्ञीनिकै चक्षुर्दर्शनवालेवत् है। असंज्ञीनिकै अल्पबहुत्व नांही है। दोऊ संज्ञारहितनिकै केवलज्ञानीवत् है ॥

आहारकके अनुवादकरि आहारकनिकै काययोगीवत् है। अनाहारकनिकै सर्वतैं स्तोक सयोगकेवली है। तिनितैं संख्यातगुणां अयोगकेवली है। तिनितैं असंख्यातगुणां सासादनसम्यग्दृष्टि है। तिनितैं असंख्यातगुणां असंयतसम्यग्दृष्टि है। तिनितैं अनंतगुणां मिथ्यादृष्टि है। ऐसैं मिथ्यादृष्टि आदिनिकै गत्यादिकविषैं मार्गणाकरि सो सामान्यकरि है। तहां सूक्ष्मभेद आगमतैं अविरोधकरि अंगीकार करनां ॥

इहां सत् आदिका संक्षेप भावार्थ ऐसा जाननां— जो, सत् कहिये वस्तु है, ऐसा अस्तित्वका कहना। संख्या कहिये यह वस्तु केती है, ऐसैं भेदनिकी गणना कहनां। क्षेत्र कहिये यह वस्तु वर्तमानकालमैं एते क्षेत्रमैं है, ऐसा कहना। स्पर्शन कहिये यह वस्तु तीन कालमैं एते क्षेत्रमैं विचरै है, ऐसा कहनां। काल कहिये निश्चय व्यवहाररूप है, सो जिस वस्तु अपेक्षा जेता

कालका परिमाण कहनां। अंतर कहिये एकगुणतैं दूसरै गुण जाय फेरी तिसही गुण आवै ताकै बीचि जेते काल रहै सो विरहकाल है, ताकूं अंतर कहिये, ताका कहनां। भाव कहिये औपशमिक आदि पंच भाव हैं, तिनिका कहना। अल्पबहुत्व कहिये परस्पर दोयकी अपेक्षातैं संख्याका हीनाधिकपणां कहनां। ऐसैं इनि आठ अनुयोगनिकरि वस्तुका अधिगम होय है। तिसका उदाहरण जीवनामा वस्तुका गुणस्थान मार्गणापरि कह्या सो जाननां। ऐसैंही यथासंभव आगमके अनुसार सर्ववस्तुपरि लगावणां। केई नास्तिकवादी वस्तूकूं सर्वथा अभावरूपही कहै हैं, तिनिका निराकरण सत् कहनेतैं होय है। केई वस्तुकूं सर्वथा एक अभेद कहै हैं, तिनिका निषेध भेदनिकी गणनातैं जाननां। केई वस्तुके प्रदेश नांही मानै हैं तिनिका निषेध क्षेत्र कहनेतैं जाननां। केई वस्तुकूं सर्वथा क्रियारहित मानै हैं तिनिका निषेध स्पर्शन कहनेतैं जाननां। अथवा जो कोई वस्तुका सर्वथा कदाचित् प्रलय होना मानै हैं तथा क्षीणकही मानै तिनिका निषेध कालका नियम कहनेतैं होय है। केई वस्तुकूं क्षणिकही मानै हैं तिनिका निषेध अंतरके नियम कहनेतैं होय है। केई वस्तूकूं एकही मानै हैं तथा अनेकही मानै हैं तिनिका निषेध अल्पबहुका नियम कहनेतैं होय है। ऐसैं वस्तु अनंतधर्मात्मक है। ताके द्रव्य क्षेत्र काल भावकी अपेक्षा विधिनिषेधतैं

प्रमाण नय निक्षेप अनुयोगकी विधिकरि साधनेतैं यथार्थज्ञान होनेतैं अधिगमज सम्यग्दर्शनकी प्राप्ति होय है। सो याका विधिनिषेधकी चर्चा श्लोकवार्तिकमैं विशेषकरि है तहांतैं जाननां। ऐसैं आदिविषैं कह्या जो सम्यग्दर्शन ताका लक्षण उत्पत्ति निमित्त स्वामी विषय न्यास अधिगमका उपाय कह्या। याके संबंधकरि जीवादिककाभी सत् परिमाणादिक कहे ॥

याके अनंतर सम्यग्ज्ञान विचारनेयोग्य है, सो कहे हैं—

॥ मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलानि ज्ञानम् ॥ ९ ॥

याका अर्थ— मति श्रुत अवधि मनःपर्यय केवल ए पांच ज्ञान है ॥ ज्ञानशब्द न्यारान्याराकै लगाईये ऐसैं पांचूही ज्ञान भये। तहां मतिज्ञानावरणीयकर्मके क्षयोपशमतैं इंद्रियमनकरि पदार्थनिकूं जानै सो, अथवा जाकरि जाणिये सो, अथवा जाननेमात्र सो, मतिज्ञान है। बहुरि श्रुतज्ञानावरणीयकर्मके क्षयोपशमतैं वक्ताकरि कही वस्तूका नाम सुननेकरि जानै सो, अथवा जाकरि सुनि वस्तुकूं जानिये सो, अथवा जो श्रवणकरि जाननैंमात्र सो श्रुतज्ञान है। इन दोऊनिका समीप निर्देश कार्यकारणभावतैं कह्या। मतिज्ञान कारणरूप है श्रुतज्ञान कार्यरूप है। बहुरि अवधिज्ञानावरणीयकर्मके क्षयोपशमतैं द्रव्य क्षेत्र काल भावकी मर्याद लीयें रूपी पदार्थकूं प्रत्यक्षपणैं

करि जो जानैं, अथवा जाकरि जानिये, अथवा जाननेमात्र सो अवधिज्ञान है। बहुरि मनःपर्यय-ज्ञानावरणीयकर्मके क्षयोपशमतैं परके मनविषैं प्राप्त जो पदार्थ ताकूं जाणैं, अथवा जाकरि जानिये, तथा जो जानना सो मनःपर्ययज्ञान कहिये। इहां परके मनविषैं प्राप्त जो पदार्थकूं मन ऐसा संज्ञा साहचर्यतैं कही है। इहां कोई कहै याकै मतिज्ञानका प्रसंग आवै है? ताकूं कहिये इहां मनकी अपेक्षामात्रही है, कार्यकारणभाव नांही है। अपनें प्रतिपक्षी कर्मके क्षयोपशममात्रतैंही भया है। ताकूं अपने परके मनकी अपेक्षामात्रतैं मनःपर्यय ऐसी संज्ञाकरि कह्या है। जैसैं काहूनैं कही या बादलेविषैं चंद्रमाकूं देखो, तहां बादलेकी अपेक्षामात्र है। चंद्रमा बादलेतैं भया तौ नांही। तैसैं इहांभी जाननां। बहुरि जा ज्ञानके अर्थि तपस्वी मुनि 'केवंते' कहिये सेवन करै ताकूं केवलज्ञान कहिये। इहां 'केवृ सेवने' ऐसी धातुतैं केवलशब्द निपज्या है। अथवा यहु ज्ञान असहाय है बाह्य कछु सहाय न चाहै है। जैसैं मतिश्रुतज्ञान इंद्रिय प्रकाशादिकका सहायतैं जानैं है, तैसैं इहां नांही, केवल एक आत्माहीतैं प्रवर्तै है। तातैं केवल कहिये। अब इनिका सूत्रविषैं प्रयोगके क्रमका प्रयोजन कहै हैं ॥

केवलज्ञान अंतविषैं पाईये है, तातैं अंतहीमैं धर्या है। ताके निकट मनःपर्ययज्ञान हो

है, तातैं ताके समीप धऱ्या है। तातैं ये दोऊ ज्ञान संयमी मुनिनिहीकै होय है। बहुरि तातैं दूरवर्ति अवधि है तातैं मनःपर्ययके समीप याकों कह्या। बहुरि प्रत्यक्ष तीनूं ज्ञाननिकै पहले परोक्ष मति श्रुत ज्ञान कहे। जातैं ए दोऊ सुगम हैं। सर्वप्राणिनिकै बाहुल्यपणैं पाइये है। इनकी पद्धती सुणिये है परिचय कीजिये है। अनुभवमैं आवे है। ऐसैं ए पांच प्रकार ज्ञान है। इनके भेद आगे कहसी। इहां मतिमात्रके ग्रहणतैं स्मरणादिकभी मतिज्ञानहीमैं लैने। केई वादी कहै हैं इंद्रियबुद्धिही एक मतिज्ञान है ताका निराकरण है। तथा केई अनुमानसहित मति मानै हैं। केई अनुमान तथा उपमानसहित मानै हैं। केई अनुमान उपमान अर्थापत्तिसहित तथा अभाव आगमसहित मानै हैं। तिनि सर्वनिका निराकरण है। ए सर्वही मतिज्ञानमें गर्भित जानने। कोई कहै मति श्रुत ज्ञान तौ एकही है। जातैं दोऊ लार है एकही आत्माविषैं वसै हैं। विशेषभी इनिमैं नांही। ताकूं कहिये इन तीनूंही हेतुतैं इनिकै सर्वथा एकता नांही है। कोई प्रकार कहै तौ विरोध नांही। जातैं लार रहै है इत्यादि कहना दोय विना बनैं नांही। बहुरि विषयके भेदतैंभी भेदही है। श्रुतज्ञानका विषय सर्वतत्त्वार्थकूं परोक्ष जानना है। मतिज्ञानका एता नांही। ऐसैं इनिका भेदाभेदकी चरचा श्लोकवार्तिकतैं जाननी। इहा कोई पूछे— सम्यग्दर्शनका तौ

लक्षणका सूत्र न्यारा कह्या बहुरि ज्ञानका न कह्या सो कारण कहा? ताका उत्तर जो, जहां शब्दकी निरुक्तिमैं व्यभिचार आवै तहां न्यारा लक्षण कह्या चाहिये। यातैं दर्शन नाम देखनेका प्रधान है। तातैं श्रद्धानार्थके निमित्त लक्षण न्यारा कह्या। बहुरि ज्ञानविषैं निरुक्तिहीतैं अर्थ अव्यभिचारी है, तातैं लक्षण न्यारा न कह्या ऐसा आशय है॥

आगैं कहै हैं, जो पूर्वैं कह्या था, जो, प्रमाणनयकरि अधिगम होय है। तहां केई तौ ज्ञानकूं प्रमाण मानै हैं। केई सन्निकर्षकूं प्रमाण मानै हैं। केई इंद्रियकूं प्रमाण कहै हैं। यातैं अधिकारमैं लीये जे मत्यादि ज्ञान तिनिकै प्रमाणपणाके प्रगट करनेकै अर्थि सूत्र कहै हैं--

॥ तत्प्रमाणे ॥ १० ॥

याका अर्थ— तत् कहिये पूर्वे कहे जे पांच ज्ञान ते दोय प्रमाण है। इहां तत् शब्द है सो अन्यवादी सन्निकर्ष तथा इंद्रियकूं प्रमाण कल्पै हैं ताके निषेधके अर्थ है। तत् कहिये सो मत्यादिक ज्ञान कहे सोई प्रमाण है। अन्य नांही है। इहां अन्यवादी पूछे जो, सन्निकर्ष तथा इंद्रियकूं प्रमाण मानिये तौ दोष कहां? ताकूं कहिये हैं, जो, सन्निकर्षकूं प्रमाण मानिये तो सूक्ष्म अंतरित विप्रकृष्ट जो परमाणू रामरावणादिक, मेरुपर्वतादिक पदार्थ हैं तिनिका प्रमाणविषैं

अग्रहणका प्रसंग आवै। ते पदार्थ इंद्रियनितैं सन्निकर्ष होय नाही। याहीतैं सर्वज्ञका अभाव आवै। ऐसैंही इंद्रियकूं प्रमाण मानिये तौ येही दोष आवै। जातैं नेत्रादिकका अल्पविषय है। तथा ज्ञेय अनंत है। तथा सर्वही इंद्रियनिके सन्निकर्षभी नांही है। नेत्र अर मनकै प्राप्यकारी कहिये पदार्थनिका प्राप्त होनेका अभाव है अप्राप्यकारी है ताका वर्णन आगे करसी ॥

इहां अन्यवादी कहै हैं, जो तुमनैं ज्ञानकूं प्रमाण कह्या, तौ याका फलका अभाव आवैगा। बहुरि प्रमाणका फल चाहियेही। बहुरि हम कहै हैं तहां फलका सद्भाव नींके बणै है। जो सन्निकर्ष तथा इंद्रिय तौ प्रमाण है अरु यातैं अर्थका ज्ञान हो है सो प्रमाणतैं जुदा फल हो है, यह कहना युक्त है। ताकूं कहिये, जो तैं कह्या सो अयुक्त है। जातैं जो सन्निकर्षप्रमाण होय अर्थका ज्ञान फल होय तौ प्रमाता अर प्रमेय जो अर्थ ते दोऊ भिडिजाय, तब सन्निकर्ष होय है। सो याका फल जो अर्थका ज्ञान, सो प्रमाताकै अरु प्रमेय पदार्थकै दोऊनिकै हुवा चाहिये। ऐसैं होतैं अन्यपदार्थकैभी अर्थका ज्ञानकी प्राप्ति आवै है। बहुरि वे कहैं, जो, अर्थका ज्ञान तौ चेतन जो आत्मा ताकै होय है। अन्य जडकै कैसैं होय? तौ वाकूं कहिये, आत्माकूं ज्ञानस्वभाव तौ तू मानै नांही। अरु समवाय तैं चेतन मानै है, सो ऐसैं तौ आत्माभी चेतनाविना जडही

ठहरैगा। बहुरि ज्ञानस्वभावही मानैगा तौ तेरी प्रतिज्ञाकी हानि आवैगी। तातैं हम कहै हैं सो युक्त है। ज्ञानकूं प्रमाण कहतैं फलका अभाव है। यह दोष नाही आवै है। कथंचिद्भेदाभेदरूप याका फलभी है। प्रथम तौ अर्थका यथार्थज्ञान होय तब तिस अर्थकेविषैं प्रीति उपजै है। कर्मकरि मैला जो यह आत्मा ताके इंद्रियनिके आलंबनतैं अर्थका ज्ञान होय। ताविषैं उपादेय जानि प्रीति उपजै है। सो यह प्रीति वा प्रमाणका फल है। बहुरि यथार्थज्ञान होय तब रागद्वेषके अभावतैं मध्यस्थभाव होय सो दूसरा यह फल है। बहुरि पहलैं अर्थका अज्ञान था ताका नाश भया सो तीसरा यह फल है। ऐसैं हमारे प्रमाण फलरहित नांही है ॥

अब या प्रमाणशब्दका अर्थ कहै हैं। 'प्रमीयते अनेन' कहिये याकरि वस्तु प्रमाण करिये ऐसैं तौ करणसाधन भया। बहुरि 'प्रमिणोति' कहिये जो वस्तुकूं प्रमाण करनेवाला, सो प्रमाण है, ऐसैं कर्तृसाधन भया। बहुरि 'प्रमितिमात्रं' कहिये वस्तुका प्रमाण करना सो भावसाधन भया। याकों क्रियासाधनभी कहिये। इहां कोई पूछै, इस प्रमाणकरि कहा प्रमाण करिये! ताकूं कहिये, जीवादिक पदार्थ प्रमाण करिये। फेरि पूछै, जो, जीवादिकका अधिगम तौ प्रमाणकरि करिये। बहुरि प्रमाणका अधिगम काहेकरि करिये? जो अन्य प्रमाण कल्पिये तौ

अनवस्था दूषण आवै है। तहां कहिये, अनवस्था न आवैगी। जैसैं घटादिक प्रकाशनेविषैं दीपक कारण है; तैसैं अपने स्वरूपके प्रकाशनेविषैंभी वैही दीपक कारण है। अन्य प्रकाश नांही हेरिये है; तैसैं प्रमाणभी स्वपरप्रकाशक अवश्य मानना। प्रमेयकीज्यों प्रमाणकै अन्यप्रमाणकी कल्पना कीजै तो स्वरूपका जाननेका प्रमाणके अभाव होय, तब स्मरणकाभी अभाव होय। बहुरि स्मरणका अभाव मानिये तौ व्यवहारका लोप होय। तातैं स्वपरप्रकाशक प्रमाण मानना योग्य है। बहुरि इहां प्रमाणे ऐसा प्रथमाविभक्तीका द्विवचन कह्या है। सो एक तीन आदि प्रमाणकी संख्या अन्यवादी मानै है ताके निषेधकै अर्थि है। तथा आगै दोय संख्याका सूत्रभी कहसी ताके जनावने अर्थि है। अन्यवादी चार्वाक तौ एक प्रत्यक्ष प्रमाणही मानै है। बहुरि बौद्ध प्रत्यक्ष अनुमान ये दोय प्रमाण मानै है। बहुरि नैयायिक वैशेषिक सांख्य हैं ते प्रत्यक्ष अनुमान आगम उपमान ऐसैं च्यारि प्रमाण मानै है। बहुरि मीमांसक च्यारि तौ ए अरु अर्थापत्ति अभाव ऐसै छह प्रमाण मानै है। सो प्रत्यक्ष परोक्ष ए दोय संख्या कहनेतैं सर्वप्रमाण इनिमैं गर्भित होय हैं॥

ऐसैं ए पंचज्ञान प्रमाण कहे। तहां सम्यक् अधिकारतैं सम्यग्ज्ञान है। मिथ्याज्ञान प्रमाण नांही। इहां प्रश्न– जो, ऐसा कह्या है "यथा यत्राविसंवादस्तथा तत्र प्रमाणता ॥" याका अर्थ;

जहां जिसप्रकार विसंवाद न आवै तहां तैसैं प्रमाणता। सो काहूकै विपर्ययज्ञान है तहां ताके बाधा विसंवाद न आवै तेतैं प्रमाण ठहऱ्या। तथा काहूकै कालांतरमैं बाधा आवै। काहूकै क्षेत्रांतरमैं बाधा आवै। तथा केईकै कबहू बाधा न आवै। अर विशेषज्ञानीके ज्ञानमैं बाधा दीखै है। तहां जेतैं बाधा न आवै तेतैं प्रमाण ठहरै है। सो सम्यग्ज्ञान तौ ऐसा चाहिये जो संशय विपर्यय अनध्यवसाय-रहित सर्वकाल सर्वक्षेत्र सर्वप्राणीनिकै समान होय। कोई प्रकार बाधा न आवै। जो जहां जैसैं अविसंवाद होय तहां तैसैं प्रमाणता है यह वचन कैसैं सिद्ध होयगा? ताका उत्तर— जो, सर्वथानिर्बाध तौ केवलज्ञान है। मतिश्रुत है सो तौ अपने विषयविषैंभी एकदेशप्रमाण है। बहुरि अवधि मनःपर्यय है सो अपने विषयविषैं सामस्त्यकरि प्रमाण है। अधिकविषयाविषैं प्रमाण नाहीं। तातैं च्याऱ्योंही क्षयोपशमज्ञान प्रमाणभी है अप्रमाणभी है। तातैं जिस विषयविषैं निर्बाध साधै तहां तौ प्रमाण है। बहुरि जहां बाधा आवै तहां अप्रमाण है। जो ऐसैं न होय तौ केवलज्ञानही प्रमाण ठहरै। अन्यज्ञान अप्रमाण ठहरै। तौ व्यवहारका लोप होय। तातैं एकही ज्ञान प्रमाणभी है अप्रमाणभी है। जैसैं काहू पुरुषकै नेत्रविषैं विकार था, ताकूं एक चंद्रमाके दोय दीखै, तहां निर्विकारनेत्रवालाकी अपेक्षा दोय चंद्रमाकी संख्या तौ सबाध भई। बहुरि

चन्द्रमाका सामान्यपणां निर्बाध है। तथा निर्विकार नेत्रवालेकूं चंद्रमा तौ एकही दिखै, परंतु निकटही दीखै है। ऊगता जमीसूं लगता दीखै। सो याकी ऊचाईका योजनांकी अपेक्षा सबाध है। तथा शास्त्रकरि ग्रहणका काल तौ निश्चय कीया सो तौ निर्बाध है। परंतु दोय अंगुल च्यारि अंगुल ग्रहण होगा, यह कहनां निर्बाध नांही। जातैं यह विमान केता चौडा है? तामैं केता आच्छादित हुवा? यह तौ प्रत्यक्षज्ञानी जानैं, याकी अपेक्षा सबाध है। ऐसैं मतिश्रुत अपने विषयविषैंभी प्रमाणाप्रमाणस्वरूप है। तथा अन्यभी उदाहरण- जैसैं पर्वत तथा वृक्षोंका समूहरूप वन इत्यादि वस्तु दूरितैं तौ औरसाही दीखै निकट गये औरसाही दीखै ऐसैं जाननां। इहां कोई पूछै, जो ऐसैं है तौ यहु याका ज्ञान प्रमाण है यहु याका ज्ञान अप्रमाण है ऐसा नियम कैसैं कहिये? बहुरि नियम कीयाविना व्यवहार कैसैं प्रवर्तैंगा! ताका उत्तर- जो, व्यवहार मुख्यगौणकी अपेक्षातैं प्रवर्तै है। जैसैं काहू वस्तूमैं सुगंध बहुत देखि लोक कहै यह सुगंध द्रव्य है, तहां वा द्रव्यविषैं स्पर्शादिकभी पाईये हैं। परंतु वाकी मुख्यता न करै। तातैं जिनके मतविषैं एकांततैं ज्ञान प्रमाण अप्रमाण दोऊ स्वरूप नांही है तिनिकै यह छद्मस्थका ज्ञानकै प्रमाणता न आवैगी। तब अपना मतभी न सिद्ध होगा ॥

बहुरि अन्यवादी ज्ञानकोंही प्रमाण मानि याका स्वरूप लक्षण एकांततैं अन्यप्रकार कहै हैं। सोभी सबाध है। तहां बौद्धमती कहै हैं, जो 'अविसंवादि ज्ञानं प्रमाणं, कहिये जामैं विसंवाद न होय सो ज्ञान प्रमाण है। ताकूं पूछिये; जो कहैगा प्रमाताकी इच्छा जहां पूरि होय जाय तहां अविसंवाद है, तौ स्वप्नादिकका ज्ञानभी प्रमाण ठहरैगा, तहांभी वांछापूरण होय जाय है। बहुरि कहैगा, जो, जहां वस्तूकै अर्थक्रिया ठहरै, तहां अविसंवाद है, तौ गीतादि शब्दका ज्ञान तथा चित्रामादिकका ज्ञानकै प्रमाणता ठहरैगी। तहां स्वरूपमात्रका ज्ञान है, अर्थक्रिया नांही है। ऐसैं बौद्धकरि मान्या अविसंवाद लक्षण बाधासहित है॥ बहुरि औरभी मतके एकांततैं प्रमाणके लक्षण तथा विशेषण जुदे जुदे करै हैं ते युक्तिशास्त्रतैं बाधासहित हैं। ते श्लोकवार्तिकादिकतैं जानने। जैनमतमें तौ "स्वापूर्वार्थव्यवसायात्मकं ज्ञानं प्रमाणम्" ऐसा लक्षण परीक्षामुखविषैं कह्या है। और शास्त्रमैं पाठांतर कह्या है। सोही निर्बाध है। बहुरि प्रमाणका प्रमाणपणां कैसैं होय? तहां सर्वथा एकांतवादी केई तौ तिस प्रमाणहीतैं प्रमाणपणांका निश्चय होय है ऐसैं कहै हैं। केई अन्यतैं प्रमाणता होहै ऐसैं कहै हैं। सो यहु बाधासहित है।' स्याद्वादकरि अभ्यासदशामैं तौ प्रमाणका निश्चय प्रमाणहीतैं होय है। बहुरि विना अभ्यासदशामैं परतैं निश्चय होय है ऐसा

निर्बाध सिद्ध कीया है। कोई कहै है "प्रमाणपणा प्रवृत्तिसामर्थ्यतैं निश्चय होय है" सो प्रमाणकरि प्रतीतिमैं आया जो पदार्थ ताके निकटि होतै वाके फलकी प्राप्ति होय तब जानिये कि यह प्रमाण है। यहू प्रवृत्तिसामर्थ्यतैं प्रमाणता आई, परंतु इहां अनवस्था दूषण होय है। जातैं प्रवृत्तिसामर्थ्यका समानजातीय ज्ञानकी प्रमाणता अन्यप्रवृत्तिसामर्थ्यतैं होयगी तब अनवस्था आवैहीगी। बहुरि प्रवृत्ति है सो तौ जे परीक्षावान् हैं तिनिकै तौ प्रमाणका निश्चय होय तब होय है। बहुरि लौकिकजनकै विना निश्चयभी प्रवृत्ति हो है। बहुरि परीक्षावान्भी कोई पदार्थनिविषैं अपरीक्षावान् है। जातैं सर्वपदार्थनिकी परीक्षा तौ सर्वज्ञकै है। अन्य तौ कोई प्रकार परीक्ष है कोई प्रकार अपरीक्षक है। सो परीक्षक है सोहू अपरीक्षक है, ऐसैं जाननां ॥

बहुरि इहां कोई पूछै, अन्यवादीनिके प्रमाणनिकी संख्याका निराकरण कैसैं है? ताकूं कहिये है, जे अन्यवादी चार्वाक एक प्रत्यक्षप्रमाणही मानै है ताकै परके चित्तकी वृत्तिकी सिद्धि अनुमानविना होयगी नांही। ताकै अर्थि अनुमान मानैंगा तब एकही प्रमाण माननां कैसै सिद्ध होयगा? बहुरि बौद्धमती प्रत्यक्ष अनुमान ए दोय प्रमाण मानै है। ताकै साध्यसाधनके व्याप्तिसिद्धि करनेकूं स्मृति प्रत्यभिज्ञान तर्क ए तीन प्रमाण चाहियेगा। तब दोयकी संख्या

न रहैगी। व्याप्तिका ज्ञान प्रत्यक्ष अनुमानतैं नाहीं होयगा। स्मृति प्रत्यभिज्ञान तर्क ए प्रत्यक्ष अनुमानमैं गर्भित न होयगा। बहुरि श्रुत कहिये आगमप्रमाण है। सो आप्तके शब्दके श्रवणतैं होय है। सो यहभी प्रत्यक्ष अनुमानमैं गर्भित न होयगा तब तीन प्रमाण होयगा। बहुरि शब्द तथा उपमानसहित च्यारि प्रमाण मानै है तथा अर्थापत्तिसहित पांच तथा अभावसहित छह मानै है। तिनकै स्मृति प्रत्यभिज्ञान तर्क ये तिनिमैं गर्भित न होयगे तब संख्या वधि जायगी। तातैं तिनिकी संख्याका नियम नही ठहरे है। तातैं प्रत्यक्ष परोक्ष ए दोय संख्यामैं सर्व भेद गर्भित होय हैं। तातैं यह नियम निर्बाध है॥

आगै, कहे जे पंचप्रकार ज्ञान ते दोय प्रमाणविषैं गर्भित कीये तथा दोयकी संख्या अन्यप्रकारभी आवै है। तातैं ताकी निवृत्तिकै अर्थि सूत्र कहै हैं॥

॥ आद्ये परोक्षम्॥ ११॥

याका अर्थ— पांच ज्ञाननिविषैं आद्यके दोय मतिश्रुतज्ञान परोक्ष प्रमाण है। आदि शब्द है सो प्रथमका वचन है। जातैं आदिविषैं होय ताकों आद्य कहिये। इहां कोई पूछै 'आद्ये' ऐसा द्विवचन है तहां मति श्रुत दोय आये। तहां आदि तौ एक मति है। दूसरा

श्रुतकै आदिपणां कैसे आवे? ताका उत्तर— जो मुख्य उपचारकी कल्पनातें दोऊके आद्यपनां कह्या है। तहां मतिज्ञान तौ मुख्य आदि हैही। बहुरि श्रुत है सो याके समीपही है तातें उपचारतें प्रथम कह्या। सूत्रविषैं द्विवचन है ताकी सामर्थ्यतें गौणकाभी ग्रहण हुवा। याका समास ऐसैं हो है। 'आद्यं च आद्यं च आद्ये मतिश्रुते' ऐसैं जाननां। ये दोऊही परोक्षप्रमाण है ऐसा संबंध करनां। इहां कोई पूछै इनिकै परोक्षपणां काहेतें है? ताका उत्तर— ए दोऊही ज्ञान परकी अपेक्षा लीये है। मतिज्ञान तौ इंद्रियमनतें होय है। श्रुतज्ञान मनतैं होय है। सो यह सूत्र आगें कहसी। यातें पर जे इंद्रिय मन तथा प्रकाश उपदेशादि जे बाह्यनिमित्त तिनकी अपेक्षा सहाय लेकरि मतिश्रुतज्ञानावरणीयका क्षयोपशमसहित आत्माकै उपजै है। तातैं परोक्ष कहिये। याहीतैं उपमानादिक प्रमाणभी ऐसैंही उपजे हैं तेभी याहीमें गर्भित होय हैं। अथवा परोक्ष शब्दका ऐसाभी अर्थ है; जो अक्ष कहिये इंद्रिय तिनतैं दूरवर्ती होय ताकूं परोक्ष कहिये सो श्रुतज्ञान। तथा स्मरण प्रत्यभिज्ञान तर्क स्वार्थानुमान एभी इंद्रियनितैं दूरवर्ती हैं। ऐसैं ए मतिज्ञानमैं गर्भित हैं। तातैं एभी परोक्षही हैं। बहुरि अवग्रह ईहा अवाय धारणाज्ञान जे मतिज्ञानके भेद हैं ते इंद्रियनितैं भिडिकर होय हैं। तौभी अक्ष कहिये आत्मा तातें दूरवर्ती हैं। तातैं

इनिकूं व्यवहारकरि तौ प्रत्यक्ष कहै हैं। परंतु परमार्थतैं परोक्षही है॥ बहुरि केई कहै है, परोक्षज्ञान तौ अस्पष्ट जाननां है। सो पदार्थके आलंबनरहित है। तातैं मनोराज्यादिककीज्यों निरर्थक है। ते विना समझ्यां कहै है। जातैं अर्थका आलंबन तौ प्रत्यक्ष परोक्ष दोऊनिविषैंही है। परंतु स्पष्टता अस्पष्टताका कारण नाहीं। प्रत्यक्ष परोक्ष भेद ऐसैं है जहां अन्यका अंतर पडे नांही। तथा अन्यका सहायविना विशेषनिसहित पदार्थनिकूं जानैं सो तौ स्पष्ट है। बहुरि वीचिमैं अन्यका अंतर पडै तथा सहाय चाहै। तथा विशेषनिसहित पदार्थनिकूं न जानै सो अस्पष्ट कहिये। मनोराज्यादिकवत् तौ जाकूं कहिये जाका कछु साक्षात् तथा परंपराय विषयही न होय ऐसैं जाननां॥

आगै इनि परोक्षनितैं अन्य जे तीन ज्ञान तिनकूं प्रत्यक्ष कहनेकूं सूत्र कहै हैं—

॥ प्रत्यक्षमन्यत् ॥ १२ ॥

याका अर्थ— अन्यत् कहिये पांच ज्ञानमैं तीन ते प्रत्यक्षप्रमाण है॥ 'अक्ष्णोति' कहिये जानै सो अक्ष कहिये आत्मा ताहीकूं आश्रयकरि उपजै अन्यका सहाय न चाहै ताकूं प्रत्यक्ष कहिये। कैसा है आत्मा? पाया है कर्मका क्षयापेशम जानैं। अथवा क्षीण हूवा है कर्मका आवरण जाका ऐसा आत्माकै होय है सो ऐसा अवधि मनःपर्यय केवलज्ञान है। कोई कहै ऐसै तौ अवधिदर्शन

केवलदर्शनभी है। आत्माहीका आश्रय ले उपजे है तेभी प्रमाण ठहरै। ताकूं कहिये, यहू दोष न आवै है। इहां सूत्रमैं ज्ञानहीका अधिकार है। तातैं ज्ञानही लेना, दर्शन न लेना। बहुरि कोई कहै, जो, विभंग तौ ज्ञान है ताका प्रसंग आवैगा यहुभी आत्माहीकूं आश्रय ले उपजै है। ताकूं कहिये, इहां सम्यक्का अधिकार है, तातैं विभंगज्ञान न लेनां। यहु विपर्ययस्वरूप है। जातैं मिथ्यात्वके उदयतैं विपरीतपदार्थकौं ग्रहै है। तातैं यहु सम्यक् नाहीं ॥

इहां वैशेषिकका आश्रयतैं प्रश्न है; जो, इंद्रियव्यापारतैं होय सो प्रत्यक्ष कहिये। विना इंद्रियव्यापार होय सो परोक्ष कहिये। ये लक्षण यथार्थ बाधारहित है सो माननां। ताका उत्तर जो, यहु अयुक्त है। ऐसैं होय तो आप्त सर्वज्ञके प्रत्यक्षज्ञानका अभाव होय। जो इंद्रियज्ञानही प्रत्यक्ष मानिये तौ आप्तकै प्रत्यक्षज्ञान न होय। जो आप्तकैभी इंद्रियपूर्वक ज्ञान कल्पिये तौ ताकै सर्वज्ञपणांका अभाव होय। जो कहै, सर्वज्ञकै मनसूं भया प्रत्यक्ष है तौ मनके चिंतवनपूर्वककैभी सर्वज्ञपणाका तौ अभावही आवैगा। बहुरि कहै, जो ताकै सर्वपदार्थनिके ज्ञानकी आगमतैं सिद्धि हो है। सो ऐसैंभी नाहीं। जातैं आगम तौ प्रत्यक्षज्ञानपूर्वक होय सो प्रमाण है ॥

बहुरि बौद्धमती कहै है योगीश्वरनिकै अलौकिक दिव्यज्ञान औरही जातिका है। तौ ऐसैं

कहै प्रत्यक्षपणा तौ ताकै न आवैगा। जातैं ऐसा मानै है, जो इंद्रियप्रति वर्तै ताकूं प्रत्यक्ष कहिये। सो ऐसा मान्यां तब दिव्यज्ञान कहनैतैंभी प्रत्यक्षपना तौ न ठहरै। बहुरि औरभी दोष आवै है। जो सर्वज्ञका तौ अभाव होय है। अरु प्रतिज्ञाकी हानी होय है। सोई दिखाईये है। योगीश्वरकै जो ज्ञान है सो एक एक पदार्थकूं क्रमतैं ग्रहण करै है कि अनेकपदार्थका ग्रहण करनेवाला है? जो एक एक पदार्थकों क्रमतैं ग्रहण करै है; तौ सर्वज्ञपणां नांही ठहरै है। जातैं ज्ञेय तौ अनंत है, सर्वकूं एककाल जानै सर्वज्ञ होय। बहुरि जो अनेक पदार्थकूं ग्रहण करै है; तौ जो बौद्धमती प्रतिज्ञा करी है ताकी हानि आवै है। सो प्रतिज्ञा कहा? 'एक विज्ञान तौ दोय पदार्थकूं न जानै है बहुरि दोय विज्ञान एक पदार्थकूं न जानै है' ऐसी प्रतिज्ञा है, ताकी हानि होय है। अथवा सर्वसंस्कार हैं ते क्षणिक हैं ऐसी प्रतिज्ञा करै है, ताकीभी हानि होय है। जातैं अनेकक्षणवर्ती एक विज्ञान मान्या। अनेक पदार्थका ग्रहण क्रमकरि होय है। बहुरि वै कहै; जो, अनेक पदार्थका ग्रहण एकक्षणवर्तिविज्ञानकै तिस एक कालहीमैं होय है, तौ यह बनै नांही। जातैं जा क्षणमैं ज्ञान उपज्या सो तौ क्षण वा ज्ञानका स्वरूपका लाभही होय। जब आप भया ता पीछै अपना जो कार्य पदार्थका जाननां ताप्रति व्यापार करै। उपजनेहीकै क्षण तौ जानै नांही। बहुरि वै

कहै; जो, दीपकवत् जिस समय भया तिस समय पदार्थ प्रकाशै, तौ यहु दृष्टांत मिलै नांही। जातैं दीपक तौ अनेकक्षणवर्ती है। ताकै पदार्थनिका प्रकाशन होय है। बहुरि तिस योगीश्वरके ज्ञानकूं विकल्पतैं भेदनितैं रहित मानिये तब शून्यताका प्रसंग आवै है। जातैं सर्वपदार्थनिकूं भिन्न जानेविना तौ वह ज्ञान शून्यही है ॥

बहुरि अकलंकदेव आचार्य प्रत्यक्षके तीन विशेषण कीये हैं। स्पष्ट, साकार, अंजसा ऐसै। तिनिका अर्थ-- स्पष्ट तौ जो वीचिमैं अन्यकी प्रतीतिका व्यवधान न होय अर वस्तुकूं विशेषनिसहित जानै ऐसा है। सो द्रव्यार्थिकनयकी प्रधानता करिये तब तौ मतिश्रुतज्ञान अस्पष्टही है। जातैं द्रव्यका समस्तपणाकूं ए जानै नांही। इंद्रिय मन प्रकाशादिकके सहायतैं किंचित् जाने है। बहुरि पर्यायार्थिक नयकी प्रधानता करिये तब मतिज्ञान व्यवहारके आश्रयतैं किंचित् स्पष्टभी जानै है॥ बहुरि साकार कहनेतैं निराकारदर्शनका निषेध है। बहुरि अंजसा कहनेतैं विभंगज्ञान तथा इंद्रियमनकरि अन्यथाज्ञान हो है ताका निषेध है। ऐसैं कहनेतैं सूत्रतैंभी विरोध नाही है। जातैं प्रत्यक्ष ऐसा कहनेतैं तौ आत्माधीन है, इंद्रियाधीन नांही है। बहुरि ज्ञानकी अनुवृत्तितैं दर्शनका निषेध है। बहुरि सम्यक्के अधिकारतैं कुज्ञानका निषेध है, ऐसैं जाननां ॥

इहां कोई प्रश्न करै, सकलप्रत्यक्ष जो केवलज्ञान सो योगीश्वरनिकै है ऐसा काहेतैं जानिये? ताका उत्तर; जो, भलै प्रकार जाका निर्णय कीया जो बाधकप्रमाणका अभाव तातैं जानिये, जो, योगीश्वरनिकै केवलज्ञान है। जातैं समस्त आवरणके नाशतैं उपजै सो केवलज्ञान है। समस्तवस्तुकूं एककाल इंद्रियादिकै सहायविना सोही ज्ञान जानै, जाकै आवरण न होय। ताका बाधक अल्पज्ञान है नाही। जा ज्ञानका जोही साधक तथा बाधक होय। अन्यज्ञानका अन्यज्ञान बाधक होय नांही यह न्याय है। बहुरि बौद्धमती प्रत्यक्षका लक्षण निर्विकल्प सत्यार्थ कहै है। सो सर्वथा निर्विकल्पक होय सो तौ सत्यार्थ होय नांही। विपर्ययभी निर्विकल्पक है। निर्विकल्पकतैं अर्थका निश्चयही होता नांही। सत्यार्थ काहेतैं होय? बहुरि नैयायिकमती इंद्रियमनकै अर आत्माकै पदार्थतैं सन्निकर्ष होय ताकूं प्रत्यक्ष कहै हैं। सो यहभी अयुक्त है। जातैं ईश्वरकै ज्ञान इंद्रियमनतैं होय तौ सर्वज्ञपनां न होय। जातैं इंद्रियनिकै अर सर्वपदार्थनिकै संबंध नांही। तातैं जो सूत्र प्रत्यक्षका कह्या सोही निराबाध है॥

आगैं, कह्या जो परोक्ष प्रत्यक्ष दोय प्रकार प्रमाण तिनिमैं आदि प्रकारके विशेषकी प्राप्तिकै अर्थि सूत्र कहै हैं––

॥ मतिः स्मृतिः सञ्ज्ञा चिन्ताऽभिनिवोध इत्यनर्थान्तरम् ॥ १३ ॥

याका अर्थ— मति स्मृति संज्ञा चिंता अभिनिवोध ए पांच अनर्थांतर कहिये अन्य अर्थ नांही। मतिज्ञानहीके नाम हैं॥ आदिविषें कह्या जो मतिज्ञान ताके येते पर्यायशब्द कहिये नामांतर हैं। जातैं ए सर्वही मतिज्ञानावरण कर्मके क्षयोपशमकरि उपज्या जो उपयोग ताही संबंधी हैं। इनकी श्रुतज्ञानादिविषें प्रवृत्ति नांही। तहां मननं कहिये मानना इंद्रियमनतैं अवग्रहादिरूप साक्षात् जानना सो तौ मति कहिये। स्मृति कहिये स्मरण। जानेका पीछे यादि करना सो स्मृति स्मरण कहिये। संज्ञा संज्ञान कहिये। जानेको यादिकरि वर्तमान जानेकै जोडिकरि जाननां सो संज्ञान कहिये। याकूं प्रत्यभिज्ञानभी कहिये। चिंतनं चिंता कहिये यहु चिन्ह है तहां इसका चिन्हीभी होय है इत्यादि ऐसा चिंतवन करनां सो चिंता कहिये। याकूं तर्कभी कहिये। अभिनिवोधनं कहिये सन्मुख लिंगादि देखि लिंगी आदिका निश्चय करै सो अभिनिवोध कहिये। याकूं स्वार्थानुमानभी कहिये। इनि शब्दनिका भावसाधनरूप अर्थ कीया है। वहुरि करणसाधन कर्तृसाधन आदिभी यथासंभव जाननां। इनिका नामभेदतैं अर्थभेद होतैंभी रूढिके वलतैं मतिके नामांतरही जानने। जैसैं इंद्र शक्र पुरंदर ऐसैं नामभेदतै अर्थभेद होतैंभी समभिरूढनयकी

अपेक्षातैं एक इंद्रहीके नाम हैं। बहुरि इनिका अन्य अन्य अर्थ करिये तब मत्यादि अन्य अन्य होयही हैं। तथापि मतिज्ञानावरणक्षयोपशमकरि उपयोग ताहि न उलंघि वर्तै है। इहां ऐसा अर्थ है। बहुरि सूत्रमैं इति शब्द है सो प्रकारवाची है। या मतिज्ञानका येते पर्यायशब्द हैं ऐसा इतिका अर्थ जाननां। तथा अभिधेयार्थवाचीभी कहिये। जो मति स्मृति संज्ञा चिंता अभिनिबोध ऐसैं येते शब्दनिकरि जो अर्थ कहिये सो एक मतिज्ञान है॥

इहां विशेष कहिये है। सूत्रविषैं इति शब्द प्रकारवाची है। सो बुद्धि तौ मतिका प्रकार जाननां। जातैं पदार्थके ग्रहणके शक्तिस्वरूपकूं बुद्धि कहिये है। बहुरि मेधा स्मृतिका प्रकार है। जातैं शब्दके स्मरणकी शक्तिकूं मेधा कहिये है। बहुरि प्रज्ञा चिंताका प्रकार है। जातैं वितर्कणाका निषेध स्वरूप है। बहुरि प्रतिभा उपमा ये संज्ञाका प्रकार हैं। जातैं सामान्यपदार्थको सादृश्य दिखावनेरूप है। बहुरि संभव, अर्थापत्ति, अभाव ए स्वार्थानुमानके प्रकार हैं। जातैं ये सर्व लिंगहीतैं जानिये हैं। इहां कोई कहै स्मृति तौ अप्रमाण है सो प्रमाणविषैं कैसै अंतर्भूत होयगी? ताकूं कहिये; जो, स्मृति अप्रमाण होय तौ प्रत्यभिज्ञान न होय तब व्याप्तिकाभी ग्रहण न होय। तब अनुमान काहेतैं होय? अरु अनुमान न होय तब प्रत्यक्षकैभी प्रमाणता न ठहरै। तब सर्व-

शून्यता आवै। तातैं स्मृतिप्रमाण मानेही अन्यप्रमाण सिद्ध होय है। बहुरि स्मृतिकीज्यों अपने विषयविषैं प्रत्यभिज्ञानभी बाधारहित है। अतीतवस्तुका यादि करनां जो स्मरण सो याका कारण है। सो अतीतकूं यादिकरि वर्तमानमैं तिसही वस्तूकूं देखि बहुरि अतीतवर्तमानकी एकता जोडरूपकूं जाननां तथा अतीत सारिखी वस्तु देखि दोऊके समानताका जाननां सो प्रत्यभिज्ञान है सो सत्यार्थ है। जैसैं मैं बालक था सोही मै अब युवा हूं बूढा हूं इत्यादि। तथा पहलैं घट देख्या था तैसाही यह दूसरा घट है इत्यादि। याके भेद बहुत हैं सो प्रामाणशास्त्रतें जाननै।

बहुरि साध्यसाधनके अविनाभावसंबंधरूप जो व्याप्ति, ताका जाननां सो तर्क है। सोभी प्रमाण है। सो यहु अप्रमाण होय तौ अनुमानभी प्रमाण न ठहरै। बहुरि अनुमानादिकमैं यहु गर्भित होय नाही। तातैं न्याराही प्रमाता जाननां। याका उदाहरण– जैसै धूम अग्निका संबंध देखिकरि ऐसा निश्चय कीया; जो, जहां जहां धूम है तहां तहां नियमकरि अग्नि है। ऐसै निश्चय करनेका नाम तर्क है। सो सत्यार्थ है, तातैं प्रमाण है। जो यहु ज्ञान अप्रमाण होय तौ अनुमान प्रमाण कैसै ठहरै? बहुरि साधन कहिये लिंग–चिन्ह, तातैं साध्य कहिये जाननेयोग्य वस्तु लिंगी, चिन्हवान्, ताका निश्चय करनां सो स्वार्थानुमान है। तहां साधन ताकूं कहिये; जाकी जह

साध्यवस्तु न होय, तहां प्राप्ति न होय। तथा जहां साधन होय तहां साध्य होयही होय॥

बहुरि साध्यके तीन विशेषण हैं; शक्य, अभिप्रेत, अप्रसिद्ध। तहां जो साधनेकी योग्यता लीये होय सोही साध्य। जामैं योग्यता नांहीं सो साध्य नांही, जैसे आकाशके फूल। बहुरि जो साधनेवाला पुरुष अभिप्रायमैं ले, सोही साध्य, तिसविना जगत्मैं अनेक वस्तु हैं ते वाकै साध्य नांही। बहुरि पहलै सिद्ध न हूवा होय, सो साध्य। सिद्ध भये फेरि साधना अफल है। ऐसै साध्यके सन्मुख जो पूर्वोक्त साधनकरि नियमरूप ज्ञान होय, तातैं याकूं अभिनिबोधभी कहिये। इहां कोई कहै; शास्त्रमैं मतिज्ञानसामान्यका नाम अभिनिबोध कह्या है; तुम स्वार्थानुमानकूं अभिनिबोध कैसैं कह्या? ताका उत्तर—जो, सामान्यार्थकी विशेषविषैं प्रवृत्ति होतैं विरोध नांही। जो अवग्रहादि अनेकभेदरूप मतिज्ञान कहिये तादि तौ सामान्यकूं अभिनिबोध कहिये। बहुरि जब विशेष लीजिये तब स्वार्थानुमानकूंभी कहिये। तहां साधनके संक्षेपतैं दोय भेद है; उपलब्धि अनुपलब्धि। तहां इंद्रिय मनकरि वस्तुका सद्भावका ग्रहण होय सो तौ उपलब्धि कहिये। बहुरि अभावका ग्रहणकूं अनुपलब्धि कहिये। तहां कार्योपलब्धि जैसैं; या पर्वतमैं अग्नि है, जातैं अग्निका कार्य धूम दीखै है। बहुरि कारणोपलब्धि जैसैं; वर्षा होसी, जातैं याका कारण बादल सघन दीखै

है। स्वभावोपलब्धि जैसैं; वस्तु उत्पादव्ययध्रौव्यस्वरूप है, जातैं सत्त्वस्वरूप है। सत्त्वका स्वभाव ऐसाही है। ऐसैं ये तीन भेद भये। इत्यादि साधनके अनेक भेद हैं, सो श्लोकवार्तिकतैं जानने ॥ बहुरि अन्यवादी अर्थापत्त्यादिक प्रमाण न्यारे मानै हैं ते सर्व इस मतिज्ञानमैं अंतर्भूत होय हैं, ऐसैं जाननां ॥

आगैं या मतिज्ञानका स्वरूपका लाभविषैं निमित्त कहां है? ऐसैं प्रश्न होतैं सूत्र कहे हैं—

॥ तदिन्द्रियानिन्द्रियनिमित्तम् ॥ १४ ॥

याका अर्थ— तत् कहिये सो मतिज्ञान इंद्रिय अर अनिंद्रिय है निमित्त कहिये कारण जाकूं ऐसा है ॥ प्रथम तौ इंद्रियशब्दका अर्थ कहै हैं। इन्दति कहिये परम ऐश्वर्यरूप वर्तै सो इंद्र है। तहां अर्थतैं आत्माका नाम इंद्र कह्या, सो ऐसा ज्ञानस्वभाव जो आत्मा, ताकै ज्ञानावरणकर्मका ऐसा क्षयोपशम होय, जो आप आपतैंही पदार्थनिकूं जाननेकूं असमर्थ होय। ताकै पदार्थ जाननेका कारण चिन्ह होय ताकूं इंद्रिय कहिये। जातैं व्याकरण ऐसा है 'तस्य लिंगम्' इस अर्थमैं इंद्रशब्दकै प्रत्यय आया है। अथवा ऐसाभी अर्थ जो गूढ अर्थकूं जनावै ताकूं लिंग कहिये। तहां आत्मा गूढ है— अदृष्ट है। ताके अस्तित्वकूं जनावनेविषैं चिन्ह है तातैं आत्माका लिंग इंद्रिय है। जैसैं लोकमैं अग्निका धूम लिंग है तैसैं जाननां। ऐसै यह स्पर्शादि इंद्रिय हैं ते करण हैं। सो कर्ता जो आत्मा

तिसविना न होय ऐसैं ज्ञाता जो आत्मा ताका आस्तित्व जनावै है। अथवा इंद्र ऐसा नाम कर्मका कहिये। ताकरि ये रचे हैं निपजाये हैं। तातैंभी इंद्रिय ऐसा कहिये। ते स्पर्शनादि आगैं कहसी ॥

बहुरि अनिंद्रिय नाम मनका है। याकूं अंतःकरणभी कहिये। इहां कोई पूछै है– इंद्र जो आत्मा ताहीका लिंग जो मन ताका नाम इंद्रियका प्रतिषेधकरि अनिंद्रिय ऐसा नाम कैसैं दीया? ताका उत्तर–जो, इहां इंद्रियका प्रतिषेधकर नाही है। 'न इन्द्रियं अनिन्द्रियं' ऐसैं कहनेमैं ईषत् अर्थ लेना। किंचित् इंद्रियकूं अनिंद्रिय कह्या है। जैसैं काहू कन्याकूं अनुदरा नाम कह्या, तहां जाकै उदर न होय ताकूं अनुदरा कहिये ऐसा अर्थ न लेना। जाका ईषत् किंचित् पतला क्षीण उदर होय ताकूं अनुदरा कहिये ऐसा अर्थ लेना। बहुरि कोई पूछै है– इहां ईषत् अर्थ कैसैं है? ताका उत्तर— ए इंद्रिय हैं ते प्रतिनियत कहिये नियमरूप जुदाजुदा जिनका देश अरु विषय है ऐसैं हैं। बहुरि कालांतरस्थायी हैं। जा कालमैं विषयतैं उपयुक्त न होय ता कालमैंभी अवस्थित हैं। बहुरि मन है सो यद्यपि इंद्र कहिये आत्मा ताका लिंग है तथापि नियमकरि एकही देशविषैं तथा एकही विषयका ग्राहक नाही। अन्यकालमैं जाका अवस्थान नाही अनवस्थित है चंचल है। याहीतैं याकूं अंतःकरण कहिये अभ्यंतर इंद्रिय कह्या है। जातैं गुणदोषका विचार

स्मरणविषैं इंद्रियनिकी याकै अपेक्षा नाही है। बहुरि नेत्रादिककीज्यौं बाह्यतैं अन्य मनुष्यादिक तिनिकरि न जाणिये है। ताहीतैं अंतर्गत इंद्रिय ऐसा कहिये है। ऐसै ईषत् अर्थ याविषैं संभवै है॥

बहुरि कोई पूछै है– सूत्रविषैं तत् शब्द किस प्रयोजनकूं है? ताका उत्तर– तत् शब्द मतिज्ञानके कहनेकै अर्थि है। बहुरि कोई कहै है– मतिज्ञान तौ लगताही है अनंतरही है। यातैं ऐसा परिभाषा है, जो, अनंतरकी विधिका सूत्र होय कै निषेधका होय। यातैं ता मतिज्ञानका विना तत् शब्दही ग्रहण होय है। तत् शब्द निरर्थक है। ताकूं कहिये हैं– इहां तत् शब्द है सो इस सूत्रके अर्थिभी है बहुरि अगले सूत्रके अर्थिभी है। जो मत्यादिक पर्याय शब्दकरि कहनेमैं आवै। ऐसा मतिज्ञान है सो इंद्रियानिंद्रियनिमित्तक है। ऐसैं तौ इस सूत्रकै अर्थि भया। बहुरि सोही मतिज्ञान अवग्रह ईहा अवाय धारणास्वरूप है ऐसै आगिले सूत्रकै अर्थि भया। जो ऐसैं न होय तत् न कहिये तौ पहलैं मत्यादिशब्दकरि वाच्य ज्ञान है ऐसैं कहिवेकरि इंद्रिय अनिंद्रियनिमित्तक श्रुतज्ञान है ऐसा प्रसंग आवै। तथा सोही श्रुतज्ञान अवग्रह ईहा अवाय धारणास्वरूप है ऐसा अनिष्ट अर्थका संबंध होय है। बहुरि यहु विशेष जननां– जो ए इंद्रिय मन हैं ते मतिज्ञानके बाह्य उत्पत्तिनिमित्त हैं। अंतरंग निमित्त तौ मतिज्ञानावरणीय कर्मका क्षयोपशमही है।

आगैं कहे हैं, ऐसैं मतिज्ञानका उत्पत्तिका निमित्त तौ जाण्या; परंतु याके भेद केते हैं? यह निर्णय न भया। ऐसा प्रश्न होतै याके भेदनकी प्राप्तिकै अर्थि सूत्र कहै हैं—

॥ अवग्रहेहावायधारणाः ॥ १५ ॥

याका अर्थ— अवग्रह ईहा अवाय धारणा ए च्यारि मतिज्ञानके भेद हैं॥ इनिका लक्षण कहिये हैं। विषय जे रूपादिक बहुरि विषयी जे इंद्रिय तिनका संबंध होतै ताका लगताही तौ दर्शन हो है। ताके लगताही वस्तुमात्रका ग्रहण सो अवग्रह है। जैसैं नेत्रकरि यह श्वेतरूप है ऐसैं ग्रहण सो अवग्रह है। बहुरि अवग्रहकरि ग्रहण कीया जो वस्तु ताका विशेषकी वांछा सो ईहा है। जैसैं अवग्रहकरि श्वेतरूप देख्या सो कहा बुगलाकी पंक्ति है अथवा कहा धुजा है? ऐसैं याकूं संशय न जाननां। जातैं संशय तौ दोय पक्षविषैं अनिश्चित ज्ञान है अप्रमाण है। बहुरि ईहा एकही पक्षविषैं वाञ्छारूप ज्ञान है। जो बुगलाकी पंकति है तौ वाहीकी वांछा है। जो पताका है तौ वाहीकी वांछा है। बहुरि ईहाकरि जान्या था ताका विशेष अवयवादिकका निर्णय होनेतैं जैसा है तैसा नियमरूप निश्चय होना सो अवायज्ञान है। जैसैं ईहाविषैं उगलाकी पंक्तीकी तर्फ वांछा थी। परंतु धुजाका निषेध न कीया। अब इहां ऊंचा चढना नीचा आवनां पांख

हलावनां इत्यादि क्रियाचिन्ह देखी ऐसा निश्चय भया जो वुगलापंक्तिही है, धुजा नांही है; तहां अवायज्ञान कहिये। बहुरि अवायकरि निश्चय कीया जो वस्तु ताका ऐसा दृढज्ञान होय जो और कालमैं न भूलने यादि आवनेकूं कारण होय, तहां धारणाज्ञान हो है। जैसैं अवायज्ञानकरि प्रभातिमैं वुगलापंक्ति देखी थी सोही यहु अब मैं देखी ऐसे ज्ञानकूं कारण जो ज्ञान, सो धारणाज्ञान कहिये। ऐसैं इनि अवग्रहादिकनिका कहनेका अनुक्रम इनकी उत्पत्तिके अनुक्रमतैं कह्या ॥

इहां ऐसा भावार्थ जाननां— जो वस्तु सामान्यविशेषस्वरूप है तिस वस्तुके अरु इंद्रियनिकै संबंध होतैं प्रथम तौ सामान्य अवलोकनरूप निराकार दर्शन होय है तापीछे ता वस्तुका सामान्य-विशेषरूप साकार ग्रहण होय ताकूं अवग्रह कहिये। तापीछे तिसही वस्तूमैं विशेष बहुत हैं तिनि-मैंतैं कोई वस्तुके विशेषरूप जाननेकी अभिलाषारूप ज्ञान प्रवर्ता, जो, 'यह फलाणा विशेष होगा' ताकूं ईहा कहिये। तापीछे तिसही विशेषकी क्रिया चिन्हि देखी यहु निश्चय भया, जो, 'यहु अभिलाषामैं ग्रहण हुईथी सोही है' ताकूं अवाय कहिये। तापीछे तिसहीविषैं ऐसा ज्ञान दृढ भया, जो, 'अन्यकालमैं वाकूं भूलिसी नाही' ताकूं धारणा कहिये। इनिमैं विषयका भेद भया, तातैं गृहीतका ग्रहण नांही है। बहुरि सामान्यपणैं वस्तुका रूप ग्रहण है, तातैं नयभी नांही है।

बहुरि विषय सत्यार्थ निर्बाध है तातैं प्रमाण है। बहुरि इंद्रियमनकै पदार्थसंबंध होनेतैं किंचित् स्पष्टताभी इनिमैं है। तातैं व्यवहारकरि प्रत्यक्षभी इनिकूं कहिये हैं। परमार्थतैं परोक्षही है। बहुरि अन्यवादी सर्वथा एकांत वस्तुका स्वरूप मानै हैं। तिनिकै अवग्रहादिक भेदरूप ज्ञानकी कथनीही नांही। ऐसैं जानना॥

आगैं, कह्या जे अवग्रहादिक तिनिके भेदकी प्राप्तिकै अर्थि सूत्र कहै हैं —

॥ बहुबहुविधक्षिप्रानिस्सृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणाम् ॥ १६ ॥

याका अर्थ-- कहे जे अवग्रहादिक, ते बहु आदि छह बहुरि छहही इनके प्रतिपक्षी तिनिसहित बारह भये, तिनिका ज्ञान होय है॥ प्रकृत कहिये पूर्वं कहे जे अवग्रहादिक ज्ञानरूप-क्रियाका विशेष तिनिकी अपेक्षारूप या सूत्रविषैं षष्ठीविभक्तीकरि कर्मका निर्देश कीया है। तहां बहु शब्द तौ यहां संख्या तथा विपुल कहिये समूहपणाका वाचक है। जातैं दोऊमैं विशेष नांही। सामान्यसंख्या तथा बहुतका ग्रहण करनां। जैसैं एक दोय बहुत ऐसैं तौ संख्या। बहुरि भात बहुत है दालि बहुत है इहां विपुलताही है संख्या न कही। बहुरि विधशब्द प्रकारवाची है, जैसैं बहुतप्रकार है। बहुरि क्षिप्रशब्दका ग्रहण काल अपेक्षा है। जैसै कोई वस्तु शीघ्र परिणमै। बहुरि अनिःसृत

कहिये जाका समस्त पहल शरीरादिक प्रगट नीसरे न होय सो अनिःसृत है। बहुरि अनुक्त कहिये अभिप्रायहीकरि जाका ग्रहण होय काहूके कहनेकी यामैं मुख्यता नांही। बहुरि ध्रुव कहिये निरंतर जाका जैसाका तैसा ग्रहण होवो करै ताकूं कहिये। बहुरि सेतर कहिये इनिके प्रतिपक्षीकरि सहित लेणे। सो बहुतका तौ प्रतिपक्षी एक तथा अल्प। बहुविधका एकविध। क्षिप्रका अक्षिप्र। अनिःसृतका निःसृत। अनुक्तका उक्त। ध्रुवका अध्रुव। ऐसै ये बारह भये। तिनि अवग्रहके बारहके बारह भेद भये। बहुतका अवग्रह, अल्पका अवग्रह, बहुविधका अवग्रह, एकविधका अवग्रह, क्षिप्रका अवग्रह, अक्षिप्रका अवग्रह, अनिःसृतका अवग्रह, निःसृतका अवग्रह, अनुक्तका अवग्रह, उक्तका अवग्रह, ध्रुवका अवग्रह, अध्रुवका अवग्रह, ऐसैं बारह भेदरूप अवग्रह है। ऐसैंही ईहा, अवाय, धारणा इनि तीनिकैभी बारह बारह भेद कीजिये। तब सर्व मिलै अठतालीस ४८ होय ॥

बहुरि ये पांच इंद्रिय एक मन इनि छहूंनिकरि होय है। तातैं छहबार अठतालीसकूं जोडिये तब दोयसे अठ्यासी भेद होय हैं। बहुरि बहु आदिक छहके नाम सूत्रमैं कहै अरु छह इनि प्रतिपक्षीकूं इतर कहे, ताका प्रयोजन यह है—जो बहु आदिक तौ मतिज्ञानावरणका क्षयोपशम बहुत

होय तब होय है। तातैं ये प्रधान हैं। तातैं इनिकूं पहले कहे। बहुरि अन्य हैं ते तिसतैं थोरे क्षयोपशमतैं होय हैं। तातैं तिनिकूं पीछे कहे। इहां कोई पूछे है; बहुविषैं अरु बहुविधविषैं कहा विशेष है? तहां कहिये बहुपणा तौ बहुविषैंभी है बहुविधविषैंभी है। परंतु एकप्रकार नानाप्रकारका विशेष है। बहुरि कोई पूछै उक्त निस्सृतविषैं कहां विशेष है? समस्त नीसऱ्या प्रकट होय ताकूं निःसृत कहिये उक्तभी ऐसाही है। तहां कहिये परके उपदेशपूर्वक ग्रहण होय सो उक्त है आपहीतैं ग्रहण होय सो निःसृत है यहू विशेष है। बहुरि केई आचार्य क्षिप्र निःसृत ऐसा पाठ पढे हैं। तामैं निःसृत पहले छहमैं आवै है। ते याका ऐसैं उदाहरण कहै हैं। जैसै श्रोत्रइंद्रियकरि पहली शब्दका अवग्रह हुवा। तहां यहु मयूरका शब्द है तथा कुरचिका शब्द है ऐसैं कोई जाणै ताकूं तौ निःसृत कहिये। बहुरि अनिस्सृत यातैं अन्य शब्दमात्रही है ऐसा जानै है। बहुरि कोई पूछै, ध्रुवअवग्रहविषैं अरु धारणअवग्रहविषैं कहा विशेष है? तहां कहिये है— क्षयोपशमकी प्राप्तिके कालविषैं शुद्धपरिणामके संतानकरि पाया जो क्षयोपशम तातैं पहले समय जैसा अवग्रह भया तैसाही द्वितीयादिक समयनिविषैं होय है किछु कमभी नाही होय अरु अधिकभी नाही होय है ताकूं तौ ध्रुवावग्रह कहिये। तथा शुद्धपरिणामका अरु संक्लेशपरिणामका मिश्रपणां मिलापतैं क्षयोपशम होय। तातैं

उपज्या जो अवग्रह सो कोई कालविषैं बहुतका होय। कोई कालविषैं अल्पका होय। कोई कालविषैं बहुविधका होय। कोई कालविषैं एकविधका होय। ऐसैं हीन अधिपणातैं अध्रुव अवग्रह होय है। बहुरि धारणा है जो जा पदार्थकूं ग्रह्या ताकूं नाहीं भूलनेका कारण रूप ज्ञान है। ऐसै इनि दोऊनिका बडा अंतर है॥ ऐसै अवग्रहादिक बहु आदिक पदार्थनिका होय है सो सत्यार्थ निर्बाध प्रमाण स्याद्वादमतविषैं सिद्ध होय है। जे सर्वथा एकांतवादी हैं तिनिकै ए ज्ञानके भेद तथा पदार्थके भेद संभवै नांहीं॥

आगैं, जो ए अवग्रहादिक बहु आदिकके जाननेवाले हैं, तथापि बहु आदिक किसके विशेष हैं? ऐसा प्रश्न होतैं सूत्र कहै हैं—

॥ अर्थस्य ॥ १७ ॥

याका अर्थ-- ए बहु आदिक बारह हैं ते अर्थके विशेषण हैं॥ नेत्रादिक इंद्रियनिका विषय है सो तौ अर्थ है, ताके बहु आदि विशेषण हैं। इनिकरि विशिष्ट जो अर्थ कहिये वस्तु ताकै अवग्रहादिक होय हैं। इहां कोई पूछै है; जे बहु आदिक हैं ते अर्थ तौ हैंही। फेरी सूत्र कहनेका कहा प्रयोजन? ताका उत्तर— जो तैं पूछ्या, सो तौ सत्य है। परंतु इहां अन्यवादी कल्पना

करै है तिनिका निषेधकै अर्थि 'अर्थस्य' ऐसा जुदा सूत्र कह्या है। केई वादी ऐसा मानै है, कि रूप आदि गुण हैं तेही इंद्रियनिकरि स्पर्शिये हैं। तिनिकाही अवग्रह है द्रव्यका न हो है। सो यह कहना अयुक्त है। जातैं रूपादिक गुणनिकी तौ मूर्ति आकार नांही जो इंद्रियनिकै स्पर्श होय। यहु मूर्ति तौ द्रव्यकीही है ताहीतैं इंद्रिय भिडै है। तब फेरि वादी कहै है, जो, ऐसैं है तौ लोक ऐसैं कहै है, जो, रूप मैं देख्या, गंध मैं सूंघ्या, सो यहु कहनां न ठहरै। ताकूं कहिये, जो, पर्यायनिकूं प्राप्त होय है तथा पर्याय जाकूं प्राप्त होय ताकूं अर्थ कहिये है। सो अर्थ गुणपर्यायनिका समुदाय द्रव्यही है। ताकै इंद्रियनितैं संबंध होतैं तातैं अभिन्न जे रूपादिक गुण तिनिविषैं ऐसा व्यवहार प्रवर्तै है, जो, रूप देख्या, गंध सूंघ्या इत्यादि ॥

आगैं कहै हैं, कहा ए अवग्रहादिक सर्वही इंद्रिय मनकै होय हैं कि कछु विषयविशेष हैं? ऐसा प्रश्न होतैं सूत्र कहै हैं—

॥ व्यञ्जनस्यावग्रहः ॥ १८ ॥

याका अर्थ— व्यंजन कहिये अव्यक्त जो शब्दादिक ताकै अवग्रहही होय है। ईहादिक न होय हैं ऐसा नियम है॥ तहां व्यंजन ऐसा शब्दादिका समूह अव्यक्त होय ताका अवग्रह होय।

इहां कोई पूछै है यह सूत्र काहेके अर्थि कह्या? ताका उत्तर, जो, नियमकै अर्थि है। व्यंजनका अवग्रहही होय है। ईहादिक नाही होय है। ऐसा नियमकै अर्थि है। फेरि कोई कहै; जो, ऐसैं है तौ नियमका वाचक एवकारशब्द इहां चाहिये। ताकूं कहिये, जो, एवकार नांही चाहिये। जातैं जाका विधान पहली सूत्रमैं सिद्ध हुवा होय ताकूं फेरि कहनां सो यहु कहनांही नियमका वाचक है। अवग्रहका विधान पहली सूत्रमैं सिद्ध हुवा। इस सूत्रमैं फेरि अवग्रहका नाम कह्या, तातैंही नियम सिध्द भया। एवकार काहेकूं कहिये? बहुरि इहां कोई प्रश्न करै है– अवग्रहका ग्रहण अर्थमैं तथा व्यंजनमैं तुल्य है। इनिमैं विशेष कहा है? ताका उत्तर अर्थावग्रह व्यंजनावग्रह इनि दोऊनिमैं व्यक्त अव्यक्तका विशेष है। सोही कहिये है। जैसैं नवा मांटीका डीवाविषैं जलका कणां क्षेपिये तहां दोय तीन आदि कणाकरि सींच्या जेतैं आला न होय तेतैं तो अव्यक्त है। बहुरि सोही डीवा फेरि फेरि सींच्या हुवा मंद मंद आला होय तब व्यक्त है। तैसैंही श्रोत्रादि इंद्रियनिका अवग्रहविषैं ग्रहणयोग्य जे शब्दादि परिणया पुद्गलस्कंध ते दोय तीन आदि समयनिविषैं ग्रह्या हुवा जेतैं व्यक्त ग्रहण न होय तेतैं तौ व्यंजनावग्रह हो है। बहुरि फेरि फेरि तिनिका ग्रहण होय तब व्यक्त होय, तब अर्थावग्रह होय है। ऐसैं व्यक्तग्रहणतैं पहलैं तौ व्यंजनावग्रह कहिये। बहुरि व्यक्त ग्रहणकूं

अर्थावग्रह कहिये। यातैं अव्यक्तग्रहणरूप जो व्यंजनावग्रह तातैं ईहादिक न होय है ऐसैं जाननां ॥

आगैं, सर्वही इंद्रियनिकै व्यंजनावग्रहका प्रसंग होतैं जिनि इंद्रियनिकै व्यंजनावग्रह न संभवै, तिनिका निषेधकै अर्थि सूत्र कहै हैं—

॥ न चक्षुरनिन्द्रियाभ्याम् ॥ १९ ॥

याका अर्थ— नेत्र इंद्रिय अरु मन इनि दोऊनिकरि व्यंजनावग्रह न होय है। जातैं ए दोऊ अप्राप्यकारी कहिये पदार्थतैं भिडिकरि स्पर्शनकरि नांही जानै हैं दूरिहीतैं जानै हैं। जातैं अप्राप्त कहिये विना स्पर्श्या अविदिकं कहिये सन्मुख आया निकट प्राप्त हूवा बाह्य प्रकाशादिककरि प्रगट कीया ऐसा पदार्थकूं नेत्र जाणे है। बहुरि मन है सो विनां स्पर्श्या-दूर तिष्ठ्या पदार्थकूं विचारमैं ले है। यातैं इनि दोऊनिकै व्यंजनावग्रह नाही हो है। बहुरि इहां कोई पूछै है, जो, नेत्रकै अप्राप्यकारिपणां कैसैं निश्चय कीजिये? ताका उत्तर- जो, आगमतैं तथा युक्तितैं निश्चय कीजिये है। सो प्रथम तौ शास्त्रमैं कह्या है, जो, शब्द तौ स्पर्शतैं सुणिये है। बहुरि रूप है सो अस्पर्शतैं देखिये है। बहुरि गंध स्पर्श रस ये स्पर्शे तथा संध्राणरूप भये जाणिये है। यहु तौ आगम है। बहुरि यहु युक्ति है जो नेत्र है ते अप्राप्यकारी है, जातैं यह स्पर्शकूं नाही जानै है। जो प्राप्य-

कारी होय तो स्पर्शन इंद्रियकीज्यों स्पर्श्या जो अंजन ताका रूपकूं देख ले। सो अंजनका रूपकूं नेत्र नाहीं जानै है। यातैं मनकीज्यौं नेत्र अप्राप्यकारी है ऐसा निश्चय कीजिये। तातैं नेत्र मन इनि दोऊविना अवशेष च्यारि इंद्रियनिकै व्यंजनावग्रह होय है। ऐसैं या व्यंजनावग्रहके बहु आदि बारह विषयकी अपेक्षा अठतालीस ४८ भेद होय हैं। ऐसैं अर्थावग्रहके २८८ मिलि मतिज्ञानके तीनसै छतीस ३३६ भेद होय हैं। बहुरि नेत्रके अप्राप्यकारीकी विधिनिषेधकी चरचा विशेषकरि श्लोकवार्तिकमैं है। तहांतैं जाननी ॥ कोई कहै, जैसैं नेत्र दूरतैं जानै है तैसैं शब्दभी दूरतैं सुणिये है। तातैं अप्राप्यकारी कहो। ताकूं कहिये, ऐसैं नाही है। जातैं जिस ठिकाणैंतैं शब्द उपजै है तहांतैं लगाय कर्णइंद्रियके प्रदेशतांईके पुद्गल शब्दरूप होय जाय है, तब सुणिये है। ऐसैंही गंधद्रव्य जहां तिष्ठै है तहांतैं लगाय नासिका इंद्रियके प्रदेशतांईके पुद्गल गंधरूप होय जाय हैं। ते सूंघिये हैं ऐसैं कर्णइंद्रिय तथा घ्राणइंद्रिय प्राप्यकारी है। ऐसैं नेत्र नाही हैं। यह अप्राप्यकारीही है ॥

आगैं शिष्य पूछै है, जो, मतिज्ञान तौ स्वरूपतैं तथा भेदनसहित कह्या। ताकै लगता श्रुतज्ञान कह्या है। ताका अब लक्षण तथा भेद कहनेयोग्य है। ऐसैं पूछै आचार्य सूत्र कहे हैं——

## ॥ श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेकद्वादशभेदम् ॥ २० ॥

याका अर्थ— श्रुतज्ञान है सो मतिज्ञानपूर्वक है । बहुरि दोय भेदरूप है। ते दोय भेद अनेक भेदरूप तथा बारह भेदरूप हैं ॥ यहां यहु श्रुतशब्द है सो सुननेकूं ग्रहणकरि निपजाया है। तोभी रूढिके वशतैं कोईक ज्ञानका विशेष है तामैं वर्तै है। भावार्थ, ज्ञानका नाम है। जैसें कुशल ऐसा शब्द है सो कुश जो डाभ ताकूं छेदै ताकूं कुशल कहिये। ऐसैं व्युत्पत्तितैं निपजाया है। तौभी रूढिके वशतैं प्रवीण पुरुषका नाम है तैसैं जाननां। बहुरि यह ज्ञानविशेष कह्या सो कहा है? ऐसैं पूछे कहै हैं। 'श्रुतं मतिपूर्वं' कहिये श्रुत है सो मतिपूर्वक है। ऐसैं श्रुतकै प्रमाणरूप ज्ञानपणा है। जो पूरै उत्पत्ति करै ताकूं पूर्व ऐसा कहिये। सो पूर्व ऐसा नाम निमित्तका भया जाकूं कारणभी कहिये। बहुरि मतिके स्वरूप पहलै कह्याही था। सो मति है कारण जाकूं ताकूं मतीपूर्वक कहिये। इहां कोई कहै, जो, मतीपूर्वक श्रुत कह्या सो यहुभी मतिस्वरूपपणांकूंही प्राप्त होयगा। जातैं लोकविषैं कारणसारिखाही कार्य देखिये है। तहां कहिये हैं, जो, यहु एकांत नाही अन्यसारिखाभी होय है। जैसैं घट है सो दंड चाक आदि कारणकरि निपजै है, परंतु तिस स्वरूप नाही है। बहुरि ऐसाभी है, जो, बाह्यकारण तौ मतिज्ञानादिक विद्यमान होय अरु जाकै श्रुतज्ञानावरणकर्मका प्रबल

उदय होय तौ श्रुतज्ञान होय नाही.। श्रुतज्ञानावरणका क्षयोपशमका प्रकर्ष होय तब श्रुतज्ञान उपजै। ऐसैं मतिज्ञान निमित्त मात्र जाननां। मतिसारिखाही श्रुतज्ञान न जाननां॥

बहुरि इहां कोई कहै है, जो, श्रुतकूं तौ अनादिनिधन मानिये है। याकूं मतिपूर्वक कहनेतैं नित्यपणाका अभाव होय है। जातैं जाका आदि है सो अंतसहितभी होय है। बहुरि पुरुषका कीयापणातैं अप्रमाणभी ठहरै है॥ तहां आचार्य कहै हैं। यह दोष नाही है। द्रव्यादिक सामान्यकी अपेक्षा तौ श्रुत अनादिनिधन मानिये है। काहू पुरुष कोई क्षेत्रकालविषैं नवीन कीया नाही। बहुरि तिनि द्रव्य क्षेत्र काल भावनिकी विशेषापेक्षाकरि श्रुतका आदिभी संभवै है। तथा अंतभी संभवै है। यातैं मतिपूर्वक कहिये है। जैसैं अंकुरा है सो बीजपूर्वक हो है। सोही संतानकी अपेक्षाकरि अनादिनिधन चल्या आवै है। बहुरि अपौरुषेयपणां प्रमाणका कारण नाही है। जो ऐसे होय तौ चोरि आदिका उपदेशका संतान अनादिनिधन अपौरुषेय चल्या आवै है। सो यहुभी प्रमाण ठहरै। या उपदेशका कर्ता कोईकूं यादि नाही, जो, वा पुरुषनैं चोरीका उपदेश चलाया है। बहुरि अनित्य प्रत्यक्षादि प्रमाणही है। अनित्यके प्रमाणता कहिये तौ कहा विरोध है? बहुरि कोई कहै है, प्रथम उपशमसम्यक्त्वकी उत्पत्ति होतैं ज्ञानभी सम्यक् तिसही कालमैं होय है। तातैं

मतिपूर्वकपणां श्रुतकै कैसै ठहरै? ताकूं कहिये। यह कहना अयुक्त हैं। जातैं ज्ञानकै सम्यक्पणा सम्यक्त्वकी अपेक्षातैं भया है। ज्ञानका स्वरूपका लाभ तौ अनुक्रमतैंही है। ऐसैं मतिपूर्वकपणामैं विरोध नाही ॥

बहुरि कोई कहै है, मतिपूर्वक श्रुत है यह लक्षण तौ अव्यापक है—सर्वश्रुतज्ञानमैं व्यापै नांही। जातैं श्रुतपूर्वक श्रुत मानिये है। सोही कहिये है। शब्दरूप परिणया जे पुद्गलस्कंध ते अक्षर पदरूप भये। तब घट आदि शब्द कर्ण इंद्रियका विषय भया। तथा ताके रूपादिक नेत्र आदिकै विषय भये, पीछे तेही पहलै श्रुतज्ञानके विषय भये। तिनिमैं किछु व्यभिचार नांही। तिनितैं कीया है संकेत जानैं ऐसा पुरुष है सो घट ऐसै शब्दके गोचर जो घट नामा पदार्थ तातैं जलधारणादिक जे कार्य तिनरूप जो दूसरा संबंधका विशेष ताही प्राप्त हो है। तथा धूमादिक पदार्थतैं अग्न्यादिक वस्तुकूं प्राप्त हो है। तिस काल श्रुतज्ञानतैं श्रुतज्ञान भया ऐसैं कहतैं आचार्य उत्तर कहै हैं। जो, यह दोष नांही है। तिस श्रुतज्ञानकैभी उपचारतैं मतिपूर्वकपणांही कहिये। जातैं श्रुतज्ञानकैभी कोई ठिकाणै मतिहीका उपचार कीजिये है। जातैं मतिपूर्वकही सोही श्रुतज्ञान भया है ऐसैं जाननां। बहुरि सुत्रमैं भेदशब्द है सो जुदा जुदा कहनां दोय भेदभी है, अनेक-

भेदभी है बारहभेदभी है ऐसैं। तहां दोय भेद तौ अंगबाह्य अर अंगप्रविष्ट ऐसै हैं ॥

बहुरि अंगबाह्य तौ अनेकभेदरूप है। तिनिके नाम दशवैकालिक उत्तराध्ययन आदिक ते चौदह प्रकीर्णक कहावै हैं, तिनिके नाम— सामायिक। चतुर्विंशति स्तव। वंदना। प्रतिक्रमण। वैनायिक। कृतिकर्म। दश वैकालिक। उत्तराध्ययन। कल्पव्यवहार। कल्पाकल्प। महाकल्प। पुंडरीक। महापुंडरीक। निषेधिका। ऐसैं चौदह हैं ॥ बहुरि अंगप्रविष्टके बारह भेद हैं। ते कौन सोही कहिये हैं। १ आचार। २ सूत्रकृत। ३ स्थान। ४ समवाय। ५ व्याख्याप्रज्ञप्ति। ६ ज्ञातृधर्मकथा। ७ उपासकाध्ययन। ८ अंकृतद्दश। ९ अनुत्तरोपपादिक दश। १० प्रश्नव्याकरण। ११ विपाकसूत्र। १२ दृष्टिवाद। ऐसै बारह ॥ तहां दृष्टिवादके भेद परिकर्म। सूत्र। प्रथमानुयोग। पूर्वगत। चूलिका ऐसै पांच ॥ तहां परिकर्मके भेद १ चंद्रप्रज्ञप्ति। २ सूर्यप्रज्ञप्ति। ३ जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति। ४ द्वीपसागरप्रज्ञप्ति। ५ व्याख्याप्रज्ञप्ति ॥ बहुरि चूलिकाके पंच भेद १ जलगता। २ स्थलगता। ३ मायागता। ४ रूपगता। ५ आकाशगता। ऐसै पांच ॥ बहुरि पूर्वगतके भेद चौदह १ उत्पाद। २ अग्रायणीय। ३ वीर्यप्रवाद। ४ अस्तिनास्तिप्रवाद। ५ ज्ञानप्रवाद ६ सत्यप्रवाद। ७ आत्मप्रवाद। ८ कर्मप्रवाद। ९ प्रत्याख्याननामधेय। १० विद्यानुवाद

११ कल्याणनामधेय । १२ प्राणावाय । १३ क्रियाविशाल । १४ लोकबिंदुसार ऐसैं चौदह । ऐसैं बारह अंग कहै ॥ तिनिके वीस अंक प्रमाण अपुनरुक्त अक्षर हैं। तिनिके पद एकसो बारह कोडि तियालिस लाख अठावन हजार पांच है। एक पदके अक्षर सोलासे चौतीस कोडि तियासी लाख सात हजार आठसे अठ्यासी हैं। प्रकीर्णकनिके अक्षर आठ कोडि एक लाख इक्यासीसे पचेहत्तरि है॥

अर पूर्वनिकी उत्पत्ति ऐसैं है। प्रथम पर्यायज्ञान अक्षरकै अनंतवै भाग सूक्ष्मनिगोद लब्धपर्याप्त जीवकातैं लगाय वधता वधता पर्यायसमास ज्ञान हो है। बहुरि अक्षरज्ञान, अक्षरसमासज्ञान, पदज्ञान पदसमासज्ञान, संघातज्ञान, संघातसमासज्ञान, प्रतिपत्तिज्ञान, प्रतिपत्तिसमासज्ञान, अनुयोगज्ञान, अनुयोगसमासज्ञान, प्राभृतज्ञान, प्राभृतसमासज्ञान, प्राभृतप्राभृतज्ञान, प्राभृतप्राभृसमासज्ञान, वस्तुज्ञान, वस्तुसमासज्ञान, पूर्वज्ञान, पूर्वसमासज्ञान ऐसैं वीस स्थानरूप पूर्वकी उत्पत्ति जाननी। बहुरि पूर्वके चौदह भेद कहे तिनिमैं एकसो पिच्याणवै वस्तु हो हैं। अर एक एक वस्तुमैं वीस वीस प्राभृत कहै हैं। ते गुणतालीससैं प्राभृत होय हैं। इनि अंग अर अंगबाह्यश्रुतके अक्षरनिकी तथा पदनिकी संख्या तथा तिनिमैं जो जो प्रधानताकरि व्याख्यान है सो विशेषकरि गोमटसारमैं कह्या है। तहांतैं जाननां ॥

इहां कोई फेरि पूछै है, जो यहु श्रुतज्ञान दोय भेदरूप बारह भेदरूप है सो यहु विशेष काहेतैं भया है? तथा ताकी प्रमाणता कैसे है। ताका उत्तर यहु विशेष वक्ताके विशेषतें है। वक्ता तीन प्रकार है। प्रथम तौ सर्वज्ञ है तहां तीर्थंकर तथा सामान्यकेवली बहुरि श्रुतकेवली। बहुरि तिनिके पीछले सूत्रकार टीकाकारतांई भये आचार्य। तिनकूं आरातीय ऐसा नाम कहिये। तहां सर्वज्ञपरमर्षि जिनिकै छद्मस्थके चिंतवनमैं न आवै ऐसी अचिंत्य विभूतिका विशेष पाईये। तिनिनैं अर्थतैं आगम कह्या। ताका प्रमाणपणां तौ प्रत्यक्षज्ञानीपणांतैं तथा निर्दोषपणांतैंही है। बहुरि तिनिके निकटवर्ती जे बुद्धिके अतिशय तथा ऋद्धिकरि युक्त ऐसैं गणधर श्रुतकेवली तिनिकरि रचे अंगपूर्वरूप सूत्र है। ताका प्रमाणपणां सर्वज्ञकी प्रमाणतातैं हैही। ते सर्वज्ञके निकटवर्तीही हैं। बहुरि आरातीय जे उनके पीछलै आचार्य तिनिनैं इस कालदोषतैं थोरी आयु थोरी बुद्धि, थोरे सामर्थ्यके धारी जे शिष्य तिनिके उपकारकै अर्थि दश वैकालिकादिक रचे हैं। ताका प्रमाणपणां अर्थतैं जो सर्वज्ञ तथा गणधरानिनैं कह्या है सोही यह है ऐसै है। जैसैं क्षीरस-मुद्रका जल एक घटमैं भरि ल्यावै सो क्षीरसमुद्रकाही है। तैसैं यह सर्वज्ञकी परंपरातैं अर्थ ले आपना बुद्धिसारू कह्या सो वहही है ऐसै जाननां ॥

इहां कोई पूछै, जो श्रुतशब्दकरि ज्ञानही ग्रहण कीया, तौ ऐसैं वचनरूप जो द्रव्यश्रुत ताकै श्रुतपणां कैसै प्रसिद्ध है? ताका उत्तर- जो, द्रव्यश्रुतकै श्रुतपणां उपचारतैं आवै है। जातैं श्रुतशब्दका कहनांही श्रुतकै द्रव्यश्रुतपणा जनावै है। द्रव्यश्रुत है सो भावश्रुतज्ञानका निमितिकारण है। याहीके निमित्ततैं भावश्रुतज्ञानके भेदभी अंगबाह्य अंगप्रविष्ट आदि भये हैं। जो ऐसैं न होय, तौ ज्ञानका श्रुत ऐसा नाम काहेकूं है? ज्ञानका वाचकही स्पष्ट नाम कहते बहुरि अंग आदिके भेद कहनेतैं अन्यवादी च्यारि भेदरूप वेद कहै हैं। तथा षडंग वेदके कहै हैं। तथा वेदकी सहस्र शाखा कहै हैं। तिनतैं न्यारापणां प्रगट होय है। ते श्रुताभास हैं प्रमाण नांही। बहुरि श्रुत है सो परोक्षप्रमाण है। बहुरि मतिपूर्वक कहनेतैं अवध्यादि निमितितैंभी न होय है। अर सर्वथा नित्यपणाका निषेध है। बहुरि कोई श्रुतपूर्वकभी श्रुत हो है। तथापि सोभी मतिपूर्वकही है। जातैं जाकै पूर्ववचन आवै तव वचनके श्रवणरूप मतिज्ञान तौ अवश्य होयही। ताकै पीछै श्रुतज्ञान होय। तातैं साक्षात् तौ मतिपूर्वकही होय है। बहुरि स्मृति आदि ज्ञानभी श्रुतज्ञान नांही है। जातैं स्मृति तौ मतिज्ञानहीका विशेष है ॥

बहुरि जे मीमांसक शब्दात्मक द्रव्यश्रुत वेदकूं कहै हैं, ताकूं ज्ञानपूर्वक नाही कहै हैं। सर्वथा

नित्य कहै हैं। तिनिके प्रमाणतैं विचारिये तब बहुत विरोध आवै है। जातैं वेदका उच्चार तौ ज्ञानपूर्वकही है। बहुरि कहै, जो, शब्दकी व्यक्ति ज्ञानपूर्वक है शब्द तौ नित्यही है। तहां कहिये जो शब्दकी व्यक्ति शब्दतैं भिन्न तौ नाही शब्दरूपही है॥ बहुरि कहै हैं, जो, वचनके उच्चारकै ज्ञानपूर्वकपणां है। वचन तौ नवीन नाही नित्यही है। जातैं याका कर्ता कह्या नाही। बडे बडे ज्ञानी भये याका कर्ता तौ काहूकूंभी यादि न भया। ताकूं कहिये वेदका कर्ता वैशेषिकमतके तौ ब्रह्माके कहै है। जैमिनी कालासुरकूं कहै हैं। बौद्धमती स्वाष्टकातकूं कहै हैं। अपनी अपनी संप्रदायमैं सर्वही कर्ता कहै हैं। तातैं ऐसैं कैसैं कहिये? जो काहूनैं कर्ता कह्या नाही। जो कहै बहुतकर्ता बताये तातैं यह जानिये कि कर्ता कहना असत्यही है। ताकूं कहिये बहुत कर्ता भये अकर्ता कैसै कहिये। बहुरि अन्य आगमतैं ऐसा महान्पणाभी वेदकै नाही। जातैं कहिये, जो, ऐसा काहूतैं कीया जाता नाही तातैं अकर्ता कहिये॥

बहुरि कहै, जो, वेदका पढणां वेदका पढनैंपूर्वकही है। जो पहले कोई पढ्या होय तातैं पढिये है सो यह कहनाभी अन्यतैं समान है। अपने अपने आगमकूं सर्वही अपने अपने आप्तकूं पढावनेवाला कहै है। बहुरि कहै आगमके अर्थकूं साक्षात् प्रत्यक्षकरि वक्ता होय है। तौ ऐसैंही कर्ता

कहिये तौ कहा विरोध है? बहुरि पढावनेवाले विना वेदका पढनां कैसै होय? जो कहै ब्रह्मा स्वर्गविषैं आप अध्ययन करै है पीछै मनुष्यलोकमैं आय औरनिकूं पढावै है, तौ ऐसै तौ सर्वही शास्त्रके पढने पढावनेवाले कहिये। जो ऐसैही अकृत्रिमता ठहरै तौ सर्वही शास्त्र अकृत्रिम ठहरै। बहुरि कहै जो मैं पूर्व शास्त्र पढे थे तेही अबहू पढाऊं हूं। ऐसा अनुभव तौ काहूकै दीखै नाहीं। तहां कहिये तत्काल हुवा बालक बछा माताका दूध खैंचै है सो अनुभवविना कैसै खैचै है? जो वाकै अनुभव है तौ खैचै है, तैसैही शास्त्रका संस्कार पढने पढावनेवालेकै होय तौ कहा विरोध? बहुरि जो अक्षर पद वाक्यनिविषैं व्युत्पत्ति काव्य रचनेवाले कवीश्वरनिकै देखिये है तैसैंही वेदकी रचनाका कर्ता कहिये तौ यामैं कहा विरोध है? तथा ऐसैंभी सुणिये है सामगण तौ सामवेद कीया बहुरि रुचिगिरा रिचा करी। तातैं वेदकै अपौरुषेयपणां कहा रह्या? तातैं भारतादिककीज्यों वेदभी पदवाक्यस्वरूप है। सो पौरुषेयपणाही संभवै है॥

बहुरि वेदकै अकृत्रिमपणां प्रमाणताका कारण मानिये तौ ऐसैंही सर्वपदार्थनिकै अकृत्रिमपणां प्रमाणताका कारण क्यौं न कहिये। बहुरि निर्दोष कारणतैं उपजनां। बहुरि अपूर्वार्थपणां बाधारहितपणां प्रमाणताका कारण है। सो अनुमानादि प्रमाणविषैं समान है। तातैं निष्प्रयोजन वेदकै

अपौरुषेयपणां काहेकूं कल्पिये । तातैं आगमकै प्रमाणताभी स्याद्वादमतमैं असंभव बाधकप्रमाणतैं साधी है सोही सत्यार्थ है । बहुरि कोई कहै जो शब्दपूर्वकही ज्ञान है ऐसा एकांत है । जातैं ऐसा पदार्थही लोकविषैं नांही जो नामविना होय तथा नामविना निश्चय जाका होय । ताका उत्तर अकलंकदेव आचार्य ऐसै कह्या है, जो नाम कहे पहली स्मृति संज्ञा चिंता आभिनिबोध भेद लीये मतिज्ञान प्रवर्तें है । अवशेष शब्दपूर्वक श्रुतज्ञान है । ऐसै कहनेतैं जो अन्यवादी कहै है; ज्ञानके पूर्व जो निरंतर वचनरूपपणां होय तौ ज्ञानका प्रकाश होय नाही । सो ऐसा कहनांभी निराकरण भया । वचनरूपताविनाही मतिज्ञान प्रकाशै है ।

बहुरि शब्दाद्वैतवादीकी मानि कहकरि निराकरण कीजिये है । बहुरि वह कहै, जो, वाणी च्यारि प्रकार है— वैखरी मध्यमा पश्यंती सूक्ष्मा । तहां उर कंठ आदि स्थाननिकूं भेदिकरि पवन निसऱ्या ऐसा जो वक्ताका सासोछास है कारण जाकूं ऐसा अक्षररूप प्रवर्तती ताकूं तौ वैखरी कहिये । बहुरि वक्ताकी बुद्धि तौ जाका उपादान है कारण है बहुरि सासोछासकूं उलंघि अनुक्रमतैं प्रवर्तती ताकूं मध्यमा कहिये । बहुरि जामैं विभाग नांही सर्व तरह संकोच्या है क्रम जानैं ऐसी पश्यंती कहिये । बहुरि अंतर प्रकाशरूप स्वरूपज्योतीरूप नित्य ऐसी सूक्ष्मा कहिये ।

तिनिमैं वैखरी मध्यमा इनि दोऊविना तौ इंद्रियज्ञान प्रवर्तै है। सो तौ स्वसंवेदन हमारै इष्ट है। हमभी मानै हैं ॥

बहुरि पश्यंती तथा सूक्ष्मा विनाज्ञान नांही प्रवर्तै है। जातैं निश्चयात्मक व्यापारस्वरूप जो ज्ञान सो जो पश्यंती अभेदरूप वाणी ताविनां कैसैं प्रवर्तै? तथा सर्वव्यापक नित्य एकरूप शाश्वती बीजरूप सर्ववाणीका कारण सर्वज्ञानविषैं प्रकाशरूप जो सूक्ष्मा वाणी ताविनां कैसैं प्रवर्तै? ऐसै शब्दाद्वैतवादी कहै हैं। ताकूं कहिये– जो, शब्दब्रह्म तौ तू निरंश मानै है, ताविषैं च्यारी अवस्था कैसैं होय? जो होय तौ अंशसहित हूवा अनित्य ठहरै। अद्वैतपणां कैसै ठहरै? जो कहै अविद्यातैं च्यारि अवस्था दीखै है तौ अविद्या कोणकै है? शब्दब्रह्म तौ निरंश है ताकै अविद्या कैसै बणै? तथा निरंश शब्दकी सिद्धि कैसैं प्रमाणतैं करिये? इंद्रियनिकरि तौ जाका ग्रहण नांही तथा जाका कछु एकताका लिंग नांही अर स्वसंवेदनमैं आवै नांही, अर आगमतैं भेदकीभी सिद्धि है अभेदही सिद्धि नांही, बहुरि केवल आगमहीतैं अन्यप्रमाणविनां तत्त्वकी सिद्धिभी प्रमाणभूत नांही, बहुरि शब्दब्रह्मतैं जुदाही आगमभी कछु है नांही, बहुरि ताकै भेद अविद्यारूप बतावै तौ अविद्यातैं ताकी सिद्धि कैसै होय। इत्यादि युक्तितैं निरंशशब्दब्रह्मकी सिद्धि होती

नाही। तथा ताकी च्यारि वाणीरूप अवस्था होनाही वणैं नाही। बहुरि हमारै स्याद्वादिनिकै सर्वप्रकार सिध्दि हो है ॥

वाणी द्रव्यभाव भेदतैं दोय प्रकार है। तहां द्रव्यवचन दोय प्रकार; एक द्रव्यरूप एक पर्यायरूप। तहां श्रोत्रेंद्रियकै ग्रहणमैं आवै ऐसा वचन तौ पर्यायरूप है। ताकूं वैखरी ऐसा नाम कीया॥ बहुरि भाषावर्गणारूप परिणये जे पुद्गलस्कंध तिनिकूं द्रव्यवचन कहिये ताकूं मध्यमा ऐसा नाम कीया। बहुरि भाववचन दोय प्रकार है। ताके दोय भेद। तहां ज्ञानावरणीयकर्मका उदयका अभावतैं भया जो आत्माकै अक्षरके ग्रहण करणैकी तथा कहनैकी शक्ति ताकूं तौ लब्धि कहिये, ताका सूक्ष्मा नाम कीया। बहुरि तिस लब्धिकै अनुसारि व्यक्तिरूप भया जो अक्षरके ग्रहण करणेरूप तथा कहनेरूप द्रव्यवचनकूं कारण जो भाव ताकूं उपयोग कहिये ताका नाम पश्यंती किया। सो ए दोऊ आत्माके परिणाम हैं। शब्दरूप पुद्गल नाही; शब्दकूं निमित्त है। सो इस लब्धि तथा उपयोगकूं चिद्रूपसामान्य ग्रहणकरि अक्षररूप नाम कहनेकै पहली तौ मतिज्ञानही कहिये। सो तौ वचनपूर्वक नाही प्रवर्तै है। बहुरि वचनपूर्वक जो प्रवर्तै सो श्रुतज्ञान है सो वचनपूर्वकही कहिये। ऐसैं कहनेतैं सर्व जघन्य तौ लब्ध्याक्षरज्ञान ताकेभी श्रुतज्ञानपणां सिध्द होय है। सो स्पर्शन इंद्रियतैं भया जो

मतिज्ञान तिस पूर्वक होय है। ऐसैं मतिपूर्वक श्रुत कहनेमैं विरोध नाही है॥

बहुरि अन्यवादी उपमानप्रमाण जुदा कहै हैं। सोभी इस श्रुतप्रमाणमैंही अंतर्भूत होय है। सोही कहिये हैं। प्रसिद्ध समानधर्मपणांतैं जो साध्यवस्तुको साधिये, ताकूं उपमान कहिये। जैसैं गऊसारिखा यह गवय है। तथा वैधर्म्यतैंभी होय है, जैसैं जो महिष है सो गऊ नाही है। ऐसैं साधर्म्यवैधर्म्यकरि जो संज्ञासंज्ञिसंबंधकी प्राप्ति सो उपमानका अर्थ है। सो ऐसैं याकूं शब्दप्रमाणतैं न्यारा कहै है। तिनिकै दोय आदि संख्याका ज्ञानभी न्यारा प्रमाण ठहरैगा। तथा उपरिले नीचलेका ज्ञान तौ सौपानकेविषैं, तथा पर्वतादिविषैं थिरताका ज्ञान, अपने वंशादिविषैं महान्‌पणेका ज्ञान, चंद्रमासूर्यादिविषैं दूरवर्तीपणाका ज्ञान, सरसूं आदिविषैं छोटापणाका ज्ञान, रुई आदिविषैं हलकापणाका ज्ञान, अपना घर आदिविषैं निकटवार्तिपणांका ज्ञान, लकूटाचोकूटा आदिविषैं आकारका ज्ञान, कोईविषैं वक्रपणादिका ज्ञान, ए सर्व न्यारे प्रमाण ठहरैंगे। तब आप मानी जो प्रमाणकी संख्या ताका विघटन होगा। तातैं जो संज्ञासंज्ञिसंबंधतैं पदार्थका ज्ञान होय है सो सर्व आप्तके उपदेशपूर्वक है। तातैं आगमप्रमाणमैं अंतर्भूत होय है। ऐसैंही अन्यभी उदाहरण हैं॥

जैसैं सिंहासनपरि बैठा होय सो राजा होय। सुवर्णके सिंहासनपरि बैठी पट्टराणी होय। इस

तरफ बैठा होय सो मंत्री होय । यहु यातैं पूर्वदिसाकी तरफ है । यह यातैं दक्षिणदिसाकी तरफ है । यहु यातैं उत्तरदिसाकी तरफ है। याका यहु नाम है इत्यादि वाक्य पूर्वै सुणे थे । ताका संस्कार फेरि इनको देखे तब राजादिकका ज्ञान होय । बहुरि षण्मुख स्वामिकार्तिकेय है, ब्रह्मा चतुर्मुख है । ऊची नासिकावाला सुखदेव है। दूधजलकूं न्यारा करनेवाला जाकै चूंच सो हंस है । सप्तपत्रवाला अशोकवृक्ष है ऐसैं वाक्यनितैं यथार्थकी प्राप्ति सोभी आगम है । तथा रूपकादि अलंकारनितैं ज्ञान होना सोभी आगमप्रमाण है । ऐसैंही उपमानप्रमाणभी आगमप्रमाणही है । बहुरि पूर्वै जाकूं देख्या था तथा बहुरि फेरि देख्या; तब जाणी “ यहू पूर्वै देख्या सोही है ऐसा जानै ” ताकूं प्रतिभा कहिये सो प्रत्यभिज्ञान है, सो मतिज्ञानही है । याकै पूर्वै शब्द लगाये तब आगमप्रमाण है । बहुरि संभव अभाव अर्थापत्ति अनुमान ए सर्वेही नामपूर्वक तौ आगमप्रमाण है । विनां नाम मतिज्ञानरूप प्रमाण है । ऐसैं मतिज्ञान श्रुतज्ञान ए दोऊ पूर्वै सूत्रमैं परोक्षप्रमाण कहे ते जानने ॥

आगैं प्रत्यक्षप्रमाण कहनेयोग्य है । सो दोय प्रकार है, देशप्रत्यक्ष सकलप्रत्यक्ष । तहां देशप्रत्यक्ष अवधि मनःपर्यय ज्ञान है । सर्वप्रत्यक्ष केवलज्ञान है । तहां पूछे है जो ऐसैं है तौ प्रथमही अवधिज्ञान तीन प्रकारके प्रत्यक्षविषैं आदि है सो कहिये? ऐसैं पूछे कहे हैं– अवधि दोय प्रकार है

एक भवप्रत्यय दूसरा क्षयोपशमनिमित्तक। तहां भवप्रत्ययकूं कहै हैं—

॥ भवप्रत्ययोऽवधिर्देवनारकाणाम् ॥ २१ ॥

याका अर्थ— भवप्रत्यय अवधि है सो देवनारकीनिकै होय है ॥ तहां पूछै हैं— भव कहा? तहां उत्तर— आयु नामकर्मका उदयका है निमित्त जाकूं ऐसा आत्माका पर्याय सो भव कहिये। बहुरि प्रत्यय नाम कारणका है। सो भव है कारण ताकूं ताहि भवप्रत्यय कहिये। ऐसा अवधिज्ञान देवनारकी जीवनिकै होय है। इहां कोई पूछै है जो, ऐसैं है तौ क्षयोपशमनिमित्तपणा तिनकै न ठहस्या। आचार्य कहै हैं। ऐसा दोष इहां नांही आवै है। जातैं भवके आश्रयतैं इनिकै क्षयोपशम होय है। तातैं प्रधानकारण है ऐसा उपदेश है। जैसैं पक्षीनिकै गमन आकाशविषैं होय है तहां भवही प्रधान-निमित्त है किसिका सिखाया नांही है। तैसैं देवनारकीनिकै व्रतनियमतपश्चरणके अभाव होतैंभी होय है, यातैं भवप्रत्यय कहिये है। बहुरि भवप्रत्यय देवनारकीकैही है अन्यकै नांही ऐसा नियम जाननां। जो ऐसैं न होय तौ भव तौ सर्वजीवनिकै साधारण है। तब सर्वहीकै याकी प्राप्ति आवै। बहुरि अवधिकी हीनाधिकप्रवृत्तिभी देखिये है। तातैं यहु क्षयोपशमका विशेष है। बहुरि देवनारकी सर्वहीकै अवधि नांही कहिये। सम्यग्दृष्टिनिहीकै अवधिज्ञान कहिये। जातैं अवधि

ऐसा सूत्रमें ग्रहण है तातैं मिथ्यादृष्टीनिकै विभंगअवधि कहिये । बहुरि इनिकै हीनाधिक अवधिका व्याख्यान अन्यशास्त्रनितैं जानना ॥

आगैं दूसरा भेदकूं कहै हैं—

॥ क्षयोपशमनिमित्तः षड्विकल्पः शेषाणाम् ॥ २२ ॥

याका अर्थ— क्षयोपशम है निमित्त जाकूं ऐसा छह भेदरूप अवधि है सो शेष जे मनुष्य तिर्यंच तिनिकै होय है ॥ तहां अवधिज्ञानावरणकर्मके देशघातिस्पर्द्धकनिका उदय होतैं बहुरि सर्वघातिस्पर्द्धकनिका उदय अभाव है लक्षण जाका ऐसा क्षय, बहुरि तेही सर्वघातिस्पर्द्धक उदयकूं न प्राप्त भये सत्ता अवस्थारूप उपशम है निमित्त जाकूं सो क्षयोपशमनिमित्त अवधि कहिये । सो शेष जे देवनारकीतैं अवशेष रहे मनुष्य तिर्यंच तिनिकै होय है । तिनिमैंभी जिनकै अवधियोग्य सामर्थ्य होय तिनहीकै होय है । जे असैनी तिर्यंच तथा अपर्याप्तक मनुष्य तिर्यंच इस सामर्थ्यतैं रहित होय, तिनिकै न होय है । बहुरि संज्ञी पर्याप्तविषैंभी सर्वहीकै न होय है केई सम्यग्दर्शनादि निमित्तकरि सहित होय । तथा जिनिकै कर्मका उपशम क्षय होय तिनहीकै होय है । इहां कोई पूछै, क्षयोपशमविनां तौ अवधि होय नांही, सूत्रमैं क्षयोपशमशब्द ग्रहणका

कहा प्रयोजन है? ताकूं कहिये इहां क्षयोपशमका ग्रहण नियमकै अर्थि है। इहां क्षयोपशमही निमित्त है, भव नांही है॥

सो यह अवधि छह भेदरूप है। अनुगामी अननुगामी वर्धमान हीयमान अवस्थित अनवस्थित ऐसे छह भेद हैं। तहां भवांतरकूं गमन करता जो जीव ताकी लारही अन्यभवमें साथि सूर्यके प्रकाशकीज्यों चल्या जाय सो तौ अनुगामी कहिये। बहुरि जो भवांतरमैं साथि न जाय जिस भवमैं उपजै तिसहीमें रहजाय, जैसैं पूठि पीछै प्रश्न करनेवाला पुरुषका वचन परके हृदयमैं प्रवेश न करै तैसैं यहु अवधि जाननां सो अननुगामी कहिये। बहुरि जो सम्यग्दर्शनादिगुणरूप विशुद्धपरिणामनिकी वृद्धि होनेतैं जिस परिणामकूं लीये उपज्या तातैं वधताही जाय असंख्यातलोकपरिमाणस्थानकनितांई वधै जैसैं वांसनिकै परस्पर भिडनेतैं उपज्या जो अग्नि सो सूके पत्रादिक संचयरूप भया जो इंधनका समूह तापरि पड्या हूवा वधताही जाय तैसैं यह अवधि वर्धमान कहिये। बहुरि जो सम्यग्दर्शनादिगुणकी हानिरूप जो संक्लेशपरिणाम तिनिकी वृद्धीके योगतैं जिस परिमाणकूं लीये उपज्या होय तातैं घटताही जाय अंगुलकै असंख्यातवै भागमात्र स्थानकनितांई घटै जैसैं परिमाणरूप है उपादानका संतान जाका ऐसा जो अग्नि ताकी शिखा घटतीही जाय तैसैं

यह अवधि हीयमान जाननां। बहुरि जो सम्यग्दर्शनादिगुणका अवस्थानतैं जिस परिणामकूं लीये उपज्या तेताही रहै पर्यायके अंततांई तथा केवलज्ञान उपजै तहांतांई घटै वधै नांही, जैसैं पुरुषके कोई तिला आदिका चिन्ह जैसा है तैसाका तैसाही रहै, तैसैं यह अवधि अवस्थित जाननां। बहुरि जो सम्यग्दर्शनादि गुणके घटने वधनेके योगतैं जितने परिमाणकूं लीये उपजै तातैं वधेभी घटैभी जैसै पवनके वेगकरि प्रेर्‍या जलका लहरी घटै वधै, तैसैं यह अवधि अनवस्थित कहिये। ऐसैं यह अवधि छह प्रकार हो है॥

वहुरि श्लोकवार्तिकमैं याका ऐसा व्याख्यान है– जो अवधिज्ञानावरण क्षयोपशम तौ अंतरंग कारण है। सो दोऊ प्रकारकी अवधिमैं पाईये है। याविना तौ अवधिज्ञान उपजैही नांही। तातैं यहां बाह्यनिमित्त अपेक्षा कथन कीजिये। तब भवप्रत्ययकूं तौ प्रधानकारण भवही है। बहुरि यह क्षयोपशमनिमित्तक कह्या ताकूं गुणप्रत्ययभी कहिये। तहां क्षयोपशमशब्दकरि चारित्रमोहके क्षयतैं भया जो क्षायिकचारित्र बहुरि चारित्रमोहके उपशमतैं भया उपशमचारित्र, बहुरि दोऊतैं भया क्षयोपशमचारित्र यामैं संयमासंयमभी आय गया। ऐसै तीन प्रकार चारित्र नामा गुण जो बाह्यनिमित्त तातैं उपजै सो क्षयोपशमनिमित्तक कहिये। ऐसा व्याख्यान है। बहुरि आगमविषैं

सप्रतिपात अप्रतिपात तथा देशावधि परमावधि सर्वावधि ए सर्व अनुगामी आदि छह भेद कहे तिनमैं अंतर्भूत जानने ॥ तहां देशावधि तौ अनुगामीभी बहुरि अननुगामीभी है। बहुरि परमावधि सर्वावधि केवलज्ञान उपजै तहांतांई अनुगामीही है। बहुरि देशावधि तौ वर्धमानभी है हीयमानभी है। बहुरि परमावधि वर्धमानही है। बहुरि देशावधि तौ अनवस्थितही है। या प्रकार अवधिज्ञान तौ कह्या ॥

बहुरि ताके लगताही मनःपर्ययज्ञान कहनेयोग्य है, ताके भेदसहित लक्षणका कहनेका इच्छक आचार्य सूत्र कहै हैं—

॥ ऋजुविपुलमती मनःपर्ययः ॥ २३ ॥

याका अर्थ-- ऋजुमति तथा विपुलमति ऐसै दोय भेदरूप मनःपर्ययज्ञान है ॥ ऋज्वी कहिये सरल तथा वचन काय मनकरि कीया अरु परके मनकेविषैं प्राप्त भया ऐसा जो पदार्थ ताके जाननेतैं निपजाई जो मति कहिये ज्ञान जाकै होय, ताकूं ऋजुमति कहिये। बहुरि विपुला कहिये वक्र तथा वचन काय मनकरि कीया अरु परके मनविषैं प्राप्त भया जो पदार्थ ताकरि नांही निपजाई स्वयमेवही भई ऐसी जो मति कहिये ज्ञान जाकै होय, ताकूं विपुलमति कहिये। याका

समासकरि ऋजुविपुलमती ऐसा द्विवचन कीया है ॥ तहां मतिशब्द एकहीकरि अर्थ आय गया। तातैं दूसरा मतिशब्द न कह्या। अथवा ऐसाभी समास होय है ऋजु बहुरि विपुल ए दोऊही मति है। तातैं दोऊही जहां होय ते दोऊही ऋजुविपुलमती है। ऐसैं कहनेतैं यहु मनःपर्ययज्ञान दोय प्रकार भया ऋजुमति विपुलमति ऐसैं। अब याका लक्षण कहै हैं ॥

वीर्यांतराय मनःपर्ययज्ञानावरणकर्मका तौ क्षयोपशम बहुरि अंगोपांगनामा नामकर्मका उदयका लाभके अवलंबनतैं आत्माकै परके मनके संबंधकी पाई है प्रवृत्ति जानैं ऐसा जो ज्ञानोपयोग ताकूं मनःपर्ययज्ञान कहिये। इहां कोई कहै, मनके संबंधकरि भया तातैं यामैं मतिज्ञानका प्रसंग आवै है। तहां कहिये, याका उत्तर तौ पूर्वै सामान्यज्ञानके सूत्रके व्याख्यानमैं कह्या था, इहां मन अपेक्षामात्र है उत्पत्तिकारण नाही। परके मनविषैं तिष्ठता पदार्थकूं यहु जानै है एतावन्मात्र अपेक्षा है। तहां ऋजुमतिज्ञान है सो कालतैं जघन्य तौ आपके तथा अन्यके दोय तथा तीन भवका ग्रहणकूं कहै। बहुरि उत्कृष्ट सात आठ भव कहै पहलेभी अरु अगलेभी। बहुरि क्षेत्रतैं जघन्य तौ च्यारितैं ले आठ कोशतांईकी कहै। उत्कृष्ट च्यारि योजनतैं ले आठ योजनतांईकी कहै। बाह्यकी नाही कहै। बहुरि विपुलमतिज्ञान है सो कालतैं जघन्य तौ सात आठ भव अगिले पिछलेका ग्रहण

कहै। उत्कृष्ट असंख्यात भव अगिले पिछलेका ग्रहण कहै। बहुरि क्षेत्रतैं जघन्य तौ च्यारितैं ले आठ योजनतांईकी कहै। उत्कृष्ट मानुषोत्तरपर्वतकै माहिली कहै वारली न कहै॥

ऐसैं कहे जे मनःपर्ययज्ञानके दोय भेद तिनिविषैं विशेपकी प्राप्तिकै अर्थि सूत्र कहै हैं--

॥ विशुध्द्यप्रतिपाताभ्यां तद्विशेषः ॥ २४ ॥

याका अर्थ-- दोऊ मनःपर्ययज्ञानके विषैं विशुद्धि अरु अप्रतिपात इनि दोय विशेपनिकरि विशेष है। अपने आवरण जो कर्म ताके क्षयोपशम होतैं आत्माकै विशुद्धता उज्वलता होय ताकूं विशुद्धि कहिये। संयमतैं छुटनेकूं प्रतिपात कहिये, जो प्रतिपात नाही ताकूं अप्रतिपात कहिये। उपशांतमोहवाले जीवकै चारित्रमोहका उदय होतैं संयमरूप शिखरतैं प्रतिपात हो है उलटा आय पडै है। बहुरि क्षीणकषायवालेकै पडनेका कारण नाही। तातैं उलटा न आवै है अप्रतिपात हो है। इनि दोऊनिकरि ऋजुमति विपुलमति मनःपर्ययज्ञानमैं भेद है। तहां विशुद्धिकरि तौ ऋजुमतितैं विपुलमतिज्ञान द्रव्य क्षेत्र काल भावके विशेप जाननेकरि अतिशयकरि विशुद्ध है जो कार्माणद्रव्यकै अनंतवै भाग अंतका भाग सर्वावधिज्ञान जानै है। ताकूं अनंतका भाग देतैं अंतका भाग ऋजुमति मनःपर्ययज्ञानका विषय है। ताकूं अनंतभागरूप कीये अनंतका भागकूं विपुलमतिज्ञान जानै है।

इहां अनंतकी गणतिका अनंतभेद है। तातैं फेरि फेरि अनंतका भाग कह्या है। ऐसैं द्रव्यकी अपेक्षा विशुद्धि कही। क्षेत्रकालकी पूर्वैं कहीही थी। बहुरि भावकी अपेक्षा विशुद्धि अतिसूक्ष्म द्रव्यके जाननेहीतैं जाननी। प्रकृष्ट क्षयोपशमके योगतैं विशुद्धि घणी होय है। बहुरि अप्रतिपात करिकैभी विपुलमति विशिष्ट जाननां। जातैं जाकै विपुलमति होय ताकैं चारित्र वर्धमानही होय है। तातैं उलटा न आवै। बहुरि ऋजुमति ज्ञानवाला कषायका उदयतैं हीयमानचारित्रभी होय है। तातैं उलटाभी आवै, तातैं प्रतिपातीभी होय है॥

आगैं, इस मनःपर्ययज्ञानका विशेष कह्या अवधि मनःपर्ययमैं काहेतैं विशेष है सो कहो? ऐसैं प्रश्न होतैं सूत्र कहै है—

॥ विशुद्धिक्षेत्रस्वामिविषयेभ्योऽवधिमनःपर्यययोः ॥ २५ ॥

याका अर्थ— अवधिज्ञान बहुरि मनःपर्ययज्ञान इनि दोऊनिमैं विशुध्दि कहिये उज्वलता, बहुरि क्षेत्र जहां तिष्ठते भावनिकूं जानैं, बहुरि स्वामी जाकै यहु ज्ञान होय सो आत्मा, बहुरि विषय ज्ञेय वस्तु इनि च्यारिके भेदतैं भेदविशेष है। सोही कहिये हैं। मनःपर्ययज्ञानका विषय सूक्ष्म है, तातैं तौ अवधितैं अतिशयकरि विशुध्द है उज्वल है। बहुरि क्षेत्र पहली कह्याही था। सो अवधिका

क्षेत्र तौ घणां है याका थोरा है। बहुरि स्वामी मनःपर्ययज्ञानका तौ प्रमत्तगुणस्थानतैं ले क्षीणकषायगुणस्थानतांई संयमीही होय है। तामैंभी उत्तमचारित्रवालाही होय। तामैंभी वर्धमानचारित्रवालाही होय है। तामैंभी सप्तविध ऋद्धिमैंसूं कोई ऋध्दिधारी होय ताहीकै होय है अन्यकै नाही होय। बहुरि तिनिमैंभी कोईसेकै होय है सर्वही ऋद्धिधारीनिकै न होय है। बहुरि अवधि है सो च्यारीही गतिके जीवनिकै होय है। ऐसैं स्वामीके भेदतैं इनिमैं भेद है। बहुरि विषयकी अपेक्षा भेद है सो आगैं कहसी ॥

आगैं केवलज्ञानका लक्षण कहनेका अवसर है। ताकूं छोडि ज्ञाननिका विषयका नियम विचारिये है। काहेतैं? जातैं केवलज्ञानका स्वरूप दशम अध्यायमैं "मोहक्षयात्" इत्यादि सूत्र कहसी। जो ऐसैं है तौ आधके मति श्रुत दोय ज्ञान तिनिका विषयनियम कहा? ऐसैं प्रश्न होतैं सूत्र कहै हैं--

॥ मतिश्रुतयोर्निबन्धो द्रव्येष्वसर्वपर्यायेषु ॥ २६ ॥

याका अर्थ-- मति श्रुत इनि दोऊ ज्ञाननिका विषयका नियम द्रव्यनिकैविषैं केईक पर्यायविषैं है, सर्वपर्यायविषै नाही है॥ तहां निबंध कहिये विषयका नियम। इहां कोई कहै विषयका

कैसें जान्या? विषयशब्द तौ सूत्रमें नाही ॥ ताकूं कहिये— विषयशब्द पहले सूत्रमें कह्या है सो लेना, ताके विभक्तिभी लगाय लेणी। बहुरि द्रव्येषु ऐसा बहुवचनतें सर्वद्रव्य जीव पुद्गल धर्म अधर्म आकाश काल ग्रहण करने। तिनके असर्वपर्याय कहिये केईक पर्याय लेने। ऐसें केईक पर्यायनिसहित सर्वद्रव्य मतिश्रुतज्ञानके विषयभावकूं प्राप्त हो हैं। सर्वपर्यायनिसहित इनिका विषय नाही है जातें ते पर्याय अनंत हैं। इहां कोई कहै, धर्मास्तिकायादिक जे अतींद्रिय हैं ते इंद्रियज्ञान जो मतिज्ञान ताके विषय कैसें होय? यातें सर्वद्रव्यनिविषें मतिज्ञान प्रवर्तै यह कहना अयुक्त है। ताकूं कहिये— ए दोष इहां नाही आवै। जातें अनिंद्रिय कहिये मन नामा अंतरंग कारण है, तातें नोइंद्रियज्ञानावरणकर्मके क्षयोपशमकी लब्धिपूर्वक उपयोग अवग्रहादिरूप पहली प्रवर्तै है। तातें तत्पूर्वक श्रुतज्ञान सर्वद्रव्यनिविषें स्वयोग्यविषें प्रवर्तै है ऐसें जाननां ॥ इहां कोई अन्यवादी कहै, जो मतिज्ञान श्रुतज्ञान तौ स्वप्नवत् है। बाह्यपदार्थकूं अवलंबीकरि नाही उपजै है। जैसें स्वप्नाका कोई बाह्यपदार्थ सत्यार्थ नाही तैसें यहभी है। ताकूं कहिये, यह कहनां अयुक्त है। जातें ऐसें कहतें सर्वशून्यता ठहरै है। प्रथम तौ आपके पेला दूसरा आत्मा बाह्यार्थ है सो मतिश्रुतज्ञान ताकूं ग्रहण करै है। जो ताका अभाव मानिये तौ पेलाके आप बाह्यार्थ है सो आपकाभी अभाव भया।

ऐसै दोऊके भावतैं सर्वशून्यता आई। बहुरि जो पैला आत्मा सत्यार्थ है तौ घटादिक पदार्थभी सत्यार्थ कैसै न होय?। इहां फेरि कोई वादी कहै, इंद्रियज्ञान तौ बाह्यपदार्थकूं अवलंबै है बहुरि स्मरणादिक तौ निरालंबन है। ताकूं कहिये— अनुभवपूर्वक स्मरणादि प्रवर्तै है, तातैं निरालंबन नांही। बहुरि श्रुतज्ञान है सोभी अर्थालंबनस्वरूप है। जातैं श्रुतज्ञानतैं वस्तुकूं जाणि जो तिस वस्तुविषैं प्रवर्तै है तहां बाधा नांही है। जो श्रुतज्ञानगोचर वस्तुविषैं बाधा नांही सो तौ श्रुतज्ञान वस्तुके आलंबनस्वरूप सत्यार्थ है। बहुरि जहां बाधा होय, सो वह श्रुतज्ञान नांही श्रुताभास है ॥

आगैं मतिश्रुतकै लगताही कहनेयोग्य जो अवधिज्ञान ताका विषयका नियम कहा है? ऐसा प्रश्न होतैं सूत्र कहै हैं—

॥ रूपिष्ववधेः ॥ २७ ॥

याका अर्थ— अवधिज्ञानका विषयका नियम रूपी पदार्थनिविषैं है ॥ इहां सूत्रविषैं विषयनिबंधशब्दकी अनुवृत्ति पहले सूत्रनितैं लेणी। बहुरि रूपी कहनेतैं पुद्गलद्रव्य ग्रहण करनां तथा पुद्गलद्रव्यके संबंधसहित जीवद्रव्य लेने। बहुरि रूपीविषैंही विषयनिबंध है ऐसा नियम करनेतैं अरूपीद्रव्य न लैणे याके विषय नांही। बहुरि रूपीद्रव्यविषैंभी केईक पर्याय अपनेयोग्य हैं तेही

विषय हैं। सर्वपर्याय याका विषय नांही ॥

आगैं याकै लगताही कहनेयोग्य जो मनःपर्ययज्ञान ताका कहा विषयनियम है? ऐसैं पूछै सूत्र कहै हैं--

॥ तदनन्तभागे मनःपर्ययस्य ॥ २८ ॥

याका अर्थ-- सर्वावधिका विषयकूं अनंतका भाग देतैं पाया जो सूक्ष्मपुद्गलस्कंध ताविषैं या मनःपर्ययज्ञानका विषयका नियम है॥ जो रूपी द्रव्य सर्वावधिज्ञानका विषय कह्या ताकूं अनंतभागरूप कीया तिस एक भागविषैं या मनःपर्ययज्ञान प्रवर्तै है। इहां ऐसा जाननां, जो, परमावधिका विषयभूत पुद्गलस्कंधकूं अनंतका भाग दीये तो एक परमाणुमात्र सर्वावधिका विषय होय है। बहुरि ताकूं अनंतका भाग दीये ऋजुमति मनःपर्ययका विषय है। बहुरि ताकूंभी अनंतभाग दीये विपुलमति मनःपर्ययका विषय है। इहां कोई पूछै सर्वावधिका विषय तौ एक परमाणुमात्र कह्या ताकूं अनंतका भाग देनां कह्या सो एकपरमाणूकूं कैसैं भाग देना? तहां ऐसा उत्तर- जो, एकपरमाणूमैं स्पर्श रस गंध वर्णके अनंतानंत अविभागप्रतिच्छेद हैं, तिनिके घटने वधनेकी अपेक्षा अनंतका भाग संभवै है। जैसा परमाणू अवधिज्ञान जान्या तिसके अनंतवै

भागकूं मनःपर्ययज्ञान जानै है। तथा एकपरमाणुमात्रस्कंधभी होय है। ताविषैं सूक्ष्मभाव परिणये अनंतपरमाणु होय हैं। तिस अपेक्षाभी अनंतका भाग संभवै है। तहां स्वयोग्य केईक पर्यायरूप पुद्गलस्कंध लेना सर्वद्रव्यपर्यायकाभी विषय नांही ॥

आगैं, अंतविषैं कह्या जो केवलज्ञान ताका कहा विषयनियम है? ऐसा प्रश्न होतैं सूत्र कहै हैं—

॥ सर्वद्रव्यपर्यायेषु केवलस्य ॥ २९ ॥

याका अर्थ—– केवलज्ञानका विषयका नियम सर्वद्रव्य सर्वपर्यायनिविषैं है ॥ इहां द्रव्य तथा पर्याय ऐसैं इतरेतरयोग नामा द्वंद्वसमासतैं वृत्ति करणी। तहां सर्वपद दोऊकै लगावणां। तब सर्वद्रव्य तथा सर्वपर्यायनिविषैं विषयनियम है ऐसा अर्थ भया ॥ तहां जीवद्रव्य तौ अनंतानंत है। बहुरि पुद्गलद्रव्य अणुस्कंधका भेदकरि जीवद्रव्यतैं अनंतानंतगुणे है। धर्म अधर्म आकाश ए तीन एक एक द्रव्य है। तातैं तीनही है। बहुरि कालद्रव्यके कालाणु असंख्यातद्रव्य हैं। तिनि सर्व द्रव्यनिके पर्याय अतीत अनागत वर्तमानरूप जुदे जुदे अनंतानंत हैं। तिनि सर्वद्रव्य सर्वपर्यायनिके समूहविषैं ऐसा किछुभी नांही है, जो, केवलज्ञानके विषयपणांकूं उलंघै। जातैं यहु ज्ञान अपरिमित माहात्म्यरूप है। ऐसा जनावनेकूं सर्वद्रव्यपर्यायविषयस्वरूप केवलज्ञान है ऐसा

कह्या है। इहां यहु विशेष अर्थ जाननां, जो कोई अन्यवादी कहै है सर्वज्ञपुरुष आत्माहीकूं जानै है। इस सिवाय पदार्थ कोई नांही। ऐसे कहनेवालेका निषेधकै अर्थि सर्वकूं जानै है ऐसा कह्या है। वहुरि द्रव्यके वहुवचन कहनेतैं वहुतद्रव्यनिकी सिद्धि भई। वहुरि पर्यायशब्दकै वहुवचन कहनेतैं केई वादी वर्तमान पर्यायके ज्ञानीहीकूं सर्वज्ञ कहै है। ताका निषेध है। वहुरि जो सर्वद्रव्यका ज्ञाता न होय तौ सर्वके उपकाररूप उपदेश कैसें प्रवर्तै? जातैं धर्मअधर्मका स्वरूप अतिसूक्ष्म है। सो सर्वका ज्ञाताविना यथार्थ धर्मअधर्मका स्वरूप कैसै जानै। वहुरि ज्ञान जीवनिविषैं हीनाधिक दीखै है। सो याहीतैं जानिये है कोई जीवविषैं उत्कृष्ट अधिकतारूपभी है। ऐसैं अनुमानमैं केवलज्ञानका अस्तित्व सिद्ध होय है। ऐसा ज्ञान इंद्रियादिकका सहायविना सर्वद्रव्यपर्यायनिकूं एककाल जानै है। ऐसा निर्बाध सिद्ध होय है। ताहीकै वीतरागपणा निर्दोषपणां संभवै है। वहुरि तिसहीतैं हेय उपादेय पदार्थका यथार्थ उपदेश प्रवर्तै है ऐसा निश्चय करनां॥

आगैं पूछै है, मत्यादिज्ञानका विषयनियम तौ वर्णन कीया, परंतु यह न जान्यां, जो एक आत्माविषैं एककाल अपने अपने निमित्तके निकट होतैं प्रवर्तते जे ज्ञान ते केते होय हैं? ऐसा प्रश्न होतैं सूत्र कहै हैं—

## ॥ एकादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्ना चतुर्भ्यः ॥ ३० ॥

याका अर्थ— एक आत्माविषैं एककाल एक तथा दोय तथा तीन तथा च्यारि ऐसैं भाज्यरूप च्यारितांई होय है ॥ इहां एकशब्द संख्यावाची है। बहुरि आदिशब्द है सो अवयववाची है एक है आदि जिनकै ते एकादीनि ऐसा समास है। भाज्यानि कहिये भेदरूप करने। युगपत् कहिये एककालविषैं। एकस्मिन् कहिये एक आत्माविषैं। आ चतुर्भ्यः कहिये च्यारितांई होय है। तहां एक होय तौ केवलज्ञानही होय, याकी साथ अन्य क्षायोपशमिक ज्ञान होय नांही। दोय होय तौ मतिश्रुतज्ञान होय। तीन होय तौ मतिश्रुतअवधि होय अथवा मतिश्रुतमनःपर्ययज्ञान होय। च्यारि होय तौ मतिश्रुत अवधि मनःपर्यय च्यार्‍योंही होय। पांच एककाल न होय। जातैं केवलज्ञान क्षायिक असहायरूप है ॥ इहां प्रश्न, जो क्षायोपशमिकज्ञान तौ एककाल एकही प्रवर्तता कह्या है। इहां च्यारी कैसैं कहे? ताका उत्तर, जो, ज्ञानावरणकर्मका क्षयोपशम होतैं च्यारी ज्ञानकी जाननशक्तिरूप लब्धि एककाल होय है। बहुरि उपयोग इनिका एककाल एकही होय है। ताकी एक ज्ञेयतैं उपयुक्त होनेकी अपेक्षा स्थितिभी अंतर्मुहूर्तकी कही है। पीछै ज्ञेयांतर उपयुक्त होय जाय है क्षयोपशम जिनिका होय है ते लब्धिरूप एककालही है। इहां कोई कहै उपयोग

अपेक्षाभी सांकलीके भक्षण करतैं रूपादिक पांचका ज्ञान एककालही दीखै है वर्ण सांकलीका दीखै है, स्वादु लेही है। गंध वाका आवैही है। स्पर्शभी सचीकणा आदि जानैही है। भक्षण करतैं शब्द होय है। सो सुणेंही है। ऐसैं पांचका ज्ञान एककालभी देखिये है। ताकूं कहिये, जो, इहां उपयोगका फिरणकी शीघ्रता होतैं कालभेद न जान्या जाय है। जैसैं कमलका पत्र दोय च्यारिमैं सूईका प्रवेश होतैं कालभेद जान्या न जाय अरु कालभेद हैही। तैसैं इहांभी जाननां ॥

आगैं, कहे जे ज्ञान ते ज्ञानही नाम पावै हैं कि अन्यथाभी हैं? ऐसैं प्रश्न होतैं सूत्र कहै हैं—

॥ मतिश्रुतावधयो विपर्ययश्च ॥ ३१ ॥

याका अर्थ— मति श्रुत अवधि ए तीन ज्ञान हैं ते विपर्ययस्वरूपभी हो हैं। चकारतैं सम्यक्भी हैं ॥ विपर्यय कहिये मिथ्या, जातैं इहां सम्यक्का अधिकार है। बहुरि चशब्द समुच्चयार्थ है विपर्ययभी है, सम्यक्भी है ऐसैं भेले कहे है। इहां कोई पूछै है, इनिकै विपर्यय काहेतैं होय है? ताकूं कहै हैं- मिथ्यादर्शनके उदयकरि सहित एक आत्माविषैं समवायरूप एकता होय है, तातैं विपर्यय कहिये। जैसैं कडा तूंबा गिरिसहित होय तामैं दूध क्षेपिये तौ वह दूधभी कडा हो जाय।

१ बडी पुरी.

तैसें मिथ्यादर्शनके उदयकरि सहित ज्ञानभी मिथ्या होय है। इहां विशेष जाननां- जो, विपर्यय कहनेतैं मिथ्याज्ञान कह्या है सो संशय विपर्यय अनध्यवसायभी लेना। तथा चशब्दतैंभी इनिका समुच्चय हो है। तहां मतिश्रुतज्ञानकै तौ तीनूंही होय हैं। जातैं संशय इंद्रियमनतैंही उपजै है। यह स्थाणु है कि पुरुष है ऐसा याका स्वरूप है। सो यहु सामान्य देखै ताका विशेष न देखै तातैं तथा दोय विषयके स्मरणतैं हो है। बहुरि अवधिकी उत्पत्तिविषैं इंद्रियमनका व्यापार है नाहीं, तातैं सो संशयस्वरूप नाहीं है। बहुरि दृढ उपयोगकी अवस्थाविषैं याकै विपर्यय कहिये है। सो मिथ्यात्वश्रद्धानका सहभावपनातैं है। तथा शीघ्र उपयोग संकोचनतैं कदाकाल अनध्यवसायस्वरूपभी हो है। ऐसैं याकै दोयही होय है संशय नाहीं। इहां कोई प्रश्न करै है, जो कटुक तुंबाविषैं तौ आधारके दोषतैं दूध कटुक हो है ज्ञानविषैं तौ विषयका ग्रहण सम्यङ्मिथ्याविषैं समान हो है। जैसैं मिथ्यादृष्टि नेत्रादि मतिज्ञानकरि रूपादिककूं देखै है तैसैंही सम्यग्दृष्टिभी देखै है। बहुरि जैसैं सम्यग्दृष्टि श्रुतज्ञानकरि रूपादिककूं जानै है पैलेनकूं कहै है तैसैंही मिथ्यादृष्टिभी कुश्रुतज्ञानकरि जानै है। तथा अन्यकूं कहै है। बहुरि अवधिज्ञानकरि सम्यग्दृष्टि जैसैं रूपीपदार्थनिकूं जानै है तैसैंही मिथ्यादृष्टि विभंगज्ञानकरिभी जानै है। याका उत्तरके अर्थि सूत्र कहै हैं--

॥ सदसतोरविशेषाद्यदृच्छोपलब्धेरुन्मत्तवत् ॥ ३२ ॥

याका अर्थ-- मिथ्यादृष्टिकै विपर्यय होय है सो सत्का तथा असत्का विशेष न जाननेतैं अपनी इच्छातैं जैसैं तैसैं ग्रहण करनेतैं होय है। जैसैं मदिरादिकतैं उन्मत्त भया पुरुष अपनी इच्छातैं जैसैं तैसैं वस्तुकौं ग्रहण करै तैसैं मिथ्यादृष्टिभी छती अणछती भली बुरीका विशेष जान्यां विना अपनी इच्छातैं ग्रहण करै है ॥ इहां सत् ऐसा तौ विद्यासानवस्तुकूं कहिये असत् अविद्यमानकूं कहिये। इनि दोऊनिका अविशेषेण कहिये विशेष न करै, कदा विद्यमानकूं अविद्यमान कहै, कदा विद्यमानकूं विद्यमानभी कहै, कदा अविद्यमानकूं विद्यमान कहै, कदा अविद्यमानकूं अविद्यमानभी कहै, ऐसैं अपनी इच्छातैं जैसैं तैसैं ग्रहणकरि कहै। तहां विपर्यय कहिये जैसैं रूपादिक वस्तु छती होय तौभी कहै नाही है। कदा अणछतीकूंभी कहै है छती है। कदा छतीकूं छतीभी कहै। कदा अणछतीकूं अणछतीभी कहै। ऐसैं मिथ्यादर्शनके उदयतैं अन्यथा निश्चय करै है। जैसैं पित्तज्वरकरि आकुलित चित्तभ्रमवाला कदाकाल तौ माताकूं भार्या कहै, कदा भार्याकूं माता कहै, कदा माताकूं माताभी कहै, कदा भार्याकूं भार्याभी कहै ऐसैं अपनी इच्छातैं मानै। तातैं जैसाकूं तैसाभी कहै है, तो ताके सम्यग्ज्ञान नांही है ॥

ऐसैं मत्यादिज्ञानविषैं जो घटपटादिकका जैसाका तैसा ज्ञान है तौभी विपर्ययही जानना सोही कहिये हैं, कोई आत्माकैविषै मिथ्यादर्शनका उदयतै परिणाम होय है। सो रूपादिकका ज्ञान नेत्रादिककरि जैसाका तैसाभी होय तौभी तिसविषै कारणविपर्यास भेदाभेदविपर्यास स्वरूपविपर्यास ए तीन विपर्यास उपजावै है। तहां प्रथमही कारणविपर्यासकूं कहै है। तहां रूपादिक नेत्रादिककरि दीखै तौ जैसेके तैसे दीखै, परंतु मिथ्यादृष्टि ताका कारण अन्यथा कल्पै। जैसै ब्रह्माद्वैतवादी कहै है, रूपादिकनिका कारण एक अमूर्तिक नित्य ब्रह्मही है ब्रह्महीतै भये है। सांख्यमती कहै है रूपादिकनिका कारण अमूर्तिक नित्य प्रकृति है, प्रकृतितै ए उपजै है॥ वहुरि नैयायिक वैशेषिक-मती कहै है, पृथ्वी आदि जातिभेदरूप परमाणु हैं, तिनिमैं पृथ्वीविषै तौ स्पर्शादि च्यारि गुण है। वहुरि अप्विषै गंधवर्जित तीन गुण है। वहुरि अग्निविषै स्पर्श वर्ण ए दोय गुण हैं। वहुरि वायुविषै एक स्पर्शगुणही है। ऐसै च्यारिही अपनी अपनी जातिके स्कंधरूप कार्य निपजावै है॥ वहुरि बौद्धमती कहै है, पृथ्वी आदि च्यारि भूत है। इनिकै स्पर्श रस गंध वर्ण ए च्यारि भौतिकधर्म है। इनि आठनिका समुदायरूप परमाणु होय है। ताकूं अष्टक नाम कहिये है॥ वहुरि चार्वाकमती कहै हैं, पृथ्वी अप् तेज वायु ए च्यारि काठिण्यादि गुण, तथा द्रवत्वादि, उष्णत्वादि, ईरणत्वादि,

गुणरूप जातिभेदनै लीया परमाणु है, ते पृथ्वी आदि स्कंध निपजावे है। ऐसै तौ कारणविषै विपर्यय होय है ॥ बहुरि भेदाभेदविपर्यास ऐसै है- जो, कारणतै कार्य सर्वथा भिन्नही है। जैसैं पृथ्वी आदि परमाणु नित्य है। तिनितैं स्कंधकार्य निपजे ते सर्वथा भिन्नही है ऐसै कहै हैं। तथा गुणतै गुणी भिन्नही है ऐसे कहै ॥ बहुरि कारणतै कार्य सर्वथा अभिन्नही है। जैसै घटपटादि ग्रामपर्वतादि ब्रह्मतैं निपजै हैं ते ब्रम्हही हैं जुदे नांही। इत्यादि भेदाभेदविपर्यास है। जहां भेद होय तहां अभेदही कल्पना, जहां अभेद होय तहां भेदही कल्पना, ऐसैं विपर्यय है ॥

बहुरि स्वरूपविपर्यास, जैसैं रूपादिक हैं ते निर्विकल्प निरंश हैं, इनिमैं अंशभेद नांही। तथा रूपादिक बाह्यवस्तु हैही नांही, तदाकार परिणया ज्ञानही है। ताके आलंबनरूप बाह्यवस्तु नांही है इत्यादि अन्यभी बहुत हैं। ते प्रत्यक्ष अनुमान प्रमाणतैं विरुध्द मिथ्यादर्शनके उदयतैं कल्पना होय है ॥ बहुरि तहां श्रद्धान प्रतीति रुचि उपजावै हैं। तातैं ते मत्यज्ञान श्रुताज्ञान विभंगज्ञान होय हैं। बहुरि सम्यग्दर्शन है सो यथार्थ वस्तुविषैं श्रद्धान रुचि प्रतीति उपजावै है। तातै तेही मतिज्ञान श्रुतज्ञान अवधिज्ञान हो हैं ॥ इहां विशेष कहै हैं— विपर्यय दोय प्रकार है। एक आहार्यविपर्यय दुसरा सहजाविपर्यय। तहां मतिअज्ञान तथा श्रोत्र इंद्रिय विनां अन्य इंद्रियपूर्वकै श्रुतअज्ञान अर

विभंगज्ञान ए तौ सहजविपर्यय हैं। जातैं ए परके उपदेशविना स्वयमेव प्रवर्तै है। बहुरि श्रोत्र मतिपूर्वक श्रुताज्ञान है सो आहार्यविपर्यय है। जातैं यहु परके उपदेशतैं प्रवर्तै है। तहां सत्के विषैं असत्का ज्ञान परोपदेशतैं प्रवर्तै है। सोही कहिये– स्वरूपतैं सर्ववस्तु सत्स्वरूप है।' तोभी शून्यवादी असत्स्वरूपही कहै है। बहुरि ग्रहणकरणेयोग्य वस्तु तथा ग्रहणकरणेवाला ज्ञान दोऊ स्वरूपतैं सद्रूप है। तौभी संवेनाद्वैतवादी एक संवेदनहीकूं सत् कहै है। दूसराकूं असत् ही कहै है। तथा चित्राद्वैत कहै है। तथा पुरुषाद्वैत कहै है। तथा शब्दाद्वैत कहै है। तथा बाह्यपदार्थ भिन्न हैं तिनिकूं एक विज्ञानांडकी कल्पना करै है। बहुरि बाह्यतरंग पदार्थ सादृश्यभी है। तिनिकूं सर्वथाविसदृशही कहै है। बहुरि विसदृशकूं सर्वथा सदृशही कहै है। बहुरि द्रव्य होतैंभी पर्यायमात्र कहै है। पर्याय छतै द्रव्यमात्रही कहै है। बहुरि द्रव्यपर्याय अभेद होतैभी भेदरूपही कहै है। तथा अवक्तव्यही कहै है। बहुरि ध्रौव्यरूप होतैंही उत्पादव्ययरूपही कहै है। तैसैंही विशेषकरि जीव होतैंभी जीवका नास्ति कहनां। बहुरि अजीव होतैंभी तिसका असत्त्व कहनां। बहुरि कर्मका आस्रव होतैंभी ताका अभाव कहनां। तैसैंही संवर, निर्जरा, मोक्ष, होतैंभी तिनिका अभाव कहनां। ऐसैंही जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश, काल, द्रव्यनिके होतैंभी निनिका अभाव कहनां। इत्यादि अनेक प्रकार छती वस्तूकूं

अणछती कहनां अनेकप्रकार जाननां । वहुरि अणछतीकूं छती कहनां । जैसें पररूपादिककरि वस्तु असत्वरूप है तौभी तिसकौं सर्वथा सत्स्वरूप कहनां । इत्यादिक पहलै कहे तिसका उलटा जाननां॥

वहुरि देशकालस्वभावकरि अदृष्ट जे पदार्थ तिनिविषैं बौद्धमतीनिकै संशय है । केई शून्यवादीनिकै पृथ्वी आदिक तत्त्वनिविषैं संशय है । वहुरि केईकनिकै सर्वज्ञके अस्तित्वविषैं संशय है । वहुरि केईकनिकै प्रलापमात्रके आश्रयतैं सर्वही तत्त्वविषैं अनध्यवसाय है । ते कहै है काहेतैं निर्णय कीजिये? हेतुवादरूप तर्कशास्त्र है ते तौ कही ठहरै नांही । वहुरि आगम है ते जुदे जुदे हैं, कोई कछू कहै कोई कछु कहै तिनिका ठिकानां नाही । वहुरि सर्वका ज्ञाता कोई मुनि प्रत्यक्ष नांही ताके वचन प्रमाण कीजिये । वहुरि धर्मका स्वरूप यथार्थ सूक्ष्म है सो कैसैं निर्णय होय? तातैं जो वडा जिस मार्ग चले आये तैसैं चलनां प्रवर्तनां, निर्णय होता नांही, ऐसैं अनध्यवसाय है ॥

ऐसैंही मतिज्ञानरूप विनां उपदेश सहजविपर्यय होय है । ताके भेद अवग्रहादि तथा स्मृति प्रत्यभिज्ञान तर्क । स्वार्थानुमानकरि पदार्थकूं अन्यथा ग्रहण करनेतैं विपर्यय होय है । तहां स्वार्थानुमान विपर्ययरूप हेत्वाभास च्यारि प्रकार है आसिद्ध विरुद्ध अनेकांतिक अकिंचित्कर । सो इनिका स्वरूप परीक्षामुख न्यायदीपिकादि शास्त्रनितैं जाननां । वहुरि शास्त्रके वाक्यके अर्थ करनेविषैं

विपर्यय हो है। जैसे केई नियोगकूं वाक्यार्थ कहै है। केई भावनाकूं वाक्यार्थ कहै है। केई धात्वर्थकूं वाक्यार्थ कहै है। केई विधिकूं वाक्यार्थ कहै है। केई यंत्रारूढकूं वाक्यार्थ कहै है। केई अन्यापोह कहिये निषेधकूं वाक्यार्थ कहै है। इत्यादि वाक्यार्थविषैं विपर्यय है। तिनिकी चरचा श्लोकवार्तिक तथा देवागमस्तोत्रकी टीका अष्टसहस्रीविषैं है तहांतैं समझणी॥ बहुरि अवधिज्ञानविषैं विपर्यय देशावधिही होय है। परमावधि सर्वावधि मनःपर्यय है ते केवलज्ञानकीज्यौं विपर्ययरूप नांही होय है। जातैं सम्यग्दर्शन विनां होते नाही। ऐसै प्रमाण अप्रमाणका भेद दिखावनेकै अर्थि विपर्ययज्ञानका स्वरूप कह्या॥

आगैं, प्रमाण तौ परोक्ष प्रत्यक्षरूप दोय प्रकार ज्ञानहीकूं कह्या। बहुरि प्रमाणके एकदेश जे नय ते "प्रमाणनयैरधिगमः।" ऐसा सूत्रविषैं प्रमाणकै अनंतर नय नाममात्र कहे तिनका निर्देश करना। ऐसा प्रश्न होतैं सूत्र कहै है—

॥ नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशव्दसमभिरूढैवम्भूता नयाः॥ ३३॥

याका अर्थ— नैगम, संग्रह, व्यवहार, ऋजुसूत्र, शब्द, समभिरूढ, एवंभूत ऐसै ये सात नय हैं॥ इनिका सामान्यलक्षण बहुरि विशेषलक्षण कहनेयोग्य है। तहां अनेकधर्मस्वरूप जो वस्तु

ताविषैं अविरोधकरि हेतुरूप अर्पण करनेतैं साध्यके विशेषका यथार्थस्वरूप प्राप्त करनेकूं व्यापाररूप जो प्रयोग करना सो नयका सामान्यलक्षण है। इहां कोई कहै नयका सामान्यलक्षण कीया सो हेतुरूपही भया, जातैं साध्यकूं प्राप्त करै सोही हेतु। ताकूं कहिये, हेतु तौ जिस साध्यकूं साधै तहांही रहै। बहुरि लक्षण है सो सर्वनयनिमैं व्यापै, तातै सामान्यलक्षण हेतु नांही है। बहुरि कोई कहै, एकधर्मकै दूसरा धर्मतैं विरोध है। सो धर्मके ग्राहक नयनिकैभी विरोध है। तहां अविरोध कैसै होय? ताकूं कहिये, जो प्रत्यक्ष अनुमानकरि बाधित ऐसा सर्वथा एकांतरूपकरि ग्रहण करनां सो तौ विरुद्धरूप है– नयाभास है। बहुरि जो वस्तुका धर्म कथंचित्प्रकार अनेकांतस्वरूप ग्रहण करै, सो सर्वनय समानधर्मरूप भये। तिनिमैं विरोध काहेका? जैसैं साध्यवस्तुका समानधर्मरूप दृष्टांत कहिये, तामैं विरोध नांही तैसैं इहाभी अविरोध है। याका उदाहरण, जैसैं सर्ववस्तु सद्रूप है। जातैं अपनें द्रव्य क्षेत्र काल भावकूं लीये है ॥

सो यह नय संक्षेपतैं दोय प्रकार है, द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिक ऐसैं। तहां द्रव्य तथा सामान्य तथा उत्सर्ग तथा अनुवृत्ति ए सर्व एकार्थ है। ऐसा द्रव्य जाका विषय सो द्रव्यार्थिक है। बहुरि पर्याय तथा विशेष तथा अपवाद तथा व्यावृत्ति ए सर्व एकार्थ है। ऐसा पर्याय जाका विषय सो

पर्यायार्थिक है। इनि दोऊनिके भेद नैगमादि है। तहां नैगम, संग्रह, व्यवहार, ए तीन तौ द्रव्यार्थिक है। बहुरि ऋजुसूत्र, शब्द, समभिरूढ, एवम्भूत ऐ च्यारि पर्यायार्थिक है। तामैं भी नैगम, संग्रह व्यवहार, ऋजुसूत्र ए च्यारि तौ अर्थकूं प्रधानकरि प्रवर्तै है तातैं अर्थनय कहिये। बहुरि शब्द समभिरूढ एवंभूत ए तीन शब्दकूं प्रधानकरि प्रवर्तैं है तातैं शब्दनय कहिये। इहां कोई पूछै, पर्यार्थिक तौ नय कह्या अरु गुणार्थिक न कह्या सो कारण कहां? ताका उत्तर सिद्धांतमैं पर्याय सहभावी क्रमभावी ऐसैं दोय प्रकार कहे है। तहां सहभावी पर्यायकूं गुण संज्ञा कही है। क्रमभावीकूं पर्याय संज्ञा कही है। तातैं पर्याय कहनतैं यामैं गुणभी जानि लेना ऐसैं जाननां। विस्तारकरि ए सात नय कहे। बहुरि अतिविस्तारकरि नय संख्यात है। जातैं जेते शब्दके भेद हैं तेतेही नय कहे हैं॥

अन्यमती बौद्धतौ विज्ञान, वेदना, संज्ञा, संस्कार, रूप ए पांच स्कंध कहे हैं। बहुरि नैयायिक प्रमाण, प्रमेय, संशय, प्रयोजन, दृष्टांत, सिद्धांत, अवयव, तर्क, निर्णय, वाद, जल्प, वितंडा, हेत्वाभास, छल, जाति, निग्रहस्थान ऐसै सोलह पदार्थ कहे हैं। बहुरि वैशेषिक द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय, अभाव, ऐसै सात पदार्थ कहै हैं। बहुरि सांख्य एक तौ प्रकृति, बहुरि

प्रकृतिके विकार प्रधान १। अहंकार २। कर्मेंद्रिय ५। ज्ञानेंद्रिय ५। मन १। स्पर्श रस गंध वर्ण शब्द ए ५। तन्मात्रा; बहुरि पृथ्वी अप् तेज वायु आकाश ए पंचभूत ऐसै तेईस प्रकृतिके विकार बहुरि एक पुरुष निर्विकार ऐसै पचीस तत्त्व कहै हैं। ते सर्वही द्रव्यपर्यायसामान्यविषैं अंतर्भूत है। कथंचित् वस्तुधर्म हैं। तातैं सुनयके विषय हैं। बहुरि अन्यवादी इनिकूं सर्वथाएकांत अभिप्रायकरि कल्पे हैं। सो तिनिका अभिप्राय मिथ्या है ऐसैं जाननां।

आगैं नयनिका विशेषलक्षण कहैं हैं। तहां प्रथमही नैगमका कहै हैं। अपने सन्मुख वर्तमानकालविषैं पूर्ण रच्या हुवा वस्तु नांही, ताका अपने ज्ञानविषैं संकल्प करनां जो 'यहु वस्तु इस वर्तमानकालमैं है–' ऐसै संकल्पका ग्रहण करनेवाला अभिप्राय सो नैगमनय है। इहां उदाहरण, जैसैं काहू पुरुषकूं कोई पुरुष कूंहाडी लीये चालताकूं पूछी "तूं कौण अर्थ जाय है?" तब वह कहै, मैं प्रस्थ लेनेकूं जाऊं हूं। तहां वाकैं प्रस्थ अवस्था निकट बण्या विद्यमान नांही। जायकरि लकडी काटि प्रस्थ बणावैगा, तब होगा। परंतु वाके मनविषैं ज्ञानमैं प्रस्थका संकल्प विद्यमान है, सोही इस नैगमनयका विषय है। इहां प्रस्थ ऐसा परिमाणविशेषका नाम है। लकडीके पाई, माणी इत्यादि धान्य तोलणेकै बणै हैं, ताका नाम है। तथा कोई याका अर्थ लकडीका भाराभी कहै हैं।

तथा कोई पुरुष ईंधन जल आदि सामग्री भेली करै था, ताकूं कोई पूछी, तूं कहा करै है? तब वह कहै, मै भात पचाऊं हूं; तब तहां भात अवस्था तिसकै निकट वर्तमान नांही, भात पचैगा तब होयगा। तथापि तिस भातकै अर्थि व्यापार करतैं आगामी भात पचैगा ताका संकल्प याके ज्ञानमै विद्यमान अनुभवगोचर है। सो यहु संकल्प नैगमनयका विषय है। ऐसीही विना रची दूर क्षेत्र कालमैं वर्तती जो वस्तु ताका संकल्पकूं यहु नैगमनय अपना विषय करै है॥ इहां कोई पूछै- आगामी होणी विषैं वर्तमान संज्ञा करी। तातैं यहु तौ उपचारमात्र भया॥ ताकूं कहिये- बाह्य वस्तुकी याकै मुख्यता नांही, अपने ज्ञानका संवेदनरूप संकल्प विद्यमान है। सो याका विषय है। तातैं उपचारमात्र नांही। बहुरि याका विषय एकही धर्म नांही, अनेक धर्मनिका संकल्प है, तातैंभी याकूं नैगम कह्या है। दोय धर्म तथा दोय धर्मी, तथा एक धर्मी एक धर्म ऐसैं याके अनेकप्रकार संकल्पतैं अनेकभेद हैं। कोई कहै, ऐसैं तौ दोऊनिके ग्रहण करनेतैं यह प्रमाणही भया। ताकूं कहिये, प्रमाण तौ दोऊनिकूं प्रधानकरि जानै है। यहु नैगम दोऊमैं एककूं प्रधान करैहै, एककूं गौण करै है, ऐसा विशेष जानना॥

या नैगमके भेद तीन हैं। द्रव्यनैगम, पर्यायनैगम, द्रव्यपर्यायनैगम। तहां द्रव्यनैगमके दोय

भेद है शुद्धद्रव्यनैगम अशुद्धद्रव्यनैगम। बहुरि पर्यायनैगमके तीन भेद, अर्थपर्यायनैगम व्यंजनपर्यायनैगम, अर्थव्यंजनपर्यायनैगम। बहुरि द्रव्यपर्यायनैगमके च्यारि भेद शुद्धद्रव्यार्थपर्यायनैगम, अशुद्धद्रव्यार्थपर्यायनैगम, शुद्धद्रव्यव्यंजनपर्यायनैगम अशुद्धद्रव्यव्यंजनपर्यायनैगम। ऐसै नैगमनयके नव भेद भये। तहां उदाहरण— जो, संग्रहनयका विषय सन्मात्र शुद्धद्रव्य है ताका यहु नैगमनय संकल्प करै है जो सन्मात्र द्रव्य समस्तवस्तु है, ऐसै कहै तहां सत्तौ विशेषण भया तातैं गौण है। बहुरि द्रव्य विशेष्य भया तातैं मुख्य है। यहु शुद्धद्रव्यनैगम है। बहुरि जो पर्यायवान् है सो द्रव्य है, तथा गुणवान है सो द्रव्य है ऐसा व्यवहारनय भेदकरि कहै है। ताका यहु नैगमनय संकल्प करै है। तहां पर्यायवान् तथा गुणवान् यहु तौ विशेषण भया, तातैं गौण है। बहुरि द्रव्य विशेष्य भया तातैं मुख्य है। ऐसैं अशुद्धद्रव्यनैगमनय भया॥ बहुरि प्राणीके सुखसंवेदन है सो क्षणध्वंसी है ऐसैं क्षणध्वंसी ऐसा तौ सत्ताका अर्थपर्याय है सो विशेषण है। बहुरि सुख है सो संवेदनका अर्थपर्याय है सो विशेष्य भया तातैं मुख्य है। तातैं यहु अर्थपर्यायनैगम भया॥ बहुरि पुरुषविषैं चैतन्य है सो सत् है इहां सत् नामा व्यंजनपर्याय है सो विशेषण है। बहुरि चैतन्यनामा व्यंजनपर्याय है सो विशेष्य है तातैं मुख्य है। यहु व्यंजनपर्याय नैगम है। बहुरि धर्मात्माविषैं

सुखजीवीपणां है। इहां सुख तौ अर्थपर्याय है सो विशेषण है। वहुरि जीवित व्यंजनपर्याय है सो विशेष्य है, तातैं मुख्य है। यहु अर्थव्यंजनपर्यायनैगम है। वहुरि संसारविषैं सत् विद्यमान सुख है सो क्षणमात्र है। इहां सत् शुद्धद्रव्य है सो विशेषण है। सुख है सो अर्थपर्याय है सो विशेष्य है, तातैं मुख्य है। यह शुद्धद्रव्य अर्थपर्याय नैगम भया॥ वहुरि विषयी जीव है सो एक क्षण सुखी है इहां जीव है सो अशुद्धद्रव्य है सो विशेष्य है। सुख है सो अर्थपर्याय है सो विशेषण है तातैं गौण है। यहु अशुद्धद्रव्य अर्थपर्यायनैगम भया॥ वहुरि चित्सामान्य है सो सत् है इहां सत् ऐसा शुद्धद्रव्य है सो तौ विशेषण है तातैं गौण है। चित् है सो व्यंजनपर्याय है सो विशेष्य है तातैं मुख्य है। ताका यहु शुद्धद्रव्यव्यंजनपर्यायनैगम भया॥ वहुरि जीव है सो गुणी है इहां जीव है सो अशुद्धद्रव्य है, सो विशेष्य है सो मुख्य है। वहुरि गुण है सो व्यंजनपर्याय है, सो विशेषण है तातैं गौण है। यह अशुद्धद्रव्यव्यंजनपर्याय नैगम भया। ऐसैं नैगमनयके नव भेद है ते संग्रहादि छह मिलै पंधरा होय है॥

आगैं संग्रहनयका लक्षण कहै हैं। अपनी एक जातिके वस्तुनिकूं आविरोध करिये एकप्रकार-पणांकूं प्राप्तिकरि जिनमैं भेद पाईये ऐसै विशेषनिकूं अविशेषकरि समस्तकूं ग्रहण करै ताकूं संग्रहनय

कहिये। इहां उदाहरण। जैसें सत् ऐसा कहतें सत् ऐसा वचनकरि तथा ज्ञानकरि अन्वयरूप जो चिन्ह ताकरि अनुमानरूप कीया जो सत्ता ताके आधारभूत जे सर्व वस्तु तिनिका अविशेषकरि संग्रह करै जो सर्वही सत्तारूप है ऐसै संग्रहनय होय है। तथा द्रव्य ऐसा कहते जो गुणपर्यायनिकरि सहित जीव अजीवादिक भेद तथा तिनिके भेद तिनिका सर्वनिकी संग्रह होय है। तथा घट ऐसा कहतें घटका नाम तथा ज्ञानके अन्वयरूप चिन्हकरि अनुमानरूप कीये जे समस्त घट तिनिका संग्रह होय है। ऐसें अन्यभी एकजातिके वस्तुनिकूं भेला एककरि कहै तहां संग्रह जाननां। तहां सत् कहनेतें सर्ववस्तूका संग्रह भया। सो यहु तौ शुद्धद्रव्य कहिये। ताका सर्वथा एकांत सो संग्रहाभास कुनय है। सो सांख्य तौ प्रधानकूं ऐसा कहै हैं। बहुरि व्याकरणवाले शब्दाद्वैतकूं कहै हैं। वेदांती पुरुषाद्वैत कहै हैं। बौद्धमती संवेदनाद्वैत कहैं हैं। सो ये सब नय एकांत है। बहुरि या नयकूं परसंग्रह कहिये। बहुरि द्रव्यमैं सर्वद्रव्यनिका संग्रह करै। पर्यायमैं सर्वपर्यायनिका संग्रह करै सो अपरसंग्रह है। ऐसैही जीवमैं सर्वजीवनिका संग्रह करै। पुद्गलमैं सर्वपुद्गलनिका संग्रह करै। घटमैं सर्व घटनिका संग्रह करै। इत्यादि जाननां॥

आगैं व्यवहारनयका लक्षण कहै हैं। संग्रह नयकरि ग्रहण कीये जे वस्तु तिनिका विधिपूर्वक

व्यवहरण कहिये भेदरूप करणां सो व्यवहारनय है। कोई पूछै विधि कहां? ताकूं कहिये जो संग्रहकरि ग्रह्या पदार्थ है ताहीकूं पहलीले अरु भेद करै सो विधि कहिये, जैसैं संग्रहकरि सत् ग्रहण कीया सो जो विशेषकी अपेक्षा रहित होय तौ तासूं व्यवहार प्रवर्तै नांही। तातैं व्यवहारनयका आश्रय करिये तब ऐसैं कहिये, जो सत् कह्या सो द्रव्यरूप है, तथा गुणरूप है ऐसैं सत्विषैं भेदकरै तब व्यवहार प्रवर्तै। तथा द्रव्य ऐसा संग्रह ग्रहण कीया सोभी विशेषनिकी अपेक्षा रहित होय तौ व्यवहार प्रवर्तै नांही। तातैं व्यवहारका आश्रय लीजिये तब द्रव्य है सो जीवद्रव्य है तथा अजीवद्रव्य है; ऐसैं भेदकरि व्यवहार प्रवर्तै। ऐसैही जीवद्रव्यका संग्रह होय तामैं देव नारकादि भेद होय अजीवका संग्रह करै तब घटादिकका भेद होय। ऐसै यहु नय तहांताई चल्या जाय जहां फेरि भेद न होय। सो जहां ऋजुसूत्रका विषय है ताकै पहलैतांई संग्रह व्यवहार दोऊ नय चले जाय है।

आगैं ऋजुसूत्र नयका लक्षण कहै हैं। ऋजु कहिये सरल सूधा सूत्रयति कहिये करै है ताकूं ऋजुसूत्र कहिये। तहां पूर्व कहिये पहलै, अतीत गये, तथा अपर कहिये पीछै होयगा ऐसै तीन कालके गोचर जे भाव तिनिकूं उलंघिकरि वर्तमानकाल पर्यायमात्रका ग्रहण करनेवाला यहु ऋजुसूत्रनय है। जातैं अतीत तौ विनाशि गये। वहुरि अनागत उपजेही नांही। तिनिकरि तौ

व्यवहारका अभावही है। तातैं वर्तमानहीतैं व्यवहार प्रवर्तै है। इहां कोई कहै है अतीत अनागतकाभी लोकविषैं व्यवहार है सो कैसै चलै? ताकूं कहिये या नयका तौ यहुही विषय है सो दिखाया। बहुरि लोकव्यवहारतौ सर्वनयके समूहकरि साधने योग्य है। जहां जैसी नयका कार्य होय तहां तैसा नय ग्रहण करनां। या नयका सर्वथा एकांत अभिप्राय बौद्धमती करै है। द्रव्यकातौ लोप करै है। क्षणस्थायी वस्तु कहै है। तिनिकै सर्वव्यवहारका लोप आवै है॥

आगैं शब्दनयका लक्षण कहै हैं। लिंग, संख्या, साधन, इत्यादिकका व्यभिचारकूं दूरि करनेविषैं तत्पर सो शब्दनय है। तहां प्रथमही लिंगव्यभिचार स्त्रीलिंगविषैं पुरुषलिंग कहना, जैसैं, तारका यह स्त्रीलिंग है ताकूं स्वाति ऐसा पुरुषलिंग कहना। बहुरि पुरुषलिंगविषैं स्त्रीलिंग कहना, जैसैं, अवगमः ऐसा पुरुषलिंग है ताकूं विद्या ऐसा स्त्रीलिंग कहनां। बहुरि स्त्रीलिंगविषैं नपुंसकलिंग कहनां, जैसैं, वीणा ऐसा स्त्रीलिंग है ताकूं आतोद्य ऐसा नपुंसकलिंग कहनां। बहुरि नपुंसकलिंगविषैं स्त्रीलिंग कहनां, जैसैं, आयुध ऐसा नपुंसकलिंग है, ताकूं शक्ति ऐसा स्त्रीलिंग कहनां। बहुरि पुरुषलिंगविषैं नपुंसकलिंग कहना, जैसैं पट ऐसा पुरुषलिंग है, ताकूं वस्त्र ऐसा नपुंसकलिंग कहनां। बहुरि नपुंसकलिंगविषे पुरुषलिंग कहनां, जैसैं, द्रव्य ऐसा नपुंसकलिंग है, ताकूं परशु ऐसा

पुरुषलिंग कहनां। बहुरि एकही वस्तूकै तीनूं लिंग कहनां, जैसैं, तारका यहु स्त्रीलिंग है, ताहीकूं पुष्यः ऐसा पुरुषलिंग तथा नक्षत्र ऐसा नपुंसकलिंग कहनां। इत्यादि लिंगव्यभिचार है। बहुरि संख्याव्यभिचार एकवचनविषैं द्विवचन, जैसैं नक्षत्र ऐसा एकवचन है, तहां पुनर्वसू ऐसा द्विवचन कहनां। बहुरि एकवचनविषैं बहुवचन, जैसैं नक्षत्र ऐसा एकवचन है, तहां शतभिषजा ऐसा बहुवचन कहनां। बहुरि द्विवचनविषैं एकवचन, जैसैं 'गोदौ' ऐसा द्विवचन है, तहां ग्रामः ऐसा एकवचन कहनां। बहुरि द्विवचनविषैं बहुवचन, जैसैं, पुनर्वसू ऐसा द्विवचन है, तहां पंचतारका ऐसा बहुवचन कहनां। बहुरि बहुवचनविषैं एकवचन, जैसैं, आम्रा ऐसा बहुवचन है, तहां वन ऐसा एकवचन कहनां। बहुरि बहुवचनविषैं द्विवचन, जैसैं, देवमनुष्याः ऐसा बहुवचन है, तहां उभौ राशी ऐसा द्विवचन कहनां। ऐसैं संख्याव्यभिचार है ॥

बहुरि साधनव्यभिचार, ताकूं पुरुषव्यभिचारभी कहिये "एहि मन्ये रथेन यास्यसि। नहि यास्यसि। न यातस्ते पिता" याका अर्थ— एहि ऐसा मध्यमपुरुषका एकवचन है, तथापि याका 'एमि' ऐसा अर्थ करनां, जो, मैं जाऊं हूं सो। 'मन्ये' ऐसा उत्तमपुरुषका एकवचन है, तहां मध्यमपुरुषका 'मन्यसे' ऐसा कहना, जो, तूं ऐसै मानै है। जामैं 'रथेन' कहिये रथ चढि।

यास्यसि याका 'यास्यामि' ऐसा कहनां, जो, जाऊंगा सो । 'नहि यास्यसि' कहिये नांही जायगा, तेरा पिताभी ऐसैं गया नांही । भावार्थ– हास्यका प्रसंगविषैं ऐसा कहनां होय है। जो तूं मानै है मै रथ चढिकरि जाऊं, सो ऐसें तेरा पिताभी न गया, तूं कैसा जायगा? तहां तूं कहनेकी जायगा तौ हूं कहनेका शब्द कह्या। वहुरि हूं कहनेकी जायगा तूं कहनेका शब्द कह्या। तव पुरुषव्यभिचार भया॥

वहुरि कालव्यभिचार; जैसैं "विश्वदृश्वाऽस्य पुत्रो जनिता" याका अर्थ– जिहि विश्व कहिये लोककूं देख्या सो पुत्र याकै होसी। विश्वकूं देख्या यहु तो अतीतकालवाचक शब्द है। वहुरि जनिता यहु आगामी कालवाचक शब्द है। सो इहां कालव्यभिचार भया। वहुरि 'भाविकृत्य-मासीत्' ऐसैं कहै, तैं भावि कहिये होणहार कार्य 'आसीत्' कहिये हूवा, सो इहांभी अतीत अनागतकालका व्यभिचार भया ॥

वहुरि उपग्रहव्यभिचार, जो 'तिष्ठति' ऐसा परस्मैपद धातु है, ताका 'संतिष्ठते' 'प्रतिष्ठते' ऐसा भया। वहुरि 'रमते' ऐसा आत्मनेपदी धातु है ताका 'विरमति उपरमति' ऐसा भया। ऐसैं उपसर्गके वलतैं आत्मनेपदी धातूका परस्मैपदवचन भया। वहुरि परस्मैपदीका आत्मनेपदी भया। ऐसै उपग्रहव्यभिचार है ॥

बहुरि कारकव्यभिचार 'सेना पर्वतमधिवसति' इहां सेना पर्वतके समीप वसै है ऐसा आधार है, सो सप्तमी विभक्ति चाहिये, तहां द्वितीया कही। तातैं कारकव्यभिचार भया। याप्रकार व्यवहार नय है ताहि अन्याय मानै है। जातैं अन्य अर्थका अन्य अर्थकरि संबंध होय नांही। जो अन्य अर्थका अन्यतैं संबंध होय, तो घटका पट होय जाय, पटका महल हो जाय। तातैं जैसा लिंग आदि होय तैसाही न्याय है। इहां कोई कहै, लोकविषैं तथा शास्त्रविषैं विरोध आवेगा। ताकूं कहिये, विरोध आवै तौ आवो, इहां तौ यथार्थस्वरूप विचारिये है। औषधी रोगीकी इच्छाकै अनुसार तौ है नांही॥

आगैं, समभिरूढनयका लक्षण कहै हैं। नाना अर्थनिविषैं समभिरोहणात् कहिये प्राप्त होनेतैं समभिरूढ है। जातैं एकशब्दके अनेक अर्थ हैं, तिनिमैंसूं कोई एक अर्थकूं ग्रहणकरि तिसहीकूं कह्या करै, जैसैं, गौ ऐसा शब्द वचनादि अनेक अर्थविषैं वर्तै है। तौभी गऊ नाम पशुका ग्रहणकरि तिसहीकूं गऊ कहै। अथवा शब्दका कहना है, सो अर्थगतिकै अर्थि है। तहां एक अर्थका एकही शब्दकरि गतार्थपणा है, तातैं वाका दुसरा पर्यायशब्द कहिये नाम कहनां सो निष्प्रयोजन है। इहां कोई कहै, शब्दका तौ भेद है। ताकूं कहिये अर्थभेदभी अवश्य चाहिये। ऐसैं यहु समभि-

रूढनय नाना अर्थविषैं प्राप्त होय है, तातैं समभिरूढ है। जैसे इंदनात् कहिये परमैश्वर्यरूप क्रिया करै तब इंद्र है। शकनात् कहिये समर्थरूप वर्तै तब शक्र कहिये। पूर्दारणात् कहिये पुरके विदारण-क्रियारूप वर्तै तब पुरंदर है। ऐसैं यहु समभिरूढनय एकही अर्थकूं ग्रहणकरि प्रवर्तै है। अथवा जो जहां प्राप्त है तहांही प्राप्त होय करि वर्तै है, तातैं समभिरूढ है। जैसै काहूकूं कोई पूछे तूं कहां तिष्ठै है? वह कहै, मैं मेरे आत्माविषैं तिष्ठूं हूं ऐसैंभी समभिरूढ है। जातैं अन्यका अन्यविषैं प्रवर्तना न हो है। जो अन्यका अन्यविषैं प्रवृत्ति होय, तौ ज्ञानादिककी तथा रूप आदिककी आकाशविषैंभी वृत्ति होय। सो है नांही ॥

आगैं एवंभूतनयका लक्षण कहै हैं। जिस स्वरूपकरि जो वस्तु होय तिसही स्वरूपकरि ताकूं कहै, निश्चय करावै सो एवंभूत है। जो वस्तु जिस नामकरि कहिये तिसही अर्थकी क्रिया-रूप परिणमता होय तिसही काल वा वस्तूकूं तिस नामकरि कहै अन्यकाल अन्यपरिणतिरूप परिण-मताकूं तिस नामकरि न कहे। जैसैं इंद्र ऐसा नाम है, सो परमैश्वर्यरूप क्रिया करता होय तबही इंद्र कहै, अभिषेक करतैं तथा पूजा करतैं ताकूं इंद्र न कहे। तथा जिस काल गमन करै तिस कालही गऊ कहै बैठीकूं गऊ न कहै सूतीकूं गऊ न कहै। अथवा जिस स्वरूपकरि जिसका ज्ञान

तदाकार भया होय तिसही स्वरूपकरि निश्चय करावै। जैसें इंद्रका आकाररूप ज्ञान परिणया होय तथा अग्निका आकाररूप ज्ञान भया होय तिस ज्ञान सहित आत्माकूं इंद्र तथा अग्नि कहै। इहां कोई कहै नामक्रियारूप परिणयाकूंही कहै तौ नामके कारण तो जाति, गुण, द्रव्यभी हैं तिनकूं कैसै कहै? ताकूं कहिये, जेते जाति आदिकतैं भये नाम हैं ते सर्वही क्रियाविषैं अंतर्भूत हैं विनाक्रिया निष्पत्ति नांही। जैसें जातिवाची अश्वशब्द है, सोभी शीघ्रगमन क्रिया करै, ताकूं अश्व कहिये, ऐसै क्रियावाची होय है। तथा शुक्ल ऐसा गुणवाची शब्द है, सो शुचिक्रियारूप परणवै, ताकूं शुक्ल कहिये, ऐसै क्रियावाची होय है। तथा दंडी ऐसा संयोगी द्रव्यवाची है, सोभी दंड जाकै होय ताकूं दंडी कहिये, ऐसै क्रियावाची होय है। तथा विषाणी ऐसा समवायद्रव्यवाची शब्द है, सोभी विषाण कहिये सींग जाकै होय, ताकूं विषाणी कहिये। ऐसैही वक्ताकी इच्छातै भया नाम, जैसै देवदत्त ऐसा काहूका नाम वक्ता कह्या ताकाभी जब स्वार्थ करिये, तब जो देव दीया होय, तथा देवनिमित्त दे, ताकूं देवदत्त कहिये, ऐसै क्रियावाची होय है, ऐसै जाननां ॥

ऐसै ए नैगमादिक नय कहे ते आगै अल्पविषय है। तिस कारणतै इनिका पाठका अनुक्रम है। पहलै नैगम कह्या ताका तौ वस्तु सद्रूप तथा असद्रूप इत्यादि अनेकधर्मरूप है। ताका

संकल्प विषय है। सो यहू नयतौ सर्वतैं महाविषय है। याकै पीछै संग्रह कह्या सो याका विषय सत् द्रव्यत्व आदिही है। इनिकै परस्पर निषेधरूप जो असत् आदि सो विषय नांही है। तातै तिसतै अल्पविषय है। बहुरि याके पीछै व्यवहार कह्या सो याका विषय संग्रहके विषयका भेद है। तहां अभेद विषय रहि गया। तातैं तिसतैं अल्पविषय है। बहुरि याकै पीछै ऋजुसूत्र कह्या सो याका विषय वर्तमानमात्र वस्तुका पर्याय है सो अतीत अनागत रहि गया। तातैं तिसतैं अल्प विषय है। याके पीछै शब्दनय कह्या सो याका विषय वस्तुकी संज्ञा है। एक वस्तूके अनेक नाम हैं। तहां काल कारक लिंग संख्या साधन उपग्रहादिक भेदतैं अर्थकूं भेदरूप कहै। सो इनिका भेद होतैंभी वर्तमानपर्यायरूप वस्तूकूं अभिन्न मानता जो ऋजुसूत्र तातैं अल्पविषय भया। जातैं एक भेद करतैं अन्य भेद रहि गये। बहुरि याकै पीछै समभिरुढ कह्या, सो एक वस्तुके अनेक नाम हैं तिनिकूं पर्यायशब्द कहिये तिनि पर्यायशब्दनिका एकही अर्थ मानता जो शब्दनय तातैं समभिरूढ अल्प विषय है। तातैं तिनि पर्यायशब्दनिके जुदे जुदेभी अर्थ हैं। सो यहू जिस शब्दकूं पकडै तिसही अर्थरूपकूं कहै। तब अन्य शब्द यातैं रहि गये तातैं अल्पविषय भया। बहुरि एवंभूत याके पीछै कह्या। सो याका विषय जिस शब्दकूं पकड्या तिस क्रियारूप परिणमता पदार्थ है। सो अनेक-

क्रिया करना। एकही कहता जो समभिरूढ तातैं अल्पविषय भया। ऐसैं उत्तरोत्तर अल्पविषय है।

इहां दृष्टांत, जैसैं एक नगरविषैं एक वृक्ष उपरि पक्षी बोले था, ताकूं काहूनैं कही, या नगरविषैं पक्षी बोलै है। काहूनैं कही, या नगरमैं एक वृक्ष है तामैं बोलै है। काहूनैं कही, या वृक्षका एक बडा डाला है तामैं बोलै है। काहूनैं कही, इस डालेमैं एक शाखा छोटी डाली है तामैं बोलै है काहूनैं कही, इस डाहलेके एक देशविषैं बैठा बोलै है। काहूनैं कही, पक्षी अपने सरीरविषैं बोलै है। काहूनैं कही वाके शरीरमैं कंठ है तामैं बोलै है। ऐसै उत्तरोत्तर विषय छूटता गया। सो यह अनुक्रमतैं इनि नयनिके वचन जानने। नैगमनयनैतौ वस्तुका सत् असत् दोऊ लिये। संग्रह नयनैं सत्‌ही लीया। व्यवहारनैं सत्का एक भेद लीया। ऋजुसूत्रनैं वर्तमानकूंही लीया। शब्दनैं वर्तमान सत्‌मैंभी भेदकरि एक कार्य पकड्या। समभिरूढनैं वा कार्यके अनेक नाम थे तिसमैं एक नामकूं पकड्या। एवंभूतनैं तामैभी जिस नामकूं पकड्या तिसही क्रियारूप परिणामताकूं पकड्या। ऐसैही जिस पदार्थकूं साधिये तापरि सर्वहीपरि ऐसै नय लगाय लैनें। बहुरि पहला पहला नय तौ कारणरूप है। अगिला अगिला कार्यरूप है। ता कार्यकीं अपेक्षा स्थूलभी कहिये। ऐसै ये नय पूर्वपूर्वतौ विरुद्धरूप महाविषय है। उत्तर उत्तर अनुकूलरूप अल्पविषय है। जातैं पहला नयका विषय

अगिले नयमैं नांही तातैं विरुद्ध है। अगिलेका विषय पहलेमैं गर्भित है तातैं ताके अनुकूलपणां है॥ ऐसैं ये नयभेद काहेतैं होय है? जातैं द्रव्य अनंत शक्तिकूं लीये है तातैं एक एक शक्ति प्रति भेदरूप भये बहुत भेद होय हैं। ऐसैं ए नय मुख्यगौणपणां करि परस्परसापेक्षरूप भये संते सम्यग्दर्शनके कारण होय हैं। जैसैं सूतके तार आदि हैं ते पुरुषके अर्थक्रियाके साधनकी सामर्थ्यतैं यथोपायं कहिये जैसैं वस्त्रादिक बणि जाय तैसा उपायकरि थापे हुये वस्त्रादिक नाम पावै है। बहुरि वह तार जो परस्पर सापेक्षारहित न्यारे न्यारे होय तौ वस्त्रादिक नाम न पावै तैसैंही ये नय जानने॥

इहां कोई कहै यह तारनिका उदाहरणतौ विषम उपन्यास है मिल्या नांही। जातैं तार आदिकतौ अपेक्षारहित न्यारेन्यारेभी अर्थमात्रा कहिये प्रयोजनकूं सिद्ध करै है। तथा अर्थक्रिया करै है। जैसै कोई तार तो न्यारा शीकनिके बांधनेकूं शस्त्रके घाव सीवनेकूं समर्थ होय है। कोई तार वेलिखीय आदिका ऐसा होय जो भारा आदि बांधनेकूं समर्थ है। बहुरि ये नय जब निरपेक्ष होय तब किछूभी सम्यग्दर्शनकी मात्राकूं नांही उपजावै है। तहां आचार्य कहै हैं, यह दोष इहां नांही है॥ जातैं हमनैं कह्या ताका ज्ञान तुमारै हुवा नांही। कहे अर्थकूं विना समझ्या यह उराहना दीया। हमनैं तौ ऐसैं कह्या है निरपेक्ष तार आदि

कहै ते वस्त्रादिकार्य नांही है। बहुरि तुमनैं कह्या सो तौ पटादिकार्य नांही है केवल तार आदिहीका न्याराही कार्य है। सोभी कार्य जो तार आदि अपने अवयवसहित न होय तौ तिनितैं न होय। तातैं हमारी पक्षसिद्धि है। सापेक्षही कार्य उपजावै है। बहुरि कहै तार आदिविषैं वस्त्रादिकार्य शक्तिरूप है। तौ नयानिविषैंभी निरपेक्षनिविषैं ज्ञानरूप तथा शब्दरूपनिविषैं कारणके वसतैं सम्यग्दर्शनका कारणपणाका विशेषरूप परिणवनके सद्भावतैं शक्तिरूप सम्यग्दर्शनका कारणका आस्तित्व है। तातैं हमारा दृष्टांत विषम नांही है, समही है, मिलता है ॥

आगैं इनि नियमकै परस्पर मुख्यगौणपणांकी सापेक्षाकरि विधिनिषेधतैं सप्तभंग उपजै हैं सो कहिये हैं। तहां नैगमकै तौ संग्रहादि छह नयनिकरि न्यारे न्यारे छह सप्तभंग होय है। बहुरि संग्रहकै व्यवहारादिककरि पांच होय हैं। बहुरि व्यवहारकै ऋजुसूत्रादिककरि च्यारि होय हैं। बहुरि ऋजुसूत्रके शब्दादिककरि तीन होय हैं। बहुरि शब्दके समभिरूढादिककरि दोय होय हैं॥ बहुरि समभिरूढकै एवंभूत नयकरि एकही होय है। ऐसै मूलनयनिकै तौ विधिनिषेधकरि इकइस सप्तभंगी भई। बहुरि नैगमनयकै नव भेद हैं अर संग्रहके पर अपर करि दोय भेद हैं तातैं तिनके विधिनिषेधतैं अठारह सप्तभंगी होय है। ऐसैही पर अपर व्यवहारकै अठारह होय है। बहुरि ऋजुसूत्रकरि नव

सप्तभंगी हो है। बहुरि शब्दके काल आदि छह भेदनिकरि चौवन सप्तभंगी होय है। बहुरि समभिरूढकरि नव एवंभूतनयकरि नव। ऐसै ये एकसौ सतरा सप्तभंगी भई। ऐसै संग्रहके दोय भेदनितैं व्यवहारादिके भेदनिकरि बाईस, बहुरि व्यवहारकै दोय भेदनितैं ऋजूसूत्रादिकके अठारह, बहुरि ऋजुसूत्रके शब्दभेदकरि छह, बहुरि शब्दके भेदनिके समभिरूढ एवंभूतकरि बारह, ऐसै अट्ठावन होय सब मिलि एकसौ पचहत्तरि भेदनिकी अपेक्षा भये, दोऊ मिलि एकसौ छिनवै भये। बहुरि उलटे करिये तब तेही भंग होय है। ऐसैही उत्तरोत्तर भेदनिकरि शब्दथकी संख्यातसप्तभंगी होय है। तहां पूर्वै प्रमाणसप्तभंगीविषैं भंगनिका विचार कह्या। तैसै इहांभी जाननां ॥

विशेष इतनां– जो, तहां जिस पदार्थकूं साधनां ताका काल आदि आठ भेदनिकरि सकलादेश करनां। इहां तिनिका विकलादेश करनां। जिस धर्मके नामकरि पदार्थकूं कह्या तिसही धर्मविषैं सर्वधर्मनिका काल आदिकरि अभेदवृत्ति करनां सो तौ सकलादेश है। बहुरि जिस धर्महीका काल आदि कहनां दुसरे धर्मतैं भेदवृत्ती कहनां तहां विकलादेश हो है। सो पूर्वैं उदाहरणकरि कह्याही है। जैसै नैगमनयनैं प्रस्थका संकल्प कीया तहां संग्रहनय कहै यहु प्रस्थ संकल्पमात्र नांही सद्रूप है। तहां विधिनिषेध भया। तब कथंचित् प्रस्थ, कथंचित् अप्रस्थ, कथंचित् प्रस्थाप्रस्थ, कथंचित् अवक्तव्य

कथंचित् प्रस्थ अवक्तव्य, कथंचित् अप्रस्थ अवक्तव्य, कथंचित् प्रस्थाप्रस्थ अवक्तव्य ऐसैं सात भये। तैसैंही सर्वनयके विषयविषैं विधिनिषेध लगाय साधने। इहां कोई पूछै; जो, द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिक नयके भेदरूप नैगमादिक सात भेद कहे ते तो जाणे। परंतु शास्त्रनिमैं निश्चयव्यवहार नयकी कथनी बहुत। सो यहु न जाणी, जो, ये निश्चयव्यवहारनय कहां कहै है? इनिका विषय कहा है?। ताका उत्तर— जो, नयचक्र ग्रंथ गाथाबंध है। तहां ऐसैं कह्या है— जो निश्चयनय व्यवहारनय हैं ते सर्व नयनिका मूलभेद हैं। इनि दोय भेदनितैं सर्वनयभेद प्रवर्तै हैं। तहां निश्चयके साधनेकूं कारण द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिक दोऊ नय हैं। वस्तुका स्वरूप द्रव्यपर्यायस्वरूपही है। तातैं इनि दोऊ नयनितैं साधिये है।। तातैं ये दोऊही तत्त्वस्वरूप हैं। सत्यार्थ हैं ॥

बहुरि व्यवहार है सो उपनय है। ताके तीन भेद हैं सद्भूतव्यवहार, असद्भूतव्यवहार, उपचरितव्यवहार। तिनिके उत्तर भेद आठ हैं। तहां सद्भूतके दोय भेद। तहां गुणगुणी तथा पर्यायपर्यायी द्रव्यनिविषैं कर्ताकर्म आदि कारककी प्रवृत्तिके सद्भावतैं संज्ञा संख्या लक्षण प्रयोजनादिकके भेदतैं शुद्धद्रव्यविषैं भेद कहै। सो तौ शुद्धसद्भूतव्यवहार है। तैसैही एकद्रव्यके एकही प्रदेश है, भिन्नक्षेत्र नाही, तौऊ संख्यात असंख्यात अनंतप्रदेशादिक कहै। सोऊ शुद्धसद्भूतव्य-

वहार है। बहुरि एकही द्रव्य परके निमित्ततैं विकार उसही सत्मैं भया था ताकी अपेक्षा लेकरि संज्ञादिककरि भेद कहै है। तहां अशुद्धसद्भूतव्यवहार है। ऐसैं दोय भेद सद्भूतव्यवहारके भये ॥

बहुरि अन्यवस्तूका गुण अन्यके कहै सो असद्भूतव्यवहार है। ताके तीन भेद। तहां जैसै बहुत पुद्गलके परमाणुद्रव्य मिलि एक स्कंध नाम पर्याय वण्या ताकूं कहे ' ए पुद्गलद्रव्य है, तहां समानजातीय असद्भूतव्यवहार भया। बहुरि जहां एकेंद्रियादिक देह ते पुद्गलस्कंध हैं तिनिकूं जीव कहै। तहां असमानजातीय असद्भूतव्यवहार भया। बहुरि जहां मतिज्ञानकूं मूर्तिक कहनां जातैं मूर्तिकतैं उपजै है तथा रुकै है। तहां मतिज्ञान तौ अमूर्तिक जीवका धर्म है। बहुरि मूर्तिकपणां पुद्गलका धर्म है। तहां मिश्र असद्भूतव्यवहार भया। तथा ज्ञेयविषैं ज्ञान है ऐसैं कहना तहां ज्ञेय जीव अजीव दोऊ है। तातैंभी मिश्र भया। ऐसैं तीन भेद असद्भूतव्यवहारके भये ॥

बहुरि उपचारव्यवहारकेभी तीन भेद हैं। तहां द्रव्य गुण पर्यायके परस्पर उपचार करिये तव भेद होय है। तहां एकप्रदेशी परमाणूकूं बहुप्रदेशी पुद्गलद्रव्य कहनां तहां द्रव्यविषैं पर्यायका उपचार भया। बहुरि महलकूं श्वेत कहनां तहां द्रव्यविषैं गुणका उपचार भया। बहुरि मतिज्ञान ज्ञानकूं कहनां तहां गुणके विषैं पर्यायका उपचार भया। बहुरि स्कंधपर्यायकूं पुद्गलद्रव्य कहनां तहां

पर्यायके विषैं द्रव्यका उपचार भया। बहुरि देहकूं सुंदर देखि ताकूं उत्तमरूप कहनां तहां पर्यायविषैं णका उपचार भया। इत्यादिक उपचार जानने। बहुरि उपचारका उपचारपरि तीनूं भेद लगावणे। त्रादिक मेरे हैं, मै इनिका हौं ऐसैं कहनां सो समानजातीय उपचारका उपचार है। बहुरि ाभारणादिक मेरे हैं ऐसैं कहनां सो विजातीय उपचारका उपचार है। बहुरि देश गढ राज्य ऐसैं कहना मिश्रउपचारका उपचार है। ऐसैं व्यवहारनय अनेकरूप प्रवर्तै है॥

रि श्लोकवार्तिकमैं ऐसैं कह्या है— जो एवंभूतनय तौ निश्चय है। जातैं जिसकी जो संज्ञा सही क्रियारूप परिणमता पदार्थ होय सो याका विषय है। जैसैं चैतन्य अपनां चैतन्यभाव- णमै ताकूं चैतन्यही कहै। क्रोधीकूं क्रोधीही कहै इत्यादि। बहुरि व्यवहार अशुद्धद्रव्यार्थिककूं है। जातैं दोय भाव तथा द्रव्य मिलेविना व्यवहार चलै नांही। दोय मिलै तब अशुद्धता भई। । यह निर्देशादिक अधिकारमैं लिखीही है। इहां प्रश्न, जो, अध्यात्मग्रन्थनिमैं कह्या है, जो, निश्चयनय तौ सत्यार्थ है व्यवहार असत्यार्थ है-त्यजनेयोग्य है, सो यहु उपदेश कैसे है? ताका उत्तर— जो, उपदेश दोय प्रकार प्रवर्तै है। तहां एक तौ आगम। तामैं तौ निश्चय द्रव्यार्थिक पर्या- यार्थिक दोऊही नय परमार्थरूप सत्यार्थ कहे हैं। अर प्रयोजन अर निमित्तके वशतैं अन्यद्रव्यगुणप-

र्यायनिका अन्यद्रव्यगुणपर्यायनिविषैं आरोपण करनां, सो उपचार है। याकूं व्यवहार कहिये असत्यार्थभी कहिये गौणभी कहिये। बहुरि दूसरा अध्यात्म उपदेश। तामैं अध्यात्मग्रंथका आशय यह है, जो, आत्मा अपना एक अभेद नित्य शुद्ध असाधारण चैतन्यमात्र शुध्दद्रव्यार्थिकनयका विषयभूत है। सो तौ उपादेय है॥

बहुरि अवशेष भेद पर्याय अनित्य अशुध्द तथा साधारण गुण तथा अन्यद्रव्य ए सर्व पर्यायनयके विषय ते सर्व होय हैं। काहेतैं? जातैं यह आत्मा अनादितैं कर्मबंधपर्यायमैं मग्न है। क्रमरूप ज्ञानतैं पर्यायनिकूंही जाणै है। अनादि अनंत अपना द्रव्यत्वभावका याकै अनुभव नाही। तातैं पर्यायमात्रमैं आपा जानै है। तातैं ताकूं द्रव्यदृष्टि करावनेके अर्थि पर्यायदृष्टीकूं गौणकरि असत्यार्थ कहिकरि एकांतपक्ष छुडावनेके अर्थि झूठा कह्या है। ऐसा तौ नाही, जो, ए पर्याय सर्वथाही झूठे हैं कछु वस्तु नाही आकाशके फूलवत् हैं। जो अध्यात्मशास्त्रका वचनकूं सर्वथा एकांत पकडि पर्यायनिकूं सर्वथा झूठा मानै तौ वेदांती तथा सांख्यमतीकीज्यौं मिथ्यादृष्टि ठहरै है। पहलै तौ पर्यायबुद्धिका एकांत मिथ्यात्व था। अब ताकूं सर्वथा छोडि द्रव्यनयका एकांत मिथ्यादृष्टि होगा, तब गृहीतमिथ्यात्वका सद्भाव आवैगा। बहुरि उपनयके भेदनिविषैं सद्भूत

असद्भूत उपचार कहे हैं। ते कथंचित् असत्यभी मानने। जातैं ऐसा कह्या है, जो, प्रयोजन तथा निमित्तके वशतैं प्रवर्तै अन्यकूं अन्य कहनां तहां उपचार है सो परस्पर द्रव्यनिकै निमित्तनैमित्तिक भाव है। सो तो सत्यार्थ हैही। तातैं संसार मोक्ष आदि तत्त्वनिकी प्रवृत्ति है। जो निमित्त नैमित्तिकभाव झूठा होय तौ संसार मोक्ष आकाशके फूलज्यौं ठहरै। बहुरि तैसैंही जहां पुरुषका प्रयोजन है ताकै अर्थि जो प्रवृत्ति है सोभी कथंचित् सत्यार्थ है। जो प्रयोजन तथा प्रयोजनका विषय पदार्थ सर्वथा असत्यार्थ होय तो आकाशके फूलकीज्यौं झूठा ठहरै। तथा एकेंद्रियादिक जीवकूं व्यवहारकरि जीव कह्या है। सो व्यवहार सर्वथा झूठाही होय तौ जीवहिंसादिकका कहन झूठा ठहरै। परमार्थतैं जीव तौ नित्य है अमर है। एकेंद्रियादिक जीव कहनां झूंठ है झूंठाके घातविषैं काहेकी हिंसा? तथा याका विस्तार कहांताईं कहिऐ? जे व्यवहारकूं सर्वथा असत्यार्थ कहै हैं ते तौ सर्व व्यवहारके लोप करनेवाले तीव्रमिथ्यात्वके उदयतैं गाढे मिथ्यादृष्टि हैं-जिनमततैं प्रतिकूल हैं, तिनिकी संगतिही स्वपरकी घातक है ऐसा जाननां॥

बहुरि नयचक्रमैं नयनिके भेद ऐसै कहे हैं। द्रव्यार्थिकके भेद १०। तहां कर्मोपाधिनिरपेक्ष, जैसैं, संसारी जीव सिद्धसमान हैं। उत्पाद व्यय गौणकरि केवल ध्रौव्यरूप सत्ताकूं ग्रहै, जैसें

सद्रूप नित्यद्रव्य है। भेदनिरपेक्षप जैसें, गुणपर्यायतैं द्रव्य अभिन्न हैं। कर्मोपाधि सापेक्ष जैसें, जीव रागादिस्वरूप है। उत्पादव्ययमुख्यकरि जैसें, सत् है सो उत्पादव्ययध्रौव्यरूप द्रव्य है। भेदसापेक्ष जैसें, द्रव्य है सो गुणपर्यायवान् है। अन्वयद्रव्यार्थिक जैसें, द्रव्य गुणस्वरूप है। स्वद्रव्यादिग्राहक जैसें, अपने द्रव्य क्षेत्र काल भावकरि द्रव्य सद्रूप है। परद्रव्यादिग्राहक जैसें, परद्रव्य क्षेत्र काल भावकरि द्रव्य असद्रूप है। परमभावग्राहक जैसें, जीवद्रव्यकूं शुद्ध अशुद्ध उपचारादिकरि रहित चैतन्यमात्र कहै। ऐसें दश भेद भये ॥

बहुरि पर्यायार्थिकके छह भेद हैं। अनादिनित्यपर्यायग्राही जैसें, चंद्रमा सूर्यादिकके विमान मेरुपर्वतादिक नित्य हैं। सादिनित्यपर्यायार्थिक जैसें, कर्म नाशिकरि सिद्ध भये ते सादिनित्यपर्याय हैं। सत्तागौणकरि उत्पादव्ययरूप पर्यायार्थिक जैसें, पर्याय समयस्थायी हैं। उत्पादव्ययध्रुवरूप सत्ताग्राही पर्यायार्थिक जैसें, समय समय पर्याय उत्पादव्ययध्रौव्यरूप हैं। कर्मोपाधिनिरपेक्ष स्वभाव नित्य शुद्ध पर्यायार्थिक जैसें, संसारी जीवके पर्याय सिध्दके पर्यायसमान शुध्द हैं। कर्मोपाधिसापेक्ष अशुद्ध अनित्य पर्यायार्थिक जैसै, संसारी जीव उपजे विनसै हैं। ऐसें पर्यायार्थिकके छह भेद कहै। ऐसें प्रत्यक्षपरोक्षप्रमाण द्रव्यार्थिकपर्यायार्थिकनयानिकरि तथा निर्देशादिक वा

सत् आदिक अनुयोगानिकरि तत्त्वार्थनिका अधिगम होय है। सो तत्त्वार्थ, नाम स्थापना द्रव्य भाव इनि च्यारि निक्षेपनिकरि स्थापि तिनिका अधिगम करनां। यहू अधिगमज सम्यग्दर्शनकी उत्पत्तिकूं कारण है। निसर्गज सम्यग्दर्शन तौ मति अवधि ज्ञानकरि होय है। बहुरि अधिगमज है सो गुरूपदेशके आधीन है। तातैं श्रुतज्ञानरूप जो प्रमाणनयादिकका ज्ञान सो गुरूके मुख श्रवण कीयेतैं होय है। सो शास्त्रका श्रवण पठन पाठन निरंतर करनां योग्य है। यहही भव्यजीवनिकूं स्वर्गमोक्षका साधन है॥

अब प्रमाणनयनिकरि तत्त्वार्थनिका अधिगम कहिये ज्ञान हो है ताका स्वरूप कहिये हैं। तहां तत्त्वार्थाधिगम दोय प्रकार है, स्वार्थ परार्थ ऐसैं। तहां स्वार्थ तौ ज्ञानस्वरूप है। बहुरि परार्थ वचनात्मक है। सोभी दोय प्रकार है। एक तौ वीतरागीकै होय। ताकूं वीतरागकथा कहिये। दूसरा वादिप्रतिवादी जिनिकै हार जीतकी इच्छा होय तिनिकै होय। ताकूं विजिगीषुकथा कहिये। तहां वीतरागकै तौ गुरुशिष्य होय तथा विशेषज्ञानी दोनूंही होय तिनिकै होय। तहां वीतरागीनिकी चरचाकी हद तौ तत्त्वनिर्णय हो चुकै तबतांई है। बहुरि वादिप्रतिवादीनिकै हारजीति होय चुकै तबताई कहै। तहां इसके च्यारि अंग हैं। वादी प्रतिवादी सभाके लोक सभापति ऐसै। वादि-

प्रतिवादीविना तौ वाद प्रवर्तैंही नाही। सभाके लोकविना साख कौन भरै। सभापतिविना हारे जीते निग्रह अनुग्रह कौन करै। तातैं चार्‍योंही चाहिये ॥

इहां नैयायिक कहै हैं— जो, वाद है सो तत्त्वनिर्णयका कारण है। यातैं तत्त्वनिर्णय दृढ होय है। जगमैं सत्यार्थतत्त्वकी प्रभावना होय तब लोकमैं प्रतिष्ठा होय तातैं यहही वीतरागकथा है। ताकूं कहिये, जो, वीतरागकथाविषैं तौ सभाका तथा सभापतिका नियम नाही। बहुरि विजिगीषुकथाविषैं नियमही है। बहुरि कही जो वादविषैं सर्वलोककै तत्त्वकी दृढता होय है प्रभावना होय है, सो यह तौ सत्य है। परंतु जहां आपकी हार होय तहां स्वमतका विध्वंसभी होय है। सो वाद तौ हारिजीतिहीका कारण है, तातैं वीतरागीनिकै यह संभवै नाही। बहुरि जहां अपनी ऐसी सामर्थ्य होय, जो, मै वादमैं हारूंगा नाही जीतूंहीगा, तौ याकूं सामग्री बहुत चाहिये। प्रथम तौ यथार्थहेतुवाद अहेतुवादकरि आपकै तत्त्वका निर्णय चाहिये। दूसरा तपश्चरणादिकरि अपनी प्रतिष्ठा जगतमैं भई होय ऐसा चाहिये। बहुरि कछू देवता इष्टका अतिशय चमत्कारकी आपकै सिद्धि भई चाहिये। बहुरि राजा आदिकी पक्ष अपनी चाहिये। पक्षविनां आप सांचाभी होय तौ निष्पक्षीकौ पैला पक्ष प्रबलवाला झूठा करि डारै इत्यादि सामग्री होय, अवश्य जीतनेका आपका निश्चय होय

तब वाद जीति मतकी प्रभावना करै तौ उचितही है। विनासामग्री वाद करै अरु हारै तौ स्वमतका विध्वंसही होय। तातैं यह निश्चय जानूं, जो, वाद एकांततैं तौ तत्त्वनिर्णयकूं कारण नांही, हारजीतिही मुख्यता है। वहुरि वीतरागकथा है सोही तत्त्वनिर्णयकूं कारण है ॥

ऐसैं इस प्रथम अध्यायविषैं ज्ञानका वहुरि दर्शनका तौ स्वरूप वर्णन कीया। वहुरि नयनिका लक्षण कह्या। वहुरि ज्ञानका प्रमाणपणां कह्या ॥

दोहा— दर्शनवोध यथार्थता। नयलक्षण वणवाय ॥
ज्ञान पंचकै मानता। कही आदि अध्याय ॥ १ ॥

सवईया तेईसा— जे पढि हैं अधिकार पहै नर ते चढि हैं निजरूप रमंता।
जे कढि हैं मुख यामय वाक्य सु चढि हैं सव ऊपरि संता ॥
जे करि हैं निति पूजन भव्य सुपुण्य लहै परलोक गमंता।
जे परि हैं थुति गाय सुपाय निवोध फुरै तिनिकूं जु अनंता ॥ १ ॥

ऐसैं तत्वारथका है अधिगम जातैं ऐसा जो मोक्षशास्त्र ताविषैं प्रथम अध्याय संपूर्ण भया ॥

॥ नमो वीतरागाय ॥

# ॥ अथ द्वितीयाध्यायका आरंभ कीजिये हैं ॥

दोहा— उदयज उपशम मिश्र तजि, क्षायिक भाव उघारि ॥
जीवभाव उज्जल कियो, नमू ताहि मद छारि ॥ १ ॥

ऐसें मंगलकरि सर्वार्थसिद्धिटीकाकारका वचन लिखिये हैं। तहां शिष्य पूछे है, हे भगवन्! सम्यग्दर्शनका विषय भावकरि कहै जे जीवादितत्त्वनिमैं आदिविषैं कह्या जो जीव, ताका स्वतत्त्व कहिये निज यथार्थ असाधारणस्वरूप कहा है? सो कहिये। ऐसें पूछैतैं आचार्य सूत्र कहै हैं—

॥ औपशमिकक्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्वमौदयिकपारिणामिकौ च ॥ १ ॥

याका अर्थ— औपशमिक क्षायिक मिश्र औदयिक पारिणामिक ए पांच भाव हैं ते जीवके निजतत्त्व है ॥ तहां आत्माविषैं कर्मकी निजशक्तिका कारणके वशतैं अनुद्भूति कहिये उदय न

होना सो उपशम है। जैसें कतकादि कहिये निर्मली आदि वस्तुके संबंधतैं जलविषैं कर्दमका उपशम होय जलकै पींदै बैठी जाय ऊपरितैं जल उज्जल होय जाय, तैसैं उपशम जाननां। बहुरि कर्मकी अत्यंतनिर्वृति होय तत्त्वमैंसूं उठि जाय सो क्षय है। जैसैं उसही जलकों निर्मल पात्रमैं लीजिये तब कर्दमका अत्यंत अभाव है। तैसैं क्षय जाननां। बहुरि उपशमभी क्षयभी दोऊ स्वरूप होय तहां मिश्र है। जैसैं तिसही जलविषैं कतकादि द्रव्य डारे कर्दमका क्षीणाक्षीणवृत्ति कहिये किछु तौ पींदै बैठ्या किछू गलदाई रही किछु बाहरि निकस्या, तैसैं क्षयोपशम जाननां। बहुरि द्रव्य क्षेत्र काल भावके निमित्ततैं कर्मके फलकी प्राप्ति कहिये उदय आवनां प्रकट होनां सो उदय है। बहुरि द्रव्यका आत्मलाभ कहिये निजस्वरूपका पावनां जातैं होय सो परिणाम है। जैसैं सुवर्णके पीततादि गुण, कंकण कुंडल आदि पर्याय, तैसै परिणाम जाननां। इहां कर्म आदिकका निमित्त नाहीं लेना। तहां उपशम है प्रयोजन जाका ताकूं औपशमिक कहिये। यहां प्रयोजनार्थमैं इक प्रत्ययतैं सिद्धि कीया है। ऐसैंही क्षायिक क्षायोपशमिक औदयिक पारिणामिक जाननां। ते पांच भाव असाधारण जीवके स्वतत्त्व कहिये ॥

अब इनिका अनुक्रमका प्रयोजन कहै हैं। इहां सम्यग्दर्शनका प्रकरण है। तहां तीन प्रकार

सम्यग्दर्शनविषैं औपशमिक पहलै होय है। अनादिमिथ्यादृष्टीकै प्रथमही औपशमिक सम्यक्त्व प्राप्ति होय है। तातैं सूत्रविषैं याकूं आदिविषैं कह्या है। ताकै पीछै क्षायिक ग्रहण कीया है। जातैं यहु निर्मलताईमैं याकी स्पर्द्धा बरोबरी करै है, प्रतियोगी है। तथा संसारी जीवनिकी अपेक्षा द्रव्यनिकी गणती कीजिये तब औपशमिकवाले जीवनितैं असंख्यातगुणे क्षायिकवाले जीव हैं। काहेतैं? जातैं औपशमिककाल अंतर्मुहूर्तमात्र है। तामैं भेले होय तब अल्पही होय। यातैं क्षायिकका काल संसारीकी अपेक्षा तेतीस सागर किछू अधिक है। सो यातैं असंख्यातगुणा भया। तातैं तहां जीवनिकी संख्याभी असंख्यातगुणी भई। ताकै पीछै मिश्र कहिये क्षायोपशमिकका ग्रहण है। जातैं इहां दोऊ स्वरूप है। तथा जीवभी इहां असंख्यातगुणे होय हैं। याका काल छ्यासठी सागरका है। बहुरि ताकै पीछै औदयिक पारिणामिकका ग्रहण अंतमैं कीया। जातैं इहांभी जीवनिकी संख्या तिनितैं अनंतगुणी है। इहां कोई कहै है, जो, या सूत्रमैं भावनिकै जुदी जुदी विभक्तिकरि वाक्य कीया सो कौन कारण? द्वंद्वसमासतैं निर्देश करना था। कैसैं? "औपशमिकक्षायिकमिश्रौदयिकपारिणामिकाः" ऐसै। इस भांति कीये दोय चकार न आवते तब सूत्रमैं अक्षर थोरे होते। ताकूं कहिये, ऐसी आशंका न करणी। जातैं इहां मिश्र ऐसा कह्या है सो दोय अन्य गुणकी

अपेक्षा है। तातैं वाक्यविषैं चकार शब्दतैं पहले कहे जो औपशमिक क्षायिक ए दोय; तेही मिश्रमैं ग्रहण करने अन्य न लेणे। बहुरि कहै, जो, क्षायोपशमिक ऐसा शब्द क्यौं न कह्या मिश्र काहेकूं कह्या? तहां कहिये, क्षायोपशमिक कहनेमैं गौरव होय है—अक्षर सूत्रमें वधि जाय। तातैं वाक्यकरि मिश्र ग्रहण कीया है। बहुरि मिश्रका ग्रहण बीचि कीया, ताका यहू प्रयोजन है, जो, पहले पिछले दोनूंकी अपेक्षा लेणी है। औपशमिक क्षायिक तौ भव्यहीकै होय है। बहुरि मिश्र है सो भव्यकैभी होय अभव्यकैभी होय। बहुरि औदयिक पारिणामिक ए दोऊभी भव्य तथा अभव्य दोऊहीकै होय। तातैं मिश्रका बीचि ग्रहण है॥

बहुरि कोई पूछे है, भावशब्दकी अपेक्षा स्वतत्त्व शब्दकै ताके लिंग तथा संख्याका प्रसंग आवै है। जातैं भावशब्द पुरुषलिंगी है। तातैं स्वतत्त्वकैभी पुरुषलिंग चाहिये। तथा भावनिकी संख्या बहुत है, तातैं स्वतत्त्वकै बहुवचन चाहिये। ताकूं कहिये स्वतत्त्वशब्द है सो उपात्तलिंग संख्यारूप है याका लिंग पलटै नाही। तथा तत्त्वशब्द भाववाची है। तातैं भावकै एकही वचन होय है। जातैं तस्य भावस्तत्त्वं ऐसा है, तातैं संख्याभी पलटै नांही तातैं दोष नांही। बहुरि इहां ऐसा विशेष जानना, जो, जीवकै पांच भाव कहे तातैं चैतन्यमात्रही नांही है। सांख्यमती पुरुषका

स्वचैतन्यमात्र माने है। बहुरि बुध्यादिक विशेषगुणकाभी वैशेषिक मतवाला पुरुषकै अभाव माने है। बहुरि वेदांतमती आनंदमात्र ब्रह्मस्वरूप माने है। बौद्धमती चितकूं प्रभाकर मात्र मानै है। सो सर्वथा एकांततैं यहु बणै नांही। पंचभावरूपही जीवका स्वरूप प्रमाणसिद्ध है ऐसा जाननां ॥

आगैं शिष्य पूछै है, तिस आत्माके पंच औपशमिकादिक भाव कहे ते कहा उत्तरभेद-सहित है कि अभेदरूप है? ऐसै पूछै उत्तर कह्या, जो, भेदसहित है। फेरि पूछै, जो, ऐसै है तौ तिनिके भेद कहो। ऐसैं पूछै आचार्य सूत्र कहै हैं—

॥ द्विनवाष्टादशैकविंशातित्रिभेदा यथाक्रमम् ॥ २ ॥

याका अर्थ— पहलै सूत्रमैं पंच भाव कहे। तिनके अनुक्रमतैं दोय नव अठारह इकईस तीन ए भेद हैं॥ तहां दोय आदिक संख्याशब्दनिका द्वंद्वसमासकरि अरु भेदशब्दकै स्वपदार्थवृत्ति तथा अन्यपदार्थवृत्ति जाननी। कैसै सोही कहिये है। दोय बहुरि नव बहुरि अठारह बहुरि इकईस बहुरि तीन ऐसै तौ द्वंद्ववृत्ति भई। बहुरि तेही भेद ऐसै स्वपदार्थवृत्ति भई। ए कहे तेही भेद हैं। ऐसैं भेदशब्द संख्याहीका संबंधी भया। तब ऐसै संबंध होय पांचौं भावनिका बहुवचन षष्ठीविभक्ति करि कहनां, जो, ये भेद पांच भावानिके हैं। बहुरि ते हैं भेद जिनके इहां अन्यपदार्थवृत्ति भई।

जातैं ये भेद पूर्वोक्त भावनिके हैं। तहां विभक्ति भावनिके सूत्रमें कही सोही रही। बहुरि यहां यथाक्रम ऐसा वचन है सो यथासंख्यके जानने अर्थि है। बहुरि भेदका न्यारा न्यारा संबंध करणा। तातें औपशमिक दोय भेदरूप है। क्षायिक नव भेदरूप है। मिश्र अठारह भेदरूप है। औदयिक इकईस भेदरूप है। पारिणामिक तीन भेदरूप है। ऐसें जानिये है ॥

आगें शिष्य पूछै है, जो, ऐसें है तो औपशमिकके दोय भेद कौनसे हैं? ऐसें पूछै सूत्र कहे हैं–

॥ सम्यक्त्वचारित्रे ॥ ३ ॥

याका अर्थ— औपशमिकभावके भेद औपशमिकसम्यक्त्व औपशमिकचारित्र ए दोय हैं ॥ सम्यक्त्वचारित्र तौ पूर्वें जिनका लक्षण कह्या तेही जानने। बहुरि पूछै है, तिनिके औपशमिकपणा कैसै है? तहां कहिये है, चारित्रमोह दोय प्रकार है। एक कषायवेदनीय एक नोकषायवेदनीय। तहां कषायवेदनीयका भेदनिमैंसूं अनंतानुबंधी क्रोध मान माया लोभ ए च्यारि लेने। बहुरि दर्शनमोहके तीन भेद हैं मिथ्यात्व सम्यक्त्वप्रकृति सम्यङ्मिथ्यात्व ऐसै। इनि सात प्रकृतिनिका उपशमतैं औपशमिकसम्यत्व होय है। इहां कोई पूछै है, अनादिमिथ्यादृष्टि भव्यकै कर्मका उदयकरि कलुषपणां है, ताकै उपशम काहेतैं होय? ताका समाधान– काललब्धि आदिके

निमित्ततैं होय है। तहां प्रथम तौ कर्मसहित आत्मा भव्यजीवकै संसार अर्द्धपुद्गलपरिवर्तन नामा कालमात्र अवशेष रहै, तब प्रथमोपशमसम्यक्त्वके ग्रहण करनेयोग्य होय है। जो संसार अधिका बाकी होय तौ सम्यक्त्वग्रहण न होय। ऐसैं एक तौ काललब्धि यहु है। बहुरि दूसरी काललब्धि यहु है, जो, कर्मकी स्थिति उत्कृष्ट जाकै बंधती न होय तथा सत्ताका कर्मकी होय तथा जघन्यस्थितिबंधकी तथा सत्ताकी होय तौ तिस अवसरमैं सम्यक्त्वका लाभ न होय। तौ कहां होय? जब अंतःकोटाकोटी कहिये एक कोडाकोडी सागरमैं नीचै स्थिति लीये कर्मबंध भावकूं प्राप्त होय, तथा विशुध्दपरिणामके वशतैं सत्ताका कर्मबंधकी स्थितितैं संख्यात हजार सागर घाटि रह जाय, तब प्रथमसमम्यत्वग्रहणयोग्य होय॥ बहुरि तीसरी काललब्धि भवकी अपेक्षा है। जो भव्यजीव पंचेंद्रिय होय संज्ञी होय पर्याप्त अवस्थासहित होय सर्वतैं विशुध्दपरिणाम होय सो प्रथमोपशमसम्यक्त्वकूं उपजावै है। बहुरि आदिशब्दकरि जातिस्मरण आदिक लेणे। बहुरि समस्त मोहनीयकर्मके उपशमतैं उपशमचारित्र होय है। तहां सूत्रमैं सम्यक्त्वका आदि वचन है सो चारित्र सम्यक्त्वपूर्वकही होय है। आत्मा पहली सम्यक्त्व अवस्थारूप होय है। अब आत्माके चारित्र अवस्था प्रकट हो है॥

इहां सम्यक्त्वकी उत्पत्तिका विशेष लिखिये हैं। तहां प्रथमोपशमसम्यक्त्व उपजे पीछे अंतमुहूर्तकाल रहै है। तहां मिथ्यात्वकर्मकूं तीन प्रकार विभाग करै मिथ्यात्व सम्याग्मिथ्यात्व समक्प्रकृतिमिथ्यात्व ऐसै। बहुरि यह कहां उपजे है? तहां नारकी तौ तहां उपजे पीछे अंतर्मुहूर्त पीछे उपजावै है। पहली दूसरी तीसरी पृथ्वीवाला तौ केई तौ जातिस्मरणतैं केई धर्मश्रवणतैं केई वेदनाकरि पीड्या हूवा उपजावै है। बहुरि नीचली च्यार पृथ्वीवाला धर्मश्रवणविना दोयही कारणतैं उपजावै है। बहुरि तिर्यंच उपजे पीछे च्यारितैं ले आठ दिनके उपरि उपजावै है। तहां जातिस्मरण धर्मश्रवण जिनबिंबदर्शन ए तीन कारण हैं। बहुरि मनुष्य नवमां वर्षतैं उपजावै है। आठवर्षतांई नांही उपजै है। तहांभी जातिस्मरण धर्मश्रवण जिनबिंबदर्शन ए तीन कारण हैं। बहुरि देवगतिविषैं उपजे पीछे अंतर्मुहूर्त पीछे उपजावै है। तहां भवनवासीनितैं ले सहस्रारस्वर्गतांईका तौ जातिस्मरण धर्मश्रवण जिनमहिमाका दर्शन देवनिकी ऋद्धिका देखना इनि च्यारि कारणतैं उपजावै है। बहुरि आनतादि च्यारि स्वर्गनिके देवनिकै ऋद्धिदर्शनविना तीन कारणतैं। बहुरि नव ग्रैवेयकका जातिस्मरण धर्मश्रवण ए दोयही कारणतैं उपजावै है ऐसैं जाननां ॥

आगैं, जो क्षायिकभाव नवप्रकार कह्या ताके भेदस्वरूपके प्रतिपादनके अर्थि सूत्र कहै हैं—

॥ ज्ञानदर्शनदानलाभभोगोपभोगवीर्याणि च ॥ ४ ॥

याका अर्थ— केवलज्ञान केवलदर्शन क्षायिकदान लाभ भोग उपभोग वीर्य बहुरि चकारतैं क्षायिकसम्यक्त्व क्षायिकचारित्र ऐसै नव प्रकार क्षायिकभाव है। इहां चशब्द है सो सम्यक्त्वचारित्र पूर्वसूत्रमैं कहे तिनिका ग्रहणकै अर्थि है। बहुरि ज्ञानावरण नामा कर्मके अत्यंतक्षयतैं तौ केवलज्ञान क्षायिक हो है। बहुरि तैसैंही दर्शनावरण नामा कर्मके अत्यंतक्षयतैं केवलदर्शन क्षायिक हो है। बहुरि दानांतराय नामा कर्मके अत्यंत क्षयतैं अनंतप्राणीनिके उपकार करनेवाला क्षायिक अभयदान होय है। बहुरि लाभांतराय नामा कर्मके अत्यंत अभावतैं नाही है कवलाहारकी क्रिया जिनिकै ऐसे जे केवली भगवान् 'जिनिके शरीरके बलाधानके कारण अन्यमनुष्यनिके ऐसैं नाही' परमसुन्दर सूक्ष्म समय समय प्रति अनंते पुद्गलके परमाणू संबंधकूं प्राप्त होय है, नोकर्मका समय प्रबद्ध ऐसा आवै है सो क्षायिकलाभ है। बहुरि भोगांतराय नामा कर्मके समस्तके अभावतैं अतिशयवान् पुष्पवृष्टि आदिक अनेकविशेष लिये अनंते क्षायिक भोग हैं। बहुरि उपभोगांतरायनामा कर्मके निरवशेष प्रलय होनेतैं सिंहासन चामर छत्रत्रयादिक विभूति प्रगट भये, ते क्षायिक अनंत उपभोग हैं। बहुरि वीर्यांतराय कर्मके अत्यंत क्षयतैं क्षायिक अनंतवीर्य प्रगट भया है। बहुरि पूर्व

कहि जे मोहकी सात प्रकृति तिनिका अत्यंत नाश होनेतैं क्षायिकसम्यक्त्व हो है। बहुरि चारित्र-मोहके अत्यंत अभावतैं क्षायिकचारित्र प्रकट हो है। ऐसैं क्षायिकके नव भाव हैं। इहां प्रश्न, जो, क्षायिकका दानादिक भावकरि कीया अभयदानादिक है, तौ सिद्धनिकैभी अभयदानादिकका प्रसंग आवै है। ताका उत्तर आचार्य कहै है, यह दोष इहां नाही आवै है। अरहंतनिकै शरीर-नामा नामकर्म तथा तीर्थंकरनामा नामकर्मका उदय पाइये है ताकी अपेक्षातैं कहै है। बहुरि तिनि कर्मनिका अभावतैं सिद्धनिकै इनिका प्रसंग नाही है। फेरी पूछै, जो, ऐसैं है तौ सिद्धनिकै इनि भावनिकी कैसैं प्रवृत्ति है? ताका उत्तर— परम उत्कृष्ट अनंतवीर्य अव्याबाधस्वरूपकरिही तिनिकी तहां प्रवृत्ति है। जैसैं केवलज्ञानरूपकरि अनंतवीर्यकी प्रवृत्ति हो है, तैसैं यहुभी जाननां ॥

आगैं, जो क्षायोपशमिक भाव अठारा भेदरूप कह्या ताका भेदनिका निरूपणकै अर्थि सूत्र कहै हैं ॥

॥ ज्ञानाज्ञानदर्शनलब्धयश्चतुस्त्रित्रिपञ्चभेदाः सम्यक्त्वचारित्रसंयमासंयमाश्च ॥ ५ ॥

याका अर्थ— ज्ञान चारी भेद, अज्ञान तीन भेद, दर्शन तीन भेद, अंतरायका क्षयोपशमरूप लब्धि पांच भेद, ऐसैं पंधरा तौ ये, बहुरि क्षायोपशमिकसम्यक्त्व क्षायोपशमिकचारित्र संयमासंयम ऐसे तीन ये सब मिलि अठारह क्षायोपशमिकभाव हैं ॥ च्यारि बहुरि तीन बहुरि तीन बहुरि पंच

ऐसै द्वंद्ववृत्तिकरि बहुरि ए हैं भेद जिनिके ऐसैं भेदशब्दतैं वृत्ति करनी। यथाक्रमकी पूर्वसूत्रतैं अनुवृत्ति लेणी। च्यारि आदि संख्या ज्ञानादिककै लगावणी। ऐसै च्यारि ज्ञान मति श्रुत अवधि मनःपर्यय। तीन अज्ञान कुमति कुश्रुत विभंग। तीन दर्शन चक्षु अचक्षु अवधि। पांच लब्धि दान लाभ भोग उपभोग वीर्य। ऐसै पंधरे भये। तहां सर्वघातिस्पर्द्धकनिका तौ उदयक्षयतैं बहुरि तिनिहीका सत्तारूप उपशमतैं बहुरि देशघातिस्पर्द्धक उदय होतैं क्षायोपशमिक भाव होय है। तहां ज्ञानादिककी प्रवृत्ति अपने आवरण तथा अंतरायके क्षयोपशमतैं होय है। बहुरि सम्यक्त्व इहां वेदकसम्यक्त्व लेणा। यहु अनंतानुबंधी कषायका चतुष्कका तथा मिथ्यात्व सम्यग्मिथ्यात्व इनि दोऊनिका उदयक्षयतैं तथा सत्तारूप उपशमतैं बहुरि सम्यक्त्वप्रकृतिके देशघातिस्पर्द्धकका उदय होतैं जो तत्त्वार्थश्रद्धान हो है सो क्षायोपशमिकसम्यक्त्व है। बहुरि अनंतानुबंधी अप्रत्याख्यान प्रत्याख्यान इनि बारह कषायनिका उदयक्षयतैं बहुरि सत्तारूप उपशमतैं बहुरि संज्वलनकषायके चतुष्कमैं किसी एक कषायके देशघातिकस्पर्द्धकनिका उदय होतैं बहुरि हास्यादि नोकषायका यथासंभव उदय होतैं जो त्यागरूप आत्माका परिणाम होय सो क्षायोपशमिकचारित्र है। बहुरि अनंतानुबंधी अप्रत्याख्यान कषायका अष्टकका उदयक्षयतैं बहुरि सत्तारूप उपशमतैं बहुरि प्रत्याख्यानकषायका उदय होतैं बहुरि संज्वलन

कषायके देशघातिस्पर्द्धकनिका उदय होतैं बहुरि नोकषाके नवकका यथासंभव उदय होतैं आत्माकै विरताविरत परिणाम हो है सो क्षायोपशमिक संयमासंयम है। याकूं देशविरतिभी कहिये ॥

इहां कोई पूछे, स्पर्द्धक कहां ? ताका समाधान— जो, कर्मके परमाणूंनिविषैं फल देनेकी शक्तिरूप रस है तिनिके अविभागप्रतिच्छेदका समूहकी पंक्ति क्रमरूप वृद्धि तथा हानि ते स्पर्द्धक कहिये हैं। तहां उदयमैं आया जो कर्मपरमाणूनिका एकसमयविषैं एकसमयप्रबद्ध, तामैं सिद्ध राशिके अनंतवै भाग अभव्यराशितैं अनंतगुणे परमाणू होय हैं, तिनिविषैं सर्व जघन्यगुण जामैं होय ऐसा एक परमाणू लेणा। ताका अनुभागकूं बुद्धिकरि छेदनतैं जहां ऐसा छेद होय ताका फेरि दुसरा छेद न होय ऐसैं अविभागपरिच्छेद सर्वजीवनितैं अनंतगुणां है, ताकी एक राशि कीजिये ताका नाम वर्ग है। बहुरि समान अविभागपरिच्छेदके समूहरूप परमाणूनिके समूहका नाम वर्गणा है। तहां थोरेसूं थोरे अविभागपरिच्छेदके परमाणूनिका नाम जघन्यवर्ग है। तिनके समान परमाणूरूप वर्गके समूहका नाम जघन्यवर्गणा है। बहुरी जघन्यवर्गतैं एक अविभागपरिच्छेद वधता तामैं पाईये ऐसी परमाणूनिके समूहका नाम द्वितीयवर्गणा है। ऐसैं जहांतांई एक एक अविभागप्रतिच्छेदनिका क्रम लीये जेती वर्गणा होय तितनी वर्गणांनिके समूहका नाम जघन्यस्पर्द्धक है।

बहुरि यातैं ऊपरि जघन्यवर्गणाके वर्गनिविषैं जे अविभागप्रतिच्छेद थे तिनितैं दूणे जिस वर्गणाके वर्गविषैं अविभागप्रतिच्छेद होय तहांतैं द्वितीयस्पर्द्धकका प्रारंभ होय तहांभी एक एक अविभागप्रतिच्छेद वधनेका क्रमरूप वर्गनिका समूहरूप जेती वर्गणा होय तिनिके समूहका नाम द्वितीय स्पर्द्धक है। बहुरि ऐसैंही प्रथमस्पर्द्धककी प्रथमवर्गणाके वर्गनिविषैं जेते अविभागप्रतिच्छेद थे तिसतैं तिगुणे जिस वर्गणाके वर्गनिविषैं अविभागप्रतिच्छेद पाईये तहांतैं तीसरे स्पर्द्धकका प्रारंभ होय, ऐसैंही वर्गणाके समूहका नाम स्पर्द्धक है। सो ऐसै स्पर्द्धक अभव्यराशितैं अनंतगुणा अरु सिद्धराशिकै अनंतवै भाग एक उदयस्थानविषैं हो है ऐसैं जाननां ॥

आगै जो इकईस भेदरूप औदयिक भाव कह्या ताके भेदनिके नाम कहनेके अर्थि सूत्र कहै हैं—

॥ गतिकषायलिंगमिथ्यादर्शनाज्ञानासंयतासिध्दलेश्याश्चतुश्चतुस्त्र्येकैकैकैकषड्भेदाः ॥६

याका अर्थ— गति च्यारि भेद, कषाय च्यारि भेद, लिंग कहिये वेद तीन भेद, मिथ्यादर्शन एक, अज्ञान एक, असंयम एक, आसिद्ध एक, लेश्या छह, ऐसै इकईस भेदरूप औदयिक भाव है ॥ तहां यथाक्रम ऐसी तौ पूर्वसूत्रतैं अनुवृत्ति लेणी। तिसके संबंधतैं गति तौ च्यारि भेद, नरकगति, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, देवगति। तहां अपने अपने नामकर्मकी प्रकृतिके उदयतैं होय

है तातैं औदयिक है। बहुरि कषाय च्यारि भेद क्रोध, मान, माया, लोभ। तेभी अपनी अपनी मोहनीयप्रकृतिके उदयतैं होय हैं तातैं औदयिक हैं। लिंग तीन भेद स्त्रीवेद, पुंवेद, नपुंसकवेद। तेभी अपनी अपनी प्रकृतिकै उदयतैं होय हैं तातैं औदयिक हैं। मिथ्यादर्शन मिथ्यात्वनाम मोहनीयकी प्रकृतिके उदयतैं होय है। याकरि परिणाम तत्त्वार्थका अश्रध्दानरूप है। बहुरि ज्ञानावरण नामा कर्मके उदयतैं पदार्थनिका ज्ञान न होय सो अज्ञान। बहुरि चारित्रमोहके सर्वघातिकस्पर्द्धकनिके उदयतैं असंयम होय सो औदयिक असंयत है। बहुरि सामान्यकर्मनिके उदयकी अपेक्षारूप असिध्दपणां औदयिक है। बहुरि लेश्या द्रव्यभावरूप दोय है। सो इहां जीवके भावका अधिकार है तातैं द्रव्यलेश्या न लेणी। भावलेश्या लेणी। सो कषायनिके उदयकरि रंजित जो योगनिकी प्रवृत्ति सो लेश्या है। सो छह प्रकार है। कृष्ण, नील, कापोत, पीत, पद्म, शुक्ल ऐसैं। इहां प्रश्न– जो, उपशांतकषाय क्षीणकषाय सयोगकेवली इनिविषैं शुक्ललेश्या आगममैं कही है। तहां कषायका उदयका तौ अभाव है। औदयिकपणा नाही बनेगा। ताका उत्तर आचार्य कहै हैं– जो, यहु दोष इहां नाही है। इहां पूर्वभाव जनावनेकी नयकी अपेक्षा है। जो योगनिकी प्रवृत्ति कषायनिकरि अनुरंजित पहलै थी, सोही उपचारतैं इहां जाननी। तातैं औदयिकही कहिये। बहुरि योगके अभावतैं

अयोगकेवली लेश्यारहित है ऐसा निश्चय कीजिये है। इहां कोई पूछै अन्यप्रकृतिनिके उदयतैं भये भाव औदयिकभावनिमैं क्यों न कहे? ताका समाधान- जो, इनिही भावनिमैं गर्भित जानने। शरीरादिक पुद्गलविपाकीनिका तौ इहां जीवभाव कहनेतैं अधिकारही नाही। बहुरि जाति आदि जीवविपाकीगतिमैं गर्भित जानने। बहुरि दर्शनावरणीयका उदय मिथ्यादर्शन कहनेतैं गर्भित कीया है। जातैं अतत्त्वार्थश्रध्दानकाभी नाम मिथ्यादर्शन है। बहुरि अन्यथा देखनेकाभी नाम मिथ्यादर्शन है। बहुरि हास्यादिक वेदनिके सहचारी हैं। तातैं वेदनिमैं गर्भित भये। बहुरि वेदनीय आयु गोत्रका उदयभी अघातिया है सो गतिमैं गर्भित जानने॥

आगै, पारिणामिक भाव तीन भेदरूप कह्या ताके भेदनिके प्रतिपादनके अर्थि सूत्र कहै हैं—

॥ जीवभव्याभव्यत्वानि च ॥ ७ ॥

याका अर्थ—जीवत्व, भव्यत्व अभव्यत्व ए तीन पारिणामिक भावके भेद हैं॥ ए तीन भाव पारिणामिक अन्यद्रव्यनितैं असाधारण आत्माके जानने। जातैं कर्मका उदय, उपशम, क्षय, क्षयोपशमकी अपेक्षा इनिमैं नांही है। द्रव्यके परिणामकीही अपेक्षारूप है। तहां जीवत्व तौ चैतन्यकूं कहिये। बहुरि सम्यग्दर्शनादि भावकरि परिणमैगा ताकूं भव्य कहिये। बहुरि सम्यग्दर्शनादिक

जाकै न होयगे सो अभव्य कहिये। ए तीन भाव जीवकै पारिणामिक हैं। इहां प्रश्न– जो अस्तित्व, नित्यत्व, प्रदेशवत्त्व इत्यादिकभाव हैं तेभी पारिणामिक हैं, तिनिकाभी इस सूत्रमैं ग्रहण चाहिये। ताका उत्तर– जो, इनिका ग्रहण न चाहिये। अथवा चशब्दकरि कीयाभी है। फेरि पूछै है, जो, ग्रहण कीया है तौ तीनकी संख्या विरोधी जाय है। तहां कहिये, जो, ए असाधारण जीवके भाव पारिणामिक तीनही हैं। बहुरि अस्तित्व आदि हैं ते जीवकैभी हैं अजीवकैभी हैं तातैं साधारण हैं। यातैं चशब्दकरि न्यारे ग्रहण कीजिये। इहां तर्क– औपशमिकादिभाव जीवकै नाही बणै हैं। जातैं आत्मा अमूर्तिक है। तातैं ते भाव कर्मबंधकी अपेक्षारूप हैं। अमूर्तिककै कर्मबंध युक्त नाही। तहां उत्तर– जो, आत्मा अमूर्तिकही है ऐसा एकांत नाही है। इहां अनेकांत है। आत्मा कर्मबंधपर्यायकी अपेक्षा तिस कर्मके बंधनतैं कथंचित् मूर्तिक है। शुद्धस्वरूपकी अपेक्षा कथंचित् अमूर्तिक है। तहां फेरि तर्क करै है; जो, ऐसैं है तौ कर्मबंधका बंधनतैं आत्माका एकत्वपणां ठहऱ्या, तब अभेद ठहऱ्या, तब भेद कैसै बणैगा? ताकूं कहिये; यहु दोष नाही आवै है। जातैं बंधपर्यायकी अपेक्षा एकत्वपणाकूं होतैंभी लक्षणभेदतैं या आत्माकै अर कर्मकै नानापणा अनेकपणां है ऐसा निश्चय कीजिये। सोही इहां सिध्दांतकी गाथा है ताका अर्थ– बंधप्रति तौ

जीवकै अर कर्मकै एकत्वपणा है बहुरि लक्षणभेदतैं नानापणा है। तातैं जीवकै अमूर्तिकभाव है, सो अनेकांततैं सधै है ॥ ऐसैं जीवके पंचभाव कहनेतैं सांख्यमती आदिक आत्माकूं शुद्धही एकांत करि मानै हैं, तिनिका निराकरण भया। जातैं सर्वथा शुद्धही होय, तौ संसार बंध मोक्ष तथा मोक्षका उपाय आदिकी कथनी सर्व मिथ्या ठहरै। बहुरि पंचभावरूप आत्मा कहनेतैं स्याद्वादनयकरि बंधमोक्षादि सर्वही कथंचित्प्रकार सिद्ध होय है। ऐसैं सात सूत्रनिकरि जीवके पंचभावनिका वर्णन कीया ॥

आगै, जो बंधप्रति एकत्व है सो लक्षणभेदतैं बंध अरु आत्मा जुदे जाने जाय हैं। सो जीवका कहा लक्षण है? जातैं जुदा जानिये सो कहो ऐसैं पूछै सूत्र कहै हैं—

॥ उपयोगो लक्षणम् ॥ ८ ॥

याका अर्थ— उपयोग है सो जीवका लक्षण है ॥ उभयनिमित्त कहिये बाह्य अभ्यंतरकारणनिके वशतैं उपज्या जो चैतन्यकै अनुविधायी कहिये जुड्या हुवा चैतन्यहीका परिणाम सो उपयोग है। तिसकरि आत्माकै बंधप्रति एकपणाकूं होतैंभी आत्मा जुदा लखिये है। जैसैं सोना रूपाका एकपिंड होतैंभी पीत श्वेतवर्ण आदिकरि भेद जान्या जाय है तैसैं भेद जानिये है ॥

इहां तत्त्वार्थवार्तिक टीकाके अनुसार कछु लिखिये है। तहां बाह्य अभ्यंतर दोय कारण कहे तहां

बाह्यकेभी दोय भेद कहै एक आत्मभूत एक अनात्मभूत । तहां आत्मभूत तौ शरीरके संबंधरूप इंद्रियनकूं कहे । बहुरि दीपक प्रकाशादिक अनात्मभूत कहे । बहुरि अभ्यंतर कारणभी आत्मभूत अनात्मभूतकरि दोय भेद कहे । तहां द्रव्यमन वचन कायके योग पुद्गलरूप हैं तिनिकूं अनात्मभूत कह्या । बहुरि आत्माके चैतन्यभावतैं तन्मय जे प्रदेश तिनिमैं वीर्यांतराय ज्ञानदर्शन आवरणके क्षयोपशम तथा क्षयके अनुसार उज्जलता होय ऐसा भावयोग ताकूं आत्मभूत कह्या । तहां इनिका यथासंभव सन्निधान होतैं आत्माका चैतन्यस्वभाव है । सो अनुविधान कहिये अन्वय परिणामरूप प्रवर्तै वा परिणामकूं उपयोग कहिये । इहां कोई कहै– चैतन्यके परिणाम सुख दुःख मोहरूपभी हैं ते परिणामभी ग्रहण चाहिये । अगले सूत्रमैं उपयोगके भेद ज्ञानदर्शनही कहे, सो पूर्वापरविरोध आवै है । ताका समाधान– इहां चैतन्यसामान्यका ग्रहणतैं सर्वहीका ग्रहण होय है । परंतु अगिले सूत्रमैं भेद कीये जो दर्शनज्ञान तेही इहां ग्रहण करने । जातैं सामान्यका जो विशेष सर्वही अवस्थामैं व्यापक होय सोही लक्षणप्रकरणमैं लेणा, तातैं विरोध नांही । अब इहां पूछे है, जो, लक्षण कहा? तहां कहिये हैं, जहां बहुत वस्तु मिली होय, तिनिमैं जिस चिन्हकरि वस्तुकी जुदायगी जाणी जाय तिस चिन्हकूं लक्षण कहिये । सो यहु आत्मभूत अनात्मभूत भेद-

करि दोय प्रकार है। जैसें अग्निकै उष्णपणां सो तौ आत्मभूत है। दंडी पुरुषकै दंड सो अनात्मभूत है। सो इहां आत्माका उपयोग लक्षण आत्मभूत जाननां ॥

इहां कोई कहै, जो, उपयोग तौ असाधारणधर्म है, तातैं लक्षण नांही, गुणकै अरु गुणीकै अन्यपणां है। जातैं लक्ष्यलक्षणकै भेद है। ताकूं कहिये, सर्वथा भेद होतैं अनवस्था हो है। तातैं कथंचिद्भेदाभेदात्मक होतैं लक्ष्यलक्षणभावकी सिध्दि है। जाके मतमैं आत्मा एकांतकरि नित्य अभेद ज्ञानस्वरूप है, ताके मतमैं ज्ञानके परिणाम जे अनेक ज्ञेयाकार होनां ऐसा उपयोग नांही सिद्ध हो है तहां सर्वव्यवहारका लोप हो है। तातैं चैतन्यके परिणामकूं उपयोग मानै सर्व सिद्धि है। सोही उपयोग लक्षण है आत्मा लक्ष्य है। इहां कोई कहै, आत्मा लक्ष्यही नांही तब लक्षण काहेका? विनालक्ष्य लक्षण कहना सुसाके सींगवत् मींडककै चोटीवत् वांझके पुत्रवत् आकाशके फूलवत् अभावरूप है॥ बहुरि जो आत्माभी मानिये, तौ ज्ञानदर्शन तौ अनवस्थित है। सो लक्षण बणै नांही। अनवस्थितकूंभी लक्षण मानिये तौ जब लक्षणका अभाव होय तब लक्ष्यकाभी अभावही आवै है। ताकूं कहिये, आत्माका अभाव कहनां युक्त नांही। जातैं जो आत्माका अभाव कारणपणाके अभावतैं मानिये तौ आत्माके नारकादि पर्याय तौ मिथ्यादर्शनादिक

कारणतैं होयही है। बहुरि नारकादिपर्याय हैं ते द्रव्यविना निराश्रय होय नांही। तातैं इनिका आश्रय आत्मा द्रव्य हैही। तब कारणपणाका अभाव कैसैं? बहुरि सत् है सो विनाकारणभी कहिये। सतही भया तब कारण काहेकूं चाहिये? बहुरि मंडिकके चोटीका अभावका दृष्टांत है सो मींडक आदि तथा चोटी आदिका सत्त्व मानिकरि मींडक आदिकै संबंधका अभाव मानिये है। तहां सत्त्व असत्त्व दोऊ पक्षका ग्रहण है। तातैं यहु दृष्टांतभी मिलै नांही। जातैं यहु जीव कर्मके वशतैं अनेक जातिके संबंधकूं पावै है। जब मींडक भया तब तौ चोटीका संबंध न भया। बहुरि जब स्त्रीपर्याय पाई तब चोटी पाई। तब मींडकभी वैही जीव था। स्त्रीपर्यायमैं आया तब पूर्वपर्यायकी अपेक्षा स्त्रीकूं मंडुक कहि याकै चोटी कहिये तौ दोष नांही। तैसैंही आकाशके फूलके दृष्टांतकैभी वणै है। जातैं कर्मके उदयतैं जीव वृक्ष भया। तब जीवपुद्गलके समुदायकूं फूल ऐसा नाम कहिये। ऐसैं पुद्गलद्रव्यतैं फूल व्याप्त है तैसैंही आकाशतैंभी व्याप्त कहिये ॥

इहां कहै, जो, वृक्षरूप पुद्गलकृत उपकारकरि वृक्षका फूल कहिये है तहां कहिये आकाशका कीया अवगाहना उपकारकी अपेक्षा आकाशका फूल कहिये तौ कहा दोष? वृक्षतैं तौ छूटैभी है। आकाशमैं तौ सदा रहै तातैं नित्यसंबंध है। बहुरि कहै, फूल आकाशतैं जुदा वस्तु है, तातैं

आकाशका न कहिये। तौ ऐसैं तौ वृक्षतैंभी जुदा पदार्थ है, तातैं वृक्षकाभी न कहिये इत्यादि युक्तितैं दृष्टांतभी बणता नाही। तातैं कारणके अभावतैं आत्माका अभाव मानिये तौ यह तौ बणै नाही। बहुरि अनवस्थित उपयोगकै लक्षणपणाका अभाव कहै, सो चैतन्यका परिणाम ज्ञेयाकार परिणमैही है। सामान्य उपयोग तौ नित्यही रहै है। याहीतैं भेदाभेदात्मक वस्तुका स्वरूप निर्बाध सिध्द है। बहुरि कहै, जो, आत्मा प्रत्यक्ष नाही, तातैं अभाव मानिये। तहां कहिये, शुद्ध आत्मा तौ सकलप्रत्यक्ष केवलज्ञानगोचर है। बहुरि कर्मनोकर्मबंधसहित आत्मा अवधि मनःपर्यय ज्ञानकैभी गम्य है। बहुरि कहै, इंद्रियप्रत्यक्ष नाही, तातैं अप्रत्यक्ष है। तौ इंद्रियज्ञान तौ परोक्ष है। बहुरि मानसप्रत्यक्षगम्य कहिये है, सो यहभी व्यवहारनयतैं सिद्ध हो है। परमार्थतैं तौ मानसप्रत्यक्ष परोक्षही है। ऐसैंही अन्यवादीनिकरि कल्पित आत्माका अभाव साधनेके हेतु ते बाधासहित जानने जातैं आत्मा प्रतीतिसिद्ध है। बहुरि याका लक्षण उपयोग है सो प्रतीतिसिद्ध है। याकी विशेष चरचा श्लोकवार्तिक तत्त्वार्थवार्तिकतैं जाननी ॥

इहां कोई पूछै, पूर्वैं जीवका स्वतत्त्व भाव कह्या बहुरि लक्षण कह्या, सो स्वतत्त्व अरु लक्षणमैं कहा विशेष है? ताका समाधान, जो, स्वतत्त्व तौ लक्ष्य आत्माही है। बहुरि लक्षण है सो लक्षणही

है। सो लक्षण है सो लक्ष्य नाही है। जातैं लक्ष्यलक्षणविषैं कथंचित् भेदाभेदकी सिध्दि पूर्वै कही है। तहां क्षायिक तथा क्षायोपशमिक भावविषैं ज्ञानदर्शन भेदरूप कहे हैं। तिनि दोऊनिमैं सामान्यव्यापी उपयोगकूं इहां लक्षण कह्या है। चैतन्यशक्तिकी लब्धि है सो तौ नित्य है। ताकी व्यक्ति पंचभावरूप अनेक हैं। तिनिमैं उपयोगभी है सो छद्मस्थकै अनित्य है। ताकी स्थिति एक ज्ञेयकेविषैं रहना उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्तमात्र कह्या है। बहुरि अनुभवगोचर है, तातैं प्रसिद्ध है। लक्षण प्रसिद्धहीकूं कहिये है। आत्मा लक्ष्य है सो शक्तिव्यक्तिमय है अरु लक्षण व्यक्तिही है। तातैं आत्माकी सिद्धि वादिप्रतिवादिप्रसिद्ध उपयोगहीतैं होय है। तातैं उपयोगकूं लक्षण कह्या है॥

आगैं, कह्या जो उपयोग, ताके भेद दिखावनेके अर्थ सूत्र कहै हैं—

॥ स द्विविधोऽष्टचतुर्भेदः ॥ ९ ॥

याका अर्थ— पूर्वसूत्रमैं उपयोग कह्या, सो ज्ञानदर्शन भेदकरि दोय प्रकार है। तहां आठ भेदरूप ज्ञान है। च्यारि भेदरूप दर्शन है॥ उपयोग दोय प्रकार है ज्ञानोपयोग दर्शनोपयोग ऐसैं। तहां ज्ञानोपयोग आठ भेदरूप है मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्ययज्ञान, केवलज्ञान, मत्यज्ञान, श्रुताज्ञान, विभंगज्ञान ऐसैं आठ भेद। बहुरि दर्शनोपयोग च्यारि प्रकार है चक्षुर्दर्शन,

अचक्षुर्दर्शन, अवधिदर्शन, केवलदर्शन ऐसैं च्यारि भेद ॥ इहां पूछे, जो, दर्शनज्ञानविषैं भेद कहा? तहां कहै हैं, साकार अनाकारके भेदतैं भेद है। साकार तौ ज्ञान है, जातैं ज्ञेयके आकार होहै। अनाकार दर्शन है, जातैं सत्तामात्र आकारकरि रहित ग्रहण करै है। सो ए दोऊ छद्मस्थ जीवकै तो अनुक्रमतैं वर्तै हैं। पहलै दर्शन हो है, पीछै ज्ञान हो है। बहुरि निरावण जे केवली तिनिकै दोऊ युगपत् एककाल प्रवर्तै है। इहां सूत्रविषैं दर्शनतैं पहली ज्ञान कह्या है सो ज्ञान पूज्य प्रधान है। तथा इहां सम्यग्ज्ञानका प्रकरण है तातैं कह्या है। बहुरि पूर्वैं ज्ञान पांच प्रकार कह्या है। इहां उपयोग कहनेतैं विपर्ययज्ञानभी ग्रहण कीया है। तातैं आठ प्रकार कह्या है। ऐसैं दोय सूत्रकरि कह्या जो उपयोग लक्षण सो जीवकै शरीरतैं भेदकूं साधै है। जैसैं उष्णजलकी अवस्थामैं द्रवपणा अरु उष्णपणा जल अग्निका भेदकूं साधै है। जैसैं जहां दोय वस्तुका एक पिंड होय तहां लक्षण भेदतैंही भिन्नता दीखै है ऐसा जाननां ॥

आगैं, ऐसे उपयोगकरि सहित जे जीव उपयोगी ते दोय प्रकारके हैं, ताका सूत्र कहै हैं—

॥ संसारिणो मुक्ताश्च ॥ १० ॥

याका अर्थ— उपयोगवाले जीव संसारी बहुरि मुक्त कहिये सिद्ध ऐसे दोय प्रकार हैं ॥

' संसरणं ' कहिये परिभ्रमण परिवर्तन सो संसार है। तहां लक्षण ऐसा, जो, अपने भावकरि बांधे जे कर्म तिनिके वशतैं भवतैं भवांतरकी प्राप्ति ताकूं संसार कहिये। ऐसा संसार जिनिके होय ते संसारी जीव कहिये। सो यहु परिवर्तन पंचप्रकार है द्रव्यपरिवर्तन, क्षेत्रपरिवर्तन, कालपरिवर्तन, भवपरिवर्तन, भावपरिवर्तन ऐसै पांच प्रकार। तहां द्रव्यपरिवर्तन दोय प्रकार, एक नोकर्मपरिवर्तन दूसरा कर्मपरिवर्तन। तहां नोकर्मपरिवर्तन कहिये है। तीन शरीर छह पर्याप्तिकै योग्य जे पुद्गलपरमाणूके स्कंध एक जीव एकसमयविषैं ग्रहण कीये ते स्निग्ध रूक्ष वर्ण गंध आदि तीव्र मंद मध्यमभावकरि जैसै तिष्ठते द्वितीयादिक समयविषैं खिरै बहुरि द्वितीयादिक समयविषैं विना ग्रहे परमाणू अनंतवार ग्रहण करै तिनिकूं उलंघिकरि बहुरि पहलै ग्रहे थे तिनिमैंके गृहीतभी बहुरि नवे ग्रहण करै तेभी दोऊ मिले ग्रहण करै तिनिकूं मिश्र कहिये। तेभी अनंतवार अनंतवार ग्रहण करै तिनिकूं उलंघिकरि बहुरि बीचिमैं गृहीत ग्रहे थे ते गृहीतग्रहण होते जाय ते अनंतवार ग्रहणमैं आवै तिनिकूं उलंघिकरि जामैं जे पहले समये परमाणू ग्रहे थे तेही तैसैही स्पर्शादिके अविभागपरिच्छेदनिकी संख्या लिये तथा तितनेही परमाणूकूं लीये समयप्रबृध्द ग्रहण करै ऐसैं होतैं जो काल भया तब एक नोकर्मद्रव्यपरिवर्तन हो है ॥

बहुरि कर्मद्रव्यपरिवर्तन कहिये हैं। तहां एकसमयविषैं एक जीव अष्टविध कर्मभावकरि जे पुद्गल ग्रहण कीये ते समय अधिक आवलीमात्र काल पीछे द्वितीयादिक समयविषैं निर्जरारूप भये फेरि पहलै कह्या तिसही विधानकरि अगृहीत गृहीत मिश्र अनंतवार ग्रहण करतैं जब कोई समय ऐसा होय तामैं पहले समये तिसही जीव जैसै स्पर्शादिकके अविभागपरिच्छेदकी संख्याकूं लीये तितनेही समयप्रबद्धमैं आय जाय तब तितनाही काल एककर्मद्रव्यपरिवर्तनका होय है। ऐसैं द्रव्यपरिवर्तन कहिये। इहां गाथा उक्तं च है ताका अर्थ— इस पुद्गलपरिवर्तनरूप संसारविषैं इस जीवनैं सर्वही पुद्गल निश्चयकरि अनंतवार अनुक्रमतैं ग्रहण करि करि छोडे है॥

आगैं क्षेत्रपरिवर्तन कहिये हैं। कोई जीव सूक्ष्म निगोदिया अपर्याप्तक सर्व जघन्य अवगाहनारूप प्रदेश शरीरकूं पाइ इस लोकविषैं मध्यके आठ प्रदेशनिकूं अपने शरीरकै मध्यदेशकरि उपज्या। पीछै क्षुद्रभवकी आयु स्वासकै अठारह्वै भाग मऱ्या। बहुरि सोही जीव तिसही अवगाहनाकरि फेरि उपजिकरि मूवा। ऐसैही तीसरी वार चौथी वार इत्यादि अपने शरीरके घन अंगुलकै असंख्यातवै भाग असंख्यात प्रदेश है तेतीही वार उपजवो कीया। बीचिमैं अन्य अवगाहना तथा अन्य क्षेत्रमैं उपजवो कीया अनंतवार ते गिणिये नाही। बहुरि ऐसैं एक एक प्रदेश वधता सर्वलो-

कका क्षेत्रकूं परसिकरि अनुक्रमतैं उपजै अनुक्रमविना उपजै सो न गिणिये। ऐसे सर्वलोक अपना जन्मक्षेत्र करै ताकूं जेता कछु अनंतकाल वीतै ताकूं एक क्षेत्रपरिवर्तन कहिये। इहां उक्तं च गाथा है। ताका अर्थ— इस क्षेत्रसंसारविषैं भ्रमता यहु जीव सो अनंत अवगाहनारूप शरीरकूं पाय इस सर्वलोकका क्षेत्रविषैं अनुक्रमतैं उपज्या तहां ऐसा क्षेत्र न रह्या जहां न उपज्या ॥

आगैं कालपरिवर्तन कहिये हैं। कोई जीव उत्सर्पिणी कालकै पहलै समय उपज्या अपनी आयु पूरी भये मूवा। वहुरि सोही जीव दूसरे उत्सर्पिणी कालकै दूसरे समय उपज्या फेरि आयु पूर्णकरि मूवा। बहुरि सोही जीव तीसरे उत्सर्पिणी कालकै तीसरे समय उपज्या। ऐसैही सोही जीव चौथे उत्सर्पिणी कालकै चौथे समय जन्म्यां। ऐसैंही अनुक्रमतैं दशकोडाकोडि सागरका उत्सर्पिणी कालका समयनिविषैं निरंतर जन्म लेवो कीया वीचिवीचिमैं विना अनुक्रमतैं और और समयनिमैं जन्म लीया सो न गिणिये। वहुरि ऐसैही अवसर्पिणी कालकै समयनिविषैं जन्म लीया। ताकेभी ऐसैही दशकोडाकोडि सागरकै समय वीतै। वहुरि जैसै जन्म लीया तैसैही मरण तिनि समयनिविषैं अनुक्रमतैं करै तहां जेता कछु अनंतानंतकाल वीतै ताकूं एक कालपरिवर्तन कहिये। इहां उक्तं च गाथा है ताका अर्थ— यहु जीव कालपरिवर्तननामा संसारविषैं भ्रमता उत्सर्पिणी अवसर्पि-

णीके समयनिकी पंक्तिविषैं जन्म लीया तथा मरण कीया अनेकवार, तामैं कोई समय अवशेष न रह्या ऐसैं भ्रम्या ॥

आगैं भवपरिवर्तन कहिये हैं। नरकगतिविषैं सर्व जघन्य आयु दश हजार वर्षकी है। तिस आयूकूं पाय तहां प्रथम नरकके पहलै पाथडे उपज्या। पीछे अन्यगत्यादिविषैं भ्रमण करते फेरि कोई कालविषैं तिसही आयूकूं पाय तिसही पाथडे उपज्या। ऐसैंही दश हजार वर्षके समय होय तेतीवार तौ तिसही आयु सहित तहांही उपजवो कीया। बीचिमैं अन्य जायगा उपज्या सो न गिणिये। पीछे एकसमयाधिक दश हजार वर्षकी आयु पाय उपज्या। पीछे दश हजार वर्ष दोय समयाधिककी आयु पाय उपज्या। इसही अनुक्रमकरि तेतीस सागरकै समय जन्मतैं तथा मरणतैं पूर्ण करै। अनुक्रमरहित बीचिबीचि अन्यगति तथा आयुकरि उपजै तौ ते न गिणिये ऐसैं भ्रमतैं बहुरि तैसैंही तिर्यंचके गतिविषैं जघन्य आयु अंतर्मुहूर्तकी पाय उपज्या। पहले अनुक्रमकीज्यौं इहांभी तीन पल्य प्रमाण आयुके समयनिविषैं अनुक्रमतैं उपजै मरै। बहुरि तैसैंही मनुष्यगतिकी तीन पल्यकी आयुके समयनिविषैं अनुक्रमतैं उपजै मरैं। तैसैंही देवगतिके आयु ग्रैवेयकनिकी इकतीस सागरतांईकी आयुके समय तिनिविषैं तहां उपजै मरे जेता अनंताअनंतकाल वीतै

ताकूं एक भवपरिवर्तन कहिये । इहां उक्तं च गाथा है ताका अर्थ— यहु जीव भवपरिवर्तननाम संसारविषैं मिथ्यात्वकरि सहित हूवा संता नरककी जघन्य आयुतैं लगाय ग्रैवेयकनिकी उत्कृष्ट आयुपर्यंत अनेकवार भवनिकी स्थिति आयु पाय पाय भ्रम्या है ॥

आगैं भावपरिवर्तन कहिये हैं। तहां जीवके परिणामकूं भाव कहिये । सो कोई जीव संज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्तक मिथ्यादृष्टि ज्ञानावरण कर्मकी प्रकृतिकी अपने योग्य जघन्यस्थिति अंतःकोटाकोटी कहिये कोडाकोडी सागरकै नीचै कोडिकै ऊपरिकीकूं प्राप्त होय । ताकूं कारण कपायाध्यवसायस्थान असंख्यात लोकपरिमाण है। तिनि एक एक स्थानविषैं अनंतानंत अविभागपरिच्छेद हैं। जिनिमैं अनंतभागवृद्धि असंख्यातभागवृद्धि संख्यातभागवृद्धि संख्यातगुणवृद्धि असंख्यातगुणवृद्धि अनंतगुणवृद्धि तथा तैसैंही हानिभी । ऐसैं पट् स्थानप्रति हानिवृद्धि संभवै ऐसै है । ते इस अंतःकोटाकोटी सागरकी स्थिति बंधनेकूं कारण जीवके कषायभावके स्थान असंख्यात लोककै जेते प्रदेश होय तेते हैं। तहां इनि कषायस्थाननिविषैं एकएकविषैं अनुभागबंधाध्यवसायस्थान जे अनुभागबंधकूं कारण जे परिणाम ते असंख्यात लोकपरिणाम हैं। तहां कोई जीव जघन्यस्थितिकूं बांधै तहां वाकूं कारण जे कषायस्थान तिनिमैंसूं जघन्यस्थान लीजिये । बहुरि तिसि कषायस्थानविषैं अनुभावकूं कारण जे

स्थान तिनिमैंसूंभी सर्वजघन्य लीजिये। तहां यो तिस प्रकृतिबंधकूं कारण जे योगस्थान ते श्रेणीके असंख्यातवै भागपरिमाण असंख्यात हैं। ते अविभागप्रतिच्छेदनकरि अनंतभागवृध्दि रहित अनंतगुणवृध्दिरहित चतुःस्थानरूपही है। तिनिमैंसूं एक तिस प्रकृतिके योग्य योगस्थान लीजिये। तहां योगस्थान पलटै तब द्वितीय तृतीय ऐसैं जगत् श्रेणीकै असंख्यातभागमात्र जे योगस्थान ते अनुक्रमतें होय। बीचिबीचि अन्यकषायस्थान अन्य अनुभागस्थान अन्य योगस्थान होय ते न गिणिये। ऐसैं जब श्रेणीकै असंख्यातवै भाग योगस्थान होय चुकै तब एक अनुभागस्थान पलटै। ऐसे असंख्यात लोकप्रमाण अनुभागस्थानविषैं एकएकविषैं योगस्थानश्रेणीकै असंख्यातवै भागपरिमाण होते जाय तब अनुभागस्थान असंख्यात लोकपरिमाण अनुक्रमतें होय चुकै तब एक कषायस्थान पलटै। तब दूसरा कषायस्थान पलटै। तब दूसरा कषायस्थानविषैंभी तैसैंही अनुभागस्थान तथा योगस्थान होय। बहुरि तीसरे कषायस्थानविषैं अनुभागस्थान योगस्थान होय। ऐसैंही असंख्यातलोकपरिमाण कषायस्थान होय चुकै तब एक स्थितिस्थान पलटै। दूसरा स्थितिस्थान पलटै। दूसरा स्थितिस्थान समयाधिक अतंःकोटाकोटी प्रमाण लीजिये। बहुरि तैसैंही असंख्यात लोकप्रमाण कषायस्थान तिनि एकएकविषैं असंख्यातलोकप्रमाण अनुभागस्थान होय। बहुरि तिनि

एकएक अनुभागस्थानविषैं असंख्यात योगस्थान होय तब तीसरा स्थितिस्थान समयाधिक लीजिये। ऐसैंही ज्ञानावरणीयकर्मकी उत्कृष्टस्थिति तीस कोडाकोडी सागरकी है। तिनिके समयाधिकक्रमकरि पूर्वै कहे तैसे कषायस्थान होय बीचिबीचिमैं और और भाव जीवके होय ते न गिणिये। ऐसैं सर्वकर्मकी स्थिति मूलप्रकृति तिनिकी तथा उत्तरप्रकृतिनिकूं कारण कषायस्थान अनुभागस्थान योगस्थानकी पलटनी अनुक्रमरूप होय चुकै। ताकूं जो अनंतानंतकाल वीतै तब एक भावपरिवर्तन कहिये। इनिका काल उत्तरोत्तर अनंतानंतगुणां जाननां। द्रव्यपरिवर्तनका अनंतकाल, तातैं अनंतगुणां क्षेत्रपरिवर्तनका काल, तातैं अनंतगुणां कालपरिवर्तनका काल, तातैं अनंतगुणां भवपरिवर्तनका काल, तातैं अनंतगुणां भावपरिवर्तनका काल, ऐसैं जाननां। इहां उक्तं च गाथा है ताका अर्थ- मिथ्यात्वकरि जीव या भावसंसारविषैं भ्रमता सर्व प्रकृति स्थिति अनुभाग प्रदेशबंधके जेते स्थान हैं ते सर्वही पाये। ऐसैं पंचप्रकार संसारतैं जे जीव रहित भये सिद्ध भये ते मुक्तजीव कहिये। इहां संसारीनिका पहलै ग्रहण कीया है। जातैं मुक्तका नाम संसारपूर्वक है। तथा संसारीनिके भेद बहुत हैं। तथा संसारी जीव अनुभवगोचर हैं। मुक्त अत्यंतपरोक्ष है। ऐसाभी हेतुतैं संसारीनिका पहलै ग्रहण कीया है ॥

आगें कहै हैं, जो, ए संसारी जीव हैं ते दोय प्रकार हैं ताका सूत्र—

॥ समनस्कामनस्काः ॥ ११ ॥

याका अर्थ— संसारी जीव हैं ते समनस्क कहिये मनसहित अमनस्क कहिये मनरहित ऐसैं दोय प्रकार हैं ॥ तहां मन दोय प्रकार है; द्रव्यमन, भावमन। तहां पुद्गलविपाकी कर्मप्रकृतिके उदयकी है अपेक्षा जाकूं ऐसा हृदयस्थानविषैं फूले कमलकै आकार सूक्ष्म पुद्गलका प्रचयरूप तिष्ठै है सो तौ द्रव्यमन है। बहुरि वीर्यांतराय तथा नोइंद्रियावरण नामा ज्ञानावरणीय कर्मके क्षयोपशमकी है अपेक्षा जाकै ऐसा आत्माकै विशुद्धि सो भावमन है। तिस मनकरि सहित होय ते तौ समनस्क हैं। बहुरि जिनिकै मन विद्यमान नांही है ते अमनस्क हैं। ऐसैं मनके सद्भाव अभावकरि संसारीनिके दोय भेद हो हैं। इहां समासविषैं समनस्कका पूर्वनिपात है, सो पूज्य प्रधानपणांतें है। जातें समनस्ककै गुणदोषका विचारसहितपणां है, तातें प्रधान है ॥

आगें फेरि संसारी जीवनिके भेदकी प्राप्तिके अर्थि सूत्र कहै हैं—

॥ संसारिणस्त्रसस्थावराः ॥ १२ ॥

याका अर्थ— संसारी जीव हैं ते त्रस हैं तथा स्थावर हैं ऐसे दोय प्रकार हैं ॥ इहां कोई कहै

सूत्रविषैं संसारीका ग्रहण निरर्थक है। जातैं पहलै सूत्रमैं संसारीका नाम कह्या है, तातैं प्रकरणतैंही जानिये है। ताका समाधान, जो, निरर्थक नांही। जातैं पहलै याकै अनंतर सूत्र है, तामैं समनस्क अमनस्क कहे, ते संसारी ऐसै जाननेके अर्थि हैं। जो पूर्वसूत्रका विशेषण न करिये तौ ताकै पूर्वै सूत्र "संसारिणो मुक्ताश्च" ऐसा है, सो इस सूत्रका यथासंख्य संबंध होय तब समनस्क तौ संसारी अमनस्क मुक्त ऐसा अनिष्ट अर्थ होय। तातैं इस सूत्रमैं संसारीका आदिविषैं ग्रहण युक्त है॥ बहुरि यहु पूर्वापेक्षभी है, तैसैंही अगलीभी अपेक्षा है। जातैं संसारी दोय प्रकारके हैं त्रस हैं स्थावर हैं। तहां त्रस नामा नामकर्मकी प्रकृतिके उदयके वशतैं भये ते त्रस हैं। बहुरि स्थावरनामा नामकर्मकी प्रकृतिके उदयके वशतैं भये ते स्थावर हैं। इहां कोई कहै; इनि शब्दनिका अर्थ तौ ऐसा है, पीडित होय भयसहित होय भागै चालै ते त्रस बहुरि तिष्ठनेहीका स्वभाव जिनिका होय ते स्थावर सो ऐसा अर्थही क्यौं न कहौ? ताका समाधान ऐसा कहे, आगमतैं विरोध आवै है। आगमविषैं ऐसा कह्या है, कायानुवादविषैं जो त्रस नाम द्वींद्रियतैं लगाय सयोगकेवलीपर्यंत है। तातैं चलने न चलनेकी अपेक्षातैं त्रस स्थावरपणां नाही है। कर्मोदयकी अपेक्षाहीतैं है। बहुरि इस सूत्रमैं त्रसका ग्रहण आदिविषैं कीया है सो याकै अक्षर अल्प है तथा पूज्य प्रधान है तातैं है

पूज्यपणा सर्व उपयोग याकै संभवै है ताकी अपेक्षा है ॥

इहां विशेष; जो, चलनेहीकी अपेक्षा त्रस कहिये तौ पवनादिक त्रस ठहरै, गर्भादिकविषैं स्थावरही ठहरै। बहुरि तिष्ठनेहीकी अपेक्षा स्थावर कहिये तौ पवनादिक स्थावर न ठहरै, तातैं कर्मोदय अपेक्षाही युक्त है। बहुरि सर्वजीवनिकूं स्थावरही कहिये त्रस न कहिये। जातैं जीव क्रियातैं रहित सर्वगति है तौ जीवतत्त्वके नाना भेद न ठहरै। तातैं क्रियासहित कथंचित् असर्वगतिहि माननां। बहुरि सर्वजीवनिकूं त्रसही मानिये स्थावर न मानिये तौ वनस्पतिकायिकादिक जीव न ठहरै। जातैं चलतेकूंही जीव कहै तब सूता मूर्च्छित अंडेमैं तिष्ठताभी जीव न ठहरै। जो कहै तिनिका आकारविशेष है, तातैं जीव हैं तौ ऐसै वनस्पतिकेभी जलादि आहार पावने न पावनेतैं हरित होना सूकी जाना ऐसैं लक्षणतैं जानिये ए जीव हैं। तातैं स्थावर त्रस दोऊही भेद माननां युक्त है ॥

आगैं, त्रसका भेद पहली कहना अनुक्रम है, ताकूं उलंघ्य एकेंद्रियस्थावरके भेद प्रतिपत्तिकै अर्थि सूत्र कहै हैं। जातैं एकेंद्रियके भेद बहुत नाहीं कहने हैं। तातैं तिनिकूं पहली कहि जाय है–

## ॥ पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतयः स्थावराः ॥ १३ ॥

याका अर्थ— पृथिवी अप् तेज वायु वनस्पति ए पंच स्थावर जीव हैं ॥ स्थावर नामा नामकर्मकी प्रकृतिके भेद पृथिवीकायिकादि कहे। ताके उदयके निमित्ततैं जीवनिकै पृथिवीकायिकादिक संज्ञा जाननी। इनिके शब्द पृथनादिक धातुनितैं निपजै हैं। तौभी रूढिके वशतैं पृथनादिक कहिये विस्तारादिक अर्थकी इहां अपेक्षा न करणी। इनि पृथिवी आदिके आर्ष कहिये ऋषिनिके आगमविषैं च्यारि च्यारि भेद कहे हैं। सोही कहिये पृथिवी, पृथिवीकाय, पृथिवीकायिक, पृथिवीजीव। अप्, अप्काय, अप्कायिक, अप्जीव। तेज, तेजकाय, तेजकायिक, तेजजीव। वायु, वायुकाय, वायुकायिक, वायुजीव। वनस्पति, वनस्पतिकाय, वनस्पतिकायिक, वनस्पातिजीव ऐसैं। तहां अचेतनपुद्गल अपने स्वभावहीतैं कठिणता आदि गुणसहित है ताकूं तौ पृथिवी कहिये। जातैं अचेतनपणांतैं पृथिवीकाय नामकर्म प्रकृतिके उदयविनाभी प्रथनक्रिया जो फैलाना आदि क्रिया ताकरि सहित पृथिवी हैहीं। अथवा दूसरा अर्थ यहु, जो, जामैं अगिले तीनूं भेद पाइये ऐसा सामान्यकूंभी पृथिवी कहिये। बहुरि पृथिवीकायिक जीव जामैं था सो मूवा ताका शरीर रह्या ताकूं पृथिवीकाय कहिये। जैसैं मूवा मनुष्यका काय होय तैसैं। बहुरि पृथिवीकाय जाकै

होय ऐसा जीव ताकूं पृथिवीकायिक कहिये । सो यहु, पृथिवी शरीरके संबंधसहित है । बहुरि पृथिवीकायनामानामकर्मकी प्रकृतिका जाकै उदय आया अन्यकायके शरीरतैं छूट्या जेतैं पृथिवीकाय शरीर नांही ग्रहण कीया जेतैं अंतरालमैं कार्मणयोगमैं तिष्ठै तेतैं ताकूं पृथिवीजीव कहिये । ऐसैंही अप्कायादिकविषैं अर्थ लगा लेणां ॥ ए पांच स्थावरजीव हैं। तिनिकै प्राण च्यारि । स्पर्शनेंद्रियप्राण, कायबलप्राण, उच्छ्वासनिश्वासप्राण, आयुप्राण ऐसैं ॥ इहां विशेष जो, केवलज्ञानतैं लगाय अनादिकर्मसंयोगतैं घटतैं घटतैं ज्ञानका अपकर्ष करिये तब सूक्ष्मज्ञान एकेंद्रियनिकै रहै है । इहां प्रश्न, जो, घटतैं घटतैं जडही क्यों न रह्या? ताकूं कहिये घटना तौ आपहीविषैं कहिये । जड तौ अन्य द्रव्य है । जातैं प्रध्वंसाभाव सत्त्वहीकै कहिये । बहुरि सत्त्वका अत्यंत अभावभी युक्त नांही । कोई कहै, कर्मका अत्यंत अभाव कैसैं है? ताकूं कहिये कर्मरूप पुद्गल भये थे तिनिका कर्मभावका नाश होय पुद्गलपरमाणूंनिका तौ अभाव न भया। ऐसैं एकेंद्रियनिविषैं ज्ञानका परम अपकर्ष निश्चय कीजिये । तातैं स्थावरजीवनिका सद्भाव युक्त है ॥

आगैं कहै हैं, जो, त्रसजीव कोन हैं? ऐसैं पूछै सूत्र कहै हैं—

॥ द्वीन्द्रियादयस्त्रसाः ॥ १४ ॥

याका अर्थ— द्वींद्रियजीवनैं आदि देकरि तेइंद्रिय चौइंद्रिय पंचेंद्रिय ऐसै त्रसजीव हैं ॥ दोय हैं इंद्रिय जाकै ताकूं द्वींद्रिय कहिये। बहुरि द्वींद्रिय हैं आदि जिनिकै ते द्वींद्रियादिक कहिये। इहां आदिशब्द है सो आगमविषैं इनिकी व्यवस्था है, ताका वाचक कहिये हैं। द्वींद्रिय त्रींद्रिय चतुरिंद्रिय पंचेंद्रिय ऐसै। इहां तद्गुणसंविज्ञान समासका ग्रहण है। तातैं द्वींद्रियकाभी ग्रहण करनां। जातैं या समासमैं आदिकाभी पदार्थ ग्रहण हो है। बहुरि पूछै है, इनिके प्राण केते केते हैं? तहां कहिये हैं। द्वींद्रियके छह प्राण हैं। च्यारि तौ एकेंद्रियकै पहलै कहे तेही लैणे। बहुरि रसना इंद्रिय बहुरि वचनबल ये दोय अधिक कीये छह भये। बहुरि त्रींद्रियकै घ्राण इंद्रियकरि अधिक सात प्राण हैं। बहुरि चतुरिंद्रियके चक्षु इन्द्रियकरि अधिक आठ प्राण हैं। बहुरि पंचेंद्रियके तिर्यंचनिविषैं असंज्ञीकै तो कर्ण इंद्रियकरि अधिक नव हैं। बहुरि संज्ञीके मनबलकरि अधिक दश प्राण हैं। ऐसै पांच सूत्रनिकरि सर्व संसारी जीव कहे। इहां कोई पूछै, विग्रहगति अंतरालमैं इंद्रिय नाहीं तिनिका ग्रहण कैसै भया? तहां कहिये, जो, त्रसस्थावर नामकर्मका उदय विग्रहगतिमैंभी है। तिस विना होय तौ मुक्तजीव ठहरै, तातैं तेभी आय गये ॥

आगैं, द्वींद्रिय आदि ऐसा कह्या तहां आदिशब्दमैं कहांताई गिणनां? ताकी संख्याकी

मर्यादा जनावनेकूं नियमका सूत्र कहै हैं—

॥ पञ्चेन्द्रियाणि ॥ १५ ॥

याका अर्थ— इंद्रिय पांच हैं ॥ इंद्रियशब्दका अर्थ तौ पहलै कह्याही था, जो इंद्र कहिये आत्मा संसारी जीव ताका लिंग कहिये जनावनेका चिन्ह। तथा इंद्र जो नामकर्म ताकरि रचे जे आकार ते इंद्रिय हैं। बहुरि पंच शब्दकरि नियम किया, जो इंद्रिय पांचही हैं, हीनाधिक नाही। इहां अन्यमती कहै, जो, कर्मइंद्रिय कहिये वचन हाथ पायु उपस्थ इनिकाभी ग्रहण चाहिये। ताकूं कहिये, इहां न चाहिये। जातैं इहां आत्माका उपयोगका प्रकरण है। तातैं उपयोगके कारणही ग्रहण चाहिये। क्रियाके साधन नाही कहे। जो क्रियासाधनभी कहिये तौ अनवस्था आवै। अंगोपांग नामा नामकर्मनैं रचे जे क्रियाके साधन ते सर्वही ग्रहण कीये चाहिये। वचनादिक पांचही ग्रहण कैसै होय? ॥

आगैं, तिनि इंद्रियनिके भेद दिखावनेकूं सूत्र कहै हैं—

॥ द्विविधानि ॥ १६ ॥

याका अर्थ— जे इंद्रिय कहे ते द्रव्येंद्रिय भावेंद्रियकरि दोय प्रकार हैं ॥ इहां विधशब्द है सो

प्रकारवाची है। ताका समास ऐसा होय है, दोय प्रकार जाके ताकूं द्विविध कहिये दोय प्रकार हैं। ऐसा अर्थ भया। ते कौन? द्रव्येंद्रिय भावेंद्रिय ऐसैं ॥

तहां द्रव्येंद्रियके स्वरूपका निर्णयके अर्थि सूत्र कहै हैं—

॥ निर्वृत्युपकरणे द्रव्येन्द्रियम् ॥ १७ ॥

याका अर्थ-- निर्वृति उपकरण ऐसै दोय प्रकार द्रव्येंद्रिय है ॥ तहां जो कर्मकरि रची होय ताकूं निर्वृति कहिये। सो दोय प्रकार है। बाह्य निर्वृति अभ्यंतर निर्वृति। तहां जो उत्सेध अंगुलकै असंख्यातवै भाग परिणाम शुध्द जे आत्माके प्रदेश, ते न्यारे न्यारे नेत्र आदि इंद्रियनिके आकारकरि अवस्थित होय तिनिकी वृत्ति सो तौ अभ्यंतरनिर्वृति है। बहुरि तिनि आत्माके प्रदेशनिविषैं इंद्रिय है नाम जिनिके ऐसै जे न्यारे न्यारे आकार नामकर्मके उदयकरि निपजाये हैं अवस्थाविशेष जिनिकै ऐसे ते पुद्गलके संचय समूह सो बाह्यनिर्वृति है। बहुरि जो निर्वृतीका उपकार करै सो उपकरणभी दोय प्रकार है। अभ्यंतर उपकरण बाह्य उपकरण। तहां काला धोला जो नेत्रनिविषैं मंडल गोलाकार आदि है सो तौ अभ्यंतर है। बहुरि वांफणी तथा नेत्र जाकै ढकै ऐसे डोला इत्यादि बाह्य उपकरण है। तैसेही अन्य इंद्रियके जानने ॥

अप्रमत्त है, प्रमत्तसंयतभी है। सूक्ष्मसांपरायशुद्धिसंयमी एक सूक्ष्मसांपरायस्थानही है । यथाख्यात-विहारशुद्धिसंयमी उपशांतकषाय आदि अयोगकेवलीतांई च्यारि गुणस्थान हैं । संयतासंयत एक संयतासंयत गुणस्थानविषैंही है । असंयत, मिथ्यादृष्टि आदि च्यारि गुणस्थान आदिकेविषैंही है ॥

दर्शनके अनुवादकरि चक्षुअचक्षु दर्शनविषैं मिथ्यादृष्टि आदि क्षीणकषायपर्यंत बारह गुणस्थान हैं । अवधिदर्शनविषैं असंयतसम्यग्दृष्टि आदि क्षीणकषायपर्यंत नव गुणस्थान हैं। केवलदर्शनविषैं सयोगकेवली अयोगकेवली हैं ॥

लेश्याके अनुवादकरि कृष्ण नील कापोत लेश्याविषैं मिथ्यादृष्टि आदि असंयत सम्यग्दृष्टीपर्यन्त हैं। तेज पद्मलेश्याविषैं मिथ्यादृष्टि आदि अप्रमत्तपर्यन्त सात हैं। शुक्ललेश्याविषैं मिथ्यादृष्टि आदि सयोगकेवलीपर्यंत तेरह हैं। लेश्यारहित अयोगकेवली है ॥

भव्यके अनुवादकरि भव्यविषैं चौदहही हैं। अभव्यविषैं आदिका एकही है। सम्यक्त्वके अनुवादकरि क्षायिकसम्यक्त्वविषैं असंयतसम्यग्दृष्ट्यादि अयोगकेवलीपर्यंत ग्यारह हैं। क्षायोपशमिकसम्यक्त्वविषैं असंयतसम्यग्दृष्ट्यादि अप्रमत्तपर्यंत च्यार हैं। औपशमिकसम्यक्त्वविषैं असंयतसम्यग्दृष्टि आदि उपशांत कषायपर्यंत आठ हैं । सासादनसम्यग्दृष्टि सम्यङ्मिथ्यादृष्टि मिथ्यादृष्टि अपने अपने गुणस्थान हैं ॥

संज्ञीके अनुवादकरि संज्ञीकेविषैं आदितैं लगाय बारह गुणस्थान हैं। असंज्ञीकेविषैं एक मिथ्यादृष्टिही है। दोऊतैं रहित सयोगकेवली अयोगकेवली है॥

आहारकके अनुवादकरि आहारकविषैं मिथ्यादृष्टि आदि सयोगकेवलीपर्यंत तेरह हैं। अनाहारकविषैं विग्रहगतिविषैं मिथ्यादृष्टि सासादनसम्यग्दृष्टि असंयतसम्यग्दृष्टि ए तीन गुणस्थान हैं। समुद्घातसहित सयोगकेवली है अर अयोगकेवली है। बहुरि सिद्धपरमेष्ठी हैं ते अतीतगुणस्थान हैं। ऐसैं सत्की प्ररूपणा तौ कही॥

अब संख्याप्ररूपणा कहिये हैं। सो भेदनिके गणनाकूं संख्या कहिये हैं। सो दोय प्रकार। सामान्यकरि गुणस्थानविषैं, विशेषकरि मार्गणानिविषैं। तहां सामान्यकरि मिथ्यादृष्टि जीव तौ अनंतानंत हैं। सासादनसम्यग्दृष्टि सम्यङ्मिथ्यादृष्टि असंयतसम्यग्दृष्टि संयतासंयत पल्यके असंख्यातवै भागपरिमाण हैं। प्रमत्तसंयत पृथक्त्व कोडिसंख्या हैं। इहां पृथक्त्व ऐसी आगममें संज्ञा है। सो तीन कोडीकै उपरि नवकोडीकै नीचै जाननी। ते ५९३९८२०६ हैं। अप्रमत्तसंयतसंख्या है ते प्रमत्तसंयतनितैं आधे हैं। ते २९६९९१०३ हैं। बहुरि च्यारि उपशमश्रेणीवाले प्रवेशकरि तौ एक अथवा दोय तीन आदि उत्कृष्ट चोवनताईं हैं। बहुरि इनिका सर्वकालके भेले होय तब संख्यात हैं।

एक गुणस्थानके २९९ । च्यारिनिके जोडिये तब ११९६ होय । च्यारि क्षपक श्रेणीवाले बहुरि अयोगकेवली प्रवेशकरि एक दोय तीन आदि उत्कृष्ट एकसो आठतांई अपनां अपनां कालके भेले होय तब संख्यात होय । एक गुणस्थानमैं ५९८ । पांच गुणस्थानके जोडिये तब २९९० होय । सयोगकेवली प्रवेशकरि एक दोय तीन आदि उत्कृष्ट एकसो आठतांई हैं । या गुणस्थानके भेले होय तब पृथक्त्व लाख होय हैं ते ८९८५०२ होय । ऐसैं प्रमत्तसंयततैं लगाय अयोगकेवलीपर्यंत सर्वसंयमी जोडिये तब नवकोडि तीन घाटि होय हैं । ८९९९९९९७ ॥

बहुरि विशेषकरि गतिके अनुवादकरि नरकगतिविषैं पहली पृथिवीविषैं नारकी जीव मिथ्यादृष्टि असंख्यात जगच्छ्रेणीपरिमाण हैं । सो जगत् प्रतरके असंख्यातवै भाग हैं । बहुरि दूसरी पृथिवीतैं लगाय सातमीतांई मिथ्यादृष्टि श्रेणीकै असंख्यातवै भाग परिमाण हैं । सो असंख्यातवां भाग असंख्यात कोडि योजनके प्रदेश होय तेते जानने । बहुरि सर्वही पृथिवीनिविषैं सासादनसम्यग्दृष्टि सम्यङ्मिथ्यादृष्टि असंयतसम्यग्दृष्टि पल्योपमकै असंख्यातवै भाग परिमाण हैं । बहुरि तिर्यंचगतिविषैं तिर्यंचजीव मिथ्यादृष्टि अनंतानंत हैं । सासादनसम्यग्दृष्टि आदि संयतासंयततांई पल्यकै असंख्यातवै भाग परिमाण हैं । मनुष्यगतिविषैं मनुष्य मिथ्यादृष्टि श्रेणीकै

असंख्यातवै भाग हैं । सो असंख्यातवा भाग असंख्यातकोडि योजनके प्रदेशमात्र जाननां । सासादनसम्यग्दृष्टि आदि संयतासंयततांई संख्यात हैं । ते सासादनविषैं बावन कोडि हैं । मिश्रविषैं एकसो च्यारि कोडि हैं । असंयत सातसैं कोडि हैं । संयतासंयत तेरह कोडि हैं । बहुरि प्रमत्तसंयत आदिकी संख्या सामान्योक्त कहिये गुणस्थाननिमैं कही सो संख्या जाननी ॥

देवगतिविषैं देव मिथ्यादृष्टि असंख्यात श्रेणीपरिमाण हैं । सो प्रतरके असंख्यातवै भाग हैं। सासादनसम्यग्दृष्टि सम्यङ्मिथ्यादृष्टि असंयतसम्यग्दृष्टि पल्योपमके असंख्यातवे भागपरिमाण हैं ॥

इंद्रियके अनुवादकरि एकेंद्रिय मिथ्यादृष्टि अनंतानंत हैं । द्वींद्रिय त्रींद्रिय चतुरिंद्रिय असंख्यात श्रेणीपरिमाण हैं । सो प्रतरके असंख्यातवै भाग हैं । पंचेंद्रियविषैं मिथ्यादृष्टि असंख्यात श्रेणीपरिमाण हैं । सो प्रतरकै असंख्यातवै भाग हैं । सासादनसम्यग्दृष्टि आदि अयोगकेवलीपर्यंत गुणस्थानवत् संख्या जाननी ॥

कायके अनुवादकरि पृथिवीकायिक अप्कायिक तेजस्कायिक वायुकायिक असंख्यातलोक परिमाण हैं । वनस्पतिकायिक अनंतानंत हैं । त्रसकायिककी संख्या पंचेंद्रियवत् जाननी ॥

योगका अनुवादकरि मनोयोगी वचनयोगी मिथ्यादृष्टि असंख्यातश्रेणीपरिमाण हैं । ते प्रतरकै

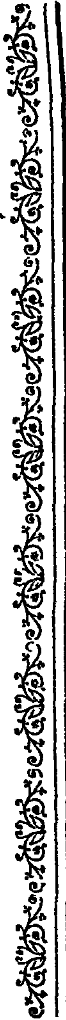




असंख्यातवै भाग हैं। काययोगीनिविषैं मिथ्यादृष्टि अनंतानंत हैं । तीनूं योगवाले सासादनसम्यग्दृष्टि आदि संयतासंयततांई तौ पल्यके असंख्यातवै भागपरिमाण हैं । प्रमत्तसंयत आदि सयोगकेवलीतांई संख्यात हैं। अयोगेकवली गुणस्थानवत् संख्या ॥

वेदके अनुवादकरि स्त्रीवेद पुरुषवेदवाले मिथ्यादृष्टि असंख्यातश्रेणीपरिमाण हैं । प्रतरकै असंख्यातवै भाग हैं । नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि अनंतानंत हैं । बहुरि स्त्रीवेदी नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि आदि संयतासंयततांई गुणस्थानवत् संख्या है। प्रमत्तसंयत आदि अनिवृत्तिबादरसांपरायतांई संख्यात हैं । पुरुषवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि संयतासंयततांई गुणस्थानवत् संख्या है। प्रमत्तसंयत आदि अनिवृत्तिबादरसांपरायतांई गुणस्थानवत् संख्या है । वेदरहित अनिवृत्तिबादरसांपराय आदि अयोगकेवलीतांई सामान्योक्त कहिये गुणस्थानवत् संख्या है ॥

कषायके अनुवादकरि क्रोधमानमायाविषैं मिथ्यादृष्टि आदि संयतासंयततांई गुणस्थानवत् संख्या है। प्रमत्तसंयत आदि अनिवृत्तिबादरसांपरायतांई संख्यात हैं। लोभकषायवालेका पहलै कह्या सोही अनुक्रम है। विशेष यह, जो, सूक्ष्मसांपरायसंयतका गुणस्थानवत् संख्या है । कषायरहित उपशांतकषाय आदि अयोगकेवलीतांई गुणस्थानवत् संख्या है ॥



ज्ञानके अनुवादकरि मति-अज्ञान श्रुत-अज्ञानवाले मिथ्यादृष्टि सासादनसम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थानवत् संख्या है। विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि असंख्यातश्रेणीपरिमाण हैं। ते प्रतरके असंख्यातवै भाग हैं। सासादनसम्यग्दृष्टि पल्योपमकै असंख्यातवै भाग हैं। मतिश्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि आदि क्षीणकषायताँई गुणस्थानवत् संख्या है। अवधिज्ञानी असंयतसमग्दृष्टि आदि संयतासंयतताँई गुणस्थानवत् संख्या है। प्रमत्तसंयत आदि क्षीणकपायताँई संख्यात हैं। मनःपर्ययज्ञानी प्रमत्तसंयत आदि क्षीणकषायताँई संख्यात हैं। केवलज्ञानी अयोगी सयोगी गुणस्थानवत् संख्या है॥

संयमके अनुवादकरि सामयिकच्छेदोपस्थापनाशुद्धि संयतप्रमत्त आदि अनिवृत्तिबादरसांपरायताँई गुणस्थानवत् संख्या है। परिहारविशुद्धिसंयत प्रमत्त अप्रमत्त संख्यात हैं। सूक्ष्मसांपरायशुद्धिसंयत यथाख्यात विहारशुद्धिसंयत संयतासंयत असंयतकी गुणस्थानवत् संख्या है॥

दर्शनके अनुवादकरि चक्षुर्दर्शनवाले मिथ्यादृष्टि असंख्यातश्रेणीपरिमाण हैं। ते प्रतरकै असंख्यातवै भाग हैं। अचक्षुर्दर्शनवाले मिथ्यादृष्टि अनंतानंत हैं। दोऊही सासादनसम्यग्दृष्टि आदि क्षीणकषायताँई सामान्योक्त कहिये गुणस्थानवत् है। अवधिदर्शनवाले अवधिज्ञानिवत् हैं। केवलदर्शनवाले केवलज्ञानीवत् हैं॥

लेश्याके अनुवादकरि कृष्ण—नील—कापोतलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि आदि असंयतसम्यग्दृष्टितांई गुणस्थानवत् संख्या है । पीतपद्मलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि आदि संयतासंयततांई स्त्रीवेदवत् है । प्रमत्त अप्रमत्त संयत संख्यात हैं । शुक्ललेश्यावाले मिथ्यादृष्टि आदि संयतासंयततांई पल्योपमके असंख्यातवै भाग हैं । प्रमत्त अप्रमत्त संयत संख्यात हैं । अपूर्वकरण आदि सयोगकेवलीतांई गुणस्थानवत् संख्या है । अलेश्यावाला गुणस्थानवत् संख्या है ॥

भव्यके अनुवादकरि भव्यविषैं मिथ्यादृष्टि आदि अयोगकेवलीपर्यंत गुणस्थानवत् संख्या है । अभव्य अनंत हैं ॥

सम्यक्त्वके अनुवादकरि क्षायिकसम्यक्त्वविषैं असंयतसम्यग्दृष्टि पल्यकै असंख्यातवै भाग हैं । संयतासंयत आदि उपशांतकषायपर्यंत मनुष्य संख्यात हैं । च्यारि क्षपकश्रेणीवाला सयोगकेवली अयोगकेवली गुणस्थानवत् है । क्षायोपशमिक सम्यग्दृष्टिविषैं असंयतसम्यग्दृष्टि आदि अप्रमत्ततांई गुणस्थानवत् । औपशमिकसम्यक्त्वविषैं असंयतसम्यग्दृष्टि असंयतासंयत पल्योपमके संख्यातवै भाग हैं । प्रमत्ताप्रमत्त संयत संख्यात हैं । च्यारि औपशमिक गुणस्थानवत् संख्या है । सासादनसम्यग्दृष्टि सम्यङ्मिथ्यादृष्टि मिथ्यादृष्टि गुणस्थानवत् संख्या है ॥

संज्ञीके अनुवादकरि संज्ञीविषैं मिथ्यादृष्टि आदि क्षीणकषायपर्यंत चक्षुर्दर्शनिवत् संख्या है। असंज्ञी मिथ्यादृष्टि अनंतानंत हैं। दोऊरहित गुणस्थानवत् संख्या है ॥

आहारकके अनुवादकरि आहारकनिविषैं मिथ्यादृष्टि आदि सयोगकेवलीपर्यंत गुणस्थानवत् संख्या। अनाहारकनिविषैं मिथ्यादृष्टि सासादनसम्यग्दृष्टि असंयत सम्यग्दृष्टि गुणस्थानवत् संख्या। सयोगकेवली संख्यात हैं। अयोगकेवली गुणस्थानवत् संख्या है। ऐसै संख्याका निर्णय कीया ॥

अब क्षेत्रप्ररूपणा कहिये हैं। तहां क्षेत्र दोय प्रकार है। सामान्यकरि गुणस्थाननिका विशेषकरि मार्गणाका। तहां सामान्यकरि मिथ्यादृष्टिनिका सर्वलोक क्षेत्र है। सासादनसम्यग्दृष्टि आदि अयोगकेवलीपर्यंतनिका लोकका असंख्यातवा भाग है। सयोगकेवलीनिका लोकका असंख्यातवा भाग है। अथवा समुद्घातके प्रतर अपेक्षा लोकके असंख्यात बहुभाग हैं। पूरण अपेक्षा सर्वलोक है ॥ विशेषकरि गतिके अनुवादकरि नरकगतिविषैं सर्व पृथिवीनिविषैं नारकीनिका च्यार गुणस्थाननिविषैं लोकका असंख्यातवा भाग है। तिर्यंचगतिविषैं तिर्यंचनिका मिथ्यादृष्टि आदि संयतासंयततांई गुणस्थानवत् क्षेत्र है। मनुष्यगतिविषैं मनुष्यनिका मिथ्यादृष्टि आदि सयोगकेवलीपर्यंतनिका लोककै असंख्यातवै भाग है। सयोगकेवलीनिका गुणस्थानवत् क्षेत्र है।

देवगतिविषैं देवनिका च्यारि गुणस्थानविषें लोकके असंख्यातवें भाग है । इंद्रियके अनुवादकरि एकेंद्रियनिका क्षेत्र सर्वलोक है । विकलत्रयका लोकका असंख्यातवा भाग है । पंचेंद्रियनिका मनुष्यवत् है । इहां कोई पूछै, मनुष्य तौ अढाई द्वीपमेंही उपजे हैं । पंचेंद्रिय त्रसनाडीमें उपजै हैं । मनुष्यवत् कैसै कह्या? ताका समाधान— जो, पंचेंद्रिय केतेक इनिके उपजनेके ठिकाणेही उपजै हैं । सर्वत्र त्रसनाडीमें नांही उपजे हैं । तातें लोकका असंख्यातवा भागही है ॥

कायके अनुवादकरि पृथिवीकायिक आदि वनस्पतिपर्यंतका सर्वलोक क्षेत्र है । त्रसकायिकका पंचेंद्रियवत् क्षेत्र है ॥

योगका अनुवादकरि वचन मनोयोगवाले मिथ्यादृष्टि आदि सयोगकेवलीपर्यंतनिका लोकके असंख्यातवै भाग है । काययोगीनिका मिथ्यादृष्टि आदि सयोगकेवलीपर्यंतनिका अर अयोगकेवलीनिका गुणस्थानवत् क्षेत्र है । वेदके अनुवादकरि स्त्रीपुरुषवेदीनिका मिथ्यादृष्टि आदि अनिवृत्तिबादरपर्यंतनिका लोकके असंख्यातवा भाग है । नपुंसकवेदनिका मिथ्यादृष्टि आदि अनिवृत्तिबादरपर्यंतनिका अरु वेदरहितनिका गुणस्थानवत् क्षेत्र है ॥

कषायके अनुवादकरि क्रोध मान माया कषायवालेनिका अर लोभ कषायवालेनिका

मिथ्यादृष्टि आदि अनिवृत्तिबादरपर्यंतनिका अर सूक्ष्मसांपरायीनिका अर कषायरहितानिका गुणस्थानवत् क्षेत्र है ॥

ज्ञानके अनुवादकरि मतिअज्ञान श्रुतअज्ञानवालेनिका मिथ्यादृष्टि सासादनसम्यग्दृष्टिवालेनिका गुणस्थानवत् क्षेत्र है । विभंगज्ञानीनिका मिथ्यादृष्टि सासादनसम्यग्दृष्टीनिका लोकका असंख्यातवा भाग है । मति-श्रुत-अवधिज्ञानीनिका असंयतसम्यग्दृष्टि आदि क्षीणकषायपर्यंतानिका अर मनःपर्ययज्ञानीनिका प्रमत्तसंयत आदि क्षीणकषायपर्यंतनिका अर केवलज्ञानी अयोगीनिका गुणस्थानवत क्षेत्र है ॥

संयमके अनुवादकरि सामायिक च्छेदोपस्थापनशुद्धि संयतनिका च्यारि गुणस्थाननिका अर परिहारविशुद्धिसंयत प्रमत्त अप्रमत्तनिका अर सूक्ष्मसांपराय शुद्धसंयतनिका अर यथाख्यात विहारशुद्धसंयतका च्यारि गुणस्थानानिका अर संयतासंयतका अर असंयतके च्यारि गुणस्थानानिका गुणस्थानवत् क्षेत्र है ॥

दर्शनके अनुवादकरि चक्षुर्दर्शनवालेनिका मिथ्यादृष्टि आदि क्षीणकषायपर्यंतानिका लोकका असंख्यातवा भाग है । अचक्षुर्दर्शनवालेनिका मिथ्यादृष्टि आदि क्षीणकषायपर्यंतानिका गुणस्थानवत्

क्षेत्र है। अवधिदर्शनवालेनिका अवधिज्ञानीवत् है। केवलदर्शनवालेनिका केवलज्ञानीवत् है ॥

लेश्याके अनुवादकरि कृष्ण-नील-कापोतलेश्यावालेनिका मिथ्यादृष्टि आदि असंयतसम्यग्दृष्टिपर्यंतनिका गुणस्थानवत् क्षेत्र है। पीत-पद्मलेश्यावालेनिका मिथ्यादृष्टि आदि अप्रमत्तसंयतपर्यंतनिका लोकका असंख्यातवा भाग है। शुक्ललेश्यावालेनिका मिथ्यादृष्टि आदि क्षीणकषायपर्यंतनिका लोकका असंख्यातवा भाग है। सयोगकेवलीनिका अर लेश्यारहित अयोगकेवलीनिका गुणस्थानवत् क्षेत्र है ॥

भव्यके अनुवादकरि भव्यनिका चौदहही गुणस्थानका सामान्योक्त कहिये गुणस्थानवत् क्षेत्र है। अभव्यनिका सर्वलोक है ॥

सम्यक्त्वके अनुवादकरि क्षायिकसम्यग्दृष्टिनिका असंयतसम्यग्दृष्टि आदि अयोगकेवलीपर्यंतनिका अर क्षायोपशमिकसम्यग्दृष्टिनिका असंयतसम्यग्दृष्टि आदि अप्रमत्तसंयतपर्यंतनिका अर औपशमिकसम्यग्दृष्टिनिका असंयतसम्यग्दृष्टि आदि उपशांतकषायपर्यंतनिका अर सासादनसम्यग्दृष्टिनिका अर सम्यङ्मिथ्यादृष्टिनिका अर मिथ्यादृष्टिनिका गुणस्थानवत् क्षेत्र है ॥

संज्ञीके अनुवादकरि चक्षुर्दर्शनवत् तौ संज्ञीनिका क्षेत्र है। अर असंज्ञीनिका सर्वलोक है। तिन दोऊनितैं रहितनिका गुणस्थानवत् क्षेत्र है ॥

आहारकके अनुवादकरि आहारकनिका मिथ्यादृष्टि आदि क्षीणकषायपर्यंतनिका गुणस्थानवत् क्षेत्र है । सयोगकेवलीनिका लोककै असंख्यातवै भाग है । अनाहारकनिका मिथ्यादृष्टि सासादनसम्यग्दृष्टि असंयतसम्यग्दृष्टि अयोगकेवलीनिका गुणस्थानवत् क्षेत्र है । सयोगकेवलीनिका लोकका असंख्यातवा भाग है । अर प्रतर अपेक्षा अर पूरण अपेक्षा सर्वलोक है । ऐसैं क्षेत्रका निर्णय कीया ॥

आगैं स्पर्शन कहिये हैं । तहां लोकके एक एक राजू घनरूप खंड कल्पिये तब तीनसै तियालीस राजू होय । ताविषैं जीव स्पर्शन करै है । सो च्यारि प्रकार है । स्वस्थानविहार अपेक्षा, परस्थानविहार अपेक्षा, मारणांतिकसमुद्घात अपेक्षा, उत्पाद अपेक्षा । सो कहिये हैं । सो प्ररूपणा दोय प्रकार है । सामान्यकरि गुणस्थाननिविषैं, विशेषकरि मार्गणानिविषैं । तहां प्रथमही सामान्यकरि मिथ्यादृष्टिनिकरि सर्वलोक स्पर्शिये है । सासादनसम्यग्दृष्टिनिकरि लोकका असंख्यातवा भाग स्वस्थानविहारकी अपेक्षा है । अर परस्थानविहार अपेक्षा सासादनवर्ती देव तीसरी पृथिवीताईं विहार करै सो दोय राजू तौ ए भये । अर अच्युतस्वर्गताईं ऊपरी विहार करै तातैं छह राजू ए भये । ऐसैं आठ राजू स्पर्शै । ऐसैं इनिकूं आठ चतुर्दश भाग कहे । तहां त्रसनाडी चोदह राजू है । सो

तीनसे तिथालीस भागमैं चौदह भाग लिये, तिनिमैंसूं आठ भाग तथा द्वादश भाग कहे, तहां तेता राजू जाननां । इहां सासादनमैं बारह भागभी कहे हैं, ते मारणांतिक अपेक्षा हैं । सो सासादनवाला सातवी पृथिवीविना छठी पृथिवीतैं मारणांतिक करै सो मध्यलोकमैं आवै, सो पांच राजू तौ ए भये । अरु मध्यलोकतैं बादरपृथिवीकायिकादिविषैं सासादनवाला उपजै तब मारणांतिक समुद्घातकरि लोकका अंततांई स्पर्शै, सो सात राजू ये भये । ऐसैं बारह राजू स्पर्शै है । सो देशोन कहिये किछू घाटि स्पर्शै है । बहुरि सम्यङ्मिथ्यादृष्टिनिकरि अर असंयतसम्यग्दृष्टिनिकरि लोकका असंख्यातवा भाग स्पर्शीये है । अथवा चौदह भागमैंसूं आठ भाग किछू घाटि स्पर्शीये है । सो अच्युतदेवका परस्थानविहार अपेक्षा है । बहुरि संयतासंयतवालेका लोकका असंख्यातवा भाग स्पर्श है । अथवा चौदह भागमैंसूं छह भाग किछू घाटि है । इहां अच्युतस्वर्गमैं उपजै सो मारणांतिक समुद्घात करै, ताकी अपेक्षा है । बहुरि प्रमत्तसंयत आदि अयोगकेवलीपर्यंतनिका क्षेत्रवत् स्पर्शन है ॥

विशेषकरि गतिका अनुवादकरि प्रथमपृथिवीविषैं नारकीनिकै च्यारि गुणस्थानवालेकै लोकका असंख्यातवा भाग स्पर्श है । दूसरीतैं लगाय छठी पृथिवीतांईके नारकीनिकै मिथ्यादृष्टीनिकै सासादनसम्यग्दृष्टीनिकै लोकका असंख्यातवा भाग स्पर्श है । अर चोदह भागमैंसूं एक भाग दोय

भाग तीन भाग च्यारि भाग पांच भाग किछू घाटि है। यहू मारणांतिक अपेक्षा है। सम्यङ्मिथ्यादृष्टि असंयतसम्यग्दृष्टिनिकै लोकका असंख्यातवा भाग स्पर्श है। बहुरि सातमी पृथिवीवाले मिथ्यादृष्टिनिकै लोकका असंख्यातवा भाग है। अर छह भाग देशोन चोदह भागमैंसूं है सो मारणांतिक अपेक्षा है। बहुरि तीन गुणस्थानवालेकै लोकका असंख्यातवा भाग है। बहुरि तिर्यंचगतिविषैं तिर्यंचमिथ्यादृष्टिनिकै सर्वलोक है। सासादनसम्यग्दृष्टिनिकै लोककै असंख्यातवा भाग है। असंयतसम्यग्दृष्टि संयतासंयतनिकै लोकका असंख्यातवा भाग है। अर चोदह भागमैंसूं छह भाग कछु घाटि मारणांतिक अपेक्षा है। बहुरि मनुष्यगतिविषैं मिथ्यादृष्टि मनुष्यलोकका असंख्यातवा भाग स्पर्शै है। अर मारणांतिक अपेक्षा सर्वलोक स्पर्शै है। सासादनसम्यग्दृष्टि लोकका असंख्यातवा भाग स्पर्शै है। चोदह भागमैंसूं सात भाग किछू घाटि मरणांतिक अपेक्षा स्पर्शै है। सम्यङ्मिथ्यादृष्टि आदि अयोगकेवलीपर्यंतनिकै क्षेत्रवत् स्पर्शन है। देवगतिविषैं देव मिथ्यादृष्टि सासादनसम्यग्दृष्टि लोकका असंख्यातवा भाग स्पर्शैं हैं। अर चौदह भागमैंसूं आठ भाग नव भाग देशोन परस्थानविहार अपेक्षा तीसरी पृथिवीताईं गमन मारणातिक अपेक्षा लोकके अग्रभागविषैं उपजै तब स्पर्शैं। सम्यङ्मिथ्यादृष्टि असंयतसम्यग्दृष्टि लोकका असंख्यातवा भाग स्पर्शैं। चौदह भागमैंसूं आठ भाग

परस्थानविहार अपेक्षा स्पर्शै किछू घाटि ॥

इंद्रियनिके अनुवादकरि मिथ्यादृष्टि एकेंद्रिय सर्वलोक स्पर्शै । विकलत्रय लोकका असंख्यातवा भाग स्पर्शै । मारणांतिक अपेक्षा सर्वलोक स्पर्शै । पंचेंद्रियविषैं मिथ्यादृष्टि लोकका असंख्यातवा भाग स्पर्शै । परस्थानविहार अपेक्षा चौदह भागमैंसूं आठ भाग देशोन मारणांतिक अपेक्षा सर्वलोक स्पर्शै। बहुरि सासादन आदि सर्वगुणस्थानवर्तीकै गुणस्थानवत् स्पर्शन है ॥

कायके अनुवादकरि स्थावरकायिक तौ सर्वलोक स्पर्शै है त्रसकायिकनिकै पंचेंद्रियवत् स्पर्शन है॥

योगके अनुवादकरि वचनमनोयोगीनिकै मिथ्यादृष्टिनिकै लोकका असंख्यातवा भाग स्पर्शै है । अर चौदह भागमैंसूं आठ भाग देशोन है । अर सर्वलोकभी है । अर सासादनसम्यग्दृष्टि आदि क्षीणकषायपर्यंतनिकै गुणस्थानवत् स्पर्शन है। सयोगकेवलीनिकै लोकका असंख्यातवा भाग है। काययोगीनिकै मिथ्यादृष्टि आदि सयोगकेवलीपर्यंतनिकै अर अयोगकेवलीनिकै गुणस्थानवत् स्पर्शन है ॥

वेदके अनुवादकरि स्त्रीपुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि लोककै असंख्यातवा भाग स्पर्शै है। अर चौदह भागमैंसूं आठ भाग नव भाग देशोन स्पर्शै है। अथवा सर्वलोकभी स्पर्शै है। सासादनसम्यग्दृष्टि

लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्शै है । अर चौदा भागमैंसूं आठ भाग नव भाग देशोन स्पर्शै है। सम्यङ्मिथ्यादृष्टि आदि अनिवृत्तिबादरसांपरायपर्यंतनिकै गुणस्थानवत् स्पर्शन है । नपुंसक वेदविषैं मिथ्यादृष्टि सासादनसम्यग्दृष्टीनिकै गुणस्थानवत् स्पर्शन है । सम्यङ्मिथ्यादृष्टीनिकै लोकका असंख्यातवां भाग है। असंयतसम्यग्दृष्टि संयतासंयत लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्शै है अर चौदह भागमैंसूं छह भाग देशोन मारणांतिक अपेक्षा स्पर्शै है। प्रमत्तसंयत आदि अनिवृत्तिबादरसांपरायपर्यंतवाले अर वेदरहितनिकै गुणस्थानवत् स्पर्शन है ॥

कषायकै अनुवादकरि च्यारि कषायवालेनिकै अर कषायरहितनिकै गुणस्थानवत् स्पर्शन है। ज्ञानके अनुवादकरि मति अज्ञान श्रुतअज्ञानवाले मिथ्यादृष्टि सासादनसम्यग्दृष्टिनिकै गुणस्थानवत् स्पर्शन है। विभंगज्ञानीकै मिथ्यादृष्टीनिकै असंख्यातवां भाग है । अर चोदह भागमैंसूं आठ भाग देशोन हैअर सर्वलोकभी है । सासादनसम्यग्दृष्टीनिकै गुणस्थानवत स्पर्शन है। मति श्रुत अवधि मनःपर्यय केवलज्ञानीनिकै गुणस्थानवत् स्पर्शन है ॥

सँयमके अनुवादकरि सर्वसंयमीनिकै अर संयतासंयतनिकै अर असंयतनिकै गुणस्थानवत् स्पर्शन है ॥

दर्शनके अनुवादकरि चक्षुर्दर्शनवाले मिथ्यादृष्टि आदि क्षीणकषायपर्यंतनिकै पंचेंद्रियवत् स्पर्शन है । अचक्षुर्दर्शनवालेनिके मिथ्यादृष्टि आदि क्षीणकषायपर्यंतनिकै अवधिदर्शन केवलदर्शनवालेनिकै गुणस्थानवत् स्पर्शन है ॥

लेश्याके अनुवादकरि कृष्ण-नील-कापोतलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि सर्वलोक स्पर्शै हैं । सासादनसम्यग्दृष्टि लोकका असंख्यातवा भाग स्पर्शै हैं । अर पांच भाग च्यारि भाग देशोन चौदह भागमैंसूं स्पर्शै हैं । इहां कोई पूछै है, जो, बारह भाग क्यों न कहे? ताका समाधान— जो, नरकमैं अवस्थितलेश्या है । छठी पृथ्वीवाला मारणांतिक करै सो मध्यलोकमैं आवै पांच राजू स्पर्शै । अर जिनिके मतमैं सासादनवाला एकेंद्रियविषैं नाही उपजै, तिनिके मतकी अपेक्षा बारह भाग नांही कहे हैं । अर सम्यग्मिथ्यादृष्टि असंयतसम्यग्दृष्टि लोककै असंख्यातवां भाग स्पर्शै है । पीतलेश्यावाला मिथ्यादृष्टि सासादनसम्यग्दृष्टि लोकका असंख्यातवां भाग अर चौदह भागमैंसूं आठ भाग नव भाग देशोन स्पर्शै है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि असंयतसम्यग्दृष्टि लोकका असंख्यातवा भाग अर चौदह भागमैंसूं आठ भाग देशोन स्पर्शै है । संयतासंयत लोकका असंख्यातवा भाग अर मारणांतिक अपेक्षा प्रथमस्वर्गका ड्योढ राजूताई स्पर्शै । तातैं अध्यर्धदेशोन चौदह भागमैंसूं

कह्या। अर प्रमत्त अप्रमत्त संयत लोकका असंख्यातवा भाग स्पर्शै। पद्मलेश्यावाला मिथ्यादृष्टि आदि असंयतसम्यग्दृष्टिपर्यंत लोकका असंख्यातवा भाग स्पर्शै। अर आठ भाग देशोन चौदहमैंसूं अर संयतासंयत लोकका असंख्यातवा भाग अर चौदह भागमैंसूं पांच भाग देशोन स्पर्शै। प्रमत्त अप्रमत्त संयत लोकका असंख्यातवा भाग स्पर्शै। शुक्ललेश्यावाला मिथ्यादृष्टि आदि संयतासंयतपर्यंत लोकका असंख्यातवा भाग अर चौदह भागमैंसूं छह भाग देशोन स्पर्शै। प्रमत्त आदि सयोगकेवलीपर्यंतनिकै अर लेश्यारहितनिकै गुणस्थानवत् स्पर्शन है ॥

भव्यके अनुवादकरि भव्यनिकै मिथ्यादृष्टि आदि अयोगकेवलीपर्यंतनिकै गुणस्थानवत् स्पर्शन है। अभव्य सर्वलोक स्पर्शै है ॥

सम्यक्तके अनुवादकरि क्षायिकसम्यग्दृष्टीनिके असंयतसम्यग्दृष्टि आदि अयोगकेवलीपर्यंतनिके गुणस्थानवत् स्पर्शन है। विशेष यहु, जो, संयतासंयतनिका लोकका असंख्यातवा भागही है। क्षायोपशमिकसम्यग्दृष्टिनिका गुणस्थानवत् स्पर्शन है। औपशमिकसम्यक्त्ववालेनिका असंयतसम्यग्दृष्टीनिका गुणस्थानवत्। अन्यका लोकका असंख्यातवा भाग स्पर्शन है। सासादनसम्यग्दृष्टि सम्यग्मिथ्यादृष्टीनिका गुणस्थानवत् स्पर्शन है ॥

संज्ञीके अनुवादकरि संज्ञीनिका चक्षुर्दर्शनिवत् । असंज्ञी सर्वलोक स्पर्शै हैं । तिनि दोऊनिकरि रहितका गुणस्थानवत् स्पर्शन है ॥

आहारकके अनुवादकरि आहारकनिका मिथ्यादृष्टि आदि क्षीणकषायपर्यंतनिका गुणस्थानवत् स्पर्शन है । सयोगकेवलीनिका लोकका असंख्यातवा भाग है । अनाहारकविषैं मिथ्यादृष्टि सर्वलोक स्पर्शै है । सासादनसम्यग्दृष्टि लोकका असंख्यातवा भाग अर चौदा भागमैंसूं ग्यारह भाग देशोन स्पर्शै है । सो छठी पृथिवीतैं मध्यलोकमैं उपजै, ताकै उत्पाद अपेक्षा तौ पांच राजू, अर अच्युततैं मध्यलोकमैं आय उपजै, ताकै उत्पाद अपेक्षा छह ऐसैं ग्यारह राजू कहे मारणांतिक अपेक्षा बारह राजू होय है । परंतु मारणांतिकमैं अनाहारक नांही । तातैं उत्पाद अपेक्षा ग्यारह है । असंयतसम्यग्दृष्टि लोकका असंख्यातवा भाग स्पर्शै है । अर चोदह भागमैंसूं छह भाग देशोन स्पर्शै है । सयोगकेवली लोकका असंख्यातवा भाग अर सर्वलोक स्पर्शै है । अयोगकेवलीनिका लोकका असंख्यातवा भाग स्पर्शन है । ऐसैं स्पर्शनका व्याख्यान कीया ॥

आगै कालका निरूपण करिये हैं । सो दोय प्रकार है । सामान्यकरि गुणस्थानविषैं विशेषकरि मार्गणानिविषैं । तहां सामान्यकरि मिथ्यादृष्टीका नानाजीवापेक्षा सर्वकाल है । एक

जीवकी अपेक्षा तीन भंग हैं । अभव्यकै तौ अनादि अनंत है । भव्यकै अनादि सांत है, सादि सांत है । तहां सादि सांत जघन्य तौ अंतमुहूर्त है । उत्कृष्ट अर्द्धपुद्गलपरिवर्तन कछू घाटि है । बहुरि सासादनसम्यग्दृष्टीका नानाजीवकी अपेक्षा जघन्य तौ एकसमय है । उत्कृष्ट पल्योपमकै असंख्यातवै भाग है । एकजीव अपेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह आवली है । सम्यङ्मिथ्यादृष्टीका नानाजीवकी अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपमकै असंख्यातवै भाग है । एक जीव अपेक्षा जघन्यभी उत्कृष्टभी अंतर्मुहूर्त है । असंयत सम्यग्दृष्टीको नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है । एकजीवकी अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तेतीस सागर कछू अधिक । बहुरि संयतासंयतको नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है । एकजीवकी अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कोडिपूर्व कछू घाटि । प्रमत्त अप्रमत्त संयतको नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है । एकजीवकी अपेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त है । बहुरि च्यारि उपशमश्रेणीवाला गुणस्थाननिका नानाजीवकी अपेक्षा अर एक जीवकी अपेक्षा जघन्य तौ एकसमय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त है । बहुरि च्यारि क्षपकश्रेणीवाला आठवां नवमां दशमां बारहमा गुणस्थानका बहुरि अयोगकेवलीका नानाजीवकी अपेक्षा अर एकजीवकी अपेक्षा जघन्यभी अरु उत्कृष्टभी अंतर्मुहूर्त है । बहुरि सयोगकेवलीनिका नानाजीवकी

अपेक्षा तौ सर्वकाल है। एकजीवकी अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट कोडिपूर्व कछु घाटि है॥

विशेषकरि गतिके अनुवादकरि नरकगतिविषैं नारकीनिकै सातूंही पृथ्वीविषैं मिथ्यादृष्टिका नानाजीवकी अपेक्षा तौ सर्वकाल है। एकजीव अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट एक सागर, तीन सागर, सात सागर, दश सागर, सतरा सागर, बाईस सागर, तेतीस सागर, यथासंख्य अनुक्रमतैं आयुपरिमाण है। सासादनसम्यग्दृष्टि अर सम्यङ्मिथ्यादृष्टीका गुणस्थानवत् काल है। असंयतसम्यग्दृष्टिका नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है। एकजीव अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट आयुःप्रमाण किछु घाटि। तिर्यग्गतिविषैं तिर्यंचनिकै नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है। एकजीव अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंतकाल है। सो असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन है। सासादनसम्यग्दृष्टि अर सम्यग्मिथ्यादृष्टीका अरु संयतासंयतका गुणस्थानवत् काल है। असंयतसम्यग्दृष्टीका नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है। एकजीवकी अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्य है। मनुष्यगतिविषैं मनुष्यनिकै मिथ्यादृष्टिका नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है। एक जीव अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्य पृथक्त्व कोडी पूर्व अधिक है। सासादनसम्यग्दृष्टीका नानाजीवकी अपेक्षा जघन्य एकसमय उत्कृष्ट अंतर्मूहूर्त है। एक जीव अपेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह आवली है।

सम्यग्मिथ्यादृष्टीका नानाजीवकी अपेक्षा एक जीवकी अपेक्षा जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त काल है । असंयतसम्यग्दृष्टीका नानाकीवकी अपेक्षा सर्वकाल है। एकजीव अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त है । उत्कृष्ट तीन पल्य किछु अधिक है । बाकीके गुणस्थाननिका गुणस्थानवत् काल है ॥ देवगतिविषैं देवनिके मिथ्यादृष्टीका नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है एकजीवप्रति जघन्य अंतर्मुहूर्त है । उत्कृष्ट इकतीस सागरोपम है । सासादनसम्यग्दृष्टीका अर सम्यग्मिथ्यादृष्टीका गुणस्थानवत् काल है । असंयतसम्यग्दृष्टीका नानाजीव अपेक्षा सर्वकाल है । एक जीव अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त है ।उत्कृष्ट तेतीस सागरोपम है ॥

इंद्रियके अनुवादकरि एकेंद्रियनिका नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है । एकजीवकी अपेक्षा जघन्य क्षुद्रभव उत्कृष्ट अनंत काल सो असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन है । विकलत्रयका नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है । एक जीव अपेक्षा जघन्य क्षुद्रभव उत्कृष्ट संख्यात हजार वर्ष है । पंचेंद्रियविषैं मिथ्यादृष्टीका नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है । एकजीवकी अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट हजार सागर पृथक्त्व कोडी पूर्व अधिक है । सासादन आदि सर्व गुणस्थाननिका गुणस्थानवत् काल है ॥

कायके अनुवादकरि पृथिवी अप् तेज वायुकायिकका नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है । एकजीव अपेक्षा जघन्य क्षुद्रभव उत्कृष्ट असंख्यात लोकपरिमाण काल है । वनस्पतिकायिकका

एकेंद्रियवत् काल है । त्रसकायिकनिविषैं मिथ्यादृष्टिका नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है । एकजीवकी अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त है । उत्कृष्ट दोय हजार सागर पृथक्त्व कोडी पूर्व अधिक है। बाकीके गुणस्थाननिका पंचेंद्रियवत् काल है ॥

योगके अनुवादकरि वचनमनोयोगीनिविषैं मिथ्यादृष्टि असंयतसम्यग्दृष्टि संयतासंयत प्रमत्त अप्रमत्त संयत सयोगकेवलीनिका नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है । एकजीवकी अपेक्षा जघन्य एकसमय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त सासादनसम्यग्दृष्टीका गुणस्थानवत् सम्यग्मिथ्यादृष्टीका नानाजीवकी अपेक्षा जघन्य एकसमय उत्कृष्ट पल्योपमकै असंख्यातवै भाग काल है। एकजीवकी अपेक्षा जघन्य तौ एक समय है । उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त है । च्यारि उपशमकनिका च्यारि क्षपकनिका नानाजीवकी अपेक्षा एकजीवकी अपेक्षा जघन्य एकसमय है । उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त काल है । काययोगीनिविषैं मिथ्यादृष्टीका नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है। एकजीवकी अपेक्षा जघन्य एकसमय है। उत्कृष्ट अनंतकाल है। सो असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन है । अवशेष गुणस्थाननिका मनोयोगिवत् काल है। अयोगीनिका गुणस्थानवत् काल है ॥

वेदके अनुवादकरि स्त्रीवेदविषैं मिथ्यादृष्टिका नानाजीव अपेक्षा सर्वकाल है। एकजीव अपेक्षा

जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पृथक्त्व सौ पल्य काल है। सासादनसम्यग्दृष्टि आदि अनिवृत्तिबादरसांपरायपर्यंतनिका गुणस्थानवत् काल है । तहां विशेष यहु— जो, असंयतसम्यग्दृष्टिका नानाजीव अपेक्षा सर्वकाल है। एकजीवकी अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त है उत्कृष्ट पचावनपल्य कछु घाटि काल है। पुरुषवेदविषैं मिथ्यादृष्टिका नानाजीव अपेक्षा सर्वकाल है। एकजीव अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट पृथक्त्व सौ सागर है। सासादन सम्यग्दृष्टि आदि अनिवृत्तिबादरसांपरायपर्यंतनिका गुणस्थानवत् काल है। नपुंसकवेदविषैं मिथ्यादृष्टिका नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है। एकजीव अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट अनंतकाल है सो असंख्यातपुद्गलपरिवर्तन है। सासादनसम्यग्दृष्टि आदि अनिवृत्तिबादरसांपरायपर्यंतनिका गुणस्थानवत् है। विशेष यहु है जो, असंयतसम्यग्दृष्टिका नानाजीव अपेक्षा सर्वकाल है। एक जीव अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट तेतीस सागर कछु घाटि काल है। वेदरहितनिका गुणस्थानवत् काल है॥

कषायके अनुवादकरि च्यारि कषायनिविषैं मिथ्यादृष्टि आदि अप्रमत्तपर्यंतनिका मनोयोगिवत् काल है। दोय उपशमश्रेणीका दोय क्षपकश्रेणीका गुणस्थाननिका अर केवललोभका अर कषायरहितनिका गुणस्थानवत् काल है॥

ज्ञानके अनुवादकरि मति अज्ञान श्रुतअज्ञानवाले मिथ्यादृष्टि सासादनसम्यग्दृष्टीनिका गुणस्थानवत् काल है। विभंगज्ञानीविषैं मिथ्यादृष्टिका नानाजीव अपेक्षा सर्वकाल है। एकजीव अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट तेतीस सागर किछु घाटि है। सासादनसम्यग्दृष्टीका गुणस्थानवत् काल है। मति-श्रुत-अवधि-मनःपर्ययज्ञानीनिका अर केवलज्ञानीनिका गुणस्थानवत् काल है॥

संयमके अनुवादकरि सामायिक च्छेदोपस्थापन परिहारविशुद्धि सूक्ष्मसांपराय यथाख्यात शुद्धिसंयतनिका अर संयतासंयतनिका अर असंयत च्यारि गुणस्थाननिका गुणस्थानवत् काल है॥

दर्शनके अनुवादकरि चक्षुर्दर्शनवालेनिविषैं मिथ्यादृष्टिका नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है। एक जीव अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त है उत्कृष्ट दोय हजार सागर है। सासादनसम्यग्दृष्टिनिका क्षीणकषायपर्यंतनिका गुणस्थानवत् काल है। अचक्षुर्दर्शनवालेनिविषैं मिथ्यादृष्टि आदि क्षीणकषायपर्यंतनिका गुणस्थानवत् काल है। अवधि केवलदर्शनवालेनिका अवधि केवलज्ञानिवत् काल है॥

लेश्याके अनुवादकरि कृष्णनीलकापोतलेश्याविषैं मिथ्यादृष्टिका नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है। एकजीवकी अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट तेतीस सागर सतरा सागर सात सागर कछु अधिक है, सो नरक अपेक्षा है। सासादनकौ अर सम्यग्मिथ्यादृष्टिकौ गुणस्थानवत् काल है।

असंयतसम्यग्दृष्टिकौ नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है। एकजीवकी अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट तेतीस सागर सतरा सागर सात सागर कछु घाटि है। पीतपद्मलेश्याविषैं मिथ्यादृष्टि असंयतसम्यग्दृष्टिको नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है। एकजीवकी अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट दोय सागर अठारह सागर किछु अधिक है सो स्वर्ग अपेक्षा है। सासादन सम्यग्मिथ्यादृष्टिको गुणस्थानवत् काल है। संयतासंयत प्रमत्त अप्रमत्त संयतनिको नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है। एकजीव अपेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त है। शुक्ललेश्याविषैं मिथ्यादृष्टिको नानाजीव अपेक्षा सर्वकाल है। एकजीव अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट इकतीस सागर किछु अधिक है। सासादनसम्यग्दृष्टि आदि सयोगकेवलीपर्यंतनिका अर लेश्यारहितका गुणस्थानवत् काल है। विशेष यहु जो, संयतासंयतका नानाजीव अपेक्षा सर्वकाल है। एकजीव अपेक्षा जघन्य एकसमय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त है॥

भव्यके अनुवादकरि भव्यविषैं मिथ्यादृष्टिका नानाजीव अपेक्षा सर्वकाल है। एकजीव अपेक्षा दोय भंग हैं। अनादि सांत। तहां सादि सांत जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट अर्धपुद्गलपरिवर्तन कछु घाटि है। सासादन आदि केवलीपर्यंतनिका गुणस्थानवत् काल है। अभव्यनिका अनादि अनंत काल है ॥

सम्यक्त्वके अनुवादकरि क्षायिकसम्यग्दृष्टीनिका असंयतसम्यग्दृष्टि आदि अयोगकेवलीपर्यंतानिका गुणस्थानवत् काल है। क्षायोपशमिक सम्यग्दृष्टीनिका च्यार्यौं गुणस्थाननिका गुणस्थानवत् काल है। औपशमिक सम्यक्त्वविषैं असंयतसम्यग्दृष्टि संयतासंयत इनि दोऊनिका नानाजीवकी अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट पल्योपमकै असंख्यातवा भाग है। एकजीव अपेक्षा जघन्यभी उत्कृष्टभी अंतर्मुहूर्त है। प्रमत्त अप्रमत्त संयतका अर च्यारि उपशमश्रेणीवालेका नानाजीवकी अपेक्षा एकजीवकी अपेक्षा जघन्य तौ एक समय है उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त है। सासादनसम्यग्दृष्टि सम्यङ्मिथ्यादृष्टिनिका गुणस्थानवत् काल है ॥

संज्ञीके अनुवादकरि मिथ्यादृष्टि आदि अनिवृत्तिबादरपर्यंतनिका पुरुषवेदवत् काल है। अवशेषका गुणस्थानवत् काल है। असंज्ञीनिका मिथ्यादृष्टिका नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ क्षुद्रभवमात्र है। सासकै अठारहै भाग अर उत्कृष्ट अनंतकाल है। सो असंख्यातपुद्गलपरिवर्तन है। दोऊ नामकरि रहितनिका गुणस्थानवत् काल है ॥

आहारकका अनुवादकरि आहारकविषैं मिथ्यादृष्टिका नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है। एकजीवअपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है उत्कृष्ट अंगुलकै असंख्यातवा भाग है सो असंख्यातासंख्यात

उत्सर्पिणी अवसर्पिणी परिमाण है । अंगुलिकै प्रदेश अर इनिके समय समान हैं । अवशेषनिका गुणस्थानवत् काल है। अनाहारकविषैं मिथ्यादृष्टिका नानाजीवकी अपेक्षा सर्वकाल है। एकजीवकी अपेक्षा जघन्य तौ एकसमय है। उत्कृष्ट तीन समय है । सासादनसम्यग्दृष्टि असंयतसम्यग्दृष्टिका नानाजीवकी अपेक्षा जघन्य एकसमय है। उत्कृष्ट आवलीकै असंख्यातवां भाग है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ एकसमय है उत्कृष्ट दोय समय है। सयोगकेवलीका नानाजीवकी अपेक्षा जघन्य तौ तीन समय है। उत्कृष्ट असंख्यातसमय है। एकजीव अपेक्षा जघन्य अर उत्कृष्ट तीन समय है। अयोगकेवलीका गुणस्थानवत् काल है। ऐसैं कालका वर्णन कीया है ॥

आगैं अंतरका निरूपण करिये हैं। तहां विवक्षित गुणकै अन्यगुण पलट न होतैं फिर तिसही गुणकी प्राप्तितैं पहलै वीचिका काल सो अंतर है । सो दोय प्रकार कहिये है । सामान्यकरि तौ गुणस्थानविषैं, विशेषकरि मार्गणाविषैं । तहां सामान्यकरि मिथ्यादृष्टिका नानाजीवकी अपेक्षा अंतर नाही है । एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है । उत्कृष्ट एकसोबत्तीस सागर देशोन कहिये किछु घाटि है। सासादनसम्यग्दृष्टिका अंतर नानाजीवकी अपेक्षा जघन्य तौ एक समय, उत्कृष्ट पल्यका असंख्यातवा भाग है । एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ पल्यका असंख्यातवा भाग,

उत्कृष्ट अर्द्धपुद्गलपरिवर्तन देशोन है। सम्यग्मिथ्यादृष्टिका अंतर नानाजीवकी अपेक्षा सासादनवत् है। एकजीव अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट अर्द्धपुद्गलपरिवर्तन देशोन है। असंयतसम्यग्दृष्टि आदि अप्रमत्तसंयतपर्यंतनिका नानाजीवकी अपेक्षा तौ अंतर नाही है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट अर्द्धपुद्गलपरिवर्तन देशोन है। च्यारि उपशमश्रेणीवालानिका नानाजीवकी अपेक्षा जघन्य तौ एकसमय है। उत्कृष्ट पृथक्त्व वर्ष है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट अर्द्धपुद्गलपरिवर्तन देशोन है। अर च्यारि क्षपकश्रेणीवालानिका अर अयोगकेवलीनिका नानाजीव अपेक्षा जघन्य तौ एकसमय, उत्कृष्ट छह महीना है। एकजीव अपेक्षा अंतर नांही है। अर सयोगकेवलीका नानाजीव अपेक्षा अर एकजीव अपेक्षा अंतर नांही है॥

विशेषकरि गतिके अनुवादकरि नरकगतिविषैं नारकीनिका सात पृथिवीविषैं मिथ्यादृष्टि असंयतसम्यग्दृष्टिका नानाजीव अपेक्षा अंतर नाही। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट एक सागर तीन सागर सात सागर दश सागर सतरा सागर बाईस सागर तेतीस सागर देशोन है। सासादनसम्यग्दृष्टि सम्यग्मिथ्यादृष्टिका नानाजीवकी अपेक्षा जघन्य तौ एकसमय है। उत्कृष्ट पल्यका असंख्यातवा भाग है। एकजीव अपेक्षा जघन्य पल्यका असंख्यातवा भाग अर अंतर्मुहूर्त

है। उत्कृष्ट एक तीन सात दश सतरा बाईस तेतीस सागर देशोन है । तिर्यंच गतिविषैं तिर्यंचनिकै मिथ्यादृष्टीका नानाजीवकी अपेक्षा अंतर नाही है। एकजीव अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त है । उत्कृष्ट तीन पल्य देशोन है। सासादनसम्यग्दृष्टि आदि च्यारीनिका गुणस्थानवत् अंतर है। मनुष्यगतिविषैं मनुष्यनिकै मिथ्यादृष्टिका तिर्यंचवत्। सासादनसम्यग्दृष्टीका अर सम्यग्मिथ्यादृष्टीका नानाजीवकी अपेक्षा गुणस्थानवत् अंतर है । एकजीव अपेक्षा जघन्य पल्योपमका असंख्यातवा भाग अर अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट तीन पल्य पृथक्त्व कोडिपूर्व अधिक है । असंयतसम्यग्दृष्टिका नानाजीवकी अपेक्षा अंतर नांही है । एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है । उत्कृष्ट तीन पल्य पृथक्त्व कोडिपूर्व अधिक है । संयतासंयत प्रमत्तअप्रमत्त संयतका नानाजीवकी अपेक्षा अंतर नांही है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट पृथक्त्व कोडिपूर्व है। च्यारि उपशमश्रेणीवालेनिका नानाजीवकी अपेक्षा गुणस्थानवत् एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट पृथक्त्वकोडिपूर्व है। अवशेषनिका गुणस्थानवत् अंतर है । देवगतिविषैं देवनिकै मिथ्यादृष्टि असंयतसम्यग्दृष्टिका नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट इकतीस सागर देशोन है। सासादनसम्यग्दृष्टि सम्यग्मिथ्यादृष्टिका नानाजीवकी अपेक्षा गुणस्थानवत् है। एकजीव

अपेक्षा जघन्य पल्यका असंख्यातवा भाग अर अंतर्मुहूर्त है, उत्कृष्ट इकतीस सागर है, सो देशोन है॥

इंद्रियके अनुवादकरि एकेंद्रियनिका नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है । एकजीवकी अपेक्षा जघन्य क्षुद्रभव है। उत्कृष्ट दोय हजार सागर पृथक्त्वकोडिपूर्व अधिक है। विकलत्रयका नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है । एकजीव अपेक्षा जघन्य क्षुद्रभव है । उत्कृष्ट अनंतकाल है । सो असंख्यातपुद्गलपरिवर्तन है । ऐसैं इंद्रियप्रति अंतर कह्या । गुणस्थान अपेक्षा एक मिथ्यात्वही है तातें अंतर नांही है। पंचेंद्रियविषैं मिथ्यादृष्टिका अंतर गुणस्थानवत् । सासादनसम्यग्दृष्टिका अर सम्यग्मिथ्यादृष्टिका नानाजीवकी अपेक्षा गुणस्थानवत् । एकजीवकी अपेक्षा जघन्य पल्यका असंख्यातवा भाग अर अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट हजार सागर पृथक्त्वकोडिपूर्व अधिक है। असंयतसम्यग्दृष्टि आदि अप्रमत्तपर्यंतनिका नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है । एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट हजार सागर पृथक्त्वकोडिपूर्व अधिक है । च्यारि उपशमश्रेणीवालानिका नानाजीवकी अपेक्षा गुणस्थानवत् अंतर है । एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट हजार सागर पृथक्त्वकोडिपूर्व अधिक है। अवशेषनिका गुणस्थानवत् अंतर है ॥

कायके अनुवादकरि पृथिवी अप तेज वायु कायिकनिकै नानाजीव अपेक्षा अंतर नाही है ।

एकजीव अपेक्षा जघन्य क्षुद्रभव उत्कृष्ट अनंतकाल है सो असंख्यातपुद्गलपरिवर्तन है। वनस्पतिकायिकनिकै नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है। एकजीव अपेक्षा जघन्य क्षुद्रभव उत्कृष्ट असंख्यातलोक। इहां असंख्यातलोककै प्रदेश हैं ते ते कालके समय ग्रहण है। ऐसैं काय अपेक्षा अंतर कह्या॥ गुणस्थान अपेक्षा अंतर नांही है। त्रसकायिकविपैं मिथ्यादृष्टिका गुणस्थानवत् अंतर है। सासादनसम्यग्दृष्टि अर सम्यग्मिथ्यादृष्टिका नानाजीवकी अपेक्षा गुणस्थानवत्। एकजीव अपेक्षा जघन्य पल्यका असंख्यातवा भाग है। अर अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट दोय हजार सागर पृथक्त्वकोडिपूर्व अधिक है। असंयतसम्यग्दृष्टि आदि अप्रमत्तपर्यंतनिका नानाजीवकी अपेक्षा अंतर नांही है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है, उत्कृष्ट दोय हजार सागर पृथक्त्वकोडिपूर्व अधिक है। च्यारि उपशमश्रेणीवालाका नानाजीवकी अपेक्षा गुणस्थानवत् अंतर है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट दोय हजार सागर पृथक्त्वकोडिपूर्व अधिक है। अवशेषानिका पंचेंद्रियवत् अंतर है॥

योगके अनुवादकरि काय वचन मन योगिनिकै मिथ्यादृष्टि आदि असंयतसम्यग्दृष्टि संयतासंयत प्रमत्त अप्रमत्तसंयत सयोगकेवलीनिकै नानाजीवकी अपेक्षा एकजीवकी अपेक्षा अंतर

नांही है । सासादनसम्यग्दृष्टि सम्यग्मिथ्यादृष्टिनिका नानाजीवकी अपेक्षा गुणस्थानवत् अंतर है। एकजीवकी अपेक्षा अंतर नांही है। च्यारि उपशमश्रेणीवालेनिका नानाजीवकी अपेक्षा गुणस्थानवत् अंतर है । एकजीव अपेक्षा अतर नांही है । च्यारि क्षपकवालेनिकै अर अयोगकेवलीनिकै गुणस्थानवत् अंतर है। एकजीव अपेक्षा अंतर नांही है॥

वेदके अनुवादकरि स्त्रीवेदविषैं मिथ्यादृष्टिकै नानाजीवकी अपेक्षा अंतर नांही है । एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है । उत्कृष्ट पंचावन पल्य किछु घाटि है । सासादनसम्यग्दृष्टि अर सम्यग्मिथ्यादृष्टिका नानाजीव अपेक्षा गुणस्थानवत् है । एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ पल्यका असंख्यातवा भाग है अर अंतर्मुहूर्त है । उत्कृष्ट पृथक्त्व सौपल्य है । असंयतसम्यग्दृष्टि आदि अप्रमत्तपर्यंतनिका नानाजीवकी अपेक्षा अंतर नांही है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट पृथक्त्व सौपल्य है । दोय उपशमश्रेणीवालाका नानाजीवकी अपेक्षा गुणस्थानवत् । एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है । उत्कृष्ट पृथक्त्व सौपल्य है । दोय क्षपकश्रेणीवालाका नानाजीवकी अपेक्षा जघन्य एकसमय उत्कृष्ट पृथक्त्व वर्ष है । एकजीव अपेक्षा अंतर नांही है । पुरुषवेदविषैं मिथ्यादृष्टिका गुणस्थानवत्। सासादनसम्यग्दृष्टि अर सम्यग्मिथ्यादृष्टिका नानाजीव

अपेक्षा गुणस्थानवत् एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ पल्योपमकै असंख्यातवा भाग अर अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट पृथक्त्व सौ सागर है । असंयतसम्यग्दृष्टि आदि अप्रमत्तसंयतपर्यंतनिका नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है । एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है । उत्कृष्ट पृथक्त्व सौ सागर है । दोय उपशमश्रेणीवालानिका नानाजीव अपेक्षा गुणस्थानवत्। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट पृथक्त्व सौ सागर है। दोय क्षपकश्रेणीवालानिका नानाजीवकी अपेक्षा जघन्य एकसमय है। उत्कृष्ट एकवर्ष कछु अधिक है । एकजीव अपेक्षा अंतर नांही है । नपुंसकवेदविपैं मिथ्यादृष्टिका नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है । एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट तेतीस सागर देशोन है । सासादनसम्यग्दृष्टि आदि अनिवृत्ति उपशमपर्यंतनिका गुणस्थानवत् अंतर है । अर दोय क्षपकश्रेणीवालानिका स्त्रीवेदवत् है। वेदरहित अनिवृत्ति बादरसांपराय उपशमक सूक्ष्मसांपराय उपशमकका नानाजीव अपेक्षा गुणस्थानवत् है । एकजीव अपेक्षा जघन्य अरु उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त है। उपशांतकपायका नानाजीव अपेक्षा गुणस्थानवत् है। एकजीवकी अपेक्षा अंतर नांही है । अवशेप गुणस्थानवत् अंतर है ॥

कपायकै अनुवादकरि क्रोध मान माया लोभ कपायकै मिथ्यादृष्टि आदि अनिवृत्ति

उपशमश्रेणीवालाताईं मनोयोगीवत् अंतर है । अर दोय क्षपकश्रेणीवालानिका नानाजीव अपेक्षा जघन्य एकसमय उत्कृष्ट एकवर्ष किछु अधिक । केवललोभसूक्ष्मसांपरायोपशमकका नानाजीव अपेक्षा गुणस्थानवत् । एकजीव अपेक्षा अंतर नांही है । सूक्ष्मसांपराय क्षपकश्रेणीवालाका गुणस्थानवत् । कषायरहित च्यारि गुणस्थाननिविषैं उपशांतकषायका नानाजीव अपेक्षा गुणस्थानवत् । एकजीव अपेक्षा अंतर नांही । अवशेष तीन गुणस्थाननिका गुणस्थानवत् अंतर है ॥

ज्ञानके अनुवादकरि मतिअज्ञान श्रुतअज्ञान विभंगज्ञानवालेनिविषैं मिथ्यादृष्टिका नानाजीव अपेक्षा एकजीव अपेक्षा अंतर नांही है । सासादनसम्यग्दृष्टिका नानाजीवकी अपेक्षा गुणस्थानवत् । एकजीव अपेक्षा अंतर नांही है । मति-श्रुत-अवधिज्ञानवालेनिविषैं असंयतसम्यग्दृष्टीका नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है । एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है । उत्कृष्ट कोडिपूर्व देशोन है । संयतासंयतका नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है । एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है । उत्कृष्ट छयासठि सागरोपम किछु अधिक है । प्रमत्त अप्रमत्तसंयतका नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है । एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तेतीस सागरोपम किछु अधिक है । च्यारि उपशमश्रेणीवालेनिका नानाजीवकी अपेक्षा गुणस्थानवत् है । एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ

अंतर्मुहूर्त है । उत्कृष्ट छयासठी सागरोपम कछु अधिक है । च्यारि क्षपकश्रेणीवालानिका गुणस्थानवत् अंतर है। तहां विशेष यहु– अवधिज्ञानीनिका नानाजीव अपेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पृथक्त्व वर्ष । एकजीव अपेक्षा अंतर नांही है । मनःपर्ययज्ञानीनिका प्रमत्त अप्रमत्त-संयमीनिका नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है । एकजीव अपेक्षा जघन्यभी उत्कृष्टभी अंतर्मुहूर्त है । च्यारि उपशमश्रेणीवालेनिका नानाजीव अपेक्षा गुणस्थानवत् । एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है । उत्कृष्ट कोडिपूर्व किछु घाटि है । च्यारि क्षपकश्रेणीवालानिका अवधिज्ञानीवत् अंतर है । दोऊके केवलज्ञानीनिका गुणस्थानवत् अंतर है ॥

संयमके अनुवादकरि सामयिक च्छेदोपस्थापना शुद्धसंयमिविषैं प्रमत्त अप्रमत्त संयमीका नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है । एकजीव अपेक्षा जघन्यभी उत्कृष्टभी अंतर्मुहूर्त है । दोऊ उपशमश्रेणीवालाका नानाजीव अपेक्षा गुणस्थानवत् अंतर है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है । उत्कृष्ट कोडिपूर्व कछु घाटि है । दोऊ क्षपकश्रेणीवालानिका गुणस्थानवत् अंतर है । परिहारविशुद्धि संयमी प्रमत्त अप्रमत्तका नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है । एकजीव अपेक्षा जघन्यभी उत्कृष्टभी अंतर्मुहूर्त है । सूक्ष्मसांपरायसंयमविषैं उपशमश्रेणीवालाका नानाजीव

अपेक्षा गुणस्थानवत् । एकजीव अपेक्षा अंतर नांही है । क्षपकश्रेणीवाळाका गुणस्थानवत् अंतर है। यथाख्यातसंयमविषैं अकषायवत् अंतर जाननां । संयतासंयतका नानाजीव अपेक्षा एकजीव अपेक्षा अंतर नांही है। असंयतविषैं मिथ्यादृष्टिका नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट तेतीस सागर देशोन है । अवशेष तीनूं गुणस्थाननिका गुणस्थानवत् अंतर है ॥

दर्शनके अनुवादकरि चक्षुदर्शनवालेविषैं मिथ्यादृष्टिका गुणस्थानवत् अंतर है। सासादनसम्यग्दृष्टि सम्यग्मिथ्यादृष्टिका नानाजीव अपेक्षा गुणस्थानवत् है ।एकजीव अपेक्षा जघन्य पल्यकै असंख्यातवैं भाग अर अंतर्मुहूर्त है।उत्कृष्ट दोय हजार सागर कछु घाटि है। असंयतसम्यग्दृष्टि आदि अप्रमत्तसंयतपर्यंतनिका नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट दोय हजार सागर कछु घाटि है। च्यारि उपशमश्रेणीवालानिका नानाजीव अपेक्षा गुणस्थानवत् है। एकजीवकी अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट दोय हजार सागर देशोन है। च्यारि क्षपकश्रेणीवालानिका गुणस्थानवत् है।अचक्षुर्दर्शनविषैं मिथ्यादृष्टि आदि क्षीणकषायपर्यंतनिका गुणस्थानवत् है । अवधिदर्शनवालेका अवधिज्ञानीवत् है। केवलदर्शनवालेका केवलज्ञानीवत् है ॥

लेश्याके अनुवादकरि कृष्ण नील कापोत लेश्यावालेनिविषैं मिथ्यादृष्टि असंयतसम्यग्दृष्टिकै नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट तेतीस सागर सतरा सागर सात सागर कछु घाटि है। सो नारकी अपेक्षा है। सासादनसम्यग्दृष्टि सम्यङ्मिथ्यादृष्टिका नानाजीव अपेक्षा सामान्यवत् है। एकजीव अपेक्षा जघन्य पल्योपमका असंख्यातवा भाग है। अंतर्मुहूर्तभी है। उत्कृष्ट तेतीस सागर सतरा सागर सात सागर है। सो कछु घाटि है। पीतपद्मलेश्याविषैं मिथ्यादृष्टि असंयतसम्यग्दृष्टिका नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट दोय सागर अठारा सागर कछु अधिक है। सासादन सम्यग्दृष्टि सम्यग्मिथ्यादृष्टिका नानाजीव अपेक्षा गुणस्थानवत् है। एकजीव अपेक्षा जघन्य पल्यका असंख्यातवा भाग है। अर अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट दोय सागर अठारा सागर कछु अधिक है। संयतासंयत प्रमत्त अप्रमत्त संयतका नानाजीवकी अपेक्षा एकजीवकी अपेक्षा अंतर नांही है। शुक्लेश्यावालाविषैं मिथ्यादृष्टि असंयतसम्यग्दृष्टिका नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट इकतीस सागर कछु घाटि है। सासादनसम्यग्दृष्टि सम्यङ्मिथ्यादृष्टिका नानाजीव अपेक्षा अंतर गुणस्थानवत् है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ पल्यकै

असंख्यातवैं भाग है। अर अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट इकतीस सागर कछु घाटि है। संयतासंयत अर प्रमत्तसंयतका पीतलेश्यावत् है। अप्रमत्तसंयतका नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है। एकजीव अपेक्षा जघन्यभी उत्कृष्टभी अंतर्मुहूर्त है। तीन उपशमश्रेणीवालानिका नानाजीव अपेक्षा गुणस्थानवत् है। एकजीव अपेक्षा जघन्यभी उत्कृष्टभी अंतर्मुहूर्त है। उपशांत कषायका नानाजीव अपेक्षा गुणस्थानवत् है। एकजीव अपेक्षा अंतर नांही है। च्यारि क्षपकश्रेणीवालानिका अर सयोगकेवलीनिका अर लेश्यारहितका गुणस्थानवत् अंतर है॥

भव्यके अनुवादकरि भव्यविषैं मिथ्यादृष्टि आदि अयोगकेवलीपर्यंतनिका गुणस्थानवत् अंतर है। अभव्यानिका नानाजीव अपेक्षा एकजीव अपेक्षा अंतर नांही है॥

सम्यक्त्वके अनुवादकरि क्षायिक सम्यग्दृष्टिविषैं असंयतसम्यग्दृष्टीका नानाजीवके अपेक्षा अंतर नांही है। एकजीव प्रति जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट कोडिपूर्व कछु घाटि है। संयतासंयत अर प्रमत्त अप्रमत्त संयतनिका नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट तेतीस सागर कछु अधिक है। च्यारि उपशमश्रेणीवालानिका नानाजीव अपेक्षा गुणस्थानवत् है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट तेतीस

सागर कछु अधिक है। अवशेषनिका गुणस्थानवत् अंतर है। क्षायोपशमिक सम्यग्दृष्टीनिविषैं असंयतसम्यग्दृष्टीका नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट कोडिपूर्व देशोन है। संयतासंयतका नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है उत्कृष्ट छ्यासठि सागरोपम देशोन है। प्रमत्त अप्रमत्त संयतका नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट तेतीस सागर कछु अधिक है। औपशमिक सम्यग्दृष्टिनिविषैं असंयतसम्यग्दृष्टिका नानाजीवकी अपेक्षा जघन्य तौ एकसमय है। उत्कृष्ट सात राति दिन है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्टभी अंतर्मुहूर्त है। संयतासंयतका नानाजीव अपेक्षा जघन्य तौ एकसमय है। उत्कृष्ट चौदह राति दिनका अंतर है। एकजीव अपेक्षा जघन्यभी उत्कृष्टभी अंतर्मुहूर्त है। प्रमत्त अप्रमत्त संयतका नानाजीव अपेक्षा जघन्य तौ एकसमय है। उत्कृष्ट पंदरह राति दिन है। एकजीव अपेक्षा जघन्यभी उत्कृष्टभी अंतर्मुहूर्त है। तीन उपशमश्रेणीवालानिका नानाजीव अपेक्षा जघन्य तौ एकसमय है। उत्कृष्ट पृथक्त्ववर्षका अंतर है। एकजीव अपेक्षा जघन्यभी उत्कृष्टभी अंतर्मुहूर्त है। उपशांतकषायका नानाजीव अपेक्षा गुणस्थानवत् है।

एकजीव अपेक्षा अंतर नांही है। सासादनसम्यग्दृष्टि मिथ्यादृष्टिका नानाजीव अपेक्षा जघन्य तौ एकसमय है। उत्कृष्ट पल्यकै असंख्यातवैं भाग है। एकजीव अपेक्षा अंतर नांही है। मिथ्यादृष्टिका नानाजीव अपेक्षा अर एकजीव अपेक्षा अंतर नांही है ॥

संज्ञीके अनुवादकरि संज्ञीनिविषैं मिथ्यादृष्टिका गुणस्थानवत् अंतर है। सासादनसम्यग्दृष्टि सम्यग्मिथ्यादृष्टिका नानाजीव अपेक्षा गुणस्थानवत् अंतर है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ पल्यका असंख्यातवा भाग अर अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट पृथक्त्व सौ सागर है। असंयत सम्यग्दृष्टि आदि अप्रमत्तताांई नानाजीव अपेक्षा अंतर नांही है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट पृथक्त्व सौ सागर है। च्यारि उपशमश्रेणीवालेनिका नानाजीव अपेक्षा गुणस्थानवत् अंतर है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट पृथक्त्व सौ सागर है। च्यारि क्षपकश्रेणीवालेनिका गुणस्थानवत् अंतर है। असंज्ञीके नानाजीव अपेक्षा एकजीव अपेक्षा अंतर नांही है। दोऊ नामकरि रहितनिका गुणस्थानवत् अंतर है ॥

आहारके अनुवादकरि आहारकनिविषैं मिथ्यादृष्टिका गुणस्थानवत् अंतर है। सासादन-सम्यग्दृष्टि—सम्यग्मिथ्यादृष्टिका नानाजीव अपेक्षा गुणस्थानवत् अंतर है। एकजीव अपेक्षा जघन्य

तौ पल्योपमका असंख्यातवा भाग अर अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट अंगुलका असंख्यातवा भाग आकाशके प्रदेश जेते हैं तेते समय हैं। ते असंख्यातासंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काल है। असंयतसम्यग्दृष्टि आदि अप्रमत्तगुणस्थानपर्यंत नानाजीवकी अपेक्षा अंतर नांही है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट अंगुलका असंख्यातवा भाग है। ते असंख्यातासंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणीके समयप्रमाण हैं। च्यारि उपशमश्रेणीवालानिका नानाजीवकी अपेक्षा गुणस्थानवत् अंतर है। एकजीव अपेक्षा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्ट अंगुलका असंख्यातवा भाग है। सो असंख्यातासंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणीके समयप्रमाण है। च्यारि क्षपकश्रेणी-वालानिका अर सयोगकेवलीनिका गुणस्थानवत् अंतर है। अनाहारकनिविषैं मिथ्यादृष्टिका नानाजीव अपेक्षा एकजीव अपेक्षा अंतर नांही है। सासादनसम्यग्दृष्टीका नानाजीवकी अपेक्षा जघन्य तौ एकसमय है। उत्कृष्ट पल्यकै असंख्यातवैं भाग है। एकजीव अपेक्षा अंतर नांही है। असंयतसम्यग्दृष्टिका नानाजीव अपेक्षा जघन्य एकसमय है। उत्कृष्ट पृथक्त्व महीना है। एकजीव अपेक्षा अंतर नांही है। सयोगकेवलीका नानाजीवकी अपेक्षा जघन्य तौ एकसमय है। उत्कृष्ट पृथक्त्व वर्ष है। एकजीव अपेक्षा अंतर नांही है। ऐसैं अंतरका निश्चय कीया॥

आगै भावकूं प्रगट कीजिये ॥ तहां भाव दोय प्रकार। सामान्यकरि गुणस्थान, विशेषकरि मार्गणा। तहां प्रथमही सामान्यकरि मिथ्यादृष्टि तौ औदयिक भाव है। सासादनसम्यग्दृष्टि पारिणामिक भाव है। सम्यग्मिथ्यादृष्टि क्षायोपशमिक भाव है। असंयतसम्यग्दृष्टि औपशमिक अथवा क्षायिक अथवा क्षायोपशमिक भाव है। इहां असंयतपणां है सो औदयिकभावकरि है। संयतासंयत प्रमत्तसंयत अप्रमत्तसंयत ऐसैं क्षायोपशमिक भाव है। च्यारि उपशमश्रेणीवाला औपशमिक भाव है। च्यारि क्षपकश्रेणीवालानिंविषैं अर सयोगकेवली अयोगकेवलीनिविषैं क्षायिक भाव है ॥

विशेषकरि गतिके अनुवादकरि नरकगतिविषैं प्रथमपृथिवीविषैं नारकी मिथ्यादृष्टि आदि असंयतसम्यग्दृष्टिपर्यंतनिके गुणस्थानवत् भाव है। दूसरी पृथिवी आदि सातमीपर्यंत मिथ्यादृष्टि सासादन सम्यङ्मिथ्यादृष्टीनिकै गुणस्थानवत्। असंयतसम्यग्दृष्टिकै औपशमिक क्षायोपशमिकभाव है। असंयत है सो औदयिकभावकरि है। तिर्यंचगतिविषैं तिर्यंचनिकै मिथ्यादृष्टि संयतासंयत पर्यंतनिकै गुणस्थानवत् भाव है। मनुष्यगतिविषैं मिथ्यादृष्टि आदि अयोगकेवलीपर्यंतनिके गुणस्थानवत् भाव है। देवगतिविषैं देवनिकै मिथ्यादृष्टि आदि असंयतसम्यग्दृष्टिपर्यंतनिकै गुणस्थानवत् भाव है ॥

इंद्रियके अनुवादकरि एकेंद्रिय विकलत्रयनिकै औदयिकभाव है। पंचेंद्रियनिविषैं मिथ्यादृष्टि आदि अयोगकेवलीपर्यंतनिकै गुणस्थानवत् भाव है ॥

कायके अनुवादकरि स्थावरकायिकनिकै औदायिक भाव है। त्रसकायिकनिकै गुणस्थानवत् भाव है॥

योगके अनुवादकरि कायवचनमनोयोगीनिकै मिथ्यादृष्टि आदि सयोगकेवलीपर्यंतनिकै अर अयोगकेवलीनिकै गुणस्थानवत् भाव है ॥

वेदके अनुवादकरि स्त्रीपुरुषनपुंसकवेदीनिकै अर वेदरहितनिकै गुणस्थानवत् भाव है ॥

कषायानुवादकरि क्रोधमानमायालोभकषायवालेनिकै अर कषायरहितनिकै गुणस्थानवत् भाव है॥

ज्ञानके अनुवादकरि मति अज्ञान श्रुत अज्ञान विभंगज्ञानवालेनिकै अर मतिश्रुत अवधि मनःपर्यय केवलज्ञानीनिकै गुणस्थानवत् भाव है ॥

संयमका अनुवादकरि सर्वही संयतनिकै अर संयतासंयतनिकै अर असंयतनिकै गुणस्थानवत् भाव है ॥

दर्शनानुवादकरि चक्षुर्दर्शन-अचक्षुर्दर्शन-अवधिदर्शन-केवलदर्शनवालेनिकै गुणस्थानवत् भाव है॥

लेश्याके अनुवादकरि छहू लेश्यावालेनिकै अर लेश्यारहितनिकै गुणस्थानवत् भाव है ॥

भव्यके अनुवादकरि भव्यनिकै मिथ्यादृष्टि आदि अयोगकेवलीपर्यंतनिकै गुणस्थानवत् भाव है। अभव्यनिकै पारिणामिक भाव है ॥

सम्यक्त्वके अनुवादकरि क्षायिकसम्यग्दृष्टीविषैं असंयंतसम्यग्दृष्टीकै क्षायिकभाव तौ क्षायिकसम्यक्त्व है। अर असंयतपणां है सो औदयिकभावकरि है। संयतासंयत प्रमत्त अप्रमत्तसंयतनिकै क्षायोपशमिक भाव है। सम्यक्त्व क्षायिक है सो क्षायिकभावकरि है। च्यारि उपशमश्रेणीवालेनिकै औपशमिक भाव है। सम्यक्त्व इहां क्षायिकभावकरि हो है। अवशेषनिके गुणस्थानवत् भाव है। क्षायोपशमिक सम्यग्दृष्टीविषैं असंयतसम्यग्दृष्टीकै क्षायोपशमिक भाव है सो तौ क्षायोपशमिक सम्यक्त्व है। असंयत है सो औदयिकभावकरि है। संयतासंयत प्रमत्त अप्रमत्तसंयतनिकै क्षायोपशमिक भाव है। क्षायोपशमिकसम्यक्त्व है। औपशमिकसम्यक्त्वविषैं असंयतसम्यग्दृष्टीकै औपशमिक भाव उपशमसम्यक्त्व है। असंयत है सो औदयिकभावकरि है। संयतासंयत प्रमत्त अप्रमत्तसंयतनिकै क्षायोपशमिक भाव है। सम्यक्त्व औपशमिक है। च्यारि उपशमश्रेणीवालानिकै औपशमिकभाव उपशमसम्यक्त्व है। सासादनसम्यग्दृष्टिकै पारिणामिक भाव है। सम्यग्मिथ्यादृष्टिकै क्षायोपशमिक भाव है। मिथ्यादृष्टीकै औदयिक भाव है ॥

संज्ञीके अनुवादकरि संज्ञीनिकै गुणस्थानवत्। असंज्ञीनिकै औदयिक भाव है। दोऊ संज्ञारहितनिकै गुणस्थानवत् भाव है ॥

आहारकके अनुवादकरि आहारकनिकै अर अनाहारकनिकै गुणस्थानवत् भाव है। ऐसैं भावका निरूपण मोहकर्म अपेक्षा उदाहरणरूप समाप्त भया ॥

आगै अल्पबहुत्वका वर्णन कीजिये है। सो दोय प्रकार। सामान्यकरि, विशेषकरि। तहां प्रथमही सामान्यकरि तीन उपशमश्रेणीवाला सर्वतैं स्तोक कहिये थोरा है॥ ते अपने अपने गुणस्थानकालविषैं प्रवेशकरि तुल्यसंख्या हैं। अर उपशांतकषायवालाभी तितनाही है। बहुरि तीन क्षपकश्रेणीवाला इनितैं संख्यातगुणा है। अर क्षीणकषाय छद्मस्थ वीतरागभी तितनाही है। अर सयोगकेवली अयोगकेवली प्रवेशकरि तुल्यसंख्या है। अर सयोगकेवली अपने कालविषैं भेले होय ते इनितैं संख्यातगुणां हैं। बहुरि अप्रमत्तसंयत संख्यातगुणां हैं। तिनितैं प्रमत्तसंयत संख्यातगुणां हैं। तिनितैं संयतासंयत असंख्यातगुणां है। तिनितैं सासादनसम्यग्दृष्टि असंख्यातगुणा हैं। तिनितैं सम्यग्मिथ्यादृष्टि असंख्यातगुणां हैं। तिनितैं असंयतसम्यग्दृष्टि असंख्यातगुणां हैं। तिनितैं मिथ्यादृष्टि अनंतगुणां हैं ॥

विशेषकरि गतिके अनुवादकरि नरकगतिविषैं सर्वपृथ्वीनिविषैं नारकी जीव सर्वतैं स्तोक सासादनसम्यग्दृष्टि हैं। तिनितैं संख्यातगुणां सम्यग्मिथ्यादृष्टि हैं। तिनितैं असंख्यातगुणां असंयतसम्यग्दृष्टि हैं। तिनितैं असंख्यातगुणां मिथ्यादृष्टि हैं। तिर्यंचगतिविषैं तिर्यंच सर्वतैं थोरा संयतासंयत हैं। अन्यकी संख्या गुणस्थानवत् है। मनुष्यगतिविषैं मनुष्यनिकै उपशमश्रेणीवाला आदिविषैं अर प्रमत्तसंयतनितांई गुणस्थानवत्। तिनितैं संख्यातगुणां संयतासंयत हैं। तिनितैं सासादनसम्यग्दृष्टि संख्यातगुणां हैं। तिनितैं संख्यातगुणां सम्यग्मिथ्यादृष्टि हैं। तिनितैं असंयतसम्यग्दृष्टि संख्यातगुणां हैं। तिनितैं मिथ्यादृष्टि असंख्यातगुणां हैं। देवगतिविषैं देवनिके नारकीवत् अल्पबहुत्व है॥ इंद्रियके अनुवादकरि एकेंद्रिय विकलत्रयविषैं गुणस्थानभेद नांही। तातैं अल्पबहुत्वका अभाव है॥ इंद्रिय अपेक्षा कहिये। तहां पंचेंद्रिय आदि एकेंद्रियपर्यंत उत्तरोत्तर बहुत्व है। पंचेंद्रियनिके गुणस्थानवत्। विशेष यहु जो मिथ्यादृष्टि असंख्यातगुणेही है॥

कायके अनुवादकरि स्थावरकायविषैं गुणस्थानभेद नांही, तातैं अल्पबहुत्वका अभाव है। कायप्रति कहिये है, तहां सर्वतैं थोरा तेजस्कायिक हैं, तिनितैं बहुत पृथिवीकायिक हैं, तिनितैं बहुत अप्कायिक हैं, तिनितैं बहुत वातकायिक हैं, सर्वतैं अनंतगुणां वनस्पतिकायिके हैं। त्रसकायिकनिकै पंचेंद्रियवत् है॥

योगके अनुवादकरि वचनमनयोगीनिकै पंचेंद्रियवत् काययोगीनिकै गुणस्थानवत् अल्पबहुत है ॥

वेदके अनुवादकरि स्त्रीपुरुषवेदीनिकै पंचेंद्रियवत् । नपुंसकवेदीनिकै अर वेदरहितानिकै गुणस्थानवत् अल्पबहुत्व है ॥

कषायके अनुवादकरि क्रोधमानमायाकषायवालेनिकै पुरुषवेदवत् । विशेष यह जो मिथ्यादृष्टि अनंतगुणा है । लोभकषायवालेनिकै दोय उपशमश्रेणीवाला तुल्यसंख्या है । अर क्षपकश्रेणीवाला तिनितैं संख्यातगुणां है । सूक्ष्मसांपराय शुद्धसंयत उपशमश्रेणीवाला विशेषकरि अधिक है । तिनितैं सूक्ष्मसांपराय क्षपकश्रेणीवाला संख्यातगुणां है । अवशेषनिकै गुणस्थानवत् है ॥

ज्ञानके अनुवादकरि मतिअज्ञान श्रुतअज्ञानवालेनिविषै सर्वतैं स्तोक सासादनसम्यग्दृष्टि है । तिनितैं अनंतगुणां मिथ्यादृष्टि है । विभंगज्ञानीनिविषै सर्वतैं थोरा सासादनसम्यग्दृष्टि है । तिनितैं असंख्यातगुणां मिथ्यादृष्टि है । मतिश्रुतअवधिज्ञानीनिविषै सर्वतैं स्तोक च्यारि उपशमश्रेणीवाला है । तिनितैं संख्यातगुणां क्षपकश्रेणीवाला है । तिनितैं संख्यातगुणां अप्रमत्तसंयत है । तिनितैं संख्यातगुणां प्रमत्तसंयत है । तिनितैं असंख्यातगुणां संयतासंयत है । तिनितैं असंख्यातगुणां असंयतसम्यग्दृष्टि है । मनःपर्ययज्ञानीनिविषै सर्वतैं स्तोक च्यारि उपशमश्रेणीवाला

है। तिनितैं संख्यातगुणां क्षपकश्रेणीवाला है। तिनितैं संख्यातगुणां अप्रमत्तसंयत है। तिनितैं संख्यातगुणां प्रमत्तसंयत है। केवलज्ञानीनिविषैं अयोगकेवलीनितैं संख्यातगुणां सयोगकेवली है॥

संयमके अनुवादकरि सामयिकच्छेदोपस्थापनशुद्धसंयतनिविषैं दोऊ उपशमश्रेणीवाला तुल्यसंख्या है। तिनितैं संख्यातगुणां क्षपकश्रेणीवाला है। तिनितैं संख्यातगुणां अप्रमत्तसंयत है। तिनितैं संख्यातगुणां प्रमत्तसंयत है। परिहारविशुद्धिसंयतनिविषैं अप्रमत्तनितैं संख्यातगुणां प्रमत्तसंयत है। सूक्ष्मसांपराय शुद्धसंयमीनिविषैं उपशमश्रेणीवालानितैं क्षपकश्रेणीवाला संख्यातगुणां है। यथाख्यातविहारशुद्धसंयतनिविषैं उपशांतकषायनितैं क्षीणकषायवाले संख्यातगुणां है। अयोगकेवली तितनेंही है। तिनितैं संख्यातगुणां सयोगकेवली है। संयतासंयतनिविषैं गुणस्थान एकही तातैं अल्पबहुत्व नांही। असंयतनिविषैं सर्वतैं स्तोक सासादनसम्यग्दृष्टि है। तिनितैं संख्यातगुणां सम्यग्मिथ्यादृष्टि है। तिनितैं असंयतसम्यग्दृष्टि असंख्यातगुणां है। तिनितैं अनंतगुणां मिथ्यादृष्टि है॥

दर्शनके अनुवादकरि चक्षुर्दर्शनवालेनिकै मनोयोगीवत् है। अचक्षुर्दर्शनवालेनिकै काययोगीवत् है। अवधिदर्शनवालेनिकै अवधिज्ञानीवत् है। केवलदर्शनवालेनिकै केवलज्ञानीवत् है॥

लेश्याके अनुवादकरि कृष्णनीलकापोतलेश्यावालेनिकै असंयतवत् है। पीतपद्मलेश्यावालेनिकै

सर्वतैं स्तोक अप्रमत्तसंयत है। तिनितैं संख्यातगुणां प्रमत्तसंयत है। ऐसैं अन्यगुणस्थानवाले पंचेंद्रियवत् है। शुक्ललेश्यावालेनिकै सर्वतैं स्तोक उपशमश्रेणीवाला है। तिनितैं संख्यातगुणां क्षपकश्रेणीवाला है। तिनितैं संख्यातगुणां सयोगकेवली है। तिनितैं संख्यातगुणां अप्रमत्तसंयत है। तिनितैं संख्यातगुणां प्रमत्तसंयत है। तिनितैं असंख्यातगुणां संयतासंयत है। तिनितैं असंख्यातगुणां सासादनसम्यग्दृष्टि है। तिनितैं असंख्यातगुणां सम्यग्मिथ्यादृष्टि है। तिनितैं असंख्यातगुणां मिथ्यादृष्टि है। तिनितैं असंख्यातगुणां असंयतसम्यग्दृष्टि है ॥

भव्यके अनुवादकरि भव्यनिके गुणस्थानवत् अल्पबहुत्व है। अभव्यनिके अल्पबहुत्व नांही है ॥

सम्यक्त्वके अनुवादकरि क्षायिकसम्यग्दृष्टीनिविषैं सर्वतैं स्तोक च्यारि उपशमश्रेणीवाला है। अन्य प्रमत्तसंयतनितांई गुणस्थानवत् है। तिनितैं संयतासंयत संख्यातगुणां है। तिनितैं असंख्यातगुणां असंयतसम्यग्दृष्टि है। क्षायोपशमिकसम्यग्दृष्टि है तिनिविषैं सर्वतैं स्तोक अप्रमत्तसंयत है। तिनितैं संख्यातगुणां प्रमत्तसंयत है। तिनितैं असंख्यातगुणां संयतासंयत है। तिनितैं असंख्यातगुणां असंयतसम्यग्दृष्टि है। औपशमिकसम्यग्दृष्टीनिविषैं सर्वतैं स्तोक च्यारि उपशमश्रेणीवाला है। तिनितैं संख्यातगुणां अप्रमत्तसंयत है। तिनितैं संख्यातगुणां प्रमत्तसंयत है।

तिनितैं असंख्यातगुणां संयतासंयत है। तिनितैं असंख्यातगुणां असंयतसम्यग्दृष्टि है। अवशेषनिकै अल्पबहुत्व नांही है। जातैं विवक्षित एक एक गुणस्थानही है ॥

संज्ञीका अनुवादकरि संज्ञीनिकै चक्षुर्दर्शनवालेवत् है। असंज्ञीनिकै अल्पबहुत्व नांही है। दोऊ संज्ञारहितनिकै केवलज्ञानीवत् है ॥

आहारकके अनुवादकरि आहारकनिकै काययोगीवत् है। अनाहारकनिकै सर्वतैं स्तोक सयोगकेवली है। तिनितैं संख्यातगुणां अयोगकेवली है। तिनितैं असंख्यातगुणां सासादनसम्यग्दृष्टि है। तिनितैं असंख्यातगुणां असंयतसम्यग्दृष्टि है। तिनितैं अनंतगुणां मिथ्यादृष्टि है। ऐसैं मिथ्यादृष्टि आदिनिकै गत्यादिकविषैं मार्गणाकरि सो सामान्यकरि है। तहां सूक्ष्मभेद आगमतैं अविरोधकरि अंगीकार करनां ॥

इहां सत् आदिका संक्षेप भावार्थ ऐसा जाननां— जो, सत् कहिये वस्तु है, ऐसा अस्तित्वका कहना। संख्या कहिये यह वस्तु केती है, ऐसैं भेदनिकी गणना कहनां। क्षेत्र कहिये यह वस्तु वर्तमानकालमैं एते क्षेत्रमैं है, ऐसा कहना। स्पर्शन कहिये यह वस्तु तीन कालमैं एते क्षेत्रमैं विचरै है, ऐसा कहनां। काल कहिये निश्चय व्यवहाररूप है, सो जिस वस्तु अपेक्षा जेता

कालका परिमाण कहनां। अंतर कहिये एकगुणतैं दूसरै गुण जाय फेरी तिसही गुण आवै ताकै बीचि जेते काल रहै सो विरहकाल है, ताकूं अंतर कहिये, ताका कहनां। भाव कहिये औपशमिक आदि पंच भाव हैं, तिनिका कहना। अल्पबहुत्व कहिये परस्पर दोयकी अपेक्षातैं संख्याका हीनाधिकपणां कहनां। ऐसैं इनि आठ अनुयोगनिकरि वस्तुका अधिगम होय है। तिसका उदाहरण जीवनामा वस्तुका गुणस्थान मार्गणापरि कह्या सो जाननां। ऐसैंही यथासंभव आगमके अनुसार सर्ववस्तुपरि लगावणां। केई नास्तिकवादी वस्तूकूं सर्वथा अभावरूपही कहै हैं, तिनिका निराकरण सत् कहनेतैं होय है। केई वस्तुकूं सर्वथा एक अभेद कहै हैं, तिनिका निषेध भेदनिकी गणनातैं जाननां। केई वस्तुके प्रदेश नांही मानै हैं तिनिका निषेध क्षेत्र कहनेतैं जाननां। केई वस्तुकूं सर्वथा क्रियारहित मानै हैं तिनिका निषेध स्पर्शन कहनेतैं जाननां। अथवा जो कोई वस्तुका सर्वथा कदाचित् प्रलय होना मानै हैं तथा क्षीणकही मानै तिनिका निषेध कालका नियम कहनेतैं होय है। केई वस्तुकूं क्षणिकही मानै हैं तिनिका निषेध अंतरके नियम कहनेतैं होय है। केई वस्तूकूं एकही मानै हैं तथा अनेकही माने हैं तिनिका निषेध अल्पबहुका नियम कहनेतैं होय है। ऐसैं वस्तु अनंतधर्मात्मक है। ताके द्रव्य क्षेत्र काल भावकी अपेक्षा विधिनिषेधतैं

प्रमाण नय निक्षेप अनुयोगकी विधिकरि साधनेतैं यथार्थज्ञान होनेतैं अधिगमज सम्यग्दर्शनकी प्राप्ति होय है। सो याका विधिनिषेधकी चर्चा श्लोकवार्तिकमैं विशेषकरि है तहांतैं जाननां। ऐसें आदिविषैं कह्या जो सम्यग्दर्शन ताका लक्षण उत्पत्ति निमित्त स्वामी विषय न्यास अधिगमका उपाय कह्या। याके संबंधकरि जीवादिककाभी सत् परिमाणादिक कहे ॥

याके अनंतर सम्यग्ज्ञान विचारनेयोग्य है, सो कहे हैं—

॥ मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलानि ज्ञानम् ॥ ९ ॥

याका अर्थ— मति श्रुत अवधि मनःपर्यय केवल ए पांच ज्ञान है ॥ ज्ञानशब्द न्यारान्याराकै लगाईये ऐसें पांचूही ज्ञान भये। तहां मतिज्ञानावरणीयकर्मके क्षयोपशमतैं इंद्रियमनकरि पदार्थनिकूं जानै सो, अथवा जाकरि जाणिये सो, अथवा जाननेमात्र सो, मतिज्ञान है। बहुरि श्रुतज्ञानावरणीयकर्मके क्षयोपशमतैं वक्ताकरि कही वस्तूका नाम सुननेकरि जानै सो, अथवा जाकरि सुनि वस्तुकूं जानिये सो, अथवा जो श्रवणकरि जाननेंमात्र सो श्रुतज्ञान है। इन दोऊनिका समीप निर्देश कार्यकारणभावतैं कह्या। मतिज्ञान कारणरूप है श्रुतज्ञान कार्यरूप है। बहुरि अवधिज्ञानावरणीयकर्मके क्षयोपशमतैं द्रव्य क्षेत्र काल भावकी मर्याद लीयें रूपी पदार्थकूं प्रत्यक्षपणें

करि जो जानैं, अथवा जाकरि जानिये, अथवा जाननेमात्र सो अवधिज्ञान है। वहुरि मनःपर्यय-ज्ञानावरणीयकर्मके क्षयोपशमतैं परके मनविषैं प्राप्त जो पदार्थ ताकूं जाणैं, अथवा जाकरि जानिये, तथा जो जानना सो मनःपर्ययज्ञान कहिये। इहां परके मनविषैं प्राप्त जो पदार्थकूं मन ऐसा संज्ञा साहचर्यतैं कही है। इहां कोई कहै याकै मतिज्ञानका प्रसंग आवै है? ताकूं कहिये इहां मनकी अपेक्षामात्रही है, कार्यकारणभाव नांही है। अपनें प्रतिपक्षी कर्मके क्षयोपशममात्रतैंही भया है। ताकूं अपने परके मनकी अपेक्षामात्रतैं मनःपर्यय ऐसी संज्ञाकरि कह्या है। जैसैं काहूनैं कही या बादलेविषैं चंद्रमाकूं देखो, तहां बादलेकी अपेक्षामात्र है। चंद्रमा बादलेतैं भया तौ नांही। तैसैं इहांभी जाननां। वहुरि जा ज्ञानके अर्थि तपस्वी मुनि 'केवंते' कहिये सेवन करै ताकूं केवलज्ञान कहिये। इहां 'केवृ सेवने' ऐसी धातुतैं केवलशब्द निपज्या है। अथवा यहु ज्ञान असहाय है बाह्य कछु सहाय न चाहै है। जैसैं मतिश्रुतज्ञान इंद्रिय प्रकाशादिकका सहायतैं जानैं है, तैसैं इहां नांही, केवल एक आत्माहीतैं प्रवर्तै है। तातैं केवल कहिये। अब इनिका सूत्रविषैं प्रयोगके क्रमका प्रयोजन कहै हैं ॥

केवलज्ञान अंतविषैं पाईये है, तातैं अंतहीमैं धर्‍या है। ताके निकट मनःपर्ययज्ञान हो

है, तातें ताके समीप धऱ्या है। तातें ये दोऊ ज्ञान संयमी मुनिनिहीकै होय है। बहुरि तातें दूरवर्ति अवधि है तातें मनःपर्ययके समीप याकों कह्या। बहुरि प्रत्यक्ष तीनूं ज्ञाननिकै पहले परोक्ष मति श्रुत ज्ञान कहे। जातें ए दोऊ सुगम हैं। सर्वप्राणिनिकै बाहुल्यपणें पाइये है। इनकी पद्धती सुणिये है परिचय कीजिये है। अनुभवमें आवे है। ऐसें ए पांच प्रकार ज्ञान है। इनके भेद आगै कहसी। इहां मतिमात्रके ग्रहणतें स्मरणादिकभी मतिज्ञानहीमें लैने। केई वादी कहै हैं इंद्रियबुद्धिही एक मतिज्ञान है ताका निराकरण है। तथा केई अनुमानसहित मति मानै हैं। केई अनुमान तथा उपमानसहित मानै हैं। केई अनुमान उपमान अर्थापत्तिसहित तथा अभाव आगमसहित मानै हैं। तिनि सर्वनिका निराकरण है। ए सर्वही मतिज्ञानमें गर्भित जानने। कोई कहै मति श्रुत ज्ञान तौ एकही है। जातें दोऊ लार है एकही आत्माविषैं वसै हैं। विशेषभी इनिमें नांही। ताकूं कहिये इन तीनूंही हेतुतें इनिकै सर्वथा एकता नांही है। कोई प्रकार कहै तौ विरोध नांही। जातें लार रहै है इत्यादि कहना दोय विना बनें नांही। बहुरि विषयके भेदतैंभी भेदही है। श्रुतज्ञानका विषय सर्वतत्त्वार्थकूं परोक्ष जानना है। मतिज्ञानका एता नांही। ऐसें इनिका भेदाभेदकी चरचा श्लोकवार्तिकतैं जाननी। इहा कोई पूछे— सम्यग्दर्शनका तौ

लक्षणका सूत्र न्यारा कह्या बहुरि ज्ञानका न कह्या सो कारण कहा? ताका उत्तर जो, जहां शब्दकी निरुक्तिमें व्यभिचार आवै तहां न्यारा लक्षण कह्या चाहिये। यातैं दर्शन नाम देखनेका प्रधान है। तातैं श्रद्धानार्थके निमित्त लक्षण न्यारा कह्या। बहुरि ज्ञानविषैं निरुक्तिहीतैं अर्थ अव्यभिचारी है, तातैं लक्षण न्यारा न कह्या ऐसा आशय है॥

आगैं कहै हैं, जो पूर्वैं कह्या था, जो, प्रमाणनयकरि अधिगम होय है। तहां केई तौ ज्ञानकूं प्रमाण मानै हैं। केई सन्निकर्षकूं प्रमाण मानै हैं। केई इंद्रियकूं प्रमाण कहै हैं। यातैं अधिकारमैं लीये जे मत्यादि ज्ञान तिनिकै प्रमाणपणाके प्रगट करनेकै अर्थि सूत्र कहै हैं--

॥ तत्प्रमाणे ॥ १० ॥

याका अर्थ— तत् कहिये पूर्वे कहे जे पांच ज्ञान ते दोय प्रमाण है। इहां तत् शब्द है सो अन्यवादी सन्निकर्ष तथा इंद्रियकूं प्रमाण कल्पै हैं ताके निषेधके अर्थ है। तत् कहिये सो मत्यादिक ज्ञान कहे सोई प्रमाण है। अन्य नांही है। इहां अन्यवादी पूछै जो, सन्निकर्ष तथा इंद्रियकूं प्रमाण मानिये तौ दोष कहां? ताकूं कहिये हैं, जो, सन्निकर्षकूं प्रमाण मानिये तो सूक्ष्म अंतरित विप्रकृष्ट जो परमाणू रामरावणादिक, मेरुपर्वतादिक पदार्थ हैं तिनिका प्रमाणविषैं

अग्रहणका प्रसंग आवै। ते पदार्थ इंद्रियनितैं सन्निकर्ष होय नाही। याहीतैं सर्वज्ञका अभाव आवै। ऐसैंही इंद्रियकूं प्रमाण मानिये तौ येही दोष आवै। जातैं नेत्रादिकका अल्पविषय है। तथा ज्ञेय अनंत है। तथा सर्वही इंद्रियनिके सन्निकर्षभी नांही है। नेत्र अर मनकै प्राप्यकारी कहिये पदार्थनिका प्राप्त होनेका अभाव है अप्राप्यकारी है ताका वर्णन आगे करसी ॥

इहां अन्यवादी कहै हैं, जो तुमनैं ज्ञानकूं प्रमाण कह्या, तौ याका फलका अभाव आवैगा। बहुरि प्रमाणका फल चाहियेही। बहुरि हम कहै हैं तहां फलका सद्भाव नीकै बणै है। जो सन्निकर्ष तथा इंद्रिय तौ प्रमाण है अरु यातैं अर्थका ज्ञान हो है सो प्रमाणतैं जुदा फल हो है, यह कहना युक्त है। ताकूं कहिये, जो तैं कह्या सो अयुक्त है। जातैं जो सन्निकर्षप्रमाण होय अर्थका ज्ञान फल होय तौ प्रमाता अर प्रमेय जो अर्थ ते दोऊ भिडिजाय, तब सन्निकर्ष होय है। सो याका फल जो अर्थका ज्ञान, सो प्रमाताकै अरु प्रमेय पदार्थकै दोऊनिकै हुवा चाहिये। ऐसैं होतैं अन्यपदार्थकैभी अर्थका ज्ञानकी प्राप्ति आवै है। बहुरि वे कहैं, जो, अर्थका ज्ञान तौ चेतन जो आत्मा ताकै होय है। अन्य जडकै कैसैं होय? तौ वाकूं कहिये, आत्माकूं ज्ञानस्वभाव तौ तू मानै नांही। अरु समवाय तैं चेतन मानै है, सो ऐसैं तौ आत्माभी चेतनाविना जडही

ठहरैगा। बहुरि ज्ञानस्वभावही मानैगा तौ तेरी प्रतिज्ञाकी हानि आवैगी। तातैं हम कहै हैं सो युक्त है। ज्ञानकूं प्रमाण कहतैं फलका अभाव है। यह दोष नाही आवै है। कथंचिद्भेदाभेदरूप याका फलभी है। प्रथम तौ अर्थका यथार्थज्ञान होय तब तिस अर्थकेविषैं प्रीति उपजै है। कर्मकरि मैला जो यह आत्मा ताके इंद्रियनिके आलंबनतैं अर्थका ज्ञान होय। ताविषैं उपादेय जानि प्रीति उपजै है। सो यह प्रीति वा प्रमाणका फल है। बहुरि यथार्थज्ञान होय तब रागद्वेषके अभावतैं मध्यस्थभाव होय सो दूसरा यह फल है। बहुरि पहलैं अर्थका अज्ञान था ताका नाश भया सो तीसरा यह फल है। ऐसैं हमारे प्रमाण फलरहित नांही है॥

अब या प्रमाणशब्दका अर्थ कहै हैं। 'प्रमीयते अनेन' कहिये याकरि वस्तु प्रमाण करिये ऐसैं तौ करणसाधन भया। बहुरि 'प्रमिणोति' कहिये जो वस्तुकूं प्रमाण करनेवाला, सो प्रमाण है, ऐसैं कर्तृसाधन भया। बहुरि 'प्रमितिमात्रं' कहिये वस्तुका प्रमाण करना सो भावसाधन भया। याकों क्रियासाधनभी कहिये। इहां कोई पूछै, इस प्रमाणकरि कहा प्रमाण करिये! ताकूं कहिये, जीवादिक पदार्थ प्रमाण करिये। फेरि पूछै, जो, जीवादिकका अधिगम तौ प्रमाणकरि करिये। बहुरि प्रमाणका अधिगम काहेकरि करिये? जो अन्य प्रमाण कल्पिये तौ

अनवस्था दूषण आवै है। तहां कहिये, अनवस्था न आवैगी। जैसैं घटादिक प्रकाशनेविषैं दीपक कारण है; तैसैं अपने स्वरूपके प्रकाशनेविषैंभी वैही दीपक कारण है। अन्य प्रकाश नांही हेरिये है; तैसैं प्रमाणभी स्वपरप्रकाशक अवश्य माननां। प्रमेयकीज्यों प्रमाणकै अन्यप्रमाणकी कल्पना कीजै तो स्वरूपका जाननेका प्रमाणकै अभाव होय, तब स्मरणकाभी अभाव होय। बहुरि स्मरणका अभाव मानिये तौ व्यवहारका लोप होय। तातैं स्वपरप्रकाशक प्रमाण मानना योग्य है। बहुरि इहां प्रमाणे ऐसा प्रथमाविभक्तीका द्विवचन कह्या है। सो एक तीन आदि प्रमाणकी संख्या अन्यवादी मानै है ताके निषेधकै अर्थि है। तथा आगै दोय संख्याका सूत्रभी कहसी ताके जनावने अर्थि है। अन्यवादी चार्वाक तौ एक प्रत्यक्ष प्रमाणही मानै है। बहुरि बौद्ध प्रत्यक्ष अनुमान ये दोय प्रमाण मानै है। बहुरि नैयायिक वैशेषिक सांख्य हैं ते प्रत्यक्ष अनुमान आगम उपमान ऐसैं च्यारि प्रमाण मानै है। बहुरि मीमांसक च्यारि तौ ए अरु अर्थापत्ति अभाव ऐसै छह प्रमाण मानै है। सो प्रत्यक्ष परोक्ष ए दोय संख्या कहनेतैं सर्वप्रमाण इनिमैं गर्भित होय हैं॥

ऐसैं ए पंचज्ञान प्रमाण कहे। तहां सम्यक् अधिकारतैं सम्यग्ज्ञान है। मिथ्याज्ञान प्रमाण नांही। इहां प्रश्न- जो, ऐसा कह्या है "यथा यत्राविसंवादस्तथा तत्र प्रमाणता ॥" याका अर्थ;

जहां जिसप्रकार विसंवाद न आवै तहां तैसैं प्रमाणता । सो काहूकै विपर्ययज्ञान है तहां ताकै बाधा विसंवाद न आवै तेतैं प्रमाण ठह्-या । तथा काहूकै कालांतरमैं बाधा आवै । काहूकै क्षेत्रांतरमैं बाधा आवै । तथा केईकै कबहू बाधा न आवै । अर विशेषज्ञानीके ज्ञानमैं बाधा दीखै है । तहां जेतैं बाधा न आवै तेतैं प्रमाण ठहरै है । सो सम्यग्ज्ञान तौ ऐसा चाहिये जो संशय विपर्यय अनध्यवसाय-रहित सर्वकाल सर्वक्षेत्र सर्वप्राणीनिकै समान होय । कोई प्रकार बाधा न आवै । जो जहां जैसैं अविसंवाद होय तहां तैसैं प्रमाणता है यह वचन कैसैं सिद्ध होयगा? ताका उत्तर– जो, सर्वथानिर्बाध तौ केवलज्ञान है । मतिश्रुत है सो तौ अपने विषयविषैंभी एकदेशप्रमाण है । बहुरि अवधि मनःपर्यय है सो अपने विषयविषैं सामस्त्यकरि प्रमाण है । अधिकविषयविषैं प्रमाण नाहीं । तातैं च्यार्योंही क्षयोपशमज्ञान प्रमाणभी है अप्रमाणभी है । तातैं जिस विषयविषैं निर्बाध साधै तहां तौ प्रमाण है । बहुरि जहां बाधा आवै तहां अप्रमाण है । जो ऐसैं न होय तौ केवलज्ञानही प्रमाण ठहरै । अन्यज्ञान अप्रमाण ठहरै । तौ व्यवहारका लोप होय । तातैं एकही ज्ञान प्रमाणभी है अप्रमाणभी है । जैसैं काहू पुरुषकै नेत्रविषैं विकार था, ताकूं एक चंद्रमाकै दोय दीखै, तहां निर्विकारनेत्रवालाकी अपेक्षा दोय चंद्रमाकी संख्या तौ सबाध भई । बहुरि

चन्द्रमाका सामान्यपणां निर्बाध है। तथा निर्विकार नेत्रवालेकूं चंद्रमा तौ एकही दिखै, परंतु निकटही दीखै है। ऊगता जमीसूं लगता दीखै। सो याकी ऊचाईका योजनांकी अपेक्षा सबाध है। तथा शास्त्रकरि ग्रहणका काल तौ निश्चय कीया सो तौ निर्बाध है। परंतु दोय अंगुल च्यारि अंगुल ग्रहण होगा, यह कहनां निर्बाध नांही। जातैं यह विमान केता चौडा है? तामैं केता आच्छादित हुवा? यह तौ प्रत्यक्षज्ञानी जानैं, याकी अपेक्षा सबाध है। ऐसैं मतिश्रुत अपने विषयविषैंभी प्रमाणाप्रमाणस्वरूप है। तथा अन्यभी उदाहरण– जैसैं पर्वत तथा वृक्षोंका समूहरूप वन इत्यादि वस्तु दूरितैं तौ औरसाही दीखै निकट गये औरसाही दीखै ऐसैं जाननां। इहां कोई पूछै, जो ऐसैं है तौ यहु याका ज्ञान प्रमाण है यहु याका ज्ञान अप्रमाण है ऐसा नियम कैसैं कहिये? बहुरि नियम कीयाविना व्यवहार कैसैं प्रवर्तैगा! ताका उत्तर– जो, व्यवहार मुख्यगौणकी अपेक्षातैं प्रवर्तै है। जैसैं काहू वस्तूमैं सुगंध बहुत देखि लोक कहै यह सुगंध द्रव्य है, तहां वा द्रव्यविषैं स्पर्शादिकभी पाईये हैं। परंतु वाकी मुख्यता न करै। तातैं जिनकै मतविषैं एकांततैं ज्ञान प्रमाण अप्रमाण दोऊ स्वरूप नांही है तिनिकै यह छद्मस्थका ज्ञानकै प्रमाणता न आवैगी। तब अपना मतभी न सिद्ध होगा ॥

बहुरि अन्यवादी ज्ञानकौंही प्रमाण मानि याका स्वरूप लक्षण एकांततैं अन्यप्रकार कहै हैं। सोभी सबाध है। तहां बौद्धमती कहै हैं, जो 'अविसंवादि ज्ञानं प्रमाणं, कहिये जामैं विसंवाद न होय सो ज्ञान प्रमाण है। ताकूं पूछिये; जो कहैगा प्रमाताकी इच्छा जहां पूरि होय जाय तहां अविसंवाद है, तौ स्वप्नादिकका ज्ञानभी प्रमाण ठहरैगा, तहांभी वांछापूरण होय जाय है। बहुरि कहैगा, जो, जहां वस्तूकै अर्थक्रिया ठहरै, तहां अविसंवाद है, तौ गीतादि शब्दका ज्ञान तथा चित्रामादिकका ज्ञानकै प्रमाणता ठहरैगी। तहां स्वरूपमात्रका ज्ञान है, अर्थक्रिया नांही है। ऐसैं बौद्धकरि मान्या अविसंवाद लक्षण बाधासहित है॥ बहुरि औरभी मतके एकांततैं प्रमाणके लक्षण तथा विशेषण जुदे जुदे करे हैं ते युक्तिशास्त्रतैं बाधासहित हैं। ते श्लोकवार्तिकादिकतैं जानने। जैनमतमैं तौ "स्वापूर्वार्थव्यवसायात्मकं ज्ञानं प्रमाणम्" ऐसा लक्षण परीक्षामुखविषैं कह्या है। और शास्त्रमैं पाठांतर कह्या है। सोही निर्बाध है। बहुरि प्रमाणका प्रमाणपणां कैसैं होय? तहां सर्वथा एकांतवादी केई तौ तिस प्रमाणहीतैं प्रमाणपणांका निश्चय होय है ऐसैं कहै हैं। केई अन्यतैं प्रमाणता होहै ऐसैं कहै हैं। सो यहु बाधासहित है।' स्याद्वादकरि अभ्यासदशामैं तौ प्रमाणका निश्चय प्रमाणहीतैं होय है। बहुरि विना अभ्यासदशामैं परतैं निश्चय होय है ऐसा

निर्बाध सिद्ध कीया है। कोई कहै है "प्रमाणपणा प्रवृत्तिसामर्थ्यतैं निश्चय होय है" सो प्रमाणकरि प्रतीतिमें आया जो पदार्थ ताके निकटि होतै वाके फलकी प्राप्ति होय तब जानिये कि यह प्रमाण है। यहू प्रवृत्तिसामर्थ्यतैं प्रमाणता आई, परंतु इहां अनवस्था दूषण होय है। जातैं प्रवृत्तिसामर्थ्यका समानजातीय ज्ञानकी प्रमाणता अन्यप्रवृत्तिसामर्थ्यतैं होयगी तब अनवस्था आवैहीगी। बहुरि प्रवृत्ति है सो तौ जे परीक्षावान् हैं तिनिकै तौ प्रमाणका निश्चय होय तब होय है। बहुरि लौकिकजनकै विना निश्चयभी प्रवृत्ति हो है। बहुरि परीक्षावान्भी कोई पदार्थनिविषैं अपरीक्षावान् है। जातैं सर्वपदार्थनिकी परीक्षा तौ सर्वज्ञकै है। अन्य तौ कोई प्रकार परीकक्ष है कोई प्रकार अपरीक्षक है। सो परीक्षक है सोहू अपरीक्षक है, ऐसैं जाननां ॥

बहुरि इहां कोई पूछै, अन्यवादीनिके प्रमाणनिकी संख्याका निराकरण कैसैं है? ताकूं कहिये है, जे अन्यवादी चार्वाक एक प्रत्यक्षप्रमाणही मानै है ताकै परके चित्तकी वृत्तिकी सिद्धि अनुमानविना होयगी नांही। ताकै अर्थि अनुमान मानैंगा तब एकही प्रमाण माननां कैसै सिद्ध होयगा? बहुरि बौद्धमती प्रत्यक्ष अनुमान ए दोय प्रमाण मानै है। ताकै साध्यसाधनके व्याप्तिसिद्धि करनेकूं स्मृति प्रत्यभिज्ञान तर्क ए तीन प्रमाण चाहियेगा। तब दोयकी संख्या

न रहैगी । व्याप्तिका ज्ञान प्रत्यक्ष अनुमानतैं नाहीं होयगा । स्मृति प्रत्यभिज्ञान तर्क ए प्रत्यक्ष अनुमानमैं गर्भित न होयगा । बहुरि श्रुत कहिये आगमप्रमाण है । सो आप्तके शब्दके श्रवणतैं होय है । सो यहभी प्रत्यक्ष अनुमानमैं गर्भित न होयगा तब तीन प्रमाण होयगा । बहुरि शब्द तथा उपमानसहित च्यारि प्रमाण मानै है तथा अर्थापत्तिसहित पांच तथा अभावसहित छह मानै है । तिनकै स्मृति प्रत्यभिज्ञान तर्क ये तिनिमैं गर्भित न होयगे तब संख्या वधि जायगी । तातैं तिनिकी संख्याका नियम नही ठहरे है । तातैं प्रत्यक्ष परोक्ष ए दोय संख्यामैं सर्व भेद गर्भित होय हैं । तातैं यह नियम निर्बाध है ॥

आगै, कहे जे पंचप्रकार ज्ञान ते दोय प्रमाणविषैं गर्भित कीये तथा दोयकी संख्या अन्यप्रकारभी आवै है । तातैं ताकी निवृत्तीकै अर्थि सूत्र कहै हैं ॥

॥ आद्ये परोक्षम् ॥ ११ ॥

याका अर्थ— पांच ज्ञाननिविषैं आद्यके दोय मतिश्रुतज्ञान परोक्ष प्रमाण है । आदि शब्द है सो प्रथमका वचन है । जातैं आदिविषैं होय ताकों आद्य कहिये । इहां कोई पूछै 'आद्ये' ऐसा द्विवचन है तहां मति श्रुत दोय आये । तहां आदि तौ एक मति है । दूसरा

श्रुतकै आदिपणां कैसे आवे? ताका उत्तर— जो मुख्य उपचारकी कल्पनातें दोऊके आद्यपनां कह्या है। तहां मतिज्ञान तौ मुख्य आदि हैही। बहुरि श्रुत है सो याके समीपही है तातैं उपचारतें प्रथम कह्या। सूत्रविषैं द्विवचन है ताकी सामर्थ्यतें गोणकाभी ग्रहण हुवा। याका समास ऐसैं हो है। 'आद्यं च आद्यं च आद्ये मतिश्रुते' ऐसैं जाननां। ये दोऊही परोक्षप्रमाण है ऐसा संबंध करनां। इहां कोई पूछे इनिकै परोक्षपणां काहेतें है? ताका उत्तर— ए दोऊही ज्ञान परकी अपेक्षा लीये है। मतिज्ञान तो इंद्रियमनतें होय है। श्रुतज्ञान मनतें होय है। सो यह सूत्र आगें कहसी। यातें पर जे इंद्रिय मन तथा प्रकाश उपदेशादि जे बाह्यनिमिति तिनकी अपेक्षा सहाय लेकरि मतिश्रुतज्ञानावरणीयका क्षयोपशमसहित आत्माकै उपजै है। तातैं परोक्ष कहिये। याहीतैं उपमानादिक प्रमाणभी ऐसैही उपजे हैं तेभी याहीमें गर्भित होय हैं। अथवा परोक्ष शब्दका ऐसाभी अर्थ है; जो अक्ष कहिये इंद्रिय तिनतैं दूरवर्ती होय ताकूं परोक्ष कहिये सो श्रुतज्ञान। तथा स्मरण प्रत्यभिज्ञान तर्क स्वार्थानुमान एभी इंद्रियनितें दूरवर्ती हैं। ऐसैं ए मतिज्ञानमैं गर्भित हैं। तातैं एभी परोक्षही हैं। बहुरि अवग्रह ईहा अवाय धारणाज्ञान जे मतिज्ञानके भेद हैं ते इंद्रियनितैं भिडिकर होय हैं। तौभी अक्ष कहिये आत्मा तातैं दूरवर्ती हैं। तातैं

इनिकूं व्यवहारकरि तौ प्रत्यक्ष कहै हैं। परंतु परमार्थतैं परोक्षही है ॥ बहुरि केई कहै है, परोक्षज्ञान तौ अस्पष्ट जाननां है। सो पदार्थके आलंबनरहित है। तातैं मनोराज्यादिककीज्यों निरर्थक है। ते विना समझ्यां कहै है। जातैं अर्थका आलंबन तौ प्रत्यक्ष परोक्ष दोऊनिविषैंही है। परंतु स्पष्टता अस्पष्टताका कारण नाहीं। प्रत्यक्ष परोक्ष भेद ऐसैं है जहां अन्यका अंतर पडे नांही। तथा अन्यका सहायविना विशेषनिसहित पदार्थनिकूं जानैं सो तौ स्पष्ट है। बहुरि वीचिमैं अन्यका अंतर पडै तथा सहाय चाहै। तथा विशेषनिसहित पदार्थनिकूं न जानै सो अस्पष्ट कहिये। मनोराज्यादिकवत् तौ जाकूं कहिये जाका कछु साक्षात् तथा परंपराय विषयही न होय ऐसैं जाननां ॥

आगै इनि परोक्षनितैं अन्य जे तीन ज्ञान तिनकूं प्रत्यक्ष कहनेकूं सूत्र कहै हैं—

॥ प्रत्यक्षमन्यत् ॥ १२ ॥

याका अर्थ— अन्यत् कहिये पांच ज्ञानमैं तीन ते प्रत्यक्षप्रमाण है ॥ 'अक्ष्णोति' कहिये जानै सो अक्ष कहिये आत्मा ताहीकूं आश्रयकरि उपजै अन्यका सहाय न चाहै ताकूं प्रत्यक्ष कहिये। कैसा है आत्मा? पाया है कर्मका क्षयापेशम जानैं। अथवा क्षीण हूवा है कर्मका आवरण जाका ऐसा आत्माकै होय है सो ऐसा अवधि मनःपर्यय केवलज्ञान है। कोई कहै ऐसै तौ अवधिदर्शन

केवलदर्शनभी है। आत्माहीका आश्रय ले उपजे है तेभी प्रमाण ठहरै। ताकूं कहिये, यहु दोष न आवै है। इहां सूत्रमैं ज्ञानहीका अधिकार है। तातैं ज्ञानही लेना, दर्शन न लेना। बहुरि कोई कहै, जो, विभंग तौ ज्ञान है ताका प्रसंग आवैगा यहुभी आत्माहीकूं आश्रय ले उपजै है। ताकूं कहिये, इहां सम्यक्का अधिकार है, तातैं विभंगज्ञान न लेनां। यहु विपर्ययस्वरूप है। जातैं मिथ्यात्वके उदयतैं विपरीतपदार्थकौं ग्रहै है। तातैं यहु सम्यक् नाहीं ॥

इहां वैशेषिकका आश्रयतैं प्रश्न है; जो, इंद्रियव्यापारतैं होय सो प्रत्यक्ष कहिये। विना इंद्रियव्यापार होय सो परोक्ष कहिये। ये लक्षण यथार्थ बाधारहित है सो माननां। ताका उत्तर जो, यहु अयुक्त है। ऐसैं होय तौ आप्त सर्वज्ञके प्रत्यक्षज्ञानका अभाव होय। जो इंद्रियज्ञानही प्रत्यक्ष मानिये तौ आप्तकै प्रत्यक्षज्ञान न होय। जो आप्तकैभी इंद्रियपूर्वक ज्ञान कल्पिये तौ ताकै सर्वज्ञपणांका अभाव होय। जो कहै, सर्वज्ञकै मनसूं भया प्रत्यक्ष है तौ मनके चिंतवनपूर्वककैभी सर्वज्ञपणाका तौ अभावही आवैगा। बहुरि कहै, जो ताकै सर्वपदार्थनिके ज्ञानकी आगमतैं सिद्धि हो है। सो ऐसैंभी नाहीं। जातैं आगम तौ प्रत्यक्षज्ञानपूर्वक होय सो प्रमाण है ॥

बहुरि बौद्धमती कहै है योगीश्वरनिकै अलौकिक दिव्यज्ञान औरही जातिका है। तौ ऐसैं

कहै प्रत्यक्षपणा तौ ताकै न आवैगा। जातैं ऐसा मानै है, जो इंद्रियप्रति वर्तै ताकूं प्रत्यक्ष कहिये। सो ऐसा मान्यां तब दिव्यज्ञान कहनैतैंभी प्रत्यक्षपना तौ न ठहरै। बहुरि औरभी दोष आवै है। जो सर्वज्ञका तौ अभाव होय है। अरु प्रतिज्ञाकी हानी होय है। सोई दिखाईये है। योगीश्वरकै जो ज्ञान है सो एक एक पदार्थकूं क्रमतैं ग्रहण करै है कि अनेकपदार्थका ग्रहण करनेवाला है? जो एक एक पदार्थकों क्रमतैं ग्रहण करै है; तौ सर्वज्ञपणां नांही ठहरै है। जातैं ज्ञेय तौ अनंत है, सर्वकूं एककाल जाने सर्वज्ञ होय। बहुरि जो अनेक पदार्थकूं ग्रहण करै है; तौ जो बौद्धमती प्रतिज्ञा करी है ताकी हानि आवै है। सो प्रतिज्ञा कहा? 'एक विज्ञान तौ दोय पदार्थकूं न जानै है बहुरि दोय विज्ञान एक पदार्थकूं न जानै है' ऐसी प्रतिज्ञा है, ताकी हानि होय है। अथवा सर्वसंस्कार हैं ते क्षणिक हैं ऐसी प्रतिज्ञा करै है, ताकीभी हानि होय है। जातैं अनेकक्षणवर्ती एक विज्ञान मान्या। अनेक पदार्थका ग्रहण क्रमकरि होय है। बहुरि वै कहै; जो, अनेक पदार्थका ग्रहण एकक्षणवर्तिविज्ञानकै तिस एक कालहीमैं होय है, तौ यह बनै नांही। जातैं जा क्षणमैं ज्ञान उपज्या सो तौ क्षण वा ज्ञानका स्वरूपका लाभही होय। जब आप भया ता पीछै अपना जो कार्य पदार्थका जाननां ताप्रति व्यापार करै। उपजनेहीकै क्षण तौ जानै नांही। बहुरि वै

कहै; जो, दीपकवत् जिस समय भया तिस समय पदार्थ प्रकाशै, तौ यहु दृष्टांत मिलै नांही। जातें दीपक तौ अनेकक्षणवर्ती है। ताके पदार्थनिका प्रकाशन होय है। बहुरि तिस योगीश्वरके ज्ञानकूं विकल्पतें भेदनितें रहित मानिये तब शून्यताका प्रसंग आवै है। जातें सर्वपदार्थनिकूं भिन्न जानेविना तौ वह ज्ञान शून्यही है ॥

बहुरि अकलंकदेव आचार्य प्रत्यक्षके तीन विशेषण कीये हैं। स्पष्ट, साकार, अंजसा ऐसे। तिनिका अर्थ-- स्पष्ट तो जो वीचिमैं अन्यकी प्रतीतिका व्यवधान न होय अर वस्तुकूं विशेषनि-सहित जानै ऐसा है। सो द्रव्यार्थिकनयकी प्रधानता करिये तब तो मतिश्रुतज्ञान अस्पष्टही है। जातैं द्रव्यका समस्तपणाकूं ए जानैं नांही। इंद्रिय मन प्रकाशादिकके सहायतें किंचित् जाने है। बहुरि पर्यायार्थिक नयकी प्रधानता करिये तब मतिज्ञान व्यवहारके आश्रयतें किंचित् स्पष्टभी जानै है॥ बहुरि साकार कहनेतें निराकारदर्शनका निषेध है। बहुरि अंजसा कहनेतें विभंगज्ञान तथा इंद्रियमनकरि अन्यथाज्ञान हो है ताका निषेध है। ऐसें कहनेतैं सूत्रतेंभी विरोध नाही है। जातैं प्रत्यक्ष ऐसा कहनेतें तौ आत्माधीन है, इंद्रियाधीन नांही है। बहुरि ज्ञानकी अनुवृत्तितें दर्शनका निषेध है। बहुरि सम्यक्के अधिकारतें कुज्ञानका निषेध है, ऐसें जाननां ॥

इहां कोई प्रश्न करै, सकलप्रत्यक्ष जो केवलज्ञान सो योगीश्वरनिकै है ऐसा काहेतैं जानिये? ताका उत्तर; जो, भलै प्रकार जाका निर्णय कीया जो बाधकप्रमाणका अभाव तातैं जानिये, जो, योगीश्वरनिकै केवलज्ञान है। जातैं समस्त आवरणके नाशतैं उपजै सो केवलज्ञान है। समस्तवस्तुकूं एककाल इंद्रियादिकै सहायविना सोही ज्ञान जानै, जाकै आवरण न होय। ताका बाधक अल्पज्ञान है नाहीं। जा ज्ञानका जोही साधक तथा बाधक होय। अन्यज्ञानका अन्यज्ञान बाधक होय नांही यह न्याय है। बहुरि बौद्धमती प्रत्यक्षका लक्षण निर्विकल्प सत्यार्थ कहै है। सो सर्वथा निर्विकल्पक होय सो तौ सत्यार्थ होय नांही। विपर्ययभी निर्विकल्पक है। निर्विकल्पकतैं अर्थका निश्चयही होता नांही। सत्यार्थ काहेतैं होय? बहुरि नैयायिकमती इंद्रियमनकै अर आत्माकै पदार्थतैं सन्निकर्ष होय ताकूं प्रत्यक्ष कहै हैं। सो यहभी अयुक्त है। जातैं ईश्वरकै ज्ञान इंद्रियमनतैं होय तौ सर्वज्ञपनां न होय। जातैं इंद्रियनिकै अर सर्वपदार्थनिकै संबंध नांही। तातैं जो सूत्र प्रत्यक्षका कह्या सोही निराबाध है॥

आगैं, कह्या जो परोक्ष प्रत्यक्ष दोय प्रकार प्रमाण तिनिमैं आदि प्रकारके विशेषकी प्राप्तिकै अर्थि सूत्र कहै हैं——

॥ मतिः स्मृतिः सञ्ज्ञा चिन्ताऽभिनिवोध इत्यनर्थान्तरम् ॥ १३ ॥

याका अर्थ— मति स्मृति संज्ञा चिंता अभिनिवोध ए पांच अनर्थांतर कहिये अन्य अर्थ नांही। मतिज्ञानहीके नाम हैं ॥ आदिविषें कह्या जो मतिज्ञान ताके येते पर्यायशब्द कहिये नामांतर हैं। जातैं ए सर्वही मतिज्ञानावरण कर्मके क्षयोपशमकरि उपज्या जो उपयोग ताही संबंधी हैं। इनकी श्रुतज्ञानादिविषैं प्रवृत्ति नांही। तहां मननं कहिये मानना इंद्रियमनतैं अवग्रहादिरूप साक्षात् जानना सो तौ मति कहिये। स्मृति कहिये स्मरण। जानेका पीछे यादि करना सो स्मृति स्मरण कहिये। संज्ञा संज्ञान कहिये। जानेको यादिकरि वर्तमान जानेकै जोडिकरि जाननां सो संज्ञान कहिये। याकूं प्रत्यभिज्ञानभी कहिये। चिंतनं चिंता कहिये यहु चिन्ह है तहां इसका चिन्हीभी होय है इत्यादि ऐसा चिंतवन करनां सो चिंता कहिये। याकूं तर्कभी कहिये। अभिनिवोधनं कहिये सन्मुख लिंगादि देखि लिंगी आदिका निश्चय करै सो अभिनिवोध कहिये। याकूं स्वार्थानुमानभी कहिये। इनि शब्दनिका भावसाधनरूप अर्थ कीया है। बहुरि करणसाधन कर्तृसाधन आदिभी यथासंभव जाननां। इनिका नामभेदतैं अर्थभेद होतैभी रूढिके वलतैं मतिके नामांतरही जानने। जैसैं इंद्र शक्र पुरंदर ऐसैं नामभेदतै अर्थभेद होतैंभी समभिरूढनयकी

अपेक्षातैं एक इंद्रहीके नाम हैं। बहुरि इनिका अन्य अन्य अर्थ करिये तब मत्यादि अन्य अन्य होयही हैं। तथापि मतिज्ञानावरणक्षयोपशमकरि उपयोग ताहि न उलंघि वर्तै है। इहां ऐसा अर्थ है। बहुरि सूत्रमैं इति शब्द है सो प्रकारवाची है। या मतिज्ञानका येते पर्यायशब्द हैं ऐसा इतिका अर्थ जाननां। तथा अभिधेयार्थवाचीभी कहिये। जो मति स्मृति संज्ञा चिंता अभिनिवोध ऐसें येते शब्दनिकरि जो अर्थ कहिये सो एक मतिज्ञान है॥

इहां विशेष कहिये है। सूत्रविषैं इति शब्द प्रकारवाची है। सो बुद्धि तौ मतिका प्रकार जाननां। जातैं पदार्थके ग्रहणके शक्तिस्वरूपकूं बुद्धि कहिये है। बहुरि मेधा स्मृतिका प्रकार है। जातैं शब्दके स्मरणकी शक्तिकूं मेधा कहिये है। बहुरि प्रज्ञा चिंताका प्रकार है। जातैं वितर्कणाका निषेध स्वरूप है। बहुरि प्रतिभा उपमा ये संज्ञाका प्रकार हैं। जातैं सामान्यपदार्थको सादृश्य दिखावनेरूप है। बहुरि संभव, अर्थापत्ति, अभाव ए स्वार्थानुमानके प्रकार हैं। जातैं ये सर्व लिंगहीतैं जानिये हैं। इहां कोई कहै स्मृति तौ अप्रमाण है सो प्रमाणविषैं कैसै अंतर्भूत होयगी? ताकूं कहिये; जो, स्मृति अप्रमाण होय तौ प्रत्यभिज्ञान न होय तब व्याप्तिकाभी ग्रहण न होय। तब अनुमान काहेतैं होय? अरु अनुमान न होय तब प्रत्यक्षकैभी प्रमाणता न ठहरै। तब सर्व-

शून्यता आवै। तातैं स्मृतिप्रमाण मानेही अन्यप्रमाण सिद्ध होय है। वहुरि स्मृतिकीज्यों अपने विषयविषैं प्रत्यभिज्ञानभी बाधारहित है। अतीतवस्तुका यादि करनां जो स्मरण सो याका कारण है। सो अतीतकूं यादिकरि वर्तमानमें तिसही वस्तूकूं देखि वहुरि अतीतवर्तमानकी एकता जोडरूपकूं जाननां तथा अतीत सारिखी वस्तु देखि दोऊके समानताका जाननां सो प्रत्यभिज्ञान है सो सत्यार्थ है। जैसैं मैं बालक था सोही मैं अब युवा हूं बूढा हूं इत्यादि। तथा पहलैं घट देख्या था तैसाही यह दूसरा घट है इत्यादि। याके भेद वहुत हैं सो प्रामाणशास्त्रतैं जाननै।

वहुरि साध्यसाधनके अविनाभावसंबंधरूप जो व्याप्ति, ताका जाननां सो तर्क है। सोभी प्रमाण है। सो यहु अप्रमाण होय तौ अनुमानभी प्रमाण न ठहरै। वहुरि अनुमानादिकमैं यहु गर्भित होय नाही। तातैं न्याराही प्रमाता जाननां। याका उदाहरण— जैसै धूम अग्निका संबंध देखिकरि ऐसा निश्चय कीया; जो, जहां जहां धूम है तहां तहां नियमकरि अग्नि है। ऐसे निश्चय करनेका नाम तर्क है। सो सत्यार्थ है, तातैं प्रमाण है। जो यहु ज्ञान अप्रमाण होय तौ अनुमान प्रमाण कैसे ठहरै? वहुरि साधन कहिये लिंग—चिन्ह, तातैं साध्य कहिये जाननेयोग्य वस्तु लिंगी, चिन्हवान्, ताका निश्चय करनां सो स्वार्थानुमान है। तहां साधन ताकूं कहिये; जाकी जह

साध्यवस्तु न होय, तहां प्राप्ति न होय। तथा जहां साधन होय तहां साध्य होयही होय ॥

बहुरि साध्यके तीन विशेषण हैं; शक्य, अभिप्रेत, अप्रसिद्ध। तहां जो साधनेकी योग्यता लीये होय सोही साध्य। जामैं योग्यता नांहीं सो साध्य नांही, जैसैं आकाशकै फूल। बहुरि जो साधनेवाला पुरुष अभिप्रायमैं ले, सोही साध्य, तिसाविना जगत्मैं अनेक वस्तु हैं ते वाकै साध्य नांही। बहुरि पहलै सिद्ध न हूवा होय, सो साध्य। सिद्ध भये फेरि साधना अफल है। ऐसै साध्यके सन्मुख जो पूर्वोक्त साधनकरि नियमरूप ज्ञान होय, तातैं याकूं अभिनिबोधभी कहिये। इहां कोई कहै; शास्त्रमैं मतिज्ञानसामान्यका नाम अभिनिबोध कह्या है; तुम स्वार्थानुमानकूं अभिनिबोध कैसैं कह्या? ताका उत्तर—जो, सामान्यार्थकी विशेषविषैं प्रवृत्ति होतैं विरोध नांही। जो अवग्रहादि अनेकभेदरूप मतिज्ञान कहिये तादि तौ सामान्यकूं अभिनिबोध कहिये। बहुरि जब विशेष लीजिये तब स्वार्थानुमानकूंभी कहिये। तहां साधनके संक्षेपतैं दोय भेद हैं; उपलब्धि अनुपलब्धि। तहां इंद्रिय मनकरि वस्तुका सद्भावका ग्रहण होय सो तौ उपलब्धि कहिये। बहुरि अभावका ग्रहणकूं अनुपलब्धि कहिये। तहां कार्योपलब्धि जैसैं; या पर्वतमैं अग्नि है, जातैं अग्निका कार्य धूम दीखै है। बहुरि कारणोपलब्धि जैसैं; वर्षा होसी, जातैं याका कारण बादल सघन दीखै

है। स्वभावोपलब्धि जैसैं; वस्तु उत्पादव्ययध्रौव्यस्वरूप है, जातैं सत्त्वस्वरूप है। सत्त्वका स्वभाव ऐसाही है। ऐसैं ये तीन भेद भये। इत्यादि साधनके अनेक भेद हैं, सो श्लोकवार्तिकतैं जानने ॥ बहुरि अन्यवादी अर्थापत्त्यादिक प्रमाण न्यारे मानै हैं ते सर्व इस मतिज्ञानमैं अंतर्भूत होय हैं, ऐसैं जाननां ॥

आगैं या मतिज्ञानका स्वरूपका लाभविषैं निमित्त कहां है? ऐसैं प्रश्न होतैं सूत्र कहे हैं—

॥ तदिन्द्रियानिन्द्रियनिमित्तम् ॥ १४ ॥

याका अर्थ— तत् कहिये सो मतिज्ञान इंद्रिय अर अनिंद्रिय है निमित्त कहिये कारण जाकूं ऐसा है ॥ प्रथम तौ इंद्रियशब्दका अर्थ कहै हैं। इन्दति कहिये परम ऐश्वर्यरूप वर्तै सो इंद्र है। तहां अर्थतैं आत्माका नाम इंद्र कह्या, सो ऐसा ज्ञानस्वभाव जो आत्मा, ताकै ज्ञानावरणकर्मका ऐसा क्षयोपशम होय, जो आप आपतैंही पदार्थनिकूं जाननेकूं असमर्थ होय। ताकै पदार्थ जाननेका कारण चिन्ह होय ताकूं इंद्रिय कहिये। जातैं व्याकरण ऐसा है 'तस्य लिंगम्' इस अर्थमैं इंद्रशब्दकै प्रत्यय आया है। अथवा ऐसाभी अर्थ जो गूढ अर्थकूं जनावै ताकूं लिंग कहिये। तहां आत्मा गूढ है— अदृष्ट है। ताके अस्तित्वकूं जनावनेविषैं चिन्ह है तातैं आत्माका लिंग इंद्रिय है। जैसैं लोकमैं अग्निका धूम लिंग है तैसैं जाननां। ऐसै यह स्पर्शादि इंद्रिय हैं ते करण हैं। सो कर्ता जो आत्मा

तिसविना न होय ऐसैं ज्ञाता जो आत्मा ताका आस्तित्व जनावै है। अथवा इंद्र ऐसा नाम कर्मका कहिये। ताकरि ये रचे हैं निपजाये हैं। तातैंभी इंद्रिय ऐसा कहिये। ते स्पर्शनादि आगैं कहसी ॥

बहुरि अनिंद्रिय नाम मनका है। याकूं अंतःकरणभी कहिये। इहां कोई पूछै है- इंद्र जो आत्मा ताहीका लिंग जो मन ताका नाम इंद्रियका प्रतिषेधकरि अनिंद्रिय ऐसा नाम कैसैं दीया? ताका उत्तर-जो, इहां इंद्रियका प्रतिषेधकर नाही है। 'न इन्द्रियं अनिन्द्रियं' ऐसैं कहनेमैं ईषत् अर्थ लेना। किंचित् इंद्रियकूं अनिंद्रिय कह्या है। जैसैं काहू कन्याकूं अनुदरा नाम कह्या, तहां जाकै उदर न होय ताकूं अनुदरा कहिये ऐसा अर्थ न लेना। जाका ईषत् किंचित् पतला क्षीण उदर होय ताकूं अनुदरा कहिये ऐसा अर्थ लेना। बहुरि कोई पूछै है- इहां ईषत् अर्थ कैसैं है? ताका उत्तर— ए इंद्रिय हैं ते प्रतिनियत कहिये नियमरूप जुदाजुदा जिनका देश अरु विषय है ऐसैं हैं। बहुरि कालांतरस्थायी हैं। जा कालमैं विषयतैं उपयुक्त न होय ता कालमैंभी अवस्थित हैं। बहुरि मन है सो यद्यपि इंद्र कहिये आत्मा ताका लिंग है तथापि नियमकरि एकही देशविषैं तथा एकही विषयका ग्राहक नाही। अन्यकालमैं जाका अवस्थान नाही अनवस्थित है चंचल है। याहीतैं याकूं अंतःकरण कहिये अभ्यंतर इंद्रिय कह्या है। जातैं गुणदोषका विचार

स्मरणविषैं इंद्रियनिकी याकै अपेक्षा नाही है। बहुरि नेत्रादिककीज्यौं बाह्यतैं अन्य मनुष्यादिक तिनिकरि न जाणिये है। ताहीतैं अंतर्गत इंद्रिय ऐसा कहिये है। ऐसै ईषत् अर्थ याविषैं संभवै है॥

बहुरि कोई पूछै है— सूत्रविषैं तत् शब्द किस प्रयोजनकूं है? ताका उत्तर— तत् शब्द मतिज्ञानके कहनेकै अर्थि है। बहुरि कोई कहै है— मतिज्ञान तौ लगताही है अनंतरही है। यातैं ऐसा परिभाषा है, जो, अनंतरकी विधिका सूत्र होय कै निषेधका होय। यातैं ता मतिज्ञानका विना तत् शब्दही ग्रहण होय है। तत् शब्द निरर्थक है। ताकूं कहिये हैं— इहां तत् शब्द है सो इस सूत्रके अर्थिभी है बहुरि अगले सूत्रके अर्थिभी है। जो मत्यादिक पर्याय शब्दकरि कहनेमैं आवै। ऐसा मतिज्ञान है सो इंद्रियानिंद्रियनिमित्तक है। ऐसैं तौ इस सूत्रकै अर्थि भया। बहुरि सोही मतिज्ञान अवग्रह ईहा अवाय धारणास्वरूप है ऐसै आगिले सूत्रकै अर्थि भया। जो ऐसैं न होय तत् न कहिये तौ पहलैं मत्यादिशब्दकरि वाच्य ज्ञान है ऐसैं कहिवेकरि इंद्रिय अनिंद्रियनिमित्तक श्रुतज्ञान है ऐसा प्रसंग आवै। तथा सोही श्रुतज्ञान अवग्रह ईहा अवाय धारणास्वरूप है ऐसा अनिष्ट अर्थका संबंध होय है। बहुरि यह विशेष जननां— जो ए इंद्रिय मन हैं ते मतिज्ञानके बाह्य उत्पत्तिनिमित्त हैं। अंतरंग निमित्त तौ मतिज्ञानावरणीय कर्मका क्षयोपशमही है।

आगैं कहै हैं, ऐसैं मतिज्ञानका उत्पत्तिका निमित्त तौ जाण्या; परंतु याके भेद केते हैं? यह निर्णय न भया। ऐसा प्रश्न होतें याके भेदनकी प्राप्तिकै अर्थि सूत्र कहै हैं—

॥ अवग्रहेहावायधारणाः ॥ १५ ॥

याका अर्थ— अवग्रह ईहा अवाय धारणा ए च्यारि मतिज्ञानके भेद हैं॥ इनिका लक्षण कहिये हैं। विषय जे रूपादिक बहुरि विषयी जे इंद्रिय तिनका संबंध होतें ताका लगताही तौ दर्शन हो है। ताके लगताही वस्तुमात्रका ग्रहण सो अवग्रह है। जैसैं नेत्रकरि यह श्वेतरूप है ऐसैं ग्रहण सो अवग्रह है। बहुरि अवग्रहकरि ग्रहण कीया जो वस्तु ताका विशेषकी वांछा सो ईहा है। जैसैं अवग्रहकरि श्वेतरूप देख्या सो कहा बुगलाकी पंक्ति है अथवा कहा धुजा है? ऐसैं याकूं संशय न जाननां। जातैं संशय तौ दोय पक्षविषैं अनिश्चित ज्ञान है अप्रमाण है। बहुरि ईहा एकही पक्षविषैं वांच्छारूप ज्ञान है। जो बुगलाकी पंकति है तौ वाहीकी वांछा है। जो पताका है तौ वाहीकी वांछा है। बहुरि ईहाकरि जान्या था ताका विशेष अवयवादिकका निर्णय होनेतैं जैसा है तैसा नियमरूप निश्चय होना सो अवायज्ञान है। जैसैं ईहाविषैं बुगलाकी पंक्तीकी तर्फ वांछा थी। परंतु धुजाका निषेध न कीया। अब इहां ऊंचा चढना नीचा आवनां पांख

हलावनां इत्यादि क्रियाचिन्ह देखी ऐसा निश्चय भया जो बुगलापंक्तिही है, धुजा नांही है; तहां अवायज्ञान कहिये। बहुरि अवायकरि निश्चय कीया जो वस्तु ताका ऐसा दृढज्ञान होय जो और कालमैं न भूलने यादि आवनेकूं कारण होय, तहां धारणाज्ञान हो है। जैसैं अवायज्ञानकरि प्रभातिमैं बुगलापंक्ति देखी थी सोही यहु अब मैं देखी ऐसे ज्ञानकूं कारण जो ज्ञान, सो धारणाज्ञान कहिये। ऐसैं इनि अवग्रहादिकनिका कहनेका अनुक्रम इनकी उत्पत्तिके अनुक्रमतैं कह्या ॥

इहां ऐसा भावार्थ जाननां— जो वस्तु सामान्यविशेषस्वरूप है तिस वस्तुकै अरु इंद्रियनिकै संबंध होतैं प्रथम तौ सामान्य अवलोकनरूप निराकार दर्शन होय है तापीछै ता वस्तुका सामान्य-विशेषरूप साकार ग्रहण होय ताकूं अवग्रह कहिये। तापीछै तिसही वस्तूमैं विशेष बहुत हैं तिनिमैंतैं कोई वस्तुके विशेषरूप जाननेकी अभिलाषारूप ज्ञान प्रवर्ता, जो, 'यह फलाणा विशेष होगा' ताकूं ईहा कहिये। तापीछै तिसही विशेषकी क्रिया चिन्हि देखी यहु निश्चय भया, जो, 'यहु अभिलाषामैं ग्रहण हुईथी सोही है' ताकूं अवाय कहिये। तापीछै तिसहीविषैं ऐसा ज्ञान दृढ भया, जो, 'अन्यकालमैं वाकूं भूलिसी नाही' ताकूं धारणा कहिये। इनिमैं विषयका भेद भया, तातैं गृहीतका ग्रहण नांही है। बहुरि सामान्यपणैं वस्तुका रूप ग्रहण है, तातैं नयभी नांही है।

बहुरि विषय सत्यार्थ निर्बाध है तातैं प्रमाण है। बहुरि इंद्रियमनकै पदार्थसंबंध होनेतैं किंचित् स्पष्टताभी इनिमैं है। तातैं व्यवहारकरि प्रत्यक्षभी इनिकूं कहिये हैं। परमार्थतैं परोक्षही है। बहुरि अन्यवादी सर्वथा एकांत वस्तुका स्वरूप मानै हैं। तिनिकै अवग्रहादिक भेदरूप ज्ञानकी कथनीही नांही। ऐसैं जानना ॥

आगैं, कह्या जे अवग्रहादिक तिनिके भेदकी प्राप्तिकै अर्थि सूत्र कहे हैं —

॥ बहुबहुविधक्षिप्रानिस्सृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणाम् ॥ १६ ॥

याका अर्थ-- कहे जे अवग्रहादिक, ते बहु आदि छह बहुरि छहही इनके प्रतिपक्षी तिनिसहित बारह भये, तिनिका ज्ञान होय है ॥ प्रकृत कहिये पूर्व कहे जे अवग्रहादिक ज्ञानरूप-क्रियाका विशेष तिनिकी अपेक्षारूप या सूत्रविषैं षष्ठीविभक्तीकरि कर्मका निर्देश कीया है। तहां बहु शब्द तौ यहां संख्या तथा विपुल कहिये समूहपणाका वाचक है। जातैं दोऊमैं विशेष नांही। सामान्यसंख्या तथा बहुतका ग्रहण करनां। जैसैं एक दोय बहुत ऐसैं तौ संख्या। बहुरि भात बहुत है दालि बहुत है इहां विपुलताही है संख्या न कही। बहुरि विधशब्द प्रकारवाची है, जैसैं बहुतप्रकार है। बहुरि क्षिप्रशब्दका ग्रहण काल अपेक्षा है। जैसै कोई वस्तु शीघ्र परिणमै। बहुरि अनिःसृत

कहिये जाका समस्त पहल शरीरादिक प्रगट नीसरे न होय सो अनिःसृत है। बहुरि अनुक्त कहिये अभिप्रायहीकरि जाका ग्रहण होय काहूके कहनेकी यामैं मुख्यता नांही। बहुरि ध्रुव कहिये निरंतर जाका जैसाका तैसा ग्रहण होवो करै ताकूं कहिये। बहुरि सेतर कहिये इनिके प्रतिपक्षीकरि सहित लेणे। सो बहुतका तौ प्रतिपक्षी एक तथा अल्प। बहुविधका एकविध। क्षिप्रका अक्षिप्र। अनिःसृतका निःसृत। अनुक्तका उक्त। ध्रुवका अध्रुव। ऐसै ये बारह भये। तिनि अवग्रहके बारहके बारह भेद भये। बहुतका अवग्रह, अल्पका अवग्रह, बहुविधका अवग्रह, एकविधका अवग्रह, क्षिप्रका अवग्रह, अक्षिप्रका अवग्रह, अनिःसृतका अवग्रह, निःसृतका अवग्रह, अनुक्तका अवग्रह, उक्तका अवग्रह, ध्रुवका अवग्रह, अध्रुवका अवग्रह, ऐसैं बारह भेदरूप अवग्रह है। ऐसैंही ईहा, अवाय, धारणा इनि तीनिकैभी बारह बारह भेद कीजिये। तब सर्व मिलै अठतालीस ४८ होय ॥

बहुरि ये पांच इंद्रिय एक मन इनि छहूंनिकरि होय है। तातैं छहबार अठतालीसकूं जोडिये तब दोयसे अठ्यासी भेद होय हैं। बहुरि बहु आदिक छहके नाम सूत्रमैं कहै अरु छह इनि प्रतिपक्षीकूं इतर कहे, ताका प्रयोजन यह है– जो बहु आदिक तौ मतिज्ञानावरणका क्षयोपशम बहुत

होय तब होय है। तातैं ये प्रधान हैं। तातैं इनिकूं पहलै कहे। बहुरि अन्य हैं ते तिसतैं थोरे क्षयोपशमतैं होय हैं। तातैं तिनिकूं पीछे कहे। इहां कोई पूछे है; बहुविषैं अरु बहुविधविषैं कहा विशेष है? तहां कहिये बहुपणा तौ बहुविषैंभी है बहुविधविषैंभी है। परंतु एकप्रकार नानाप्रकारका विशेष है। बहुरि कोई पूछे उक्त निस्सृतविषैं कहां विशेष है? समस्त नीसऱ्या प्रकट होय ताकूं निःसृत कहिये उक्तभी ऐसाही है। तहां कहिये परके उपदेशपूर्वक ग्रहण होय सो उक्त है आपहीतैं ग्रहण होय सो निःसृत है यहू विशेष है। बहुरि केई आचार्य क्षिप्र निःसृत ऐसा पाठ पढे हैं। तामैं निःसृत पहले छहमैं आवै है। ते याका ऐसैं उदाहरण कहै हैं। जैसै श्रोत्रइंद्रियकरि पहली शब्दका अवग्रह हुवा। तहां यहु मयूरका शब्द है तथा कुरचिका शब्द है ऐसैं कोई जाणै ताकूं तौ निःसृत कहिये। बहुरि अनिस्सृत यातैं अन्य शब्दमात्रही है ऐसा जानै है। बहुरि कोई पूछे, ध्रुवअवग्रहविषैं अरु धारणअवग्रहविषैं कहा विशेष है? तहां कहिये है– क्षयोपशमकी प्राप्तिके कालविषैं शुद्धपरिणामके संतानकरि पाया जो क्षयोपशम तातैं पहले समय जैसा अवग्रह भया तैसाही द्वितीयादिक समयनिविषैं होय है किछु कमभी नाही होय अरु अधिकभी नाही होय है ताकूं तौ ध्रुवावग्रह कहिये। तथा शुद्धपरिणामका अरु संक्लेशपरिणामका मिश्रपणां मिलापतैं क्षयोपशम होय। तातैं

उपज्या जो अवग्रह सो कोई कालविषैं बहुतका होय। कोई कालविषैं अल्पका होय। कोई कालविषैं बहुविधका होय। कोई कालविषैं एकविधका होय। ऐसैं हीन अधिपणातैं अध्रुव अवग्रह होय है। बहुरि धारणा है जो जा पदार्थकूं ग्रह्या ताकूं नाहीं भूलनेका कारण रूप ज्ञान है। ऐसै इनि दोऊनिका बडा अंतर है॥ ऐसै अवग्रहादिक बहु आदिक पदार्थनिका होय है सो सत्यार्थ निर्बाध प्रमाण स्याद्वादमतविषैं सिद्ध होय है। जे सर्वथा एकांतवादी हैं तिनिकै ए ज्ञानके भेद तथा पदार्थके भेद संभवै नाहीं॥

आगैं, जो ए अवग्रहादिक बहु आदिकके जाननेवाले हैं, तथापि बहु आदिक किसके विशेष हैं? ऐसा प्रश्न होतैं सूत्र कहै हैं—

॥ अर्थस्य ॥ १७ ॥

याका अर्थ— ए बहु आदिक बारह हैं ते अर्थके विशेषण हैं॥ नेत्रादिक इंद्रियनिका विषय है सो तौ अर्थ है, ताके बहु आदि विशेषण हैं। इनिकरि विशिष्ट जो अर्थ कहिये वस्तु ताकै अवग्रहादिक होय हैं। इहां कोई पूछै है; जे बहु आदिक हैं ते अर्थ तौ हैंही। फेरी सूत्र कहनेका कहा प्रयोजन? ताका उत्तर— जो तैं पूछ्या, सो तौ सत्य है। परंतु इहां अन्यवादी कल्पना

करै है तिनिका निषेधकै अर्थि 'अर्थस्य' ऐसा जुदा सूत्र कह्या है। केई वादी ऐसा मानै है, कि रूप आदि गुण हैं तेही इंद्रियनिकरि स्पर्शिये हैं। तिनिकाही अवग्रह है द्रव्यका न हो है। सो यह कहना अयुक्त है। जातैं रूपादिक गुणनिकी तौ मूर्ति आकार नांही जो इंद्रियनिकै स्पर्श होय। यहु मूर्ति तौ द्रव्यकीही है ताहीतैं इंद्रिय भिडै है। तब फेरि वादी कहै है, जो, ऐसैं है तौ लोक ऐसैं कहै है, जो, रूप मैं देख्या, गंध मैं सूंघ्या, सो यहु कहनां न ठहरै। ताकूं कहिये, जो, पर्यायनिकूं प्राप्त होय है तथा पर्याय जाकूं प्राप्त होय ताकूं अर्थ कहिये है। सो अर्थ गुणपर्यायनिका समुदाय द्रव्यही है। ताकै इंद्रियनितैं संबंध होतैं तातैं अभिन्न जे रूपादिक गुण तिनिविषैं ऐसा व्यवहार प्रवर्तै है, जो, रूप देख्या, गंध सूंघ्या इत्यादि ॥

आगैं कहै हैं, कहा ए अवग्रहादिक सर्वही इंद्रिय मनकै होय हैं कि कछु विषयविशेष हैं? ऐसा प्रश्न होतैं सूत्र कहै हैं—

॥ व्यञ्जनस्यावग्रहः ॥ १८ ॥

याका अर्थ— व्यंजन कहिये अव्यक्त जो शब्दादिक ताकै अवग्रहही होय है। ईहादिक न होय हैं ऐसा नियम है॥ तहां व्यंजन ऐसा शब्दादिका समूह अव्यक्त होय ताका अवग्रह होय।

इहां कोई पूछै है यह सूत्र काहेके अर्थि कह्या? ताका उत्तर, जो, नियमकै अर्थि है। व्यंजनका अवग्रहही होय है। ईहादिक नाही होय है। ऐसा नियमकै अर्थि है। फेरि कोई कहै; जो, ऐसें है तौ नियमका वाचक एवकारशब्द इहां चाहिये। ताकूं कहिये, जो, एवकार नांही चाहिये। जातैं जाका विधान पहली सूत्रमैं सिद्ध हुवा होय ताकूं फेरि कहनां सो यहु कहनांही नियमका वाचक है। अवग्रहका विधान पहली सूत्रमैं सिद्ध हुवा। इस सूत्रमैं फेरि अवग्रहका नाम कह्या, तातैंही नियम सिध्द भया। एवकार काहेकूं कहिये? बहुरि इहां कोई प्रश्न करै है– अवग्रहका ग्रहण अर्थमैं तथा व्यंजनमैं तुल्य है। इनिमैं विशेष कहा है? ताका उत्तर अर्थावग्रह व्यंजनावग्रह इनि दोऊनिमैं व्यक्त अव्यक्तका विशेष है। सोही कहिये है। जैसैं नवा मांटीका डीवाविषैं जलका कणां क्षेपियें तहां दोय तीन आदि कणाकरि सींच्या जेतैं आला न होय तेतैं तो अव्यक्त है। बहुरि सोही डीवा फेरि फेरि सींच्या हुवा मंद मंद आला होय तब व्यक्त है। तैसैंही श्रोत्रादि इंद्रियनिका अवग्रहविषैं ग्रहणयोग्य जे शब्दादि परिणया पुद्गलस्कंध ते दोय तीन आदि समयनिविषैं ग्रह्या हुवा जेतैं व्यक्त ग्रहण न होय तेतैं तौ व्यंजनावग्रह हो है। बहुरि फेरि फेरि तिनिका ग्रहण होय तब व्यक्त होय, तब अर्थावग्रह होय है। ऐसैं व्यक्तग्रहणतैं पहलैं तौ व्यंजनावग्रह कहिये। बहुरि व्यक्त ग्रहणकूं

अर्थावग्रह कहिये। यातैं अव्यक्तग्रहणरूप जो व्यंजनावग्रह तातैं ईहादिक न होय है ऐसैं जाननां॥

आगैं, सर्वही इंद्रियनिकै व्यंजनावग्रहका प्रसंग होतैं जिनि इंद्रियनिकै व्यंजनावग्रह न संभवै, तिनिका निषेधकै अर्थि सूत्र कहै हैं—

॥ न चक्षुरनिन्द्रियाभ्याम् ॥ १९ ॥

याका अर्थ— नेत्र इंद्रिय अरु मन इनि दोऊनिकरि व्यंजनावग्रह न होय है। जातैं ए दोऊ अप्राप्यकारी कहिये पदार्थतैं भिडिकरि स्पर्शनकरि नांही जानै हैं दूरिहीतैं जानै हैं। जातैं अप्राप्त कहिये विना स्पर्श्या अविदिकं कहिये सन्मुख आया निकट प्राप्त हूवा बाह्य प्रकाशादिककरि प्रगट कीया ऐसा पदार्थकूं नेत्र जाणे है। बहुरि मन है सो विनां स्पर्श्या–दूर तिष्ठ्या पदार्थकूं विचारमैं ले है। यातैं इनि दोऊनिकै व्यंजनावग्रह नाही हो है। बहुरि इहां कोई पूछै है, जो, नेत्रकै अप्राप्यकारिपणां कैसैं निश्चय कीजिये? ताका उत्तर– जो, आगमतैं तथा युक्तितैं निश्चय कीजिये है। सो प्रथम तौ शास्त्रमैं कह्या है, जो, शब्द तौ स्पर्शतैं सुणिये है। बहुरि रूप है सो अस्पर्शतैं देखिये है। बहुरि गंध स्पर्श रस ये स्पर्शे तथा संघ्राणरूप भये जाणिये है। यहु तौ आगम है। बहुरि यहु युक्ति है जो नेत्र है ते अप्राप्यकारी है, जातैं यह स्पर्शेकूं नाही जानै है। जो प्राप्य-

कारी होय तो स्पर्शन इंद्रियकीज्यों स्पर्श्या जो अंजन ताका रूपकूं देख ले। सो अंजनका रूपकूं नेत्र नाहीं जानै है। यातैं मनकीज्यौं नेत्र अप्राप्यकारी है ऐसा निश्चय कीजिये। तातैं नेत्र मन इनि दोऊविना अवशेष च्यारि इंद्रियनिकै व्यंजनावग्रह होय है। ऐसैं या व्यंजनावग्रहके बहु आदि बारह विषयकी अपेक्षा अठतालीस ४८ भेद होय हैं। ऐसैं अर्थावग्रहके २८८ मिलि मतिज्ञानके तीनसै छतीस ३३६ भेद होय हैं। बहुरि नेत्रके अप्राप्यकारीकी विधिनिषेधकी चरचा विशेषकरि श्लोकवार्तिकमैं है। तहांतैं जाननी ॥ कोई कहै, जैसैं नेत्र दूरतैं जानै है तैसैं शब्दभी दूरतैं सुणिये है। तातैं अप्राप्यकारी कहौ। ताकूं कहिये, ऐसैं नाही है। जातैं जिस ठिकाणैंतैं शब्द उपजै है तहांतैं लगाय कर्णइंद्रियके प्रदेशतांईके पुद्गल शब्दरूप होय जाय है, तब सुणिये है। ऐसैंही गंधद्रव्य जहां तिष्ठै है तहांतैं लगाय नासिका इंद्रियके प्रदेशतांईके पुद्गल गंधरूप होय जाय हैं। ते सूंघिये हैं ऐसैं कर्णइंद्रिय तथा घ्राणइंद्रिय प्राप्यकारी है। ऐसैं नेत्र नाही हैं। यह अप्राप्यकारीही है ॥

आगैं शिष्य पूछै है, जो, मतिज्ञान तौ स्वरूपतैं तथा भेदनसहित कह्या। ताकै लगता श्रुतज्ञान कह्या है। ताका अब लक्षण तथा भेद कहनेयोग्य है। ऐसैं पूछै आचार्य सूत्र कहे हैं—

## ॥ श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेकद्वादशभेदम् ॥ २० ॥

याका अर्थ— श्रुतज्ञान है सो मतिज्ञानपूर्वक है । वहुरि दोय भेदरूप है। ते दोय भेद अनेक भेदरूप तथा बारह भेदरूप हैं ॥ यहां यहु श्रुतशब्द है सो सुननेकूं ग्रहणकरी निपजाया है। तोभी रूढिके वशतैं कोईक ज्ञानका विशेष है तामैं वर्तै है। भावार्थ, ज्ञानका नाम है। जैसैं कुशल ऐसा शब्द है सो कुश जो डाभ ताकूं छेदै ताकूं कुशल कहिये। ऐसैं व्युत्पत्तितैं निपजाया है। तौभी रूढिके वशतैं प्रवीण पुरुषका नाम है तैसैं जाननां। वहुरि यह ज्ञानविशेष कह्या सो कहा है? ऐसैं पूछै कहै हैं। 'श्रुतं मतिपूर्वं' कहिये श्रुत है सो मतिपूर्वक है। ऐसैं श्रुतकै प्रमाणरूप ज्ञानपणा है। जो पूरै उत्पत्ति करै ताकूं पूर्व ऐसा कहिये। सो पूर्व ऐसा नाम निमित्तका भया जाकूं कारणभी कहिये। बहुरि मतिके स्वरूप पहलै कह्याही था। सो मति है कारण जाकूं ताकूं मतीपूर्वक कहिये। इहां कोई कहै, जो, मतीपूर्वक श्रुत कह्या सो यहुभी मतिस्वरूपपणांकूंही प्राप्त होयगा। जातैं लोकविषैं कारणसारिखाही कार्य देखिये है। तहां कहिये हैं, जो, यहु एकांत नाही अन्यसारिखाभी होय है। जैसैं घट है सो दंड चाक आदि कारणकरि निपजै है, परंतु तिस स्वरूप नाही है। वहुरि ऐसाभी है, जो, बाह्यकारण तौ मतिज्ञानादिक विद्यमान होय अरु जाकै श्रुतज्ञानावरणकर्मका प्रवल

उदय होय तौ श्रुतज्ञान होय नाही। श्रुतज्ञानावरणका क्षयोपशमका प्रकर्ष होय तब श्रुतज्ञान उपजै। ऐसैं मतिज्ञान निमित्त मात्र जाननां। मतिसारिखाही श्रुतज्ञान न जाननां ॥

बहुरि इहां कोई कहै है, जो, श्रुतकूं तौ अनादिनिधन मानिये है। याकूं मतिपूर्वक कहनेतैं नित्यपणाका अभाव होय है। जातैं जाका आदि है सो अंतसहितभी होय है। बहुरि पुरुषका कीयापणातैं अप्रमाणभी ठहरै है ॥ तहां आचार्य कहै हैं। यह दोष नाही है। द्रव्यादिक सामान्यकी अपेक्षा तौ श्रुत अनादिनिधन मानिये है। काहू पुरुष कोई क्षेत्रकालविषैं नवीन कीया नाही। बहुरि तिनि द्रव्य क्षेत्र काल भावनिकी विशेषापेक्षाकरि श्रुतका आदिभी संभवै है। तथा अंतभी संभवै है। यातैं मतिपूर्वक कहिये है। जैसैं अंकुरा है सो बीजपूर्वक हो है। सोही संतानकी अपेक्षाकरि अनादिनिधन चल्या आवै है। बहुरि अपौरुषेयपणां प्रमाणका कारण नाही है। जो ऐसे होय तौ चोरि आदिका उपदेशका संतान अनादिनिधन अपौरुषेय चल्या आवै है। सो यहुभी प्रमाण ठहरै। या उपदेशका कर्ता कोईकूं यादि नाही, जो, वा पुरुषनैं चोरीका उपदेश चलाया है। बहुरि अनित्य प्रत्यक्षादि प्रमाणही है। अनित्यके प्रमाणता कहिये तौ कहा विरोध है? बहुरि कोई कहै है, प्रथम उपशमसम्यक्त्वकी उत्पत्ति होतैं ज्ञानभी सम्यक् तिसही कालमैं होय है। तातैं

मतिपूर्वकपणां श्रुतकै कैसै ठहरै? ताकूं कहिये। यह कहना अयुक्त हैं। जातैं ज्ञानकै सम्यक्पणा सम्यक्त्वकी अपेक्षातैं भया है। ज्ञानका स्वरूपका लाभ तौ अनुक्रमतैंही है। ऐसैं मतिपूर्वकपणामैं विरोध नाही ॥

बहुरि कोई कहै है, मतिपूर्वक श्रुत है यह लक्षण तौ अव्यापक है–सर्वश्रुतज्ञानमैं व्यापै नांही। जातैं श्रुतपूर्वक श्रुत मानिये है। सोही कहिये है। शब्दरूप परिणया जे पुद्गलस्कंध ते अक्षर पदरूप भये। तब घट आदि शब्द कर्ण इंद्रियका विषय भया। तथा ताके रूपादिक नेत्र आदिके विषय भये, पीछे तेही पहलै श्रुतज्ञानके विषय भये। तिनिमैं किछु व्यभिचार नांही। तिनितैं कीया है संकेत जानैं ऐसा पुरुष है सो घट ऐसै शब्दके गोचर जो घट नामा पदार्थ तातैं जलधारणादिक जे कार्य तिनरूप जो दूसरा संबंधका विशेष ताही प्राप्त हो है। तथा धूमादिक पदार्थतैं अग्न्यादिक वस्तुकूं प्राप्त हो है। तिस काल श्रुतज्ञानतैं श्रुतज्ञान भया ऐसैं कहतैं आचार्य उत्तर कहै हैं। जो, यह दोष नांही है। तिस श्रुतज्ञानकैभी उपचारतैं मतिपूर्वकपणांही कहिये। जातैं श्रुतज्ञानकैभी कोई ठिकाणै मतिहीका उपचार कीजिये है। जातैं मतिपूर्वकही सोही श्रुतज्ञान भया है ऐसैं जाननां। बहुरि सूत्रमैं भेदशब्द है सो जुदा जुदा कहनां दोय भेदभी है, अनेक-

भेदभी है बारहभेदभी है ऐसैं। तहां दोय भेद तौ अंगबाह्य अर अंगप्रविष्ट ऐसे हैं ॥

बहुरि अंगबाह्य तौ अनेकभेदरूप है। तिनिके नाम दशवैकालिक उत्तराध्ययन आदिक ते चौदह प्रकीर्णक कहावै हैं, तिनिके नाम– सामायिक। चतुर्विंशति स्तव। वंदना। प्रतिक्रमण। वैनयिक। कृतिकर्म। दश वैकालिक। उत्तराध्ययन। कल्पव्यवहार। कल्पाकल्प। महाकल्प। पुंडरीक। महापुंडरीक। निषेधिका। ऐसैं चौदह हैं॥ बहुरि अंगप्रविष्टके बारह भेद हैं। ते कौन सोही कहिये हैं। १ आचार। २ सूत्रकृत। ३ स्थान। ४ समवाय। ५ व्याख्याप्रज्ञप्ति। ६ ज्ञातृधर्मकथा। ७ उपासकाध्ययन। ८ अंकृतदृश। ९ अनुत्तरोपपादिक दश। १० प्रश्नव्याकरण। ११ विपाकसूत्र। १२ दृष्टिवाद। ऐसे बारह॥ तहां दृष्टिवादके भेद परिकर्म। सूत्र। प्रथमानुयोग। पूर्वगत। चूलिका ऐसै पांच॥ तहां परिकर्मके भेद १ चंद्रप्रज्ञप्ति। २ सूर्यप्रज्ञप्ति। ३ जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति। ४ द्वीपसागरप्रज्ञप्ति। ५ व्याख्याप्रज्ञप्ति॥ बहुरि चूलिकाके पंच भेद १ जलगता। २ स्थलगता। ३ मायागता। ४ रूपगता। ५ आकाशगता। ऐसै पांच॥ बहुरि पूर्वगतके भेद चौदह १ उत्पाद। २ अग्रायणीय। ३ वीर्यप्रवाद। ४ अस्तिनास्तिप्रवाद। ५ ज्ञानप्रवाद ६ सत्यप्रवाद। ७ आत्मप्रवाद। ८ कर्मप्रवाद। ९ प्रत्याख्याननामधेय। १० विद्यानुवाद

११ कल्याणनामधेय। १२ प्राणावाय। १३ क्रियाविशाल। १४ लोकबिंदुसार ऐसैं चौदह। ऐसैं बारह अंग कहै ॥ तिनिके वीस अंक प्रमाण अपुनरुक्त अक्षर हैं। तिनिके पद एकसो बारह कोडि तियालिस लाख अठावन हजार पांच है। एक पदके अक्षर सोलासे चौतीस कोडि तियासी लाख सात हजार आठसे अठ्यासी हैं। प्रकीर्णकनिके अक्षर आठ कोडि एक लाख इक्यासीसे पचेहत्तरि है॥

अर पूर्वनिकी उत्पत्ति ऐसैं है। प्रथम पर्यायज्ञान अक्षरकै अनंतवै भाग सूक्ष्मनिगोद लब्धपर्याप्त जीवकातैं लगाय वधता वधता पर्यायसमास ज्ञान हो है। वहुरि अक्षरज्ञान, अक्षरसमासज्ञान, पदज्ञान पदसमासज्ञान, संघातज्ञान, संघातसमासज्ञान, प्रतिपत्तिज्ञान, प्रतिपत्तिसमासज्ञान, अनुयोगज्ञान, अनुयोगसमासज्ञान, प्राभृतज्ञान, प्राभृतसमासज्ञान, प्राभृतप्राभृतज्ञान, प्राभृतप्राभृसमासज्ञान, वस्तुज्ञान, वस्तुसमासज्ञान, पूर्वज्ञान, पूर्वसमासज्ञान ऐसैं वीस स्थानरूप पूर्वकी उत्पत्ति जाननी। वहुरि पूर्वके चौदह भेद कहे तिनिमैं एकसो पिच्याणवै वस्तु हो हैं। अर एक एक वस्तुमैं वीस वीस प्राभृत कहै हैं। ते गुणतालीससैं प्राभृत होय हैं। इनि अंग अर अंगबाह्यश्रुतके अक्षरनिकी तथा पदनिकी संख्या तथा तिनिमैं जो जो प्रधानताकरि व्याख्यान है सो विशेषकरि गोमटसारमैं कह्या है। तहांतैं जानना ॥

इहां कोई फेरि पूछै है, जो यहु श्रुतज्ञान दोय भेदरूप बारह भेदरूप है सो यहु विशेष काहेतैं भया है? तथा ताकी प्रमाणता कैसे है। ताका उत्तर यहु विशेष वक्ताके विशेषतैं है। वक्ता तीन प्रकार है। प्रथम तौ सर्वज्ञ है तहां तीर्थंकर तथा सामान्यकेवली बहुरि श्रुतकेवली। बहुरि तिनिके पीछले सूत्रकार टीकाकारतांई भये आचार्य। तिनकूं आरातीय ऐसा नाम कहिये। तहां सर्वज्ञपरमर्षि जिनिकै छद्मस्थके चिंतवनमैं न आवै ऐसी अचिंत्य विभूतिका विशेष पाईये। तिनिनैं अर्थतैं आगम कह्या। ताका प्रमाणपणां तौ प्रत्यक्षज्ञानीपणांतैं तथा निर्दोषपणांतैंही है। बहुरि तिनिके निकटवर्ती जे बुद्धिके अतिशय तथा ऋद्धिकरि युक्त ऐसैं गणधर श्रुतकेवली तिनिकरि रचे अंगपूर्वरूप सूत्र है। ताका प्रमाणपणां सर्वज्ञकी प्रमाणतातैं हैही। ते सर्वज्ञके निकटवर्तीही हैं। बहुरि आरातीय जे उनके पीछलै आचार्य तिनिनैं इस कालदोषतैं थोरी आयु थोरी बुद्धि, थोरे सामर्थ्यके धारी जे शिष्य तिनिके उपकारकै अर्थि दश वैकालिकादिक रचे हैं। ताका प्रमाणपणां अर्थतैं जो सर्वज्ञ तथा गणधरानिनैं कह्या है सोही यह है ऐसै है। जैसैं क्षीरस-मुद्रका जल एक घटमैं भरि ल्यावै सो क्षीरसमुद्रकाही है। तैसैं यह सर्वज्ञकी परंपरातैं अर्थ ले आपना बुद्धिसारू कह्या सो वहही है ऐसै जाननां॥

इहां कोई पूछै, जो श्रुतशब्दकरि ज्ञानही ग्रहण कीया, तौ ऐसैं वचनरूप जो द्रव्यश्रुत ताकै श्रुतपणां कैसे प्रसिद्ध है? ताका उत्तर- जो, द्रव्यश्रुतकै श्रुतपणां उपचारतैं आवै है। जातैं श्रुतशब्दका कहनांही श्रुतकै द्रव्यश्रुतपणा जनावै है। द्रव्यश्रुत है सो भावश्रुतज्ञानका निमितिकारण है। याहीके निमित्ततैं भावश्रुतज्ञानके भेदभी अंगवाह्य अंगप्रविष्ट आदि भये हैं। जो ऐसैं न होय, तौ ज्ञानका श्रुत ऐसा नाम काहेकूं है? ज्ञानका वाचकही स्पष्ट नाम कहते वहुरि अंग आदिके भेद कहनेतैं अन्यवादी च्यारि भेदरूप वेद कहै हैं। तथा षडंग वेदके कहै हैं। तथा वेदकी सहस्र शाखा कहै हैं। तिनतैं न्यारापणां प्रगट होय है। ते श्रुताभास हैं प्रमाण नांही। वहुरि श्रुत है सो परोक्षप्रमाण है। वहुरि मतिपूर्वक कहनैतैं अवध्यादि निमितितैंभी न होय है। अर सर्वथा नित्यपणाका निषेध है। वहुरि कोई श्रुतपूर्वकभी श्रुत हो है। तथापि सोभी मतिपूर्वकही है। जातैं जाकै पूर्ववचन आवै तव वचनके श्रवणरूप मतिज्ञान तौ अवश्य होयही। ताकै पीछै श्रुतज्ञान होय। तातैं साक्षात् तौ मतिपूर्वकही होय है। वहुरि स्मृति आदि ज्ञानभी श्रुतज्ञान नांही है। जातैं स्मृति तौ मतिज्ञानहीका विशेष है॥

वहुरि जे मीमांसक शब्दात्मक द्रव्यश्रुत वेदकूं कहै हैं, ताकूं ज्ञानपूर्वक नाही कहै हैं। सर्वथा

नित्य कहै हैं। तिनिके प्रमाणतैं विचारिये तब बहुत विरोध आवै है। जातैं वेदका उच्चार तौ ज्ञानपूर्वकही है। बहुरि कहै, जो, शब्दकी व्यक्ति ज्ञानपूर्वक है शब्द तौ नित्यही है। तहां कहिये जो शब्दकी व्यक्ति शब्दतैं भिन्न तौ नाही शब्दरूपही है ॥ बहुरि कहै हैं, जो, वचनके उच्चारकै ज्ञानपूर्वकपणां है। वचन तौ नवीन नाही नित्यही है। जातैं याका कर्ता कह्या नाही। बडे बडे ज्ञानी भये याका कर्ता तौ काहूकूंभी यादि न भया। ताकूं कहिये वेदका कर्ता वैशेषिकमतके तौ ब्रह्माके कहै है। जैमिनी कालासुरकूं कहै हैं। बौद्धमती स्वाष्टकातकूं कहै हैं। अपनी अपनी संप्रदायमैं सर्वही कर्ता कहै हैं। तातैं ऐसैं कैसैं कहिये? जो काहूनैं कर्ता कह्या नाही। जो कहै बहुतकर्ता बताये तातैं यह जानिये कि कर्ता कहना असत्यही है। ताकूं कहिये बहुत कर्ता भये अकर्ता कैसै कहिये। बहुरि अन्य आगमतैं ऐसा महान्पणाभी वेदकै नाही। जातैं कहिये, जो, ऐसा काहूतैं कीया जाता नाही तातैं अकर्ता कहिये ॥

बहुरि कहै, जो, वेदका पढणां वेदका पढनैंपूर्वकही है। जो पहले कोई पढ्या होय तातैं पढिये है सो यह कहनाभी अन्यतैं समान है। अपने अपने आगमकूं सर्वही अपने अपने आप्तकूं पढावनेवाला कहै है। बहुरि कहै आगमके अर्थकूं साक्षात् प्रत्यक्षकरि वक्ता होय है। तौ ऐसैंही कर्ता

कहिये तौ कहा विरोध है? बहुरि पढावनेवाले विना वेदका पढनां कैसै होय? जो कहै ब्रह्मा स्वर्गविषैं आप अध्ययन करै है पीछै मनुष्यलोकमैं आय औरनिकूं पढावै है, तौ ऐसै तौ सर्वही शास्त्रके पढने पढावनेवाले कहिये। जो ऐसैही अकृत्रिमता ठहरै तौ सर्वही शास्त्र अकृत्रिम ठहरै। बहुरि कहै जो मैं पूर्व शास्त्र पढे थे तेही अबहूं पढाऊं हूं। ऐसा अनुभव तौ काहूकै दीखै नाही। तहां कहिये तत्काल हुवा बालक बछा माताका दूध खैचै है सो अनुभवविना कैसै खैचै है? जो वाकै अनुभव है तौ खैचै है, तैसैही शास्त्रका संस्कार पढने पढावनेवालेकै होय तौ कहा विरोध? बहुरि जो अक्षर पद वाक्यनिविषैं व्युत्पत्ति काव्य रचनेवाले कवीश्वरनिकै देखिये है तैसैंही वेदकी रचनाका कर्ता कहिये तौ यामैं कहा विरोध है? तथा ऐसैंभी सुणिये है सामगण तौ सामवेद कीया बहुरि रुचिगिरा रिचा करी। तातैं वेदकै अपौरुषेयपणां कहा रह्या? तातैं भारतादिककीज्यौं वेदभी पदवाक्यस्वरूप है। सो पौरुषेयपणाही संभवै है॥

बहुरि वेदकै अकृत्रिमपणां प्रमाणताका कारण मानिये तौ ऐसैंही सर्वपदार्थनिकै अकृत्रिमपणां प्रमाणताका कारण क्यौं न कहिये। बहुरि निर्दोष कारणतैं उपजनां। बहुरि अपूर्वार्थपणां बाधारहितपणां प्रमाणताका कारण है। सो अनुमानादि प्रमाणविषैं समान है। तातैं निष्प्रयोजन वेदकै

अपौरुषेयपणां काहेकूं कल्पिये । तातैं आगमकै प्रमाणताभी स्याद्वादमतमैं असंभव वाधकप्रमाणतैं साधी है सोही सत्यार्थ है । बहुरि कोई कहै जो शब्दपूर्वकही ज्ञान है ऐसा एकांत है । जातैं ऐसा पदार्थही लोकविषैं नांही जो नामविना होय तथा नामविना निश्चय जाका होय । ताका उत्तर अकलंकदेव आचार्य ऐसैं कह्या है, जो नाम कहे पहली स्मृति संज्ञा चिंता आभिनिवोध भेद लीये मतिज्ञान प्रवर्तें है । अवशेष शब्दपूर्वक श्रुतज्ञान है । ऐसैं कहनेतैं जो अन्यवादी कहै है; ज्ञानके पूर्व जो निरंतर वचनरूपपणां होय तौ ज्ञानका प्रकाश होय नाही । सो ऐसा कहनांभी निराकरण भया । वचनरूपताविनाही मतिज्ञान प्रकाशै है ।

बहुरि शब्दाद्वैतवादीकी मानि कहकरि निराकरण कीजिये है । बहुरि वह कहै, जो, वाणी च्यारि प्रकार है— वैखरी मध्यमा पश्यंती सूक्ष्मा । तहां उर कंठ आदि स्थाननिकूं भेदिकरि पवन निसऱ्या ऐसा जो वक्ताका सासोछास है कारण जाकूं ऐसा अक्षररूप प्रवर्तती ताकूं तौ वैखरी कहिये । बहुरि वक्ताकी बुद्धि तौ जाका उपादान है कारण है बहुरि सासोछासकूं उलंघि अनुक्रमतैं प्रवर्तती ताकूं मध्यमा कहिये । बहुरि जामैं विभाग नांही सर्व तरह संकोच्या है क्रम जानैं ऐसी पश्यंती कहिये । बहुरि अंतर प्रकाशरूप स्वरूपज्योतीरूप नित्य ऐसी सूक्ष्मा कहिये ।

तिनिमैं वैखरी मध्यमा इनि दोऊविना तौ इंद्रियज्ञान प्रवर्तै है। सो तौ स्वसंवेदन हमारै इष्ट है। हमभी मानै हैं ॥

बहुरि पश्यंती तथा सूक्ष्मा विनाज्ञान नांही प्रवर्तै है। जातैं निश्चयात्मक व्यापारस्वरूप जो ज्ञान सो जो पश्यंती अभेदरूप वाणी ताविनां कैसैं प्रवर्तै? तथा सर्वव्यापक नित्य एकरूप शाश्वती बीजरूप सर्ववाणीका कारण सर्वज्ञानविषैं प्रकाशरूप जो सूक्ष्मा वाणी ताविनां कैसैं प्रवर्तै? ऐसै शब्दाद्वैतवादी कहै हैं। ताकूं कहिये– जो, शब्दब्रह्म तौ तू निरंश मानै है, ताविषैं च्यारी अवस्था कैसैं होय? जो होय तौ अंशसहित हूवा अनित्य ठहरै। अद्वैतपणां कैसै ठहरै? जो कहै अविद्यातैं च्यारि अवस्था दीखै है तौ अविद्या कोणकै है? शब्दब्रह्म तौ निरंश है ताकै अविद्या कैसै बणै? तथा निरंश शब्दकी सिद्धि कैसै प्रमाणतैं करिये? इंद्रियनिकरि तौ जाका ग्रहण नांही तथा जाका कछु एकताका लिंग नांही अर स्वसंवेदनमैं आवै नांही, अर आगमतैं भेदकीभी सिद्धि है अभेदही सिद्धि नांही, बहुरि केवल आगमहीतैं अन्यप्रमाणविनां तत्त्वकी सिद्धिभी प्रमाणभूत नांही, बहुरि शब्दब्रह्मतैं जुदाही आगमभी कछु है नांही, बहुरि ताके भेद अविद्यारूप बतावै तौ अविद्यातैं ताकी सिद्धि कैसै होय। इत्यादि युक्तितैं निरंशशब्दब्रह्मकी सिद्धि होती

नाही। तथा ताकी च्यारि वाणीरूप अवस्था होनाही वर्णै नाही। बहुरि हमारै स्याद्वादिनिकै सर्वप्रकार सिध्दि हो है॥

वाणी द्रव्यभाव भेदतैं दोय प्रकार है। तहां द्रव्यवचन दोय प्रकार; एक द्रव्यरूप एक पर्यायरूप। तहां श्रोत्रेंद्रियकै ग्रहणमैं आवै ऐसा वचन तौ पर्यायरूप है। ताकूं वैखरी ऐसा नाम कीया॥ बहुरि भाषावर्गणारूप परिणये जे पुद्गलस्कंध तिनिकूं द्रव्यवचन कहिये ताकूं मध्यमा ऐसा नाम कीया। बहुरि भाववचन दोय प्रकार है। ताके दोय भेद। तहां ज्ञानावरणीयकर्मका उदयका अभावतैं भया जो आत्माकै अक्षरके ग्रहण करणैकी तथा कहनैकी शक्ति ताकूं तौ लब्धि कहिये, ताका सूक्ष्मा नाम कीया। बहुरि तिस लब्धिकै अनुसारि व्यक्तिरूप भया जो अक्षरके ग्रहण करणेरूप तथा कहनेरूप द्रव्यवचनकूं कारण जो भाव ताकूं उपयोग कहिये ताका नाम पश्यंती किया। सो ए दोऊ आत्माके परिणाम हैं। शब्दरूप पुद्गल नाही; शब्दकूं निमित्त है। सो इस लब्धि तथा उपयोगकूं चिद्रूपसामान्य ग्रहणकरि अक्षररूप नाम कहनेकै पहली तौ मतिज्ञानही कहिये। सो तौ वचनपूर्वक नाही प्रवर्तै है। बहुरि वचनपूर्वक जो प्रवर्तै सो श्रुतज्ञान है सो वचनपूर्वकही कहिये। ऐसैं कहनेतैं सर्व जघन्य तौ लब्ध्याक्षरज्ञान ताकेभी श्रुतज्ञानपणां सिध्द होय है। सो स्पर्शन इंद्रियतैं भया जो

मतिज्ञान तिस पूर्वक होय है। ऐसें मतिपूर्वक श्रुत कहनेमें विरोध नाही है ॥

बहुरि अन्यवादी उपमानप्रमाण जुदा कहै हैं। सोभी इस श्रुतप्रमाणमैंही अंतर्भूत होय है। सोही कहिये हैं। प्रसिद्ध समानधर्मपणांतें जो साध्यवस्तुको साधिये, ताकूं उपमान कहिये। जैसें गऊसारिखा यह गवय है। तथा वैधर्म्यतैंभी होय है, जैसें जो महिष है सो गऊ नाही है। ऐसें साधर्म्यवैधर्म्यकरि जो संज्ञासंज्ञिसंबंधकी प्राप्ति सो उपमानका अर्थ है। सो ऐसें याकूं शब्दप्रमाणतें न्यारा कहै है। तिनिकै दोय आदि संख्याका ज्ञानभी न्यारा प्रमाण ठहरैगा। तथा उपरिले नीचलेका ज्ञान तौ सौपानकेविषैं, तथा पर्वतादिविषैं थिरताका ज्ञान, अपने वंशादिविषैं महान्पणेका ज्ञान, चंद्रमासूर्यादिविषैं दूरवर्तीपणाका ज्ञान, सरसूं आदिविषैं छोटापणाका ज्ञान, रुई आदिविषैं हलकापणाका ज्ञान, अपना घर आदिविषैं निकटवर्तिपणांका ज्ञान, लकूटाचोकूटा आदिविषैं आकारका ज्ञान, कोईविषैं वक्रपणादिका ज्ञान, ए सर्व न्यारे प्रमाण ठहरैंगे। तब आप मानी जो प्रमाणकी संख्या ताका विघटन होगा। तातैं जो संज्ञासंज्ञिसंबंधतैं पदार्थका ज्ञान होय है सो सर्व आप्तके उपदेशपूर्वक है। तातैं आगमप्रमाणमैं अंतर्भूत होय है। ऐसैंही अन्यभी उदाहरण हैं ॥

जैसें सिंहासनपरि बैठा होय सो राजा होय। सुवर्णके सिंहासनपरि बैठी पट्टराणी होय। इस

तरफ बैठा होय सो मंत्री होय। यहु यातैं पूर्वदिसाकी तरफ है। यह यातैं दक्षिणदिसाकी तरफ है। यहु यातैं उत्तरदिसाकी तरफ है। याका यहु नाम है इत्यादि वाक्य पूर्वैं सुणे थे। ताका संस्कार फेरि इनको देखे तब राजादिकका ज्ञान होय। बहुरि षण्मुख स्वामिकार्तिकेय है, ब्रह्मा चतुर्मुख है। ऊंची नासिकावाला सुखदेव है। दूधजलकूं न्यारा करनेवाला जाकै चूंच सो हंस है। सप्तपत्रवाला अशोकवृक्ष है ऐसैं वाक्यनितैं यथार्थकी प्राप्ति सोभी आगम है। तथा रूपकादि अलंकारनितैं ज्ञान होना सोभी आगमप्रमाण है। ऐसैंही उपमानप्रमाणभी आगमप्रमाणही है। बहुरि पूर्वैं जाकूं देख्या था तथा बहुरि फेरि देख्या; तब जाणी "यहू पूर्वैं देख्या सोही है ऐसा जानै" ताकूं प्रतिभा कहिये सो प्रत्यभिज्ञान है, सो मतिज्ञानही है। याकै पूर्वैं शब्द लगाये तब आगमप्रमाण है। बहुरि संभव अभाव अर्थापत्ति अनुमान ए सर्वेही नामपूर्वक तौ आगमप्रमाण है। विनां नाम मतिज्ञानरूप प्रमाण है। ऐसैं मतिज्ञान श्रुतज्ञान ए दोऊ पूर्वैं सूत्रमैं परोक्षप्रमाण कहे ते जानने ॥

आगैं प्रत्यक्षप्रमाण कहनेयोग्य है। सो दोय प्रकार है, देशप्रत्यक्ष सकलप्रत्यक्ष। तहां देशप्रत्यक्ष अवधि मनःपर्यय ज्ञान है। सर्वप्रत्यक्ष केवलज्ञान है। तहां पूछे है जो ऐसैं है तौ प्रथमही अवधिज्ञान तीन प्रकारके प्रत्यक्षविषैं आदि है सो कहिये? ऐसैं पूछे कहे हैं— अवधि दोय प्रकार है

एक भवप्रत्यय दूसरा क्षयोपशमनिमित्तक। तहां भवप्रत्ययकूं कहै हैं—

॥ भवप्रत्ययोऽवधिर्देवनारकाणाम् ॥ २१ ॥

याका अर्थ— भवप्रत्यय अवधि है सो देवनारकीनिकै होय है ॥ तहां पूछै हैं— भव कहा? तहां उत्तर— आयु नामकर्मका उदयका है निमित्त जाकूं ऐसा आत्माका पर्याय सो भव कहिये। वहुरि प्रत्यय नाम कारणका है। सो भव है कारण ताकूं ताहि भवप्रत्यय कहिये। ऐसा अवधिज्ञान देवनारकी जीवनिकै होय है। इहां कोई पूछै है जो, ऐसैं है तौ क्षयोपशमनिमित्तपणा तिनकै न ठहऱ्या। आचार्य कहै हैं। ऐसा दोष इहां नांही आवै है। जातैं भवके आश्रयतैं इनिकै क्षयोपशम होय है। तातैं प्रधानकारण है ऐसा उपदेश है। जैसैं पक्षीनिकै गमन आकाशविषैं होय है तहां भवही प्रधान-निमित्त है किसिका सिखाया नांही है। तैसैं देवनारकीनिकै व्रतनियमतपश्चरणके अभाव होतैंभी होय है, यातैं भवप्रत्यय कहिये है। वहुरि भवप्रत्यय देवनारकीकैही है अन्यकै नांही ऐसा नियम जाननां। जो ऐसैं न होय तौ भव तौ सर्वजीवनिकै साधारण है। तव सर्वहीकै याकी प्राप्ति आवै। वहुरि अवधिकी हीनाधिकप्रवृत्तिभी देखियें है। तातैं यहु क्षयोपशमका विशेष है। वहुरि देवनारकी सर्वहीकै अवधि नांही कहिये। सम्यग्दृष्टिनिहीकै अवधिज्ञान कहिये। जातैं अवधि

ऐसा सूत्रमैं ग्रहण है तातैं मिथ्यादृष्टीनिकै विभंगअवधि कहिये। बहुरि इनिकै हीनाधिक अवधिका व्याख्यान अन्यशास्त्रनितैं जाननां ॥

आगैं दूसरा भेदकूं कहै हैं—

॥ क्षयोपशमनिमित्तः षड्विकल्पः शेषाणाम् ॥ २२ ॥

याका अर्थ— क्षयोपशम है निमित्त जाकूं ऐसा छह भेदरूप अवधि है सो शेष जे मनुष्य तिर्यंच तिनिकै होय है ॥ तहां अवधिज्ञानावरणकर्मके देशघातिस्पर्द्धकनिका उदय होतैं बहुरि सर्वघातिस्पर्द्धकनिका उदय अभाव है लक्षण जाका ऐसा क्षय, बहुरि तेही सर्वघातिस्पर्द्धक उदयकूं न प्राप्त भये सत्ता अवस्थारूप उपशम है निमित्त जाकूं सो क्षयोपशमनिमित्त अवधि कहिये। सो शेष जे देवनारकीतैं अवशेष रहे मनुष्य तिर्यंच तिनिकै होय है। तिनिमैंभी जिनकै अवधियोग्य सामर्थ्य होय तिनहीकै होय है। जे असैनी तिर्यंच तथा अपर्याप्तक मनुष्य तिर्यंच इस सामर्थ्यतैं रहित होय, तिनिकै न होय है। बहुरि संज्ञी पर्याप्तविषैंभी सर्वहीकै न होय है केई सम्यग्दर्शनादि निमित्तकरि सहित होय। तथा जिनिकै कर्मका उपशम क्षय होय तिनहीकै होय है। इहां कोई पूछै, क्षयोपशमविनां तौ अवधि होय नांही, सूत्रमैं क्षयोपशमशब्द ग्रहणका

कहा प्रयोजन है? ताकूं कहिये इहां क्षयोपशमका ग्रहण नियमकै अर्थि है। इहां क्षयोपशमही निमित्त है, भव नांही है ॥

सो यह अवधि छह भेदरूप है। अनुगामी अननुगामी वर्धमान हीयमान अवस्थित अनवस्थित ऐसे छह भेद हैं। तहां भवांतरकूं गमन करता जो जीव ताकी लारही अन्यभवमैं साथि सूर्यके प्रकाशकीज्यों चल्या जाय सो तौ अनुगामी कहिये। बहुरि जो भवांतरमैं साथि न जाय जिस भवमैं उपजै तिसहीमैं रहजाय, जैसैं पूछि पीछै प्रश्न करनेवाला पुरुषका वचन परके हृदयमैं प्रवेश न करै तैसैं यहु अवधि जाननां सो अननुगामी कहिये। बहुरि जो सम्यग्दर्शनादिगुणरूप विशुद्धपरिणामनिकी वृद्धि होनेतैं जिस परिणामकूं लीये उपज्या तातैं वधताही जाय असंख्यातलोकपरिमाणस्थानकनितांई वधै जैसैं वांसनिकै परस्पर भिडनेतैं उपज्या जो अग्नि सो सूके पत्रादिक संचयरूप भया जो इंधनका समूह तापरि पज्या हूवा वधताही जाय तैसैं यह अवधि वर्धमान कहिये। बहुरि जो सम्यग्दर्शनादिगुणकी हानिरूप जो संक्लेशपरिणाम तिनिकी वृद्धीके योगतैं जिस परिमाणकूं लीये उपज्या होय तातैं घटताही जाय अंगुलकै असंख्यातवै भागमात्र स्थानकनितांई घटै जैसैं परिमाणरूप है उपादानका संतान जाका ऐसा जो अग्नि ताकी शिखा घटतीही जाय तैसैं

यह अवधि हीयमान जाननां। बहुरि जो सम्यग्दर्शनादिगुणका अवस्थानतैं जिस परिणामकूं लीये उपज्या तेताही रहै पर्यायके अंततांई तथा केवलज्ञान उपजै तहांतांई घटै वधै नांही, जैसै पुरुषके कोई तिला आदिका चिन्ह जैसा है तैसाका तैसाही रहै, तैसैं यह अवधि अवस्थित जाननां। बहुरि जो सम्यग्दर्शनादि गुणके घटने वधनेके योगतैं जितने परिमाणकूं लीये उपजै तातैं वधेभी घटैभी जैसै पवनके वेगकरि प्रेऱ्या जलका लहरी घटै वधै, तैसैं यह अवधि अनवस्थित कहिये। ऐसैं यह अवधि छह प्रकार हो है॥

बहुरि श्लोकवार्तिकमैं याका ऐसा व्याख्यान है– जो अवधिज्ञानावरण क्षयोपशम तौ अंतरंग कारण है। सो दोऊ प्रकारकी अवधिमैं पाईये है। याविना तौ अवधिज्ञान उपजैही नांही। तातैं यहां बाह्यनिमित्त अपेक्षा कथन कीजिये। तब भवप्रत्ययकूं तौ प्रधानकारण भवही है। बहुरि यहू क्षयोपशमनिमित्तक कह्या ताकूं गुणप्रत्ययभी कहिये। तहां क्षयोपशमशब्दकरि चारित्रमोहके क्षयतैं भया जो क्षायिकचारित्र बहुरि चारित्रमोहके उपशमतैं भया उपशमचारित्र, बहुरि दोऊतैं भया क्षयोपशमचारित्र यामैं संयमासंयमभी आय गया। ऐसै तीन प्रकार चारित्र नामा गुण जो बाह्यनिमित्त तातैं उपजै सो क्षयोपशमनिमित्तक कहिये। ऐसा व्याख्यान है। बहुरि आगमविषैं

सप्रतिपात अप्रतिपात तथा देशावधि परमावधि सर्वावधि ए सर्व अनुगामी आदि छह भेद कहे तिनमैं अंतर्भूत जानने ॥ तहां देशावधि तौ अनुगामीभी बहुरि अननुगामीभी है। बहुरि परमावधि सर्वावधि केवलज्ञान उपजै तहांताई अनुगामीही है। बहुरि देशावधि तौ वर्धमानभी है हीयमानभी है। बहुरि परमावधि वर्धमानही है। बहुरि देशावधि तौ अनवस्थितही है। या प्रकार अवधिज्ञान तौ कह्या ॥

बहुरि ताके लगताही मनःपर्ययज्ञान कहनेयोग्य है, ताके भेदसहित लक्षणका कहनेका इच्छक आचार्य सूत्र कहै हैं—

॥ ऋजुविपुलमती मनःपर्ययः ॥ २३ ॥

याका अर्थ— ऋजुमति तथा विपुलमति ऐसै दोय भेदरूप मनःपर्ययज्ञान है ॥ ऋज्वी कहिये सरल तथा वचन काय मनकरि कीया अरु परके मनकेविषैं प्राप्त भया ऐसा जो पदार्थ ताके जाननेतैं निपजाई जो मति कहिये ज्ञान जाकै होय, ताकूं ऋजुमति कहिये। बहुरि विपुला कहिये वक्र तथा वचन काय मनकरि कीया अरु परके मनविषैं प्राप्त भया जो पदार्थ ताकरि नांही निपजाई स्वयमेवही भई ऐसी जो मति कहिये ज्ञान जाकै होय, ताकूं विपुलमति कहिये। याका

समासकरि ऋजुविपुलमती ऐसा द्विवचन कीया है ॥ तहां मतिशब्द एकहीकरि अर्थ आय गया। तातैं दूसरा मतिशब्द न कह्या। अथवा ऐसाभी समास होय है ऋजु बहुरि विपुल ए दोऊही मति है। तातैं दोऊही जहां होय ते दोऊही ऋजुविपुलमती है। ऐसैं कहनेतैं यहु मनःपर्ययज्ञान दोय प्रकार भया ऋजुमति विपुलमति ऐसैं। अब याका लक्षण कहै हैं ॥

वीर्यांतराय मनःपर्ययज्ञानावरणकर्मका तौ क्षयोपशम बहुरि अंगोपांगनामा नामकर्मका उदयका लाभके अवलंबनतैं आत्माकै परके मनके संबंधकी पाई है प्रवृत्ति जानैं ऐसा जो ज्ञानोपयोग ताकूं मनःपर्ययज्ञान कहिये। इहां कोई कहै, मनके संबंधकरि भया तातैं यामैं मतिज्ञानका प्रसंग आवै है। तहां कहिये, याका उत्तर तौ पूर्वै सामान्यज्ञानके सूत्रके व्याख्यानमैं कह्या था, इहां मन अपेक्षामात्र है उत्पत्तिकारण नाही। परके मनविषैं तिष्ठता पदार्थकूं यहु जानै है एतावन्मात्र अपेक्षा है। तहां ऋजुमतिज्ञान है सो कालतैं जघन्य तौ आपके तथा अन्यके दोय तथा तीन भवका ग्रहणकूं कहै। बहुरि उत्कृष्ट सात आठ भव कहै पहलेभी अरु अगलेभी। बहुरि क्षेत्रतैं जघन्य तौ च्यारितैं ले आठ कोशतांईकी कहै। उत्कृष्ट च्यारि योजनतैं ले आठ योजनतांईकी कहै। बाह्यकी नाही कहै। बहुरि विपुलमतिज्ञान है सो कालतैं जघन्य तौ सात आठ भव अगिले पिछलेका ग्रहण

कहे । उत्कृष्ट असंख्यात भव आगिले पिछलेका ग्रहण कहै । बहुरि क्षेत्रतैं जघन्य तौ च्यारितैं ले आठ योजनताईकी कहै । उत्कृष्ट मानुषोत्तरपर्वतकै माहिली कहै वारली न कहै ॥

ऐसें कहे जे मनःपर्ययज्ञानके दोय भेद तिनिविषैं विशेपकी प्राप्तिकै अर्थि सूत्र कहै हैं——

॥ विशुध्यप्रतिपाताभ्यां तद्विशेषः ॥ २४ ॥

याका अर्थ—— दोऊ मनःपर्ययज्ञानके विषैं विशुद्धि अरु अप्रतिपात इनि दोय विशेपनिकरि विशेष है । अपने आवरण जो कर्म ताके क्षयोपशम होतैं आत्माकै विशुद्धता उज्वलता होय ताकूं विशुद्धि कहिये । संयमतैं छुटनेकूं प्रतिपात कहिये, जो प्रतिपात नाही ताकूं अप्रतिपात कहिये । उपशांतमोहवाले जीवकै चारित्रमोहका उदय होतैं संयमरूप शिखरतैं प्रतिपात हो है उलटा आय पडै है । बहुरि क्षीणकषायवालेकै पडनेका कारण नाही । तातैं उलटा न आवै है अप्रतिपात हो है । इनि दोऊनिकरि ऋजुमति विपुलमति मनःपर्ययज्ञानमैं भेद है । तहां विशुद्धिकरि तौ ऋजुमतितैं विपुलमतिज्ञान द्रव्य क्षेत्र काल भावके विशेप जाननेकरि अतिशयकरि विशुद्ध है जो कार्माणद्रव्यकै अनंतवै भाग अंतका भाग सर्वावधिज्ञान जानै है । ताकूं अनंतका भाग देतैं अंतका भाग ऋजुमति मनःपर्ययज्ञानका विषय है । ताकूं अनंतभागरूप कीये अनंतका भागकूं विपुलमतिज्ञान जानै है ।

इहां अनंतकी गणतिका अनंतभेद है। तातैं फेरि फेरि अनंतका भाग कह्या है। ऐसैं द्रव्यकी अपेक्षा विशुद्धि कही। क्षेत्रकालकी पूर्वैं कहीही थी। बहुरि भावकी अपेक्षा विशुद्धि अतिसूक्ष्म द्रव्यके जाननेहीतैं जाननी। प्रकृष्ट क्षयोपशमके योगतैं विशुद्धि घणी होय है। बहुरि अप्रतिपात करिकैभी विपुलमति विशिष्ट जाननां। जातैं जाकै विपुलमति होय ताकैं चारित्र वर्धमानही होय है। तातैं उलटा न आवै। बहुरि ऋजुमति ज्ञानवाला कषायका उदयतैं हीयमानचारित्रभी होय है। तातैं उलटाभी आवै, तातैं प्रतिपातीभी होय है॥

आगैं, इस मनःपर्ययज्ञानका विशेष कह्या अवधि मनःपर्ययमैं काहेतैं विशेष है सो कहो? ऐसैं प्रश्न होतैं सूत्र कहै है—

॥ विशुद्धिक्षेत्रस्वामिविषयेभ्योऽवधिमनःपर्यययोः ॥ २५ ॥

याका अर्थ— अवधिज्ञान बहुरि मनःपर्ययज्ञान इनि दोऊनिमैं विशुध्दि कहिये उज्वलता, बहुरि क्षेत्र जहां तिष्ठते भावनिकूं जानैं, बहुरि स्वामी जाकै यहु ज्ञान होय सो आत्मा, बहुरि विषय ज्ञेय वस्तु इनि च्यारिके भेदतैं भेदविशेष है। सोही कहिये हैं। मनःपर्ययज्ञानका विषय सूक्ष्म है, तातैं तौ अवधितैं अतिशयकरि विशुध्द है उज्वल है। बहुरि क्षेत्र पहली कह्याही था। सो अवधिका

क्षेत्र तौ घणां है याका थोरा है। बहुरि स्वामी मनःपर्ययज्ञानका तौ प्रमत्तगुणस्थानतैं ले क्षीणकषायगुणस्थानतांई संयमीही होय है। तामैंभी उत्तमचारित्रवालाही होय। तामैंभी वर्धमानचारित्रवालाही होय है। तामैंभी सप्तविध ऋद्धिमैंसूं कोई ऋध्दिधारी होय ताहीकै होय है अन्यकै नाही होय। बहुरि तिनिमैंभी कोईसेकै होय है सर्वही ऋद्धिधारीनिकै न होय है। बहुरि अवधि है सो च्यारीही गतिके जीवनिकै होय है। ऐसैं स्वामीके भेदतैं इनिमैं भेद है। बहुरि विषयकी अपेक्षा भेद है सो आगैं कहसी ॥

आगैं केवलज्ञानका लक्षण कहनेका अवसर है। ताकूं छोडि ज्ञाननिका विषयका नियम विचारिये है। काहेतैं? जातैं केवलज्ञानका स्वरूप दशम अध्यायमैं "मोहक्षयात्" इत्यादि सूत्र कहसी। जो ऐसैं है तौ आधके मति श्रुत दोय ज्ञान तिनिका विषयनियम कहा? ऐसैं प्रश्न होतैं सूत्र कहै हैं--

॥ मतिश्रुतयोर्निबन्धो द्रव्येष्वसर्वपर्यायेषु ॥ २६ ॥

याका अर्थ-- मति श्रुत इनि दोऊ ज्ञाननिका विषयका नियम द्रव्यनिकैविषैं केईक पर्यायविषैं है, सर्वपर्यायविषै नाही है ॥ तहां निबंध कहिये विषयका नियम। इहां कोई कहै विषयका

कैसें जान्या? विषयशब्द तो सूत्रमें नाही ॥ ताकूं कहिये- विषयशब्द पहले सूत्रमें कह्या है सो लेना, ताके विभक्तिभी लगाय लेणी। बहुरि द्रव्येषु ऐसा बहुवचनतें सर्वद्रव्य जीव पुद्गल धर्म अधर्म आकाश काल ग्रहण करने। तिनके असर्वपर्याय कहिये केईक पर्याय लेने। ऐसें केईक पर्यायनिसहित सर्वद्रव्य मतिश्रुतज्ञानके विषयभावकूं प्राप्त हो हैं। सर्वपर्यायनिसहित इनिका विषय नाही है जातें ते पर्याय अनंत हैं। इहां कोई कहै, धर्मास्तिकायादिक जे अतींद्रिय हैं ते इंद्रियज्ञान जो मतिज्ञान ताके विषय कैसें होय? यातें सर्वद्रव्यनिविषें मतिज्ञान प्रवर्तै यह कहना अयुक्त है। ताकूं कहिये- ए दोष इहां नाही आवै। जातें अनिंद्रिय कहिये मन नामा अंतरंग कारण है, तातें नोइंद्रियज्ञानावरणकर्मके क्षयोपशमकी लब्धिपूर्वक उपयोग अवग्रहादिरूप पहली प्रवर्तै है। तातें तत्पूर्वक श्रुतज्ञान सर्वद्रव्यनिविषें स्वयोग्यविषें प्रवर्तै है ऐसें जानना ॥ इहां कोई अन्यवादी कहै, जो मतिज्ञान श्रुतज्ञान तो स्वप्नवत् है। बाह्यपदार्थकूं अवलंबीकरि नाही उपजे है। जैसें स्वप्नाका कोई बाह्यपदार्थ सत्यार्थ नाही तैसें यहभी है। ताकूं कहिये, यह कहना अयुक्त है। जातें ऐसें कहतें सर्वशून्यता ठहरै है। प्रथम तो आपके पेला दूसरा आत्मा बाह्यार्थ है सो मतिश्रुतज्ञान ताकूं ग्रहण करै है। जो ताका अभाव मानिये तो पेलाके आप बाह्यार्थ है सो आपकाभी अभाव भया।

ऐसै दोऊके भावतैं सर्वशून्यता आई। बहुरि जो पैला आत्मा सत्यार्थ है तौ घटादिक पदार्थभी सत्यार्थ कैसै न होय?। इहां फेरि कोई वादी कहै, इंद्रियज्ञान तौ बाह्यपदार्थकूं अवलंबै है बहुरि स्मरणादिक तौ निरालंबन है। ताकूं कहिये— अनुभवपूर्वक स्मरणादि प्रवर्तै है, तातैं निरालंबन नांही। बहुरि श्रुतज्ञान है सोभी अर्थालंबनस्वरूप है। जातैं श्रुतज्ञानतैं वस्तुकूं जाणि जो तिस वस्तुविषैं प्रवर्तै है तहां बाधा नांही है। जो श्रुतज्ञानगोचर वस्तुविषैं बाधा नांही सो तौ श्रुतज्ञान वस्तुके आलंबनस्वरूप सत्यार्थ है। बहुरि जहां बाधा होय, सो वह श्रुतज्ञान नांही श्रुताभास है ॥

आगैं मतिश्रुतकै लगताही कहनेयोग्य जो अवधिज्ञान ताका विषयका नियम कहा है? ऐसा प्रश्न होतैं सूत्र कहै हैं—

॥ रूपिष्ववधेः ॥ २७ ॥

याका अर्थ— अवधिज्ञानका विषयका नियम रूपी पदार्थनिविषैं है ॥ इहां सूत्रविषैं विषयनिबंधशब्दकी अनुवृत्ति पहले सूत्रनितैं लेणी। बहुरि रूपी कहनेतैं पुद्गलद्रव्य ग्रहण करनां तथा पुद्गलद्रव्यके संबंधसहित जीवद्रव्य लेने। बहुरि रूपीविषैंही विषयनिबंध है ऐसा नियम करनेतैं अरूपीद्रव्य न लैणे याके विषय नांही। बहुरि रूपीद्रव्यविषैंभी केईक पर्याय अपनेयोग्य हैं तेही

विषय हैं। सर्वपर्याय याका विषय नांही ॥

आगैं याकै लगताही कहनेयोग्य जो मनःपर्ययज्ञान ताका कहा विषयनियम है? ऐसैं पूछे सूत्र कहै हैं--

॥ तदनन्तभागे मनःपर्ययस्य ॥ २८ ॥

याका अर्थ-- सर्वावधिका विषयकूं अनंतका भाग देतैं पाया जो सूक्ष्मपुद्गलस्कंध ताविषैं या मनःपर्ययज्ञानका विषयका नियम है॥ जो रूपी द्रव्य सर्वावधिज्ञानका विषय कह्या ताकूं अनंतभागरूप कीया तिस एक भागविषैं या मनःपर्ययज्ञान प्रवर्तै है। इहां ऐसा जाननां, जो, परमावधिका विषयभूत पुद्गलस्कंधकूं अनंतका भाग दीये तो एक परमाणुमात्र सर्वावधिका विषय होय है। बहुरि ताकूं अनंतका भाग दीये ऋजुमति मनःपर्ययका विषय है। बहुरि ताकूंभी अनंतभाग दीये विपुलमति मनःपर्ययका विषय है। इहां कोई पूछे सर्वावधिका विषय तौ एक परमाणुमात्र कह्या ताकूं अनंतका भाग देनां कह्या सो एकपरमाणूकूं कैसैं भाग देना? तहां ऐसा उत्तर- जो, एकपरमाणूमैं स्पर्श रस गंध वर्णके अनंतानंत अविभागप्रतिच्छेद हैं, तिनिके घटने वधनेकी अपेक्षा अनंतका भाग संभवै है। जैसा परमाणू अवधिज्ञान जान्या तिसके अनंतवै

भागकूं मनःपर्ययज्ञान जानै है। तथा एकपरमाणुमात्रस्कंधभी होय है। ताविषैं सूक्ष्मभाव परिणये अनंतपरमाणु होय हैं। तिस अपेक्षाभी अनंतका भाग संभवै है। तहां स्वयोग्य केईक पर्यायरूप पुद्गलस्कंध लेना सर्वद्रव्यपर्यायकाभी विषय नांही ॥

आगैं, अंतविषैं कह्या जो केवलज्ञान ताका कहा विषयनियम है? ऐसा प्रश्न होतैं सूत्र कहै हैं—

॥ सर्वद्रव्यपर्यायेषु केवलस्य ॥ २९ ॥

याका अर्थ-- केवलज्ञानका विषयका नियम सर्वद्रव्य सर्वपर्यायनिविषैं है ॥ इहां द्रव्य तथा पर्याय ऐसैं इतरेतरयोग नामा द्वंद्वसमासतैं वृत्ति करणी। तहां सर्वपद दोऊकै लगावणां। तब सर्वद्रव्य तथा सर्वपर्यायनिविषैं विषयानियम है ऐसा अर्थ भया॥ तहां जीवद्रव्य तौ अनंतानंत है। बहुरि पुद्गलद्रव्य अणुस्कंधका भेदकरि जीवद्रव्यतैं अनंतानंतगुणे है। धर्म अधर्म आकाश ए तीन एक एक द्रव्य है। तातैं तीनही है। बहुरि कालद्रव्यके कालाणु असंख्यातद्रव्य हैं। तिनि सर्व द्रव्यनिके पर्याय अतीत अनागत वर्तमानरूप जुदे जुदे अनंतानंत हैं। तिनि सर्वद्रव्य सर्वपर्यायनिके समूहविषैं ऐसा किछुभी नांही है, जो, केवलज्ञानके विषयपणांकूं उलंघै। जातैं यहु ज्ञान अपरिमित माहात्म्यरूप है। ऐसा जनावनेकूं सर्वद्रव्यपर्यायविषयस्वरूप केवलज्ञान है ऐसा

कह्या है। इहां यहु विशेष अर्थ जाननां, जो कोई अन्यवादी कहै है सर्वज्ञपुरुष आत्माहीकूं जानै है। इस सिवाय पदार्थ कोई नांही। ऐसे कहनेवालेका निषेधकै अर्थि सर्वकूं जानै है ऐसा कह्या है। बहुरि द्रव्यके बहुवचन कहनेतैं बहुतद्रव्यनिकी सिद्धि भई। बहुरि पर्यायशब्दकै बहुवचन कहनेतैं केई वादी वर्तमान पर्यायके ज्ञानीहीकूं सर्वज्ञ कहै है। ताका निषेध है। बहुरि जो सर्वद्रव्यका ज्ञाता न होय तौ सर्वके उपकाररूप उपदेश कैसें प्रवर्तै? जातैं धर्मअधर्मका स्वरूप अतिसूक्ष्म है। सो सर्वका ज्ञाताविना यथार्थ धर्मअधर्मका स्वरूप कैसै जानै। बहुरि ज्ञान जीवनिविषैं हीनाधिक दीखै है। सो याहीतैं जानिये है कोई जीवविषैं उत्कृष्ट अधिकतारूपभी है। ऐसैं अनुमानमैं केवलज्ञानका अस्तित्व सिद्ध होय है। ऐसा ज्ञान इंद्रियादिकका सहायविना सर्वद्रव्यपर्यायनिकूं एककाल जानै है। ऐसा निर्बाध सिद्ध होय है। ताहीकै वीतरागपणा निर्दोषपणां संभवै है। बहुरि तिसहीतैं हेय उपादेय पदार्थका यथार्थ उपदेश प्रवर्तै है ऐसा निश्चय करनां ॥

आगैं पूछै है, मत्यादिज्ञानका विषयनियम तौ वर्णन कीया, परंतु यह न जान्यां, जो एक आत्माविषैं एककाल अपने अपने निमित्तके निकट होतैं प्रवर्तते जे ज्ञान ते केते होय हैं? ऐसा प्रश्न होतैं सूत्र कहै हैं—

॥ एकादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्ना चतुर्भ्यः ॥ ३० ॥

याका अर्थ— एक आत्माविषैं एककाल एक तथा दोय तथा तीन तथा च्यारि ऐसैं भाज्य रूप च्यारितांई होय है ॥ इहां एकशब्द संख्यावाची है। बहुरि आदिशब्द है सो अवयववाची है एक है आदि जिनकै ते एकादीनि ऐसा समास है। भाज्यानि कहिये भेदरूप करने। युगपत् कहिये एककालविषैं। एकस्मिन् कहिये एक आत्माविषैं। आ चतुर्भ्यः कहिये च्यारितांई होय है। तहां एक होय तौ केवलज्ञानही होय, याकी साथ अन्य क्षायोपशमिक ज्ञान होय नांही। दोय होय तौ मतिश्रुतज्ञान होय। तीन होय तौ मतिश्रुतअवधि होय अथवा मतिश्रुतमनःपर्ययज्ञान होय। च्यारि होय तौ मतिश्रुत अवधि मनःपर्यय च्यार्‍योंही होय। पांच एककाल न होय। जातैं केवलज्ञान क्षायिक असहायरूप है ॥ इहां प्रश्न, जो क्षायोपशमिकज्ञान तौ एककाल एकही प्रवर्तता कह्या है। इहां च्यारी कैसैं कहे? ताका उत्तर, जो, ज्ञानावरणकर्मका क्षयोपशम होतैं च्यारी ज्ञानकी जाननशक्तिरूप लब्धि एककाल होय है। बहुरि उपयोग इनिका एककाल एकही होय है। ताकी एक ज्ञेयतैं उपयुक्त होनेकी अपेक्षा स्थितिभी अंतर्मुहूर्तकी कही है। पीछै ज्ञेयांतर उपयुक्त होय जाय है क्षयोपशम जिनिका होय है ते लब्धिरूप एककालही है। इहां कोई कहै उपयोग

अपेक्षाभी सांकलीके भक्षण करतैं रूपादिक पांचका ज्ञान एककालही दीखै है वर्ण सांकलीका दीखै है, स्वादु लेही है। गंध वाका आवैही है। स्पर्शभी सचीकणा आदि जानैही है। भक्षण करतैं शब्द होय है। सो सुणेंही है। ऐसैं पांचका ज्ञान एककालभी देखिये है। ताकूं कहिये, जो, इहां उपयोगका फिरणकी शीघ्रता होतैं कालभेद न जान्या जाय है। जैसैं कमलका पत्र दोय च्यारिमैं सूईका प्रवेश होतैं कालभेद जान्या न जाय अरु कालभेद हैही। तैसैं इहांभी जाननां ॥

आगैं, कहे जे ज्ञान ते ज्ञानही नाम पावै हैं कि अन्यथाभी हैं? ऐसैं प्रश्न होतैं सूत्र कहै हैं—

॥ मतिश्रुतावधयो विपर्ययश्च ॥ ३१ ॥

याका अर्थ— मति श्रुत अवधि ए तीन ज्ञान हैं ते विपर्ययस्वरूपभी हो हैं। चकारतैं सम्यक्भी हैं ॥ विपर्यय कहिये मिथ्या, जातैं इहां सम्यक्का अधिकार है। बहुरि चशब्द समुच्चयार्थ है विपर्ययभी है, सम्यक्भी है ऐसैं भेले कहे है। इहां कोई पूछे है, इनिकै विपर्यय काहेतैं होय है? ताकूं कहै हैं- मिथ्यादर्शनके उदयकरि सहित एक आत्माविषैं समवायरूप एकता होय है, तातैं विपर्यय कहिये। जैसैं कडा तूंबा गिरिसहित होय तामैं दूध क्षेपिये तौ वह दूधभी कडा हो जाय।

१ वडी पुरी.

तैसैं मिथ्यादर्शनके उदयकरि सहित ज्ञानभी मिथ्या होय है। इहां विशेष जाननां- जो, विपर्यय कहनेतैं मिथ्याज्ञान कह्या है सो संशय विपर्यय अनध्यवसायभी लेना। तथा चशब्दतैंभी इनिका समुच्चय हो है। तहां मतिश्रुतज्ञानकै तौ तीनूंही होय हैं। जातैं संशय इंद्रियमनतैंही उपजै है। यह स्थाणु है कि पुरुष है ऐसा याका स्वरूप है। सो यहु सामान्य देखै ताका विशेष न देखै तातैं तथा दोय विषयके स्मरणतैं हो है। बहुरि अवधिकी उत्पत्तिविषैं इंद्रियमनका व्यापार है नाही, तातैं सो संशयस्वरूप नाही है। बहुरि दृढ उपयोगकी अवस्थाविषैं याकै विपर्यय कहिये है। सो मिथ्यात्वश्रद्धानका सहभावपनातैं है। तथा शीघ्र उपयोग संकोचनतैं कदाकाल अनध्यवसायस्वरूपभी हो है। ऐसैं याकै दोयही होय है संशय नाही। इहां कोई प्रश्न करै है, जो कटुक तुंबाविषैं तौ आधारके दोषतैं दूध कटुक हो है ज्ञानविषैं तौ विषयका ग्रहण सम्यङ्मिथ्याविषैं समान हो है। जैसैं मिथ्यादृष्टि नेत्रादि मतिज्ञानकरि रूपादिककूं देखै है तैसैंही सम्यग्दृष्टिभी देखै है। बहुरि जैसैं सम्यग्दृष्टि श्रुतज्ञानकरि रूपादिककूं जानै है पैलेनकूं कहै है तैसैंही मिथ्यादृष्टिभी कुश्रुतज्ञानकरि जानै है। तथा अन्यकूं कहै है। बहुरि अवधिज्ञानकरि सम्यग्दृष्टि जैसैं रूपीपदार्थनिकूं जानै है तैसैंही मिथ्यादृष्टि विभंगज्ञानकरिभी जानै है। याका उत्तरके अर्थि सूत्र कहै हैं--

॥ सदसतोरविशेषाद्यदृच्छोपलब्धेरुन्मत्तवत् ॥ ३२ ॥

याका अर्थ—— मिथ्यादृष्टिकै विपर्यय होय है सो सत्‌का तथा असत्‌का विशेष न जाननेतैं अपनी इच्छातैं जैसैं तैसैं ग्रहण करनेतैं होय है। जैसैं मदिरादिकतैं उन्मत्त भया पुरुष अपनी इच्छातैं जैसैं तैसैं वस्तुकौं ग्रहण करै तैसैं मिथ्यादृष्टिभी छती अणछती भली बुरीका विशेष जान्यां विना अपनी इच्छातैं ग्रहण करै है ॥ इहां सत् ऐसा तौ विद्यामानवस्तुकूं कहिये असत् अविद्यमानकूं कहिये। इनि दोऊनिका अविशेषेण कहिये विशेष न करै, कदा विद्यमानकूं अविद्यमान कहै, कदा विद्यमानकूं विद्यमानभी कहै, कदा अविद्यमानकूं विद्यमान कहै, कदा अविद्यमानकूं अविद्यमानभी कहै, ऐसैं अपनी इच्छातैं जैसैं तैसैं ग्रहणकरि कहै। तहां विपर्यय कहिये जैसैं रूपादिक वस्तु छती होय तौभी कहै नाही है। कदा अणछतीकूंभी कहै है छती है। कदा छतीकूं छतीभी कहै। कदा अणछतीकूं अणछतीभी कहै। ऐसैं मिथ्यादर्शनके उदयतैं अन्यथा निश्चय करै है। जैसैं पित्तज्वरकरि आकुलित चित्तभ्रमवाला कदाकाल तौ माताकूं भार्या कहै, कदा भार्याकूं माता कहै, कदा माताकूं माताभी कहै, कदा भार्याकूं भार्याभी कहै ऐसैं अपनी इच्छातैं मानै। तातैं जैसाकूं तैसाभी कहै है, तो ताके सम्यग्ज्ञान नांही है ॥

ऐसैं मत्यादिज्ञानविषैं जो घटपटादिकका जैसाका तैसा ज्ञान है तौभी विपर्ययही जानना सोही कहिये हैं, कोई आत्माकैविषै मिथ्यादर्शनका उदयतै परिणाम होय है। सो रूपादिकका ज्ञान नेत्रादिककरि जैसाका तैसाभी होय तौभी तिसविषै कारणविपर्यास भेदाभेदविपर्यास स्वरूपविपर्यास ए तीन विपर्यास उपजावै है। तहां प्रथमही कारणविपर्यासकूं कहै है। तहां रूपादिक नेत्रादिककरि दीखै तौ जैसेके तैसे दीखै, परंतु मिथ्यादृष्टि ताका कारण अन्यथा कल्पै। जैसै ब्रह्माद्वैतवादी कहै है, रूपादिकनिका कारण एक अमूर्तिक नित्य ब्रह्मही है ब्रह्महीतै भये है। सांख्यमती कहै है रूपादिकनिका कारण अमूर्तिक नित्य प्रकृति है, प्रकृतितै ए उपजै है॥ वहुरि नैयायिक वैशेषिक-मती कहै है, पृथ्वी आदि जातिभेदरूप परमाणु हैं, तिनिमै पृथ्वीविषै तौ स्पर्शादि च्यारि गुण है। वहुरि अप्‌विषै गंधवर्जित तीन गुण है। वहुरि अग्निविषै स्पर्श वर्ण ए दोय गुण हैं। वहुरि वायुविषै एक स्पर्शगुणही है। ऐसै च्यारिही अपनी अपनी जातिके स्कंधरूप कार्य निपजावै है॥ वहुरि बौद्धमती कहै है, पृथ्वी आदि च्यारि भूत है। इनिकै स्पर्श रस गंध वर्ण ए च्यारि भौतिकधर्म है। इनि आठनिका समुदायरूप परमाणु होय है। ताकूं अष्टक नाम कहिये है॥ वहुरि चार्वाकमती कहै हैं, पृथ्वी अप् तेज वायु ए च्यारि काठिण्यादि गुण, तथा द्रवत्वादि, उष्णत्वादि, ईरणत्वादि,

गुणरूप जातिभेदनै लीया परमाणु है, ते पृथ्वी आदि स्कंध निपजावे है । ऐसै तौ कारणविषै विपर्यय होय है ॥ बहुरि भेदाभेदविपर्यास ऐसै है– जो, कारणतै कार्य सर्वथा भिन्नही है। जैसैं पृथ्वी आदि परमाणु नित्य है । तिनितैं स्कंधकार्य निपजे ते सर्वथा भिन्नही है ऐसे कहै हैं। तथा गुणतै गुणी भिन्नही है ऐसे कहै ॥ बहुरि कारणतै कार्य सर्वथा अभिन्नही है । जैसै घटपटादि ग्रामपर्वतादि ब्रह्मतैं निपजै हैं ते ब्रम्हही हैं जुदे नांही । इत्यादि भेदाभेदविपर्यास है। जहां भेद होय तहां अभेदही कल्पना, जहां अभेद होय तहां भेदही कल्पना, ऐसैं विपर्यय है ॥

बहुरि स्वरूपविपर्यास, जैसैं रूपादिक हैं ते निर्विकल्प निरंश हैं, इनिमैं अंशभेद नांही । तथा रूपादिक बाह्यवस्तु हैही नांही, तदाकार परिणया ज्ञानही है । ताके आलंबनरूप बाह्यवस्तु नांही है इत्यादि अन्यभी बहुत हैं । ते प्रत्यक्ष अनुमान प्रमाणतैं विरुध्द मिथ्यादर्शनके उदयतैं कल्पना होय है ॥ बहुरि तहां श्रद्धान प्रतीति रुचि उपजावै हैं । तातैं ते मत्यज्ञान श्रुताज्ञान विभंगज्ञान होय हैं। बहुरि सम्यग्दर्शन है सो यथार्थ वस्तुविषैं श्रद्धान रुचि प्रतीति उपजावै है। तातै तेही मतिज्ञान श्रुतज्ञान अवधिज्ञान हो हैं ॥ इहां विशेष कहै हैं— विपर्यय दोय प्रकार है। एक आहार्यविपर्यय दूसरा सहजविपर्यय। तहां मतिअज्ञान तथा श्रोत्र इंद्रिय विनां अन्य इंद्रियपूर्वकै श्रुतअज्ञान अर

विभंगज्ञान ए तौ सहजविपर्यय हैं। जातैं ए परके उपदेशविना स्वयमेव प्रवर्तैं है। बहुरि श्रोत्र मतिपूर्वक श्रुताज्ञान है सो आहार्यविपर्यय है। जातैं यहु परके उपदेशतैं प्रवर्तैं हे। तहां सत्के विषैं असत्का ज्ञान परोपदेशतैं प्रवर्तैं है। सोही कहिये– स्वरूपतैं सर्ववस्तु सत्स्वरूप है।' तोभी शून्यवादी असत्स्वरूपही कहै है। बहुरि ग्रहणकरणेयोग्य वस्तु तथा ग्रहणकरणेवाला ज्ञान दोऊ स्वरूपतैं सद्रूप है। तौभी संवेनाद्वैतवादी एक संवेदनहीकूं सत् कहै है। दूसराकूं असत् ही कहै है। तथा चित्राद्वैत कहै है। तथा पुरुषाद्वैत कहै है। तथा शब्दाद्वैत कहै है। तथा बाह्यपदार्थ भिन्न हैं तिनिकूं एक विज्ञानांडकी कल्पना करै है। बहुरि बाह्यतरंग पदार्थ सादृश्यभी है। तिनिकूं सर्वथाविसदृशही कहै है। बहुरि विसदृशकूं सर्वथा सदृशही कहै है। बहुरि द्रव्य होतैंभी पर्यायमात्र कहै है। पर्याय छते द्रव्यमात्रही कहै हे। बहुरि द्रव्यपर्याय अभेद होतैभी भेदरूपही कहै है। तथा अवक्तव्यही कहै है। बहुरि ध्रौव्यरूप होतैंही उत्पादव्ययरूपही कहै है। तैसैंही विशेषकरि जीव होतैंभी जीवका नास्ति कहनां। बहुरि अजीव होतैंभी तिसका असत्त्व कहनां। बहुरि कर्मका आस्रव होतैंभी ताका अभाव कहनां। तैसैंही संवर, निर्जरा, मोक्ष, होतैंभी तिनिका अभाव कहनां। ऐसैंही जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश, काल, द्रव्यनिके होतैंभी निनिका अभाव कहनां। इत्यादि अनेक प्रकार छती वस्तूकूं

अणछती कहनां अनेकप्रकार जाननां। वहुरि अणछतीकूं छती कहनां। जैसें पररूपादिककरि वस्तु असत्वरूप है तौभी तिसकौं सर्वथा सत्स्वरूप कहनां। इत्यादिक पहलै कहे तिसका उलटा जाननां॥

वहुरि देशकालस्वभावकरि अदृष्ट जे पदार्थ तिनिविषैं बौद्धमतीनिकै संशय है। केई शून्यवादीनिकै पृथ्वी आदिक तत्त्वनिविषैं संशय है। वहुरि केईकनिकै सर्वज्ञके अस्तित्वविषैं संशय है। वहुरि केईकनिकै प्रलापमात्रके आश्रयतैं सर्वही तत्त्वविषैं अनध्यवसाय है। ते कहै है काहेतैं निर्णय कीजिये? हेतुवादरूप तर्कशास्त्र है ते तौ कहीं ठहरै नांही। वहुरि आगम है ते जुदे जुदे हैं; कोई कछू कहै कोई कछु कहै तिनिका ठिकानां नाहीं। वहुरि सर्वका ज्ञाता कोई मुनि प्रत्यक्ष नांही ताके वचन प्रमाण कीजिये। वहुरि धर्मका स्वरूप यथार्थ सूक्ष्म है सो कैसैं निर्णय होय? तातैं जो वडा जिस मार्ग चले आये तैसैं चलनां प्रवर्तनां, निर्णय होता नांही, ऐसैं अनध्यवसाय है॥

ऐसैंही मतिज्ञानरूप विनां उपदेश सहजविपर्यय होय है। ताके भेद अवग्रहादि तथा स्मृति प्रत्यभिज्ञान तर्क। स्वार्थानुमानकरि पदार्थकूं अन्यथा ग्रहण करनेतैं विपर्यय होय है। तहां स्वार्थानुमान विपर्ययरूप हेत्वाभास च्यारि प्रकार है असिद्ध विरुद्ध अनेकांतिक अकिंचित्कर। सो इनिका स्वरूप परीक्षामुख न्यायदीपिकादि शास्त्रनितैं जाननां। वहुरि शास्त्रके वाक्यके अर्थ करनेविषैं

विपर्यय हो है। जैसै केई नियोगकूं वाक्यार्थ कहै है। केई भावनाकूं वाक्यार्थ कहै है । केई धात्वर्थकूं वाक्यार्थ कहै है । केई विधिकूं वाक्यार्थ कहै है। केई यंत्रारूढकूं वाक्यार्थ कहै है । केई अन्यापोह कहिये निषेधकूं वाक्यार्थ कहै है। इत्यादि वाक्यार्थविषैं विपर्यय है। तिनिकी चरचा श्लोकवार्तिक तथा देवागमस्तोत्रकी टीका अष्टसहस्रीविषैं है तहांतैं समझणी ॥ बहुरि अवधिज्ञानविषैं विपर्यय देशावधिही होय है। परमावधि सर्वावधि मनःपर्यय है ते केवलज्ञानकीज्यों विपर्ययरूप नांही होय है। जातैं सम्यग्दर्शन विनां होते नाही। ऐसै प्रमाण अप्रमाणका भेद दिखावनेकै अर्थि विपर्ययज्ञानका स्वरूप कह्या ॥

आगैं, प्रमाण तौ परोक्ष प्रत्यक्षरूप दोय प्रकार ज्ञानहीकूं कह्या। बहुरि प्रमाणके एकदेश जे नय ते "प्रमाणनयैरधिगमः।" ऐसा सूत्रविषैं प्रमाणकै अनंतर नय नाममात्र कहे तिनका निर्देश करना। ऐसा प्रश्न होतैं सूत्र कहै है—

॥ नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरूढैवम्भूता नयाः ॥ ३३ ॥

याका अर्थ— नैगम, संग्रह, व्यवहार, ऋजुसूत्र, शब्द, समभिरूढ, एवंभूत ऐसै ये सात नय हैं ॥ इनिका सामान्यलक्षण बहुरि विशेषलक्षण कहनेयोग्य है। तहां अनेकधर्मस्वरूप जो वस्तु

ताविषैं अविरोधकरि हेतुरूप अर्पण करनेतैं साध्यके विशेपका यथार्थस्वरूप प्राप्त करनेकूं व्यापाररूप जो प्रयोग करना सो नयका सामान्यलक्षण है। इहां कोई कहै नयका सामान्यलक्षण कीया सो हेतुरूपही भया, जातैं साध्यकूं प्राप्त करै सोही हेतु। ताकूं कहिये, हेतु तौ जिस साध्यकूं साधै तहांही रहै। बहुरि लक्षण है सो सर्वनयनिमैं व्यापै, तातैं सामान्यलक्षण हेतु नांही है। बहुरि कोई कहै, एकधर्मकै दूसरा धर्मतैं विरोध है। सो धर्मके ग्राहक नयनिकैभी विरोध है। तहां अविरोध कैसै होय? ताकूं कहिये, जो प्रत्यक्ष अनुमानकरि बाधित ऐसा सर्वथा एकांतरूपकरि ग्रहण करनां सो तौ विरुद्धरूप है— नयाभास है। बहुरि जो वस्तुका धर्म कथंचित्प्रकार अनेकांतस्वरूप ग्रहण करै, सो सर्वनय समानधर्मरूप भये। तिनिमैं विरोध काहेका? जैसैं साध्यवस्तुका समानधर्मरूप दृष्टांत कहिये, तामैं विरोध नांही तैसैं इहाभी अविरोध है। याका उदाहरण, जैसैं सर्ववस्तु सद्रूप है। जातैं अपनें द्रव्य क्षेत्र काल भावकूं लीये है ॥

सो यह नय संक्षेपतैं दोय प्रकार है, द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिक ऐसैं। तहां द्रव्य तथा सामान्य तथा उत्सर्ग तथा अनुवृत्ति ए सर्व एकार्थ है। ऐसा द्रव्य जाका विषय सो द्रव्यार्थिक है। बहुरि पर्याय तथा विशेष तथा अपवाद तथा व्यावृत्ति ए सर्व एकार्थ है। ऐसा पर्याय जाका विषय सो

पर्यायार्थिक है। इनि दोऊनिके भेद नैगमादि है। तहां नैगम, संग्रह, व्यवहार, ए तीन तौ द्रव्यार्थिक है। बहुरि ऋजुसूत्र, शब्द, समभिरूढ, एवम्भूत ऐ च्यारि पर्यायार्थिक है। तामैं भी नैगम, संग्रह व्यवहार, ऋजुसूत्र ए च्यारि तौ अर्थकूं प्रधानकरि प्रवर्तैं है तातैं अर्थनय कहिये। बहुरि शब्द समभिरूढ एवंभूत ए तीन शब्दकूं प्रधानकरि प्रवर्तैं है तातैं शब्दनय कहिये। इहां कोई पूछै, पर्यार्थिक तौ नय कह्या अरु गुणार्थिक न कह्या सो कारण कहां? ताका उत्तर सिद्धांतमैं पर्याय सहभावी क्रमभावी ऐसैं दोय प्रकार कहे है। तहां सहभावी पर्यायकूं गुण संज्ञा कही है। क्रमभावीकूं पर्याय संज्ञा कही है। तातैं पर्याय कहनतैं यामैं गुणभी जानि लेना ऐसैं जाननां। विस्तारकरि ए सात नय कहे। बहुरि अतिविस्तारकरि नय संख्यात है। जातैं जेते शब्दके भेद हैं तेतेही नय कहे हैं ॥

अन्यमती बौद्धतौ विज्ञान, वेदना, संज्ञा, संस्कार, रूप ए पांच स्कंध कहे हैं। बहुरि नैयायिक प्रमाण, प्रमेय, संशय, प्रयोजन, दृष्टांत, सिद्धांत, अवयव, तर्क, निर्णय, वाद, जल्प, वितंडा, हेत्वाभास, छल, जाति, निग्रहस्थान ऐसै सोलह पदार्थ कहे हैं। बहुरि वैशेषिक द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय, अभाव, ऐसै सात पदार्थ कहै हैं। बहुरि सांख्य एक तौ प्रकृति, बहुरि

प्रकृतिके विकार प्रधान १। अहंकार २। कर्मेंद्रिय ५। ज्ञानेंद्रिय ५। मन १। स्पर्श रस गंध वर्ण शब्द ए ५। तन्मात्रा; बहुरि पृथ्वी अप् तेज वायु आकाश ए पंचभूत ऐसै तेईस प्रकृतिके विकार बहुरि एक पुरुष निर्विकार ऐसै पचीस तत्त्व कहै हैं। ते सर्वही द्रव्यपर्यायसामान्यविषैं अंतर्भूत है। कथंचित् वस्तुधर्म हैं। तातैं सुनयके विषय हैं। बहुरि अन्यवादी इनिकूं सर्वथाएकांत अभिप्रायकरि कल्पे हैं। सो तिनिका अभिप्राय मिथ्या है ऐसैं जाननां।

आगैं नयनिका विशेषलक्षण कहैं हैं। तहां प्रथमही नैगमका कहै हैं। अपने सन्मुख वर्तमानकालविषैं पूर्ण रच्या हुवा वस्तु नांही, ताका अपने ज्ञानविषैं संकल्प करनां जो 'यह वस्तु इस वर्तमानकालमैं है–' ऐसै संकल्पका ग्रहण करनेवाला अभिप्राय सो नैगमनय है। इहां उदाहरण, जैसैं काहू पुरुषकूं कोई पुरुष कूहाडी लीये चालताकूं पूछी "तूं कौण अर्थ जाय है?" तब वह कहै, मैं प्रस्थ लेनेकूं जाऊं हूं। तहां वाकैं प्रस्थ अवस्था निकट बण्या विद्यमान नांही। जायकरि लकडी काटि प्रस्थ बणावैगा, तब होगा। परंतु वाके मनविषैं ज्ञानमैं प्रस्थका संकल्प विद्यमान है, सोही इस नैगमनयका विषय है। इहां प्रस्थ ऐसा परिमाणविशेषका नाम है। लकडीके पाई, माणी इत्यादि धान्य तोलणेकै बणे हैं, ताका नाम है। तथा कोई याका अर्थ लकडीका भाराभी कहै हैं।

तथा कोई पुरुष ईंधन जल आदि सामग्री भेली करै था, ताकूं कोई पूछी, तूं कहा करै है? तब वह कहै, मै भात पचाऊं हूं; तब तहां भात अवस्था तिसकै निकट वर्तमान नांही, भात पचैगा तब होयगा। तथापि तिस भातकै अर्थि व्यापार करतैं आगामी भात पचैगा ताका संकल्प याके ज्ञानमै विद्यमान अनुभवगोचर है। सो यहु संकल्प नैगमनयका विषय है। ऐसीही विना रची दूर क्षेत्र कालमैं वर्तती जो वस्तु ताका संकल्पकूं यहु नैगमनय अपना विषय करै है॥ इहां कोई पूछै- आगामी होणी विषैं वर्तमान संज्ञा करी। तातैं यहु तौ उपचारमात्र भया॥ ताकूं कहिये- बाह्य वस्तुकी याकै मुख्यता नांही, अपने ज्ञानका संवेदनरूप संकल्प विद्यमान है। सो याका विषय है। तातैं उपचारमात्र नांही। बहुरि याका विषय एकही धर्म नांही, अनेक धर्मनिका संकल्प है, तातैंभी याकूं नैगम कह्या है। दोय धर्म तथा दोय धर्मी, तथा एक धर्मी एक धर्म ऐसैं याके अनेकप्रकार संकल्पतैं अनेकभेद हैं। कोई कहै, ऐसैं तौ दोऊनिके ग्रहण करनेतैं यह प्रमाणही भया। ताकूं कहिये, प्रमाण तौ दोऊनिकूं प्रधानकरि जानै है। यहु नैगम दोऊमैं एककूं प्रधान करैहै, एककूं गौण करै है, ऐसा विशेष जाननां॥

या नैगमके भेद तीन हैं। द्रव्यनैगम, पर्यायनैगम, द्रव्यपर्यायनैगम। तहां द्रव्यनैगमके दोय

भेद है शुद्धद्रव्यनैगम अशुद्धद्रव्यनैगम। वहुरि पर्यायनैगमके तीन भेद, अर्थपर्यायनैगम व्यंजनपर्यायनैगम, अर्थव्यंजनपर्यायनैगम। वहुरि द्रव्यपर्यायनैगमके च्यारि भेद शुद्धद्रव्यार्थपर्यायनैगम, अशुद्धद्रव्यार्थपर्यायनैगम, शुद्धद्रव्यव्यंजनपर्यायनैगम अशुद्धद्रव्यव्यंजनपर्यायनैगम। ऐसे नैगमनयके नव भेद भये। तहां उदाहरण— जो, संग्रहनयका विषय सन्मात्र शुद्धद्रव्य है ताका यहु नैगमनय संकल्प करै है जो सन्मात्र द्रव्य समस्तवस्तु है, ऐसे कहै तहां सत्तौ विशेषण भया तातैं गौण है। वहुरि द्रव्य विशेष्य भया तातैं मुख्य है। यहु शुद्धद्रव्यनैगम है। वहुरि जो पर्यायवान् है सो द्रव्य है, तथा गुणवान है सो द्रव्य है ऐसा व्यवहारनय भेदकरि कहै है। ताका यहु नैगमनय संकल्प करै है। तहां पर्यायवान् तथा गुणवान् यहु तौ विशेषण भया, तातैं गौण है। वहुरि द्रव्य विशेष्य भया तातैं मुख्य है। ऐसैं अशुद्धद्रव्यनैगमनय भया॥ वहुरि प्राणीकै सुखसंवेदन है सो क्षणध्वंसी है ऐसैं क्षणध्वंसी ऐसा तौ सत्ताका अर्थपर्याय है सो विशेषण है। वहुरि सुख है सो संवेदनका अर्थपर्याय है सो विशेष्य भया तातैं मुख्य है। तातैं यहु अर्थपर्यायनैगम भया॥ वहुरि पुरुषविषैं चैतन्य है सो सत् है इहां सत् नामा व्यंजनपर्याय है सो विशेषण है। वहुरि चैतन्यनामा व्यंजनपर्याय है सो विशेष्य है तातैं मुख्य है। यहु व्यंजनपर्याय नैगम है। वहुरि धर्मात्माविषैं

सुखजीवीपणां है। इहां सुख तौ अर्थपर्याय है सो विशेषण है। वहुरि जीवित व्यंजनपर्याय है सो विशेष्य है, तातैं मुख्य है। यहु अर्थव्यंजनपर्यायनैगम है। वहुरि संसारविषैं सत् विद्यमान सुख है सो क्षणमात्र है। इहां सत् शुद्धद्रव्य है सो विशेषण है। सुख है सो अर्थपर्याय है सो विशेष्य है, तातैं मुख्य है। यह शुद्धद्रव्य अर्थपर्याय नैगम भया॥ वहुरि विषयी जीव है सो एक क्षण सुखी है इहां जीव है सो अशुद्धद्रव्य है सो विशेष्य है। सुख है सो अर्थपर्याय है सो विशेषण है तातैं गौण है। यहु अशुद्धद्रव्य अर्थपर्यायनैगम भया॥ वहुरि चित्सामान्य है सो सत् है इहां सत् ऐसा शुद्धद्रव्य है सो तौ विशेषण है तातैं गौण है। चित् है सो व्यंजनपर्याय है सो विशेष्य है तातैं मुख्य है। ताका यहु शुद्धद्रव्यव्यंजनपर्यायनैगम भया॥ वहुरि जीव है सो गुणी है इहां जीव है सो अशुद्धद्रव्य है, सो विशेष्य है सो मुख्य है। वहुरि गुण है सो व्यंजनपर्याय है, सो विशेषण है तातैं गौण है। यह अशुद्धद्रव्यव्यंजनपर्याय नैगम भया। ऐसैं नैगमनयके नव भेद है ते संग्रहादि छह मिलै पंधरा होय है॥

आगैं संग्रहनयका लक्षण कहै हैं। अपनी एक जातिके वस्तुनिकूं आविरोध करियै एकप्रकारपणांकूं प्राप्तिकरि जिनमैं भेद पाईये ऐसै विशेषनिकूं अविशेषकरि समस्तकूं ग्रहण करै ताकूं संग्रहनय

कहिये । इहां उदाहरण । जैसैं सत् ऐसा कहतैं सत् ऐसा वचनकरि तथा ज्ञानकरि अन्वयरूप जो चिन्ह ताकरि अनुमानरूप कीया जो सत्ता ताके आधारभूत जे सर्व वस्तु तिनिका अविशेषकरि संग्रह करै जो सर्वही सत्तारूप है ऐसै संग्रहनय होय है। तथा द्रव्य ऐसा कहते जो गुणपर्यायनिकरि सहित जीव अजीवादिक भेद तथा तिनिके भेद तिनिका सर्वनिकी संग्रह होय है । तथा घट ऐसा कहतैं घटका नाम तथा ज्ञानके अन्वयरूप चिन्हकरि अनुमानरूप कीये जे समस्त घट तिनिका संग्रह होय है । ऐसैं अन्यभी एकजातिके वस्तुनिकूं भेला एककरि कहै तहां संग्रह जाननां । तहां सत् कहनेतैं सर्ववस्तूका संग्रह भया । सो यहु तौ शुद्धद्रव्य कहिये । ताका सर्वथा एकांत सो संग्रहाभास कुनय है । सो सांख्य तौ प्रधानकूं ऐसा कहै हैं । बहुरि व्याकरणवाले शब्दाद्वैतकूं कहै हैं । वेदांती पुरुषाद्वैत कहै हैं । बौद्धमती संवेदनाद्वैत कहैं हैं । सो ये सब नय एकांत है । बहुरि या नयकूं परसंग्रह कहिये । बहुरि द्रव्यमैं सर्वद्रव्यनिका संग्रह करै । पर्यायमैं सर्वपर्यायनिका संग्रह करै सो अपरसंग्रह है । ऐसैही जीवमैं सर्वजीवनिका संग्रह करै । पुद्गलमैं सर्वपुद्गलनिका संग्रह करै । घटमैं सर्व घटनिका संग्रह करै । इत्यादि जाननां ॥

आगैं व्यवहारनयका लक्षण कहै हैं । संग्रह नयकरि ग्रहण कीये जे वस्तु तिनिका विधिपूर्वक

व्यवहरण कहिये भेदरूप करणां सो व्यवहारनय है। कोई पूछै विधि कहां? ताकूं कहिये जो संग्रहकरि ग्रह्या पदार्थ है ताहीकूं पहलीले अरु भेद करै सो विधि कहिये, जैसें संग्रहकरि सत् ग्रहण कीया सो जो विशेषकी अपेक्षा रहित होय तौ तासूं व्यवहार प्रवर्तै नांही। तातैं व्यवहारनयका आश्रय करिये तब ऐसैं कहिये, जो सत् कह्या सो द्रव्यरूप है, तथा गुणरूप है ऐसैं सत्‌विषैं भेदकरै तब व्यवहार प्रवर्तै। तथा द्रव्य ऐसा संग्रह ग्रहण कीया सोभी विशेषनिकी अपेक्षा रहित होय तौ व्यवहार प्रवर्तै नांही। तातैं व्यवहारका आश्रय लीजिये तब द्रव्य है सो जीवद्रव्य है तथा अजीवद्रव्य है; ऐसैं भेदकरि व्यवहार प्रवर्तै। ऐसैही जीवद्रव्यका संग्रह होय तामैं देव नारकादि भेद होय अजीवका संग्रह करै तब घटादिकका भेद होय। ऐसै यहु नय तहांताई चल्या जाय जहां फेरि भेद न होय। सो जहां ऋजुसूत्रका विषय है ताकै पहलैताई संग्रह व्यवहार दोऊ नय चले जाय है।

आगैं ऋजुसूत्र नयका लक्षण कहै हैं। ऋजु कहिये सरल सूधा सूत्रयति कहिये करै है ताकूं ऋजुसूत्र कहिये। तहां पूर्व कहिये पहलै, अतीत गये, तथा अपर कहिये पीछै होयगा ऐसै तीन कालके गोचर जे भाव तिनिकूं उलंघिकरि वर्तमानकाल पर्यायमात्रका ग्रहण करनेवाला यहु ऋजुसूत्रनय है। जातैं अतीत तौ विनशि गये। बहुरि अनागत उपजेही नांही। तिनिकरि तौ

व्यवहारका अभावही है। तातैं वर्तमानहीतैं व्यवहार प्रवर्तै है। इहां कोई कहै है अतीत अनागतकाभी लोकविषैं व्यवहार है सो कैसै चलै? ताकूं कहिये या नयका तौ यहुही विषय है सो दिखाया। बहुरि लोकव्यवहारतौ सर्वनयके समूहकरि साधने योग्य है। जहां जैसी नयका कार्य होय तहां तैसा नय ग्रहण करनां। या नयका सर्वथा एकांत अभिप्राय बौद्धमती करै है। द्रव्यकातौ लोप करै है। क्षणस्थायी वस्तु कहै है। तिनिकै सर्वव्यवहारका लोप आवै है॥

आगैं शब्दनयका लक्षण कहै हैं। लिंग, संख्या, साधन, इत्यादिकका व्यभिचारकूं दूरि करनेविषैं तत्पर सो शब्दनय है। तहां प्रथमही लिंगव्यभिचार स्त्रीलिंगविषैं पुरुषलिंग कहना, जैसैं, तारका यह स्त्रीलिंग है ताकूं स्वाति ऐसा पुरुषलिंग कहना। बहुरि पुरुषलिंगविषैं स्त्रीलिंग कहना, जैसैं, अवगमः ऐसा पुरुषलिंग है ताकूं विद्या ऐसा स्त्रीलिंग कहनां। बहुरि स्त्रीलिंगविषैं नपुंसकलिंग कहनां, जैसैं, वीणा ऐसा स्त्रीलिंग है ताकूं आतोद्य ऐसा नपुंसकलिंग कहनां। बहुरि नपुंसकलिंगविषैं स्त्रीलिंग कहनां, जैसैं, आयुध ऐसा नपुंसकलिंग है, ताकूं शक्ति ऐसा स्त्रीलिंग कहनां। बहुरि पुरुषलिंगविषैं नपुंसकलिंग कहना, जैसैं पट ऐसा पुरुषलिंग है, ताकूं वस्त्र ऐसा नपुंसकलिंग कहनां। बहुरि नपुंसकलिंगविषै पुरुषलिंग कहनां, जैसैं, द्रव्य ऐसा नपुंसकलिंग है, ताकूं परशु ऐसा

पुरुषलिंग कहनां। बहुरि एकही वस्तूके तीनूं लिंग कहनां, जैसैं, तारका यहु स्त्रीलिंग है, ताहीकूं पुष्यः ऐसा पुरुषलिंग तथा नक्षत्र ऐसा नपुंसकलिंग कहनां। इत्यादि लिंगव्यभिचार है। बहुरि संख्याव्यभिचार एकवचनविषैं द्विवचन, जैसैं नक्षत्र ऐसा एकवचन है, तहां पुनर्वसू ऐसा द्विवचन कहनां। बहुरि एकवचनविषैं बहुवचन, जैसैं नक्षत्र ऐसा एकवचन है, तहां शतभिषजा ऐसा बहुवचन कहनां। बहुरि द्विवचनविषैं एकवचन, जैसैं 'गोदौ' ऐसा द्विवचन है, तहां ग्रामः ऐसा एकवचन कहनां। बहुरि द्विवचनविषैं बहुवचन, जैसैं, पुनर्वसू ऐसा द्विवचन है, तहां पंचतारका ऐसा बहुवचन कहनां। बहुरि बहुवचनविषैं एकवचन, जैसैं, आम्रा ऐसा बहुवचन है, तहां वन ऐसा एकवचन कहनां। बहुरि बहुवचनविषैं द्विवचन, जैसैं, देवमनुष्याः ऐसा बहुवचन है, तहां उभौ राशी ऐसा द्विवचन कहनां। ऐसैं संख्याव्यभिचार है॥

बहुरि साधनव्यभिचार, ताकूं पुरुषव्यभिचारभी कहिये "एहि मन्ये रथेन यास्यसि। नहि यास्यसि। न यातस्ते पिता" याका अर्थ— एहि ऐसा मध्यमपुरुषका एकवचन है, तथापि याका 'एमि' ऐसा अर्थ करनां, जो, मैं जाऊं हूं सो। 'मन्ये' ऐसा उत्तमपुरुषका एकवचन है, तहां मध्यमपुरुषका 'मन्यसे' ऐसा कहना, जो, तूं ऐसै मानै है। जामैं 'रथेन' कहिये रथ चढि।

यास्यसि याका 'यास्यामि' ऐसा कहनां, जो, जाऊंगा सो। 'नहि यास्यसि' कहिये नांही जायगा, तेरा पिताभी ऐसैं गया नांही। भावार्थ– हास्यका प्रसंगविषैं ऐसा कहनां होय है। जो तूं मानै है मै रथ चढिकरि जाऊं, सो ऐसैं तेरा पिताभी न गया, तूं कैसा जायगा? तहां तूं कहनेकी जायगा तौ हूं कहनेका शब्द कह्या। बहुरि हूं कहनेकी जायगा तूं कहनेका शब्द कह्या। तब पुरुषव्यभिचार भया॥

बहुरि कालव्यभिचार; जैसैं "विश्वदृश्वाऽस्य पुत्रो जनिता" याका अर्थ– जिहि विश्व कहिये लोककूं देख्या सो पुत्र याकै होसी। विश्वकूं देख्या यहु तो अतीतकालवाचक शब्द है। बहुरि जनिता यहु आगामी कालवाचक शब्द है। सो इहां कालव्यभिचार भया। बहुरि 'भाविकृत्यमासीत्' ऐसैं कहै, तैं भावि कहिये होणहार कार्य 'आसीत्' कहिये हूवा, सो इहांभी अतीत अनागतकालका व्यभिचार भया॥

बहुरि उपग्रहव्यभिचार, जो 'तिष्ठति' ऐसा परस्मैपद धातु है, ताका 'संतिष्ठते' 'प्रतिष्ठते' ऐसा भया। बहुरि 'रमते' ऐसा आत्मनेपदी धातु है ताका 'विरमति उपरमति' ऐसा भया। ऐसैं उपसर्गके बलतैं आत्मनेपदी धातूका परस्मैपदवचन भया। बहुरि परस्मैपदीका आत्मनेपदी भया। ऐसै उपग्रहव्यभिचार है ॥

बहुरि कारकव्यभिचार 'सेना पर्वतमधिवसति' इहां सेना पर्वतके समीप वसै है ऐसा आधार है, सो सप्तमी विभक्ति चाहिये, तहां द्वितीया कही। तातैं कारकव्यभिचार भया। याप्रकार व्यवहार नय है ताहि अन्याय मानै है। जातैं अन्य अर्थका अन्य अर्थकरि संबंध होय नांही। जो अन्य अर्थका अन्यतैं संबंध होय, तो घटका पट होय जाय, पटका महल हो जाय। तातैं जैसा लिंग आदि होय तैसाही न्याय है। इहां कोई कहै, लोकविषैं तथा शास्त्रविषैं विरोध आवैगा। ताकूं कहिये, विरोध आवै तौ आवो, इहां तौ यथार्थस्वरूप विचारिये है। औषधी रोगीकी इच्छाकै अनुसार तौ है नांही ॥

आगैं, समभिरूढनयका लक्षण कहै हैं। नाना अर्थनिविषैं समभिरोहणात् कहिये प्राप्त होने तैं समभिरूढ है। जातैं एकशब्दके अनेक अर्थ हैं, तिनिमैंसूं कोई एक अर्थकूं ग्रहणकरि तिसहीकूं कह्या करै, जैसैं, गौ ऐसा शब्द वचनादि अनेक अर्थविषैं वर्तै है। तोभी गऊ नाम पशुका ग्रहणकरि तिसहीकूं गऊ कहै। अथवा शब्दका कहना है, सो अर्थगतिकै अर्थि है। तहां एक अर्थका एकही शब्दकरि गतार्थपणा है, तातैं वाका दुसरा पर्यायशब्द कहिये नाम कहनां सो निष्प्रयोजन है। इहां कोई कहै, शब्दका तौ भेद है। ताकूं कहिये अर्थभेदभी अवश्य चाहिये। ऐसैं यहु समभि-

रूढनय नाना अर्थविषैं प्राप्त होय है, तातैं समभिरूढ है। जैसे इंदनात् कहिये परमैश्वर्यरूप क्रिया करै तव इंद्र है। शकनात् कहिये समर्थरूप वर्तैं तव शक्र कहिये। पूर्दारणात् कहिये पुरके विदारण-क्रियारूप वर्तैं तव पुरंदर है। ऐसैं यहु समभिरूढनय एकही अर्थकूं ग्रहणकरि प्रवर्तै है। अथवा जो जहां प्राप्त है तहांही प्राप्त होय करि वर्तै है, तातैं समभिरूढ है। जैसैं काहूकूं कोई पूछे तूं कहां तिष्ठै है? वह कहै, मैं मेरे आत्माविषैं तिष्ठूं हूं ऐसैंभी समभिरूढ है। जातैं अन्यका अन्यविषैं प्रवर्तना न हो है। जो अन्यका अन्यविषैं प्रवृत्ति होय, तौ ज्ञानादिककी तथा रूप आदिककी आकाशविषैंभी वृत्ति होय। सो है नांही ॥

आगैं एवंभूतनयका लक्षण कहै हैं। जिस स्वरूपकरि जो वस्तु होय तिसही स्वरूपकरि ताकूं कहै, निश्चय करावै सो एवंभूत है। जो वस्तु जिस नामकरि कहिये तिसही अर्थकी क्रिया-रूप परिणमता होय तिसही काल वा वस्तूकूं तिस नामकरि कहै अन्यकाल अन्यपरिणतिरूप परिण-मताकूं तिस नामकरि न कहै। जैसैं इंद्र ऐसा नाम है, सो परमैश्वर्यरूप क्रिया करता होय तवही इंद्र कहै, अभिषेक करतैं तथा पूजा करतैं ताकूं इंद्र न कहै। तथा जिस काल गमन करै तिस कालही गऊ कहै बैठीकूं गऊ न कहै सूतीकूं गऊ न कहै। अथवा जिस स्वरूपकरि जिसका ज्ञान

तदाकार भया होय तिसही स्वरूपकरि निश्चय करावै। जैसैं इंद्रका आकाररूप ज्ञान परिणया होय तथा अग्निका आकाररूप ज्ञान भया होय तिस ज्ञान सहित आत्माकूं इंद्र तथा अग्नि कहै। इहां कोई कहै नामक्रियारूप परिणयाकूंही कहै तौ नामके कारण तो जाति, गुण, द्रव्यभी है तिनकूं कैसै कहै? ताकूं कहिये, जेते जाति आदिकतैं भये नाम हैं ते सर्वही क्रियाविषैं अंतर्भूत हैं विनाक्रिया निष्पत्ति नांही। जैसैं जातिवाची अश्वशब्द है, सोभी शीघ्रगमन क्रिया करै, ताकूं अश्व कहिये, ऐसै क्रियावाची होय है। तथा शुक्ल ऐसा गुणवाची शब्द है, सो शुचिक्रियारूप परणवै, ताकूं शुक्ल कहिये, ऐसै क्रियावाची होय है। तथा दंडी ऐसा संयोगी द्रव्यवाची है, सोभी दंड जाकै होय ताकूं दंडी कहिये, ऐसै क्रियावाची होय है। तथा विषाणी ऐसा समवायद्रव्यवाची शब्द है, सोभी विषाण कहिये सींग जाकै होय, ताकूं विषाणी कहिये। ऐसैही वक्ताकी इच्छातै भया नाम, जैसै देवदत्त ऐसा काहूका नाम वक्ता कह्या ताकाभी जब स्वार्थ करिये, तब जो देव दीया होय, तथा देवनिमित्त दे, ताकूं देवदत्त कहिये, ऐसै क्रियावाची होय है, ऐसै जाननां ॥

ऐसै ए नैगमादिक नय कहे ते आगै अल्पविषय है। तिस कारणतै इनिका पाठका अनुक्रम है। पहलै नैगम कह्या ताका तौ वस्तु सद्रूप तथा असद्रूप इत्यादि अनेकधर्मरूप है। ताका

संकल्प विषय है। सो यहू नयतौ सर्वतैं महाविषय है। याकै पीछे संग्रह कह्या सो याका विषय सत् द्रव्यत्व आदिही है। इनिकै परस्पर निषेधरूप जो असत् आदि सो विषय नांही है। तातै तिसतै अल्पविषय है। बहुरि याके पीछै व्यवहार कह्या सो याका विषय संग्रहके विषयका भेद है। तहां अभेद विषय रहि गया। तातैं तिसतैं अल्पविषय है। बहुरि याकै पीछे ऋजुसूत्र कह्या सो याका विषय वर्तमानमात्र वस्तुका पर्याय है सो अतीत अनागत रहि गया। तातैं तिसतैं अल्प विषय है। याके पीछे शब्दनय कह्या सो याका विषय वस्तुकी संज्ञा है। एक वस्तूके अनेक नाम हैं। तहां काल कारक लिंग संख्या साधन उपग्रहादिक भेदतैं अर्थकूं भेदरूप कहै। सो इनिका भेद होतैंभी वर्तमानपर्यायरूप वस्तूकूं अभिन्न मानता जो ऋजुसूत्र तातैं अल्पविषय भया। जातैं एक भेद करतैं अन्य भेद रहि गये। बहुरि याकै पीछे समभिरुढ कह्या, सो एक वस्तुके अनेक नाम हैं तिनिकूं पर्यायशब्द कहिये तिनि पर्यायशब्दनिका एकही अर्थ मानता जो शब्दनय तातैं समभिरूढ अल्प विषय है। तातैं तिनि पर्यायशब्दनिके जुदे जुदेभी अर्थ हैं। सो यहू जिस शब्दकूं पकडै तिसही अर्थरूपकूं कहै। तब अन्य शब्द यातैं रहि गये तातैं अल्पविषय भया। बहुरि एवंभूत याके पीछे कह्या। सो याका विषय जिस शब्दकूं पकड्या तिस क्रियारूप परिणमता पदार्थ है। सो अनेक-

क्रिया करना। एकही कहता जो समभिरूढ तातैं अल्पविषय भया। ऐसैं उत्तरोत्तर अल्पविषय है।

इहां दृष्टांत, जैसैं एक नगरविषैं एक वृक्ष उपरि पक्षी बोले था, ताकूं काहूनैं कही, या नगरविषैं पक्षी बोलै है। काहूनैं कही, या नगरमैं एक वृक्ष है तामैं बोलै है। काहूनैं कही, या वृक्षका एक बडा डाला है तामैं बोलै है। काहूनैं कही, इस डालेमैं एक शाखा छोटी डाली है तामैं बोलै है काहूनैं कही, इस डाहलेके एक देशविषैं बैठा बोलै है। काहूनैं कही, पक्षी अपने सरीरविषैं बोलै है। काहूनैं कही वाके शरीरमैं कंठ है तामैं बोलै है। ऐसै उत्तरोत्तर विषय छूटता गया। सो यह अनुक्रमतैं इनि नयनिके वचन जानने। नैगमनयनैतौ वस्तुका सत् असत् दोऊ लिये। संग्रह नयनैं सत्‌ही लीया। व्यवहारनैं सत्का एक भेद लीया। ऋजुसूत्रनैं वर्तमानकूंही लीया। शब्दनैं वर्तमान सत्‌मैंभी भेदकरि एक कार्य पकड्या। समभिरूढनैं वा कार्यके अनेक नाम थे तिसमैं एक नामकूं पकड्या। एवंभूतनैं तामैभी जिस नामकूं पकड्या तिसही क्रियारूप परिणामताकूं पकड्या। ऐसैही जिस पदार्थकूं साधिये तापरि सर्वहीपरि ऐसै नय लगाय लैनें। बहुरि पहला पहला नय तौ कारणरूप है। अगिला अगिला कार्यरूप है। ता कार्यकीं अपेक्षा स्थूलभी कहिये। ऐसै ये नय पूर्वपूर्वतौ विरुद्धरूप महाविषय है। उत्तर उत्तर अनुकूलरूप अल्पविषय है। जातैं पहला नयका विषय

अगिले नयमैं नांही तातैं विरुद्ध है। अगिलेका विषय पहलेमैं गर्भित है तातैं ताके अनुकूलपणां है ॥ ऐसैं ये नयभेद काहेतैं होय है? जातैं द्रव्य अनंत शक्तिकूं लीये है तातैं एक एक शक्ति प्रति भेदरूप भये बहुत भेद होय हैं। ऐसैं ए नय मुख्यगौणपणां करि परस्परसापेक्षरूप भये संते सम्यग्दर्शनके कारण होय हैं। जैसैं सूतके तार आदि हैं ते पुरुषके अर्थक्रियाके साधनकी सामर्थ्यतैं यथोपायं कहिये जैसैं वस्त्रादिक बणि जाय तैसा उपायकरि थापे हुये वस्त्रादिक नाम पावै है। बहुरि वह तार जो परस्पर सापेक्षारहित न्यारे न्यारे होय तौ वस्त्रादिक नाम न पावै तैसैंही ये नय जानने ॥

इहां कोई कहै यह तारनिका उदाहरणतो विषम उपन्यास है मिल्या नांही। जातैं तार आदिकतो अपेक्षारहित न्यारेन्यारेभी अर्थमात्रा कहिये प्रयोजनकूं सिद्ध करै है। तथा अर्थक्रिया करै है। जैसै कोई तार तो न्यारा शीकनिकै बांधनेकूं शस्त्रके घाव सीवनेकूं समर्थ होय है। कोई तार वेलिखीय आदिका ऐसा होय जो भारा आदि बांधनेकूं समर्थ है। बहुरि ये नय जब निरपेक्ष होय तब किछूभी सम्यग्दर्शनकी मात्राकूं नांही उपजावै है। तहां आचार्य कहै हैं, यह दोष इहां नांही है ॥ जातैं हमनैं कह्या ताका ज्ञान तुमारै हुवा नांही। कहे अर्थकूं विना समझ्या यह उराहना दीया। हमनैं तौ ऐसैं कह्या है निरपेक्ष तार आदि

कहै ते वस्त्रादिकार्य नांही है। बहुरि तुमनैं कह्या सो तौ पटादिकार्य नांही है केवल तार आदिहीका न्याराही कार्य है। सोभी कार्य जो तार आदि अपने अवयवसहित न होय तौ तिनितैं न होय। तातैं हमारी पक्षसिद्धि है। सापेक्षही कार्य उपजावै है। बहुरि कहै तार आदिविषैं वस्त्रादिकार्य शक्तिरूप है। तौ नयानिविषैंभी निरपेक्षनिविषैं ज्ञानरूप तथा शब्दरूपनिविषैं कारणके वसतैं सम्यग्दर्शनका कारणपणाका विशेषरूप परिणवनके सद्भावतैं शक्तिरूप सम्यग्दर्शनका कारणका आस्तित्व है। तातैं हमारा दृष्टांत विषम नांही है, समही है, मिलता है ॥

आगैं इनि नियमकै परस्पर मुख्यगौणपणांकी सापेक्षाकरि विधिनिषेधतैं सप्तभंग उपजै हैं सो कहिये हैं। तहां नैगमकै तौ संग्रहादि छह नयनिकरि न्यारे न्यारे छह सप्तभंग होय है। बहुरि संग्रहकै व्यवहारादिककरि पांच होय हैं। बहुरि व्यवहारकै ऋजुसूत्रादिककरि च्यारि होय हैं। बहुरि ऋजुसूत्रके शब्दादिककरि तीन होय हैं। बहुरि शब्दके समभिरूढादिककरि दोय होय हैं॥ बहुरि समभिरूढकै एवंभूत नयकरि एकही होय है। ऐसै मूलनयनिकै तौ विधिनिषेधकरि इकइस सप्तभंगी भई। बहुरि नैगमनयकै नव भेद हैं अर संग्रहके पर अपर करि दोय भेद हैं तातैं तिनके विधिनिषेधतैं अठारह सप्तभंगी होय है। ऐसैही पर अपर व्यवहारकै अठारह होय है। बहुरि ऋजुसूत्रकरि नव

सप्तभंगी हो है। बहुरि शब्दके काल आदि छह भेदनिकरि चौवन सप्तभंगी होय है। बहुरि समभिरूढकरि नव एवंभूतनयकरि नव। ऐसै ये एकसौ सतरा सप्तभंगी भई। ऐसै संग्रहके दोय भेदनितैं व्यवहारादिके भेदनिकरि बाईस, बहुरि व्यवहारकै दोय भेदनितैं ऋजूसूत्रादिकके अठारह, बहुरि ऋजुसूत्रके शब्दभेदकरि छह, बहुरि शब्दके भेदनिके समभिरूढ एवंभूतकरि बारह, ऐसै अठावन होय सब मिलि एकसौ पचहत्तरि भेदनिकी अपेक्षा भये, दोऊ मिलि एकसौ छिनवै भये। बहुरि उलटे करिये तब तेही भंग होय है। ऐसैही उत्तरोत्तर भेदनिकरि शब्दथकी संख्यातसप्तभंगी होय है। तहां पूर्वै प्रमाणसप्तभंगीविषैं भंगनिका विचार कह्या। तैसै इहांभी जाननां॥

विशेष इतनां– जो, तहां जिस पदार्थकूं साधनां ताका काल आदि आठ भेदनिकरि सकलादेश करनां। इहां तिनिका विकलादेश करनां। जिस धर्मके नामकरि पदार्थकूं कह्या तिसही धर्मविषैं सर्वधर्मनिका काल आदिकरि अभेदवृत्ति करनां सो तौ सकलादेश है। बहुरि जिस धर्महीका काल आदि कहनां दुसरे धर्मतैं भेदवृत्ती कहनां तहां विकलादेश हो है। सो पूर्वै उदाहरणकरि कह्याही है। जैसै नैगमनयनैं प्रस्थका संकल्प कीया तहां संग्रहनय कहै यहु प्रस्थ संकल्पमात्र नांही सद्रूप है। तहां विधिनिषेध भया। तब कथंचित् प्रस्थ, कथंचित् अप्रस्थ, कथांचित् प्रस्थाप्रस्थ, कथंचित् अवक्तव्य

कथंचित् प्रस्थ अवक्तव्य, कथंचित् अप्रस्थ अवक्तव्य, कथंचित् प्रस्थाप्रस्थ अवक्तव्य ऐसैं सात भये। तैसैंही सर्वनयके विषयविषैं विधिनिषेध लगाय साधने। इहां कोई पूछै; जो, द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिक नयके भेदरूप नैगमादिक सात भेद कहे ते तो जाणे। परंतु शास्त्रनिमैं निश्चयव्यवहार नयकी कथनी बहुत। सो यहु न जाणी, जो, ये निश्चयव्यवहारनय कहां कहै है? इनिका विषय कहा है?। ताका उत्तर— जो, नयचक्र ग्रंथ गाथाबंध है। तहां ऐसैं कह्या है— जो निश्चयनय व्यवहारनय हैं ते सर्व नयनिका मूलभेद हैं। इनि दोय भेदनितैं सर्वनयभेद प्रवर्तें हैं। तहां निश्चयके साधनेकूं कारण द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिक दोऊ नय हैं। वस्तुका स्वरूप द्रव्यपर्यायस्वरूपही है। तातैं इनि दोऊ नयनितैं साधिये है।। तातैं ये दोऊही तत्त्वस्वरूप हैं। सत्यार्थ हैं ॥

बहुरि व्यवहार है सो उपनय है। ताके तीन भेद हैं सद्भूतव्यवहार, असद्भूतव्यवहार, उपचरितव्यवहार। तिनिके उत्तर भेद आठ हैं। तहां सद्भूतके दोय भेद। तहां गुणगुणी तथा पर्यायपर्यायी द्रव्यनिविषैं कर्ताकर्म आदि कारककी प्रवृत्तिके सद्भावतैं संज्ञा संख्या लक्षण प्रयोजनादिकके भेदतैं शुद्धद्रव्यविषैं भेद कहै। सो तौ शुद्धसद्भूतव्यवहार है। तैसैही एकद्रव्यके एकही प्रदेश है, भिन्नक्षेत्र नाही, तौऊ संख्यात असंख्यात अनंतप्रदेशादिक कहै। सोऊ शुद्धसद्भूतव्य-

वहार है। बहुरि एकही द्रव्य परके निमित्ततैं विकार उसही सत्‌मैं भया था ताकी अपेक्षा लेकरि संज्ञादिककरि भेद कहै है। तहां अशुद्धसद्‌भूतव्यवहार है। ऐसैं दोय भेद सद्‌भूतव्यवहारके भये ॥

बहुरि अन्यवस्तूका गुण अन्यके कहै सो असद्‌भूतव्यवहार है। ताके तीन भेद। तहां जैसै बहुत पुद्गलके परमाणुद्रव्य मिलि एक स्कंध नाम पर्याय वण्या ताकूं कहे 'ए पुद्गलद्रव्य है, तहां समानजातीय असद्‌भूतव्यवहार भया। बहुरि जहां एकेंद्रियादिक देह ते पुद्गलस्कंध हैं तिनिकूं जीव कहै। तहां असमानजातीय असद्‌भूतव्यवहार भया। बहुरि जहां मतिज्ञानकूं मूर्तिक कहनां जातैं मूर्तिकतैं उपजै है तथा रुकै है। तहां मतिज्ञान तौ अमूर्तिक जीवका धर्म है। बहुरि मूर्तिकपणां पुद्गलका धर्म है। तहां मिश्र असद्‌भूतव्यवहार भया। तथा ज्ञेयविषैं ज्ञान है ऐसैं कहना तहां ज्ञेय जीव अजीव दोऊ है। तातैंभी मिश्र भया। ऐसैं तीन भेद असद्‌भूतव्यवहारके भये ॥

बहुरि उपचारव्यवहारकेभी तीन भेद हैं। तहां द्रव्य गुण पर्यायके परस्पर उपचार करिये तव भेद होय है। तहां एकप्रदेशी परमाणूकूं बहुप्रदेशी पुद्गलद्रव्य कहनां तहां द्रव्यविषैं पर्यायका उपचार भया। बहुरि महलकूं श्वेत कहनां तहां द्रव्यविषैं गुणका उपचार भया। बहुरि मतिज्ञान ज्ञानकूं कहनां तहां गुणके विषैं पर्यायका उपचार भया। बहुरि स्कंधपर्यायकूं पुद्गलद्रव्य कहनां तहां

पर्यायके विषैं द्रव्यका उपचार भया। बहुरि देहकूं सुंदर देखि ताकूं उत्तमरूप कहनां तहां पर्यायविषैं णका उपचार भया। इत्यादिक उपचार जानने। बहुरि उपचारका उपचारपरि तीनूं भेद लगावणे। त्रादिक मेरे हैं, मै इनिका हौं ऐसैं कहनां सो समानजातीय उपचारका उपचार है। बहुरि ाभारणादिक मेरे हैं ऐसैं कहनां सो विजातीय उपचारका उपचार है। बहुरि देश गढ राज्य ऐसैं कहना मिश्रउपचारका उपचार है। ऐसैं व्यवहारनय अनेकरूप प्रवर्तै है॥

रि श्लोकवार्तिकमैं ऐसैं कह्या है— जो एवंभूतनय तौ निश्चय है। जातैं जिसकी जो संज्ञा सही क्रियारूप परिणमता पदार्थ होय सो याका विषय है। जैसैं चैतन्य अपनां चैतन्यभाव- णमै ताकूं चैतन्यही कहै। क्रोधीकूं क्रोधीही कहै इत्यादि। बहुरि व्यवहार अशुद्धद्रव्यार्थिककूं है। जातैं दोय भाव तथा द्रव्य मिलेविना व्यवहार चलै नांही। दोय मिलै तब अशुद्धता भई। ो यह निर्देशादिक अधिकारमैं लिखींही है। इहां प्रश्न, जो, अध्यात्मग्रन्थनिमैं कह्या है, जो, निश्चयनय तौ सत्यार्थ है व्यवहार असत्यार्थ है–त्यजनेयोग्य है, सो यहु उपदेश कैसै है? ताका उत्तर— जो, उपदेश दोय प्रकार प्रवर्तै है। तहां एक तौ आगम। तामैं तौ निश्चय द्रव्यार्थिक पर्या- यार्थिक दोऊही नय परमार्थरूप सत्यार्थ कहे हैं। अर प्रयोजन अर निमित्तके वशतैं अन्यद्रव्यगुणप-

र्यायनिका अन्यद्रव्यगुणपर्यायनिविषैं आरोपण करनां, सो उपचार है। याकूं व्यवहार कहिये असत्यार्थभी कहिये गौणभी कहिये। बहुरि दूसरा अध्यातम उपदेश। तामैं अध्यातमग्रंथका आशय यह है, जो, आत्मा अपना एक अभेद नित्य शुद्ध असाधारण चैतन्यमात्र शुध्दद्रव्यार्थिकनयका विषयभूत है। सो तौ उपादेय है ॥

बहुरि अवशेष भेद पर्याय अनित्य अशुध्द तथा साधारण गुण तथा अन्यद्रव्य ए सर्व पर्यायनयके विषय ते सर्व होय हैं। काहेतैं? जातैं यह आत्मा अनादितैं कर्मबंधपर्यायमें मग्न है। क्रमरूप ज्ञानतैं पर्यायनिकूंही जाणै है। अनादि अनंत अपना द्रव्यत्वभावका याकै अनुभव नाही। तातैं पर्यायमात्रमैं आपा जानै है। तातैं ताकूं द्रव्यदृष्टि करावनेके अर्थि पर्यायदृष्टीकूं गौणकरि असत्यार्थ कहिकरि एकांतपक्ष छुडावनेके अर्थि झूठा कह्या है। ऐसा तौ नाही, जो, ए पर्याय सर्वथाही झूठे हैं कछु वस्तु नाही आकाशके फूलवत् हैं। जो अध्यात्मशास्त्रका वचनकूं सर्वथा एकांत पकडि पर्यायनिकूं सर्वथा झूठा मानै तौ वेदांती तथा सांख्यमतीकीज्यौं मिथ्यादृष्टि ठहरै है। पहलै तौ पर्यायबुद्धिका एकांत मिथ्यात्व था। अब ताकूं सर्वथा छोडि द्रव्यनयका एकांत मिथ्यादृष्टि होगा, तब गृहीतमिथ्यात्वका सद्भाव आवैगा। बहुरि उपनयके भेदनिविषैं सद्भूत

असद्भूत उपचार कहै हैं। ते कथंचित् असत्यभी मानने। जातैं ऐसा कह्या है, जो, प्रयोजन तथा निमित्तके वशतैं प्रवर्तैं अन्यकूं अन्य कहनां तहां उपचार है सो परस्पर द्रव्यनिकै निमित्तनैमित्तिक भाव है। सो तो सत्यार्थ हैही। तातैं संसार मोक्ष आदि तत्वनिकी प्रवृत्ति है। जो निमित्त नैमित्तिकभाव झूठा होय तौ संसार मोक्ष आकाशके फूलज्यौं ठहरै। बहुरि तैसैंही जहां पुरुषका प्रयोजन है ताकै अर्थि जो प्रवृत्ति है सोभी कथंचित् सत्यार्थ है। जो प्रयोजन तथा प्रयोजनका विषय पदार्थ सर्वथा असत्यार्थ होय तो आकाशके फूलकीज्यौं झूठा ठहरै। तथा एकेंद्रियादिक जीवकूं व्यवहारकरि जीव कह्या है। सो व्यवहार सर्वथा झूठाही होय तौ जीवहिंसादिकका कहन झूठा ठहरै। परमार्थतैं जीव तौ नित्य है अमर है। एकेंद्रियादिक जीव कहनां झूंठ है झूंटाके घातविषैं काहेकी हिंसा? तथा याका विस्तार कहांतांई कहिऐ? जे व्यवहारकूं सर्वथा असत्यार्थ कहै हैं ते तौ सर्व व्यवहारके लोप करनेवाले तीव्रमिथ्यात्वके उदयतैं गाढे मिथ्यादृष्टि हैं-जिनमततैं प्रतिकूल हैं, तिनिकी संगतिही स्वपरकी घातक है ऐसा जाननां॥

बहुरि नयचक्रमैं नयनिके भेद ऐसै कहे हैं। द्रव्यार्थिकके भेद १०। तहां कर्मोपाधिनिरपेक्ष, जैसैं, संसारी जीव सिद्धसमान हैं। उत्पाद व्यय गौणकरि केवल ध्रौव्यरूप सत्ताकूं ग्रहै, जैसें

सद्रूप नित्यद्रव्य है। भेदनिरपेक्षप जैसें, गुणपर्यायतैं द्रव्य अभिन्न हैं। कर्मोपाधि सापेक्ष जैसें, जीव रागादिस्वरूप है। उत्पादव्ययमुख्यकरि जैसें, सत् है सो उत्पादव्ययध्रौव्यरूप द्रव्य है। भेदसापेक्ष जैसें, द्रव्य है सो गुणपर्यायवान् है। अन्वयद्रव्यार्थिक जैसें, द्रव्य गुणस्वरूप है। स्वद्रव्यादिग्राहक जैसें, अपने द्रव्य क्षेत्र काल भावकरि द्रव्य सद्रूप है। परद्रव्यादिग्राहक जैसें, परद्रव्य क्षेत्र काल भावकरि द्रव्य असद्रूप है। परमभावग्राहक जैसें, जीवद्रव्यकूं शुद्ध अशुद्ध उपचारादिकरि रहित चैतन्यमात्र कहै। ऐसें दश भेद भये ॥

बहुरि पर्यायार्थिकके छह भेद हैं। अनादिनित्यपर्यायग्राही जैसें, चंद्रमा सूर्यादिकके विमान मेरुपर्वतादिक नित्य हैं। सादिनित्यपर्यायार्थिक जैसें, कर्म नाशिकरि सिद्ध भये ते सादिनित्यपर्याय हैं। सत्तागौणकरि उत्पादव्ययरूप पर्यायार्थिक जैसें, पर्याय समयस्थायी हैं। उत्पादव्ययध्रुवरूप सत्ताग्राही पर्यायार्थिक जैसें, समय समय पर्याय उत्पादव्ययध्रौव्यरूप हैं। कर्मोपाधिनिरपेक्ष स्वभाव नित्य शुद्ध पर्यायार्थिक जैसें, संसारी जीवके पर्याय सिध्दके पर्यायसमान शुध्द हैं। कर्मोपाधिसापेक्ष अशुद्ध अनित्य पर्यायार्थिक जैसै, संसारी जीव उपजे विनसै हैं। ऐसें पर्यायार्थिकके छह भेद कहै। ऐसें प्रत्यक्षपरोक्षप्रमाण द्रव्यार्थिकपर्यायार्थिकनयानिकरि तथा निर्देशादिक वा

सत् आदिक अनुयोगनिकरि तत्त्वार्थनिका अधिगम होय है। सो तत्त्वार्थ, नाम स्थापना द्रव्य भाव इनि च्यारि निक्षेपनिकरि स्थापि तिनिका अधिगम करनां। यहू अधिगमज सम्यग्दर्शनकी उत्पत्तिकूं कारण है। निसर्गज सम्यग्दर्शन तौ मति अवधि ज्ञानकरि होय है। बहुरि अधिगमज है सो गुरूपदेशके आधीन है। तातैं श्रुतज्ञानरूप जो प्रमाणनयादिकका ज्ञान सो गुरूके मुख श्रवण कीयेतैं होय है। सो शास्त्रका श्रवण पठन पाठन निरंतर करनां योग्य है। यहही भव्यजीवनिकूं स्वर्गमोक्षका साधन है॥

अब प्रमाणनयनिकरि तत्त्वार्थनिका अधिगम कहिये ज्ञान हो है ताका स्वरूप कहिये हैं। तहां तत्त्वार्थाधिगम दोय प्रकार है, स्वार्थ परार्थ ऐसैं। तहां स्वार्थ तौ ज्ञानस्वरूप है। बहुरि परार्थ वचनात्मक है। सोभी दोय प्रकार है। एक तौ वीतरागीकै होय। ताकूं वीतरागकथा कहिये। दूसरा वादिप्रतिवादी जिनिकै हार जीतकी इच्छा होय तिनिकै होय। ताकूं विजिगीषुकथा कहिये। तहां वीतरागकै तौ गुरुशिष्य होय तथा विशेषज्ञानी दोनूंही होय तिनिकै होय। तहां वीतरागीनिकी चरचाकी हद तौ तत्त्वनिर्णय हो चुकै तबतांई है। बहुरि वादिप्रतिवादीनिकै हारजीति होय चुकै तबताई कहै। तहां इसके च्यारि अंग हैं। वादी प्रतिवादी सभाके लोक सभापति ऐसे। वादि-

प्रतिवादीविना तौ वाद प्रवर्तैंही नाही। सभाके लोकविना साख कौन भरै। सभापतिविना हारे जीते निग्रह अनुग्रह कौन करै। तातैं चार्‍योंही चाहिये ॥

इहां नैयायिक कहै हैं– जो, वाद है सो तत्त्वनिर्णयका कारण है। यातैं तत्त्वनिर्णय दृढ होय है। जगमैं सत्यार्थतत्त्वकी प्रभावना होय तब लोकमैं प्रतिष्ठा होय तातैं यहही वीतरागकथा है। ताकूं कहिये, जो, वीतरागकथाविषैं तौ सभाका तथा सभापतिका नियम नाही। बहुरि विजिगीषुकथाविषैं नियमही है। बहुरि कही जो वादविषैं सर्वलोककै तत्त्वकी दृढता होय है प्रभावना होय है, सो यह तौ सत्य है। परंतु जहां आपकी हार होय तहां स्वमतका विध्वंसभी होय है। सो वाद तौ हारिजीतिहीका कारण है, तातैं वीतरागीनिकै यह संभवै नाही। बहुरि जहां अपनी ऐसी सामर्थ्य होय, जो, मैं वादमैं हारूंगा नाही जीतूंहीगा, तौ याकूं सामग्री बहुत चाहिये। प्रथम तौ यथार्थहेतुवाद अहेतुवादकरि आपकै तत्त्वका निर्णय चाहिये। दूसरा तपश्चरणादिकरि अपनी प्रतिष्ठा जगतमैं भई होय ऐसा चाहिये। बहुरि कछू देवता इष्टका अतिशय चमत्कारकी आपकै सिद्धि भई चाहिये। बहुरि राजा आदिकी पक्ष अपनी चाहिये। पक्षविनां आप सांचाभी होय तौ निष्पक्षीकौ पैला पक्ष प्रबलवाला झूठा करि डारै इत्यादि सामग्री होय, अवश्य जीतनेका आपका निश्चय होय

तब वाद जीति मतकी प्रभावना करै तौ उचितही है। विनासामग्री वाद करै अरु हारै तौ स्वमतका विध्वंसही होय। तातैं यह निश्चय जानूं, जो, वाद एकांततैं तौ तत्त्वनिर्णयकूं कारण नांही, हारजीतिही मुख्यता है। बहुरि वीतरागकथा है सोही तत्त्वनिर्णयकूं कारण है॥

ऐसैं इस प्रथम अध्यायविषैं ज्ञानका बहुरि दर्शनका तौ स्वरूप वर्णन कीया। बहुरि नयनिका लक्षण कह्या। बहुरि ज्ञानका प्रमाणपणां कह्या॥

दोहा—— दर्शनबोध यथार्थता। नयलक्षण बणवाय॥
ज्ञान पंचके मानता। कही आदि अध्याय॥ १॥

सवईया तेईसा— जे पढि हैं अधिकार पढै नर ते चढि हैं निजरूप रमंता।
जे कढि हैं मुख यामय वाक्य सु चढि हैं सब ऊपरि संता॥
जे करि हैं निति पूजन भव्य सुपुण्य लहै परलोक गमंता।
जे परि हैं थुति गाय सुपाय निबोध फुरै तिनिकूं जु अनंता॥ १॥

ऐसैं तत्वारथका है अधिगम जातैं ऐसा जो मोक्षशास्त्र ताविषैं प्रथम अध्याय संपूर्ण भया॥

॥ नमो वीतरागाय ॥

# ॥ अथ द्वितीयाध्यायका आरंभ कीजिये हैं ॥

दोहा— उदयज उपशम मिश्र तजि, क्षायिक भाव उघारि ॥
जीवभाव उज्जल कियो, नमूं ताहि मद छारि ॥ १ ॥

ऐसैं मंगलकरि सर्वार्थसिद्धिटीकाकारका वचन लिखिये हैं। तहां शिष्य पूछे है, हे भगवन्! सम्यग्दर्शनका विषय भावकरि कहे जे जीवादितत्त्वनिमैं आदिविषैं कह्या जो जीव, ताका स्वतत्त्व कहिये निज यथार्थ असाधारणस्वरूप कहा है? सो कहिये। ऐसैं पूछैतैं आचार्य सूत्र कहै हैं—

॥ औपशमिकक्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्वमौदयिकपारिणामिकौ च ॥ १ ॥

याका अर्थ— औपशमिक क्षायिक मिश्र औदयिक पारिणामिक ए पांच भाव हैं ते जीवके निजतत्त्व है ॥ तहां आत्माविषैं कर्मकी निजशक्तिका कारणके वशतैं अनुद्भूति कहिये उदय न

होना सो उपशम है। जैसें कतकादि कहिये निर्मली आदि वस्तुके संबंधतैं जलविषैं कर्दमका उपशम होय जलकै पीदै बैठी जाय ऊपरितैं जल उज्जल होय जाय, तैसैं उपशम जाननां। बहुरि कर्मकी अत्यंतनिर्वृत्ति होय तत्त्वमैंसूं उठि जाय सो क्षय है। जैसैं उसही जलकों निर्मल पात्रमैं लीजिये तब कर्दमका अत्यंत अभाव है। तैसैं क्षय जाननां। बहुरि उपशमभी क्षयभी दोऊ स्वरूप होय तहां मिश्र है। जैसैं तिसही जलविषैं कतकादि द्रव्य डारै कर्दमका क्षीणाक्षीणवृत्ति कहिये किछु तौ पीदै बैठ्या किछू गलदाई रही किछु बाहरि निकस्या, तैसैं क्षयोपशम जाननां। बहुरि द्रव्य क्षेत्र काल भावके निमित्ततैं कर्मके फलकी प्राप्ति कहिये उदय आवनां प्रकट होनां सो उदय है। बहुरि द्रव्यका आत्मलाभ कहिये निजस्वरूपका पावनां जातैं होय सो परिणाम है। जैसैं सुवर्णके पीततादि गुण, कंकण कुंडल आदि पर्याय, तैसै परिणाम जाननां। इहां कर्म आदिकका निमित्त नाही लेना। तहां उपशम है प्रयोजन जाका ताकूं औपशमिक कहिये। यहां प्रयोजनार्थमैं इक प्रत्ययतैं सिद्धि कीया है। ऐसैंही क्षायिक क्षायोपशमिक औदयिक पारिणामिक जाननां। ते पांच भाव असाधारण जीवके स्वतत्त्व कहिये॥

अब इनिका अनुक्रमका प्रयोजन कहै हैं। इहां सम्यग्दर्शनका प्रकरण है। तहां तीन प्रकार

सम्यग्दर्शनविषैं औपशमिक पहलै होय है। अनादिमिथ्यादृष्टीकै प्रथमही औपशमिक सम्यक्त्व प्राप्ति होय है। तातैं सूत्रविषैं याकूं आदिविषैं कह्या है। ताकै पीछै क्षायिक ग्रहण कीया है। जातैं यहु निर्मलताईमैं याकी स्पर्द्धा बरोबरी करै है, प्रतियोगी है। तथा संसारी जीवनिकी अपेक्षा द्रव्यनिकी गणती कीजिये तब औपशमिकवाले जीवनितैं असंख्यातगुणे क्षायिकवाले जीव हैं। काहेतैं? जातैं औपशमिककाल अंतर्मुहूर्तमात्र है। तामैं भेले होय तब अल्पही होय। यातैं क्षायिकका काल संसारीकी अपेक्षा तेतीस सागर किछू अधिक है। सो यातैं असंख्यातगुणा भया। तातैं तहां जीवनिकी संख्याभी असंख्यातगुणी भई। ताकै पीछै मिश्र कहिये क्षायोपशमिकका ग्रहण है। जातैं इहां दोऊ स्वरूप है। तथा जीवभी इहां असंख्यातगुणे होय हैं। याका काल छयाछटी सागरका है। बहुरि ताकै पीछै औदयिक पारिणामिकका ग्रहण अंतमैं कीया। जातैं इहांभी जीवनिकी संख्या तिनितैं अनंतगुणी है। इहां कोई कहै है, जो, या सूत्रमैं भावनिकै जुदी जुदी विभक्तिकरि वाक्य कीया सो कौन कारण? द्वंद्वसमासतैं निर्देश करना था। कैसैं? "औपशमिकक्षायिकमिश्रौदयिकपारिणामिकाः" ऐसै। इस भांति कीये दोय चकार न आवते तब सूत्रमैं अक्षर थोरे होते। ताकूं कहिये, ऐसी आशंका न करणी। जातैं इहां मिश्र ऐसा कह्या है सो दोय अन्य गुणकी

अपेक्षा है। तातैं वाक्यविषैं चकार शब्दतैं पहले कहे जो औपशमिक क्षायिक ए दोय; तेही मिश्रमैं ग्रहण करने अन्य न लेणे। बहुरि कहै, जो, क्षायोपशमिक ऐसा शब्द क्यौं न कह्या मिश्र काहेकूं कह्या? तहां कहिये, क्षायोपशमिक कहनेमैं गौरव होय है—अक्षर सूत्रमैं वधि जाय। तातैं वाक्यकरि मिश्र ग्रहण कीया है। बहुरि मिश्रका ग्रहण वीचि कीया, ताका यह प्रयोजन है, जो, पहले पिछले दोनूंकी अपेक्षा लेणी है। औपशमिक क्षायिक तौ भव्यहीकै होय है। बहुरि मिश्र है सो भव्यकैभी होय अभव्यकैभी होय। बहुरि औदयिक पारिणामिक ए दोऊभी भव्य तथा अभव्य दोऊहीकै होय। तातैं मिश्रका वीचि ग्रहण है॥

बहुरि कोई पूछै है, भावशब्दकी अपेक्षा स्वतत्त्व शब्दकै ताके लिंग तथा संख्याका प्रसंग आवै है। जातैं भावशब्द पुरुषलिंगी है। तातैं स्वतत्त्वकैभी पुरुषलिंग चाहिये। तथा भावनिकी संख्या बहुत है, तातैं स्वतत्त्वकै बहुवचन चाहिये। ताकूं कहिये स्वतत्त्वशब्द है सो उपात्तलिंग संख्यारूप है याका लिंग पलटै नाही। तथा तत्त्वशब्द भाववाची है। तातैं भावके एकही वचन होय है। जातैं तस्य भावस्तत्त्वं ऐसा है, तातैं संख्याभी पलटै नांही तातैं दोष नांही। बहुरि इहां ऐसा विशेष जानना, जो, जीवके पांच भाव कहे तातैं चैतन्यमात्रही नांही है। सांख्यमती पुरुषका

स्वचैतन्यमात्र माने है। बहुरि बुध्यादिक विशेषगुणकाभी वैशेषिक मतवाला पुरुषकै अभाव माने है। बहुरि वेदांतमती आनंदमात्र ब्रह्मस्वरूप माने है। बौद्धमती चित्कूं प्रभाकर मात्र मानै है। सो सर्वथा एकांततैं यहु बणै नांही। पंचभावरूपही जीवका स्वरूप प्रमाणसिद्ध है ऐसा जाननां॥

आगैं शिष्य पूछै है, तिस आत्माके पंच औपशमिकादिक भाव कहे ते कहा उत्तरभेद-सहित है कि अभेदरूप है? ऐसै पूछै उत्तर कह्या, जो, भेदसहित है। फेरि पूछै, जो, ऐसै है तौ तिनिके भेद कहो। ऐसैं पूछै आचार्य सूत्र कहै हैं—

॥ द्विनवाष्टादशैकविंशातित्रिभेदा यथाक्रमम् ॥ २ ॥

याका अर्थ— पहलै सूत्रमैं पंच भाव कहे। तिनके अनुक्रमतैं दोय नव अठारह इकईस तीन ए भेद हैं॥ तहां दोय आदिक संख्याशब्दनिका द्वंद्वसमासकरि अरु भेदशब्दकै स्वपदार्थवृत्ति तथा अन्यपदार्थवृत्ति जाननी। कैसै सोही कहिये है। दोय बहुरि नव बहुरि अठारह बहुरि इकईस बहुरि तीन ऐसै तौ द्वंद्ववृत्ति भई। बहुरि तेही भेद ऐसै स्वपदार्थवृत्ति भई। ए कहे तेही भेद हैं। ऐसैं भेदशब्द संख्याहीका संबंधी भया। तब ऐसै संबंध होय पांचौं भावनिका बहुवचन षष्ठीविभक्ति करि कहनां, जो, ये भेद पांच भावानिके हैं। बहुरि ते हैं भेद जिनके इहां अन्यपदार्थवृत्ति भई।

जातैं ये भेद पूर्वोक्त भावनिके हैं। तहां विभक्ति भावनिके सूत्रमैं कही सोही रही। बहुरि यहां यथाक्रम ऐसा वचन है सो यथासंख्यके जानने अर्थि है। बहुरि भेदका न्यारा न्यारा संबंध करणा। तातैं औपशमिक दोय भेदरूप है। क्षायिक नव भेदरूप है। मिश्र अठारह भेदरूप है। औदयिक इकईस भेदरूप है। पारिणामिक तीन भेदरूप है। ऐसैं जानिये है ॥

आगैं शिष्य पूछै है, जो, ऐसैं है तो औपशमिकके दोय भेद कौनसे हैं? ऐसैं पूछै सूत्र कहै हैं—

॥ सम्यक्त्वचारित्रे ॥ ३ ॥

याका अर्थ— औपशमिकभावके भेद औपशमिकसम्यक्त्व औपशमिकचारित्र ए दोय हैं ॥ सम्यक्त्वचारित्र तौ पूर्वैं जिनका लक्षण कह्या तेही जानने। बहुरि पूछै है, तिनिके औपशमिकपणा कैसै है? तहां कहिये है, चारित्रमोह दोय प्रकार है। एक कषायवेदनीय एक नोकषायवेदनीय। तहां कषायवेदनीयका भेदनिमैंसूं अनंतानुबंधी क्रोध मान माया लोभ ए च्यारि लेने। बहुरि दर्शनमोहके तीन भेद हैं मिथ्यात्व सम्यक्त्वप्रकृति सम्यङ्मिथ्यात्व ऐसै। इनि सात प्रकृतिनिका उपशमतैं औपशमिकसम्यक्त्व होय है। इहां कोई पूछै है, अनादिमिथ्यादृष्टि भव्यकै कर्मका उदयकरि कलुषपणां है, ताकै उपशम काहेतैं होय? ताका समाधान— काललब्धि आदिके

निमित्ततैं होय है। तहां प्रथम तौ कर्मसहित आत्मा भव्यजीवकै संसार अर्द्धपुद्गलपरिवर्तन नामा कालमात्र अवशेष रहै, तब प्रथमोपशमसम्यक्त्वके ग्रहण करनेयोग्य होय है। जो संसार अधिका बाकी होय तौ सम्यक्त्वग्रहण न होय। ऐसैं एक तौ काललब्धि यहू है। बहुरि दूसरी काललब्धि यहू है, जो, कर्मकी स्थिति उत्कृष्ट जाकै बंधती न होय तथा सत्ताका कर्मकी होय तथा जघन्यस्थितिबंधकी तथा सत्ताकी होय तौ तिस अवसरमैं सम्यक्त्वका लाभ न होय। तौ कहां होय? जब अंतःकोटाकोटी कहिये एक कोडाकोडी सागरमैं नीचै स्थिति लीये कर्मबंध भावकूं प्राप्त होय, तथा विशुध्दपरिणामके वशतैं सत्ताका कर्मबंधकी स्थितितैं संख्यात हजार सागर घाटि रह जाय, तब प्रथमसमम्यत्वग्रहणयोग्य होय ॥ बहुरि तीसरी काललब्धि भवकी अपेक्षा है। जो भव्यजीव पंचेंद्रिय होय संज्ञी होय पर्याप्त अवस्थासहित होय सर्वतैं विशुध्दपारिणाम होय सो प्रथमोपशमसम्यक्त्वकूं उपजावै है। बहुरि आदिशब्दकरि जातिस्मरण आदिक लेणे। बहुरि समस्त मोहनीयकर्मके उपशमतैं उपशमचारित्र होय है। तहां सूत्रमैं सम्यक्त्वका आदि वचन है सो चारित्र सम्यक्त्वपूर्वकही होय है। आत्मा पहली सम्यक्त्व अवस्थारूप होय है। अब आत्माके चारित्र अवस्था प्रकट हो है ॥

इहां सम्यक्त्वकी उत्पत्तिका विशेष लिखिये हैं। तहां प्रथमोपशमसम्यक्त्व उपजे पीछे अंतर्मुहूर्तकाल रहै है। तहां मिथ्यात्वकर्मकूं तीन प्रकार विभाग करै मिथ्यात्व सम्याग्मिथ्यात्व सम्यक्प्रकृतिमिथ्यात्व ऐसै। बहुरि यह कहां उपजे है? तहां नारकी तौ तहां उपजे पीछे अंतर्मुहूर्त पीछे उपजावै है। पहली दूसरी तीसरी पृथ्वीवाला तौ केई तौ जातिस्मरणतैं केई धर्मश्रवणतैं केई वेदनाकरि पीड्या हूवा उपजावै है। बहुरि नीचली च्यार पृथ्वीवाला धर्मश्रवणविना दोयही कारणतैं उपजावै है। बहुरि तिर्यंच उपजै पीछै च्यारितैं ले आठ दिनके उपरि उपजावै है। तहां जातिस्मरण धर्मश्रवण जिनबिंबदर्शन ए तीन कारण हैं। बहुरि मनुष्य नवमां वर्षतें उपजावै है। आठवर्षतांई नांही उपजै है। तहांभी जातिस्मरण धर्मश्रवण जिनबिंबदर्शन ए तीन कारण हैं। बहुरि देवगतिविषैं उपजे पीछै अंतर्मुहूर्त पीछै उपजावै है। तहां भवनवासीनितैं ले सहस्रारस्वर्गतांईका तौ जातिस्मरण धर्मश्रवण जिनमहिमाका दर्शन देवनिकी ऋद्धिका देखना इनि च्यारि कारणतें उपजावै है। बहुरि आनतादि च्यारि स्वर्गनिके देवनिकै ऋद्धिदर्शनविना तीन कारणतें। बहुरि नव ग्रैवेयकका जातिस्मरण धर्मश्रवण ए दोयही कारणतें उपजावै है ऐसैं जाननां ॥

आगैं, जो क्षायिकभाव नवप्रकार कह्या ताके भेदस्वरूपके प्रतिपादनके अर्थि सूत्र कहै हैं—

## ॥ ज्ञानदर्शनदानलाभभोगोपभोगवीर्याणि च ॥ ४ ॥

याका अर्थ— केवलज्ञान केवलदर्शन क्षायिकदान लाभ भोग उपभोग वीर्य बहुरि चकारतैं क्षायिकसम्यक्त्व क्षायिकचारित्र ऐसै नव प्रकार क्षायिकभाव है। इहां चशब्द है सो सम्यक्त्वचारित्र पूर्वसूत्रमैं कहे तिनिका ग्रहणके अर्थि है। बहुरि ज्ञानावरण नामा कर्मके अत्यंतक्षयतैं तौ केवलज्ञान क्षायिक हो है। बहुरि तैसैंही दर्शनावरण नामा कर्मके अत्यंतक्षयतैं केवलदर्शन क्षायिक हो है। बहुरि दानांतराय नामा कर्मके अत्यंत क्षयतैं अनंतप्राणीनिके उपकार करनेवाला क्षायिक अभयदान होय है। बहुरि लाभांतराय नामा कर्मके अत्यंत अभावतैं नाही है कवलाहारकी क्रिया जिनिकै ऐसे जे केवली भगवान् 'जिनिके शरीरके बलाधानके कारण अन्यमनुष्यनिके ऐसैं नाही' परमसुन्दर सूक्ष्म समय समय प्रति अनंते पुद्गलके परमाणू संबंधकूं प्राप्त होय है, नोकर्मका समय प्रबद्ध ऐसा आवै है सो क्षायिकलाभ है। बहुरि भोगांतराय नामा कर्मके समस्तके अभावतैं अतिशयवान् पुष्पवृष्टि आदिक अनेकाविशेष लिये अनंते क्षायिक भोग हैं। बहुरि उपभोगांतरायनामा कर्मके निरवशेष प्रलय होनेतैं सिंहासन चामर छत्रत्रयादिक विभूति प्रगट भये, ते क्षायिक अनंत उपभोग हैं। बहुरि वीर्यांतराय कर्मके अत्यंत क्षयतैं क्षायिक अनंतवीर्य प्रगट भया है। बहुरि पूर्व

कहि जे मोहकी सात प्रकृति तिनिका अत्यंत नाश होनेतैं क्षायिकसम्यक्त्व हो है। बहुरि चारित्रमोहके अत्यंत अभावतैं क्षायिकचारित्र प्रकट हो है। ऐसैं क्षायिकके नव भाव हैं। इहां प्रश्न, जो, क्षायिकका दानादिक भावकरि कीया अभयदानादिक है, तौ सिद्धनिकैभी अभयदानादिकका प्रसंग आवै है। ताका उत्तर आचार्य कहै है, यह दोष इहां नाही आवै है। अरहंतनिकै शरीरनामा नामकर्म तथा तीर्थंकरनामा नामकर्मका उदय पाइये है ताकी अपेक्षातैं कहै है। बहुरि तिनि कर्मनिका अभावतैं सिद्धनिकै इनिका प्रसंग नाही है। फेरी पूछै, जो, ऐसैं है तौ सिद्धनिकै इनि भावनिकी कैसैं प्रवृत्ति है? ताका उत्तर— परम उत्कृष्ट अनंतवीर्य अव्याबाधस्वरूपकरिही तिनिकी तहां प्रवृत्ति है। जैसैं केवलज्ञानरूपकरि अनंतवीर्यकी प्रवृत्ति हो है, तैसैं यहुभी जाननां॥

आगैं, जो क्षायोपशमिक भाव अठारा भेदरूप कह्या ताका भेदनिका निरूपणकै अर्थि सूत्र कहै हैं॥

॥ ज्ञानाज्ञानदर्शनलब्धयश्चतुस्त्रित्रिपञ्चभेदाः सम्यक्त्वचारित्रसंयमासंयमाश्च ॥ ५ ॥

याका अर्थ— ज्ञान चारी भेद, अज्ञान तीन भेद, दर्शन तीन भेद, अंतरायका क्षयोपशमरूप लब्धि पांच भेद, ऐसैं पंधरा तौ ये, बहुरि क्षायोपशमिकसम्यक्त्व क्षायोपशमिकचारित्र संयमासंयम ऐसे तीन ये सब मिलि अठारह क्षायोपशमिकभाव हैं ॥ च्यारि बहुरि तीन बहुरि तीन बहुरि पंच

ऐसे द्वंद्ववृत्तिकरि बहुरि ए हैं भेद जिनिके ऐसैं भेदशब्दतैं वृत्ति करनी। यथाक्रमकी पूर्वसूत्रतैं अनुवृत्ति लेणी। च्यारि आदि संख्या ज्ञानादिककै लगावणी। ऐसै च्यारि ज्ञान मति श्रुत अवधि मनःपर्यय। तीन अज्ञान कुमति कुश्रुत विभंग। तीन दर्शन चक्षु अचक्षु अवधि। पांच लब्धि दान लाभ भोग उपभोग वीर्य। ऐसै पंधरे भये। तहां सर्वघातिस्पर्द्धकनिका तौ उदयक्षयतैं बहुरि तिनिहीका सत्तारूप उपशमतैं बहुरि देशघातिस्पर्द्धक उदय होतैं क्षायोपशमिक भाव होय है। तहां ज्ञानादिककी प्रवृत्ति अपने आवरण तथा अंतरायके क्षयोपशमतैं होय है। बहुरि सम्यक्त्व इहां वेदकसम्यक्त्व लेणा। यहु अनंतानुबंधी कषायका चतुष्कका तथा मिथ्यात्व सम्यग्मिथ्यात्व इनि दोऊनिका उदयक्षयतैं तथा सत्तारूप उपशमतैं बहुरि सम्यक्त्वप्रकृतिके देशघातिस्पर्द्धकका उदय होतैं जो तत्त्वार्थश्रद्धान हो है सो क्षायोपशमिकसम्यक्त्व है। बहुरि अनंतानुबंधी अप्रत्याख्यान प्रत्याख्यान इनि बारह कषायनिका उदयक्षयतैं बहुरि सत्तारूप उपशमतैं बहुरि संज्वलनकषायके चतुष्कमैं किसी एक कषायके देशघातिकस्पर्द्धकनिका उदय होतैं बहुरि हास्यादि नोकषायका यथासंभव उदय होतैं जो त्यागरूप आत्माका परिणाम होय सो क्षायोपशमिकचारित्र है। बहुरि अनंतानुबंधी अप्रत्याख्यान कषायका अष्टकका उदयक्षयतैं बहुरि सत्तारूप उपशमतैं बहुरि प्रत्याख्यानकषायका उदय होतैं बहुरि संज्वलन

कषायके देशघातिस्पर्द्धकनिका उदय होतैं बहुरि नोकषाके नवकका यथासंभव उदय होतैं आत्माकै विरताविरत परिणाम हो है सो क्षायोपशमिक संयमासंयम है। याकूं देशविरतिभी कहिये ॥

इहां कोई पूछे, स्पर्द्धक कहां ? ताका समाधान— जो, कर्मके परमाणूंनिविषैं फल देनेकी शक्तिरूप रस है तिनिके अविभागप्रतिच्छेदका समूहकी पंक्ति क्रमरूप वृद्धि तथा हानि ते स्पर्द्धक कहिये हैं। तहां उदयमैं आया जो कर्मपरमाणूनिका एकसमयविषैं एकसमयप्रबद्ध, तामैं सिद्ध राशिके अनंतवे भाग अभव्यराशितैं अनंतगुणे परमाणू होय हैं, तिनिविषैं सर्व जघन्यगुण जामैं होय ऐसा एक परमाणू लेणा। ताका अनुभागकूं बुद्धिकरि छेदनतैं जहां ऐसा छेद होय ताका फेरि दुसरा छेद न होय ऐसैं अविभागपरिच्छेद सर्वजीवनितैं अनंतगुणां है, ताकी एक राशि कीजिये ताका नाम वर्ग है। बहुरि समान अविभागपरिच्छेदके समूहरूप परमाणूनिके समूहका नाम वर्गणा है। तहां थोरेसूं थोरे अविभागपरिच्छेदके परमाणूनिका नाम जघन्यवर्ग है। तिनके समान परमाणूरूप वर्गके समूहका नाम जघन्यवर्गणा है। बहुरी जघन्यवर्गतैं एक अविभागपरिच्छेद वधता तामैं पाईये ऐसी परमाणूनिके समूहका नाम द्वितीयवर्गणा है। ऐसैं जहांतांई एक एक अविभागप्रतिच्छेदनिका क्रम लीये जेती वर्गणा होय तितनी वर्गणांनिके समूहका नाम जघन्यस्पर्द्धक है।

बहुरि यातैं ऊपरि जघन्यवर्गणाके वर्गनिविषैं जे अविभागप्रतिच्छेद थे तिनितैं दूणे जिस वर्गणाके वर्गविषैं अविभागप्रतिच्छेद होय तहांतैं द्वितियस्पर्ध्दकका प्रारंभ होय तहांभी एक एक अविभागप्रतिच्छेद वधनेका क्रमरूप वर्गनिका समूहरूप जेती वर्गणा होय तिनिके समूहका नाम द्वितीय स्पर्ध्दक है। बहुरि ऐसैंही प्रथमस्पर्ध्दककी प्रथमवर्गणाके वर्गनिविषैं जेते अविभागप्रतिच्छेद थे तिसतैं तिगुणे जिस वर्गणाके वर्गनिविषैं अविभागप्रतिच्छेद पाईये तहांतैं तीसरे स्पर्ध्दकका प्रारंभ होय, ऐसैंही वर्गणाके समूहका नाम स्पर्द्धक है। सो ऐसै स्पर्द्धक अभव्यराशितैं अनंतगुणा अरु सिद्धराशिकै अनंतवै भाग एक उदयस्थानविषैं हो है ऐसैं जाननां ॥

आगै जो इकईस भेदरूप औदयिक भाव कह्या ताके भेदनिके नाम कहनेके अर्थि सूत्र कहै हैं—

॥ गतिकषायलिंगमिथ्यादर्शनाज्ञानासंयतासिध्दलेश्याश्चचतुश्चतुस्त्र्येकैकैकैकषड्भेदाः ॥६

याका अर्थ— गति च्यारि भेद, कषाय च्यारि भेद, लिंग कहिये वेद तीन भेद, मिथ्यादर्शन एक, अज्ञान एक, असंयम एक, आसिद्ध एक, लेश्या छह, ऐसै इकईस भेदरूप औदयिक भाव है ॥ तहां यथाक्रम ऐसी तौ पूर्वसूत्रतैं अनुवृत्ति लेणी। तिसके संबंधतैं गति तौ च्यारि भेद, नरकगति, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, देवगति। तहां अपने अपने नामकर्मकी प्रकृतिके उदयतैं होय

है तातैं औदयिक है। बहुरि कषाय च्यारि भेद क्रोध, मान, माया, लोभ। तेभी अपनी अपनी मोहनीयप्रकृतिके उदयतैं होय हैं तातैं औदयिक हैं। लिंग तीन भेद स्त्रीवेद, पुंवेद, नपुंसकवेद। तेभी अपनी अपनी प्रकृतिकै उदयतैं होय हैं तातैं औदयिक हैं। मिथ्यादर्शन मिथ्यात्वनाम मोहनीयकी प्रकृतिके उदयतैं होय है। याकरि परिणाम तत्त्वार्थका अश्रध्दानरूप है। बहुरि ज्ञानावरण नामा कर्मके उदयतैं पदार्थनिका ज्ञान न होय सो अज्ञान। बहुरि चारित्रमोहके सर्वघातिकस्पर्द्धकनिके उदयतैं असंयम होय सो औदयिक असंयत है। बहुरि सामान्यकर्मनिके उदयकी अपेक्षारूप असिध्दपणां औदयिक है। बहुरि लेश्या द्रव्यभावरूप दोय है। सो इहां जीवके भावका अधिकार है तातैं द्रव्यलेश्या न लेणी। भावलेश्या लेणी। सो कषायनिके उदयकरि रंजित जो योगनिकी प्रवृत्ति सो लेश्या है। सो छह प्रकार है। कृष्ण, नील, कापोत, पीत, पद्म, शुक्ल ऐसैं। इहां प्रश्न— जो, उपशांतकषाय क्षीणकषाय सयोगकेवली इनिविषैं शुक्ललेश्या आगममैं कही है। तहां कषायका उदयका तौ अभाव है। औदयिकपणा नाही बनेगा। ताका उत्तर आचार्य कहै हैं— जो, यहु दोष इहां नाही है। इहां पूर्वभाव जनावनेकी नयकी अपेक्षा है। जो योगनिकी प्रवृत्ति कषायनिकरि अनुरंजित पहलै थी, सोही उपचारतैं इहां जाननी। तातैं औदयिकही कहिये। बहुरि योगके अभावतैं

अयोगकेवली लेश्यारहित है ऐसा निश्चय कीजिये है। इहां कोई पूछे अन्यप्रकृतिनिके उदयतैं भये भाव औदयिकभावनिमैं क्यों न कहे? ताका समाधान- जो, इनिही भावनिमैं गर्भित जानने। शरीरादिक पुद्गलविपाकीनिका तौ इहां जीवभाव कहनेतैं अधिकारही नाही। बहुरि जाति आदि जीवविपाकीगतिमैं गर्भित जानने। बहुरि दर्शनावरणीयका उदय मिथ्यादर्शन कहनेतैं गर्भित कीया है। जातैं अतत्त्वार्थश्रध्दानकाभी नाम मिथ्यादर्शन है। बहुरि अन्यथा देखनेकाभी नाम मिथ्यादर्शन है। बहुरि हास्यादिक वेदनिके सहचारी हैं। तातैं वेदनिमैं गर्भित भये। बहुरि वेदनीय आयु गोत्रका उदयभी अघातिया है सो गतिमैं गर्भित जानने॥

आगै, पारिणामिक भाव तीन भेदरूप कह्या ताके भेदनिके प्रतिपादनके अर्थि सूत्र कहे हैं—

॥ जीवभव्याभव्यत्वानि च ॥ ७ ॥

याका अर्थ—जीवत्व, भव्यत्व अभव्यत्व ए तीन पारिणामिक भावके भेद हैं॥ ए तीन भाव पारिणामिक अन्यद्रव्यानितैं असाधारण आत्माके जानने। जातैं कर्मका उदय, उपशम, क्षय, क्षयोपशमकी अपेक्षा इनिमैं नांही है। द्रव्यके परिणामकीही अपेक्षारूप है। तहां जीवत्व तौ चैतन्यकूं कहिये। बहुरि सम्यग्दर्शनादि भावकरि परिणमैगा ताकूं भव्य कहिये। बहुरि सम्यग्दर्शनादिक

जाकै न होयगे सो अभव्य कहिये। ए तीन भाव जीवकै पारिणामिक हैं । इहां प्रश्न– जो अस्तित्व, नित्यत्व, प्रदेशवत्त्व इत्यादिकभाव हैं तेभी पारिणामिक हैं, तिनिकाभी इस सूत्रमैं ग्रहण चाहिये । ताका उत्तर– जो, इनिका ग्रहण न चाहिये। अथवा चशब्दकरि कीयाभी है। फेरि पूछै है, जो, ग्रहण कीया है तौ तीनकी संख्या विरोधी जाय है। तहां कहिये, जो, ए असाधारण जीवके भाव पारिणामिक तीनही हैं। बहुरि अस्तित्व आदि हैं ते जीवकैभी हैं अजीवकैभी हैं तातैं साधारण हैं। यातैं चशब्दकरि न्यारे ग्रहण कीजिये। इहां तर्क– औपशमिकादिभाव जीवकै नाही बणै हैं। जातैं आत्मा अमूर्तिक है। तातैं ते भाव कर्मबंधकी अपेक्षारूप हैं। अमूर्तिककै कर्मबंध युक्त नाही। तहां उत्तर– जो, आत्मा अमूर्तिकही है ऐसा एकांत नाही है। इहां अनेकांत है। आत्मा कर्मबंधपर्यायकी अपेक्षा तिस कर्मके बंधनतैं कथंचित् मूर्तिक है। शुद्धस्वरूपकी अपेक्षा कथंचित् अमूर्तिक है। तहां फेरि तर्क करै है; जो, ऐसैं है तौ कर्मबंधका बंधनतैं आत्माका एकत्वपणां ठहऱ्या, तब अभेद ठहऱ्या, तब भेद कैसै बणैगा? ताकूं कहिये; यहु दोष नाही आवै है। जातैं बंधपर्यायकी अपेक्षा एकत्वपणाकूं होतैंभी लक्षणभेदतैं या आत्माकै अर कर्मकै नानापणा अनेकपणां है ऐसा निश्चय कीजिये। सोही इहां सिध्दांतकी गाथा है ताका अर्थ– बंधप्रति तौ

जीवकै अर कर्मकै एकत्वपणा है बहुरि लक्षणभेदतैं नानापणा है। तातैं जीवकै अमूर्तिकभाव है, सो अनेकांततैं सधै है ॥ ऐसैं जीवके पंचभाव कहनेतैं सांख्यमती आदिक आत्माकूं शुद्धही एकांत करि मानै हैं, तिनिका निराकरण भया। जातैं सर्वथा शुद्धही होय, तौ संसार बंध मोक्ष तथा मोक्षका उपाय आदिकी कथनी सर्व मिथ्या ठहरै। बहुरि पंचभावरूप आत्मा कहनेतैं स्याद्वादनयकरि बंधमोक्षादि सर्वही कथंचित्प्रकार सिद्ध होय है। ऐसैं सात सूत्रनिकरि जीवके पंचभावनिका वर्णन कीया ॥

आगै, जो बंधप्रति एकत्व है सो लक्षणभेदतैं बंध अरु आत्मा जुदे जाने जाय हैं। सो जीवका कहा लक्षण है? जातैं जुदा जानिये सो कहो ऐसैं पूछै सूत्र कहै हैं—

॥ उपयोगो लक्षणम् ॥ ८ ॥

याका अर्थ— उपयोग है सो जीवका लक्षण है ॥ उभयनिमित्त कहिये बाह्य अभ्यंतरकारणनिके वशतैं उपज्या जो चैतन्यकै अनुविधायी कहिये जुड्या हुवा चैतन्यहीका परिणाम सो उपयोग है। तिसकरि आत्माकै बंधप्रति एकपणाकूं होतैंभी आत्मा जुदा लखिये है। जैसैं सोना रूपाका एकपिंड होतैंभी पीत श्वेतवर्ण आदिकरि भेद जान्या जाय है तैसैं भेद जानिये है ॥

इहां तत्त्वार्थवार्तिक टीकाके अनुसार कछु लिखिये है। तहां बाह्य अभ्यंतर दोय कारण कहे तहां

बाह्यकेभी दोय भेद कहे एक आत्मभूत एक अनात्मभूत । तहां आत्मभूत तौ शरीरके संबंधरूप इंद्रियनकूं कहे । बहुरि दीपक प्रकाशादिक अनात्मभूत कहे । बहुरि अभ्यंतर कारणभी आत्मभूत अनात्मभूतकरि दोय भेद कहे । तहां द्रव्यमन वचन कायके योग पुद्गलरूप हैं तिनिकूं अनात्मभूत कह्या । बहुरि आत्माके चैतन्यभावतैं तन्मय जे प्रदेश तिनिमैं वीर्यांतराय ज्ञानदर्शन आवरणके क्षयोपशम तथा क्षयके अनुसार उज्जलता होय ऐसा भावयोग ताकूं आत्मभूत कह्या । तहां इनिका यथासंभव सन्निधान होतैं आत्माका चैतन्यस्वभाव है । सो अनुविधान कहिये अन्वय परिणामरूप प्रवर्तै वा परिणामकूं उपयोग कहिये । इहां कोई कहै– चैतन्यके परिणाम सुख दुःख मोहरूपभी हैं ते परिणामभी ग्रहण चाहिये । अगले सूत्रमैं उपयोगके भेद ज्ञानदर्शनही कहे, सो पूर्वापरविरोध आवै है । ताका समाधान– इहां चैतन्यसामान्यका ग्रहणतैं सर्वहीका ग्रहण होय है । परंतु अगिले सूत्रमैं भेद कीये जो दर्शनज्ञान तेही इहां ग्रहण करने । जातैं सामान्यका जो विशेष सर्वही अवस्थामैं व्यापक होय सोही लक्षणप्रकरणमैं लेणा, तातैं विरोध नांही । अब इहां पूछे है, जो, लक्षण कहा? तहां कहिये हैं, जहां बहुत वस्तु मिली होय, तिनिमैं जिस चिन्हकरि वस्तुकी जुदायगी जाणी जाय तिस चिन्हकूं लक्षण कहिये । सो यहु आत्मभूत अनात्मभूत भेद-

करि दोय प्रकार है। जैसैं अग्निकै उष्णपणां सो तौ आत्मभूत है। दंडी पुरुषकै दंड सो अनात्मभूत है। सो इहां आत्माका उपयोग लक्षण आत्मभूत जाननां ॥

इहां कोई कहै, जो, उपयोग तौ असाधारणधर्म है, तातैं लक्षण नांही, गुणकै अरु गुणीकै अन्यपणां है। जातैं लक्ष्यलक्षणकै भेद है। ताकूं कहिये, सर्वथा भेद होतैं अनवस्था हो है। तातैं कथंचिद्भेदाभेदात्मक होतैं लक्ष्यलक्षणभावकी सिध्दि है। जाके मतमैं आत्मा एकांतकरि नित्य अभेद ज्ञानस्वरूप है, ताके मतमैं ज्ञानके परिणाम जे अनेक ज्ञेयाकार होनां ऐसा उपयोग नांही सिद्ध हो है तहां सर्वव्यवहारका लोप हो है। तातैं चैतन्यके परिणामकूं उपयोग मानै सर्व-सिद्धि है। सोही उपयोग लक्षण है आत्मा लक्ष्य है। इहां कोई कहै, आत्मा लक्ष्यही नांही तब लक्षण काहेका? विनालक्ष्य लक्षण कहना सुसाके सींगवत् मींडककै चोटीवत् वांझके पुत्रवत् आकाशके फूलवत् अभावरूप है॥ बहुरि जो आत्माभी मानिये, तौ ज्ञानदर्शन तौ अनवस्थित है। सो लक्षण बणै नांही। अनवस्थितकूंभी लक्षण मानिये तौ जब लक्षणका अभाव होय तब लक्ष्यकाभी अभावही आवै है। ताकूं कहिये, आत्माका अभाव कहनां युक्त नांही। जातैं जो आत्माका अभाव कारणपणाके अभावतैं मानिये तौ आत्माके नारकादि पर्याय तौ मिथ्यादर्शनादिक

कारणतैं होयही है। बहुरि नारकादिपर्याय हैं ते द्रव्यविना निराश्रय होय नांही। तातैं इनिका आश्रय आत्मा द्रव्य हैही। तब कारणपणाका अभाव कैसैं? बहुरि सत् है सो विनाकारणभी कहिये। सतही भया तब कारण काहेकूं चाहिये? बहुरि मंडिकके चोटीका अभावका दृष्टांत है सो मींडक आदि तथा चोटी आदिका सत्त्व मानिकरि मींडक आदिकै संबंधका अभाव मानिये है। तहां सत्त्व असत्त्व दोऊ पक्षका ग्रहण है। तातैं यहु दृष्टांतभी मिलै नांही। जातैं यहु जीव कर्मके वशतैं अनेक जातिके संबंधकूं पावै है। जब मींडक भया तब तौ चोटीका संबंध न भया। बहुरि जब स्त्रीपर्याय पाई तब चोटी पाई। तब मींडकभी वैही जीव था। स्त्रीपर्यायमैं आया तब पूर्वपर्यायकी अपेक्षा स्त्रीकूं मंडुक कहि याकै चोटी कहिये तौ दोष नांही। तैसैंही आकाशके फूलके दृष्टांतकैभी वणै है। जातैं कर्मके उदयतैं जीव वृक्ष भया। तब जीवपुद्गलके समुदायकूं फूल ऐसा नाम कहिये। ऐसैं पुद्गलद्रव्यतैं फूल व्याप्त है तैसैंही आकाशतैंभी व्याप्त कहिये॥

इहां कहै, जो, वृक्षरूप पुद्गलकृत उपकारकरि वृक्षका फूल कहिये है तहां कहिये आकाशका कीया अवगाहना उपकारकी अपेक्षा आकाशका फूल कहिये तौ कहा दोष? वृक्षतैं तौ छूटैभी है। आकाशमैं तौ सदा रहै तातैं नित्यसंबंध है। बहुरि कहै, फूल आकाशतैं जुदा वस्तु है, तातैं

आकाशका न कहिये। तौ ऐसैं तौ वृक्षतैंभी जुदा पदार्थ है, तातैं वृक्षकाभी न कहिये इत्यादि युक्तितैं दृष्टांतभी बणता नाही। तातैं कारणके अभावतैं आत्माका अभाव मानिये तौ यह तौ वणै नाही। बहुरि अनवस्थित उपयोगकै लक्षणपणाका अभाव कहै, सो चैतन्यका परिणाम ज्ञेयाकार परिणमैंही है। सामान्य उपयोग तौ नित्यही रहै है। याहीतैं भेदाभेदात्मक वस्तुका स्वरूप निर्बाध सिध्द है। बहुरि कहै, जो, आत्मा प्रत्यक्ष नाही, तातैं अभाव मानिये। तहां कहिये, शुद्ध आत्मा तौ सकलप्रत्यक्ष केवलज्ञानगोचर है। बहुरि कर्मनोकर्मबंधसहित आत्मा अवधि मनःपर्यय ज्ञानकैभी गम्य है। बहुरि कहै, इंद्रियप्रत्यक्ष नाही, तातैं अप्रत्यक्ष है। तौ इंद्रियज्ञान तौ परोक्ष है। बहुरि मानसप्रत्यक्षगम्य कहिये है, सो यहभी व्यवहारनयतैं सिद्ध हो है। परमार्थतैं तौ मानसप्रत्यक्ष परोक्षही है। ऐसैंही अन्यवादीनिकरि कल्पित आत्माका अभाव साधनेके हेतु ते बाधासहित जानने जातैं आत्मा प्रतीतिसिद्ध है। बहुरि याका लक्षण उपयोग है सो प्रतीतिसिद्ध है। याकी विशेष चरचा श्लोकवार्तिक तत्त्वार्थवार्तिकतैं जाननी ॥

इहां कोई पूछै, पूर्वै जीवका स्वतत्त्व भाव कह्या बहुरि लक्षण कह्या, सो स्वतत्त्व अरु लक्षणमैं कहा विशेष है? ताका समाधान, जो, स्वतत्त्व तौ लक्ष्य आत्माही है। बहुरि लक्षण है सो लक्षणही

है। सो लक्षण है सो लक्ष्य नाही है। जातैं लक्ष्यलक्षणविषैं कथंचित् भेदाभेदकी सिध्दि पूर्वैं कही है। तहां क्षायिक तथा क्षायोपशमिक भावविषैं ज्ञानदर्शन भेदरूप कहे हैं। तिनि दोऊनिमैं सामान्यव्यापी उपयोगकूं इहां लक्षण कह्या है। चैतन्यशक्तिकी लब्धि है सो तौ नित्य है। ताकी व्यक्ति पंचभावरूप अनेक हैं। तिनिमैं उपयोगभी है सो छद्मस्थकै अनित्य है। ताकी स्थिति एक ज्ञेयकेविषैं रहना उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्तमात्र कह्या है। बहुरि अनुभवगोचर है, तातैं प्रसिद्ध है। लक्षण प्रसिद्धहीकूं कहिये है। आत्मा लक्ष्य है सो शक्तिव्यक्तिमय है अरु लक्षण व्यक्तिही है। तातैं आत्माकी सिद्धि वादिप्रतिवादिप्रसिद्ध उपयोगहीतैं होय है। तातैं उपयोगकूं लक्षण कह्या है॥

आगैं, कह्या जो उपयोग, ताके भेद दिखावनेके अर्थ सूत्र कहे हैं—

॥ स द्विविधोऽष्टचतुर्भेदः ॥ ९ ॥

याका अर्थ— पूर्वसूत्रमैं उपयोग कह्या, सो ज्ञानदर्शन भेदकरि दोय प्रकार है। तहां आठ भेदरूप ज्ञान है। च्यारि भेदरूप दर्शन है॥ उपयोग दोय प्रकार है ज्ञानोपयोग दर्शनोपयोग ऐसैं। तहां ज्ञानोपयोग आठ भेदरूप है मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्ययज्ञान, केवलज्ञान, मत्यज्ञान, श्रुताज्ञान, विभंगज्ञान ऐसैं आठ भेद। बहुरि दर्शनोपयोग च्यारि प्रकार है चक्षुर्दर्शन,

अचक्षुर्दर्शन, अवधिदर्शन, केवलदर्शन ऐसैं च्यारि भेद ॥ इहां पूछै, जो, दर्शनज्ञानविषैं भेद कहा? तहां कहै हैं, साकार अनाकारके भेदतैं भेद है। साकार तौ ज्ञान है, जातैं ज्ञेयके आकार होहै। अनाकार दर्शन है, जातैं सत्तामात्र आकारकरि रहित ग्रहण करै है। सो ए दोऊ छद्मस्थ जीवकै तौ अनुक्रमतैं वर्तै हैं। पहलै दर्शन हो है, पीछै ज्ञान हो है। बहुरि निरावण जे केवली तिनिकै दोऊ युगपत् एककाल प्रवर्तै है। इहां सूत्रविषैं दर्शनतैं पहली ज्ञान कह्या है सो ज्ञान पूज्य प्रधान है। तथा इहां सम्यग्ज्ञानका प्रकरण है तातैं कह्या है। बहुरि पूर्वै ज्ञान पांच प्रकार कह्या है। इहां उपयोग कहनेतैं विपर्ययज्ञानभी ग्रहण कीया है। तातैं आठ प्रकार कह्या है। ऐसैं दोय सूत्रकरि कह्या जो उपयोग लक्षण सो जीवकै शरीरतैं भेदकूं साधै है। जैसैं उष्णजलकी अवस्थामैं द्रवपणा अरु उष्णपणा जल अग्निका भेदकूं साधैं है। जैसैं जहां दोय वस्तुका एक पिंड होय तहां लक्षण भेदतैंही भिन्नता दीखै है ऐसा जाननां ॥

आगैं, ऐसे उपयोगकरि सहित जे जीव उपयोगी ते दोय प्रकारके हैं, ताका सूत्र कहै हैं—

॥ संसारिणो मुक्ताश्च ॥ १०॥

याका अर्थ— उपयोगवाले जीव संसारी बहुरि मुक्त कहिये सिद्ध ऐसै दोय प्रकार हैं ॥

'संसरणं' कहिये परिभ्रमण परिवर्तन सो संसार है। तहां लक्षण ऐसा, जो, अपने भावकरि बांधे जे कर्म तिनिके वशतैं भवतैं भवांतरकी प्राप्ति ताकूं संसार कहिये। ऐसा संसार जिनिके होय ते संसारी जीव कहिये। सो यहु परिवर्तन पंचप्रकार है द्रव्यपरिवर्तन, क्षेत्रपरिवर्तन, कालपरिवर्तन, भवपरिवर्तन, भावपरिवर्तन ऐसै पांच प्रकार। तहां द्रव्यपरिवर्तन दोय प्रकार, एक नोकर्मपरिवर्तन दूसरा कर्मपरिवर्तन। तहां नोकर्मपरिवर्तन कहिये है। तीन शरीर छह पर्याप्तिकै योग्य जे पुद्गलपरमाणूके स्कंध एक जीव एकसमयविषैं ग्रहण कीये ते स्निग्ध रूक्ष वर्ण गंध आदि तीव्र मंद मध्यमभावकरि जैसै तिष्ठते द्वितीयादिक समयविषैं खिरै बहुरि द्वितीयादिक समयविषैं विना ग्रहे परमाणू अनंतवार ग्रहण करै तिनिकूं उलंघिकरि बहुरि पहलै ग्रहे थे तिनिमैंके गृहीतभी बहुरि नवे ग्रहण करै तेभी दोऊ मिले ग्रहण करै तिनिकूं मिश्र कहिये। तेभी अनंतवार अनंतवार ग्रहण करै तिनिकूं उलंघिकरि बहुरि बीचिमैं गृहीत ग्रहे थे ते गृहीतग्रहण होते जाय ते अनंतवार ग्रहणमैं आवै तिनिकूं उलंघिकरि जामैं जे पहले समये परमाणू ग्रहे थे तेही तैसेही स्पर्शादिके अविभागपरिच्छेदनिकी संख्या लिये तथा तितनेही परमाणूकूं लीये समयप्रबुध्द ग्रहण करै ऐसैं होतैं जो काल भया तब एक नोकर्मद्रव्यपरिवर्तन हो है ॥

बहुरि कर्मद्रव्यपरिवर्तन कहिये हैं। तहां एकसमयविषैं एक जीव अष्टविध कर्मभावकरि जे पुद्गल ग्रहण कीये ते समय अधिक आवलीमात्र काल पीछे द्वितीयादिक समयविषैं निर्जरारूप भये फेरि पहलै कह्या तिसही विधानकरि अगृहीत गृहीत मिश्र अनंतवार ग्रहण करतैं जब कोई समय ऐसा होय तामैं पहले समये तिसही जीव जैसै स्पर्शादिकके अविभागपरिच्छेदकी संख्याकूं लीये तितनेही समयप्रबद्धमैं आय जाय तब तितनाही काल एककर्मद्रव्यपरिवर्तनका होय है। ऐसैं द्रव्यपरिवर्तन कहिये। इहां गाथा उक्तं च है ताका अर्थ— इस पुद्गलपरिवर्तनरूप संसारविषैं इस जीवनैं सर्वही पुद्गल निश्चयकरि अनंतवार अनुक्रमतैं ग्रहण करि करि छोडे है॥

आगैं क्षेत्रपरिवर्तन कहिये हैं। कोई जीव सूक्ष्म निगोदिया अपर्याप्तक सर्व जघन्य अवगाहनारूप प्रदेश शरीरकूं पाइ इस लोकविषैं मध्यके आठ प्रदेशनिकूं अपने शरीरकै मध्यदेशकरि उपज्या। पीछै क्षुद्रभवकी आयु स्वासकै अठारहै भाग मऱ्या। बहुरि सोही जीव तिसही अवगाहनाकरि फेरि उपजिकरि मूवा। ऐसैही तीसरी वार चौथी वार इत्यादि अपने शरीरके घन अंगुलकै असंख्यातवै भाग असंख्यात प्रदेश है तेतीही वार उपजवो कीया। बीचिमैं अन्य अवगाहना तथा अन्य क्षेत्रमैं उपजवो कीया अनंतवार ते गिणिये नाही। बहुरि ऐसैं एक एक प्रदेश वधता सर्वलो-

कका क्षेत्रकूं परसिकरि अनुक्रमतैं उपजै अनुक्रमविना उपजैं सो न गिणिये। ऐसे सर्वलोक अपना जन्मक्षेत्र करै ताकूं जेता कछु अनंतकाल वीतै ताकूं एक क्षेत्रपरिवर्तन कहिये। इहां उक्तं च गाथा है। ताका अर्थ— इस क्षेत्रसंसारविषैं भ्रमता यहु जीव सो अनंत अवगाहनारूप शरीरकूं पाय इस सर्वलोकका क्षेत्रविषैं अनुक्रमतैं उपज्या तहां ऐसा क्षेत्र न रह्या जहां न उपज्या ॥

आगैं कालपरिवर्तन कहिये हैं। कोई जीव उत्सर्पिणी कालकै पहलै समय उपज्या अपनी आयु पूरी भये मूवा। वहुरि सोही जीव दूसरे उत्सर्प्पिणी कालकै दूसरे समय उपज्या फेरि आयु पूर्णकरि मूवा। बहुरि सोही जीव तीसरे उत्सर्पिणी कालकै तीसरे समय उपज्या। ऐसैही सोही जीव चौथे उत्सर्पिणी कालकै चौथे समय जन्म्यां। ऐसैंही अनुक्रमतैं दशकोडाकोडि सागरका उत्सर्पिणी कालका समयनिविषैं निरंतर जन्म लेवो कीया वीचिवीचिमैं विना अनुक्रमतैं और और समयनिमैं जन्म लीया सो न गिणिये। वहुरि ऐसैही अवसर्पिणी कालकै समयनिविषैं जन्म लीया। ताकेभी ऐसैही दशकोडाकोडि सागरकै समय वीतै। वहुरि जैसै जन्म लीया तैसैही मरण तिनि समयनिविषैं अनुक्रमतैं करै तहां जेता कछु अनंतानंतकाल वीतै ताकूं एक कालपरिवर्तन कहिये। इहां उक्तं च गाथा है ताका अर्थ— यहु जीव कालपरिवर्तननामा संसारविषैं भ्रमता उत्सर्पिणी अवसर्पि-

णीके समयनिकी पंक्तिविषैं जन्म लीया तथा मरण कीया अनेकवार, तामैं कोई समय अवशेष न रह्या ऐसैं भ्रम्या ॥

आगैं भवपरिवर्तन कहिये हैं। नरकगतिविषैं सर्व जघन्य आयु दश हजार वर्षकी है। तिस आयूकूं पाय तहां प्रथम नरकके पहलै पाथडे उपज्या। पीछे अन्यगत्यादिविषैं भ्रमण करते फेरि कोई कालविषैं तिसही आयूकूं पाय तिसही पाथडे उपज्या। ऐसैंही दश हजार वर्षके समय होय तेतीवार तौ तिसही आयु सहित तहांही उपजवो कीया। बीचिमैं अन्य जायगा उपज्या सो न गिणिये। पीछे एकसमयाधिक दश हजार वर्षकी आयु पाय उपज्या। पीछे दश हजार वर्ष दोय समयाधिककी आयु पाय उपज्या। इसही अनुक्रमकरि तेतीस सागरके समय जन्मतैं तथा मरणतैं पूर्ण करै। अनुक्रमरहित बीचिबीचि अन्यगति तथा आयुकरि उपजै तौ ते न गिणिये ऐसैं भ्रमतैं बहुरि तैसैंही तिर्यंचके गतिविषैं जघन्य आयु अंतर्मुहूर्तकी पाय उपज्या। पहले अनुक्रमकीज्यौं इहांभी तीन पल्य प्रमाण आयुके समयनिविषैं अनुक्रमतैं उपजै मरै। बहुरि तैसैंही मनुष्यगतिकी तीन पल्यकी आयुके समयनिविषैं अनुक्रमतैं उपजै मरैं। तैसैंही देवगतिके आयु ग्रैवेयकनिकी इकतीस सागरतांईकी आयुके समय तिनिविषैं तहां उपजै मरे जेता अनंताअनंतकाल वीतै

ताकूं एक भवपरिवर्तन कहिये। इहां उक्तं च गाथा है ताका अर्थ— यहु जीव भवपरिवर्तननाम संसारविषैं मिथ्यात्वकरि सहित हूवा संता नरककी जघन्य आयुतें लगाय ग्रैवेयकनिकी उत्कृष्ट आयुपर्यंत अनेकवार भवनिकी स्थिति आयु पाय पाय भ्रम्या है ॥

आगैं भावपरिवर्तन कहिये हैं। तहां जीवके परिणामकूं भाव कहिये। सो कोई जीव संज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्तक मिथ्यादृष्टि ज्ञानावरण कर्मकी प्रकृतिकी अपने योग्य जघन्यस्थिति अंतःकोटाकोटी कहिये कोडाकोडी सागरकै नीचै कोडिकै ऊपरिकीकूं प्राप्त होय। ताकूं कारण कषायाध्यवसायस्थान असंख्यात लोकपरिमाण है। तिनि एक एक स्थानविषैं अनंतानंत अविभागपरिच्छेद हैं। जिनिमैं अनंतभागवृद्धि असंख्यातभागवृद्धि संख्यातभागवृद्धि संख्यातगुणवृद्धि असंख्यातगुणवृद्धि अनंतगुणवृद्धि तथा तैसैंही हानिभी। ऐसैं षट् स्थानप्रति हानिवृद्धि संभवै ऐसै है। ते इस अंतःकोटाकोटी सागरकी स्थिति बंधनेकूं कारण जीवके कषायभावके स्थान असंख्यात लोककै जेते प्रदेश होय तेते हैं। तहां इनि कषायस्थाननिविषैं एकएकविषैं अनुभागबंधाध्यवसायस्थान जे अनुभागबंधकूं कारण जे परिणाम ते असंख्यात लोकपरिणाम हैं। तहां कोई जीव जघन्यस्थितिकूं बांधै तहां वाकूं कारण जे कषायस्थान तिनिमैंसूं जघन्यस्थान लीजिये। बहुरि तिसि कषायस्थानविषैं अनुभावकूं कारण जे

स्थान तिनिमैंसूंभी सर्वजघन्य लीजिये। तहां यो तिस प्रकृतिबंधकूं कारण जे योगस्थान ते श्रेणीके असंख्यातवै भागपरिमाण असंख्यात हैं। ते अविभागप्रतिच्छेदनकरि अनंतभागवृध्दि रहित अनंतगुणवृध्दिरहित चतुःस्थानरूपही है। तिनिमैंसूं एक तिस प्रकृतिके योग्य योगस्थान लीजिये। तहां योगस्थान पलटै तब द्वितीय तृतीय ऐसैं जगत् श्रेणीकै असंख्यातभागमात्र जे योगस्थान ते अनुक्रमतें होय। बीचिबीचि अन्यकषायस्थान अन्य अनुभागस्थान अन्य योगस्थान होय ते न गिणिये। ऐसैं जब श्रेणीकै असंख्यातवै भाग योगस्थान होय चुकै तब एक अनुभागस्थान पलटै। ऐसे असंख्यात लोकप्रमाण अनुभागस्थानविषैं एकएकविषैं योगस्थानश्रेणीकै असंख्यातवै भागपरिमाण होते जाय तब अनुभागस्थान असंख्यात लोकपरिमाण अनुक्रमतैं होय चुकै तब एक कषायस्थान पलटै। तब दूसरा कषायस्थान पलटै। तब दूसरा कषायस्थानविषैंभी तैसैंही अनुभागस्थान तथा योगस्थान होय। बहुरि तीसरे कषायस्थानविषैं अनुभागस्थान योगस्थान होय। ऐसैंही असंख्यातलोकपरिमाण कषायस्थान होय चुकै तब एक स्थितिस्थान पलटै। दूसरा स्थितिस्थान पलटै। दूसरा स्थितिस्थान समयाधिक अतंःकोटाकोटी प्रमाण लीजिये। बहुरि तैसैंही असंख्यात लोकप्रमाण कषायस्थान तिनि एकएकविषैं असंख्यातलोकप्रमाण अनुभागस्थान होय। बहुरि तिनि

एकएक अनुभागस्थानविषैं असंख्यात योगस्थान होय तब तीसरा स्थितिस्थान समयाधिक लीजिये। ऐसैंही ज्ञानावरणीयकर्मकी उत्कृष्टस्थिति तीस कोडाकोडी सागरकी है। तिनिके समयाधिकक्रमकरि पूर्वं कहे तैसे कषायस्थान होय बीचिबीचिमैं और और भाव जीवके होय ते न गिणिये। ऐसैं सर्वकर्मकी स्थिति मूलप्रकृति तिनिकी तथा उत्तरप्रकृतिनिकूं कारण कषायस्थान अनुभागस्थान योगस्थानकी पलटनी अनुक्रमरूप होय चुकै। ताकूं जो अनंतानंतकाल वीतै तब एक भावपरिवर्तन कहिये। इनिका काल उत्तरोत्तर अनंतानंतगुणां जाननां। द्रव्यपरिवर्तनका अनंतकाल, तातैं अनंतगुणां क्षेत्रपरिवर्तनका काल, तातैं अनंतगुणां कालपरिवर्तनका काल, तातैं अनंतगुणां भवपरिवर्तनका काल, तातैं अनंतगुणां भावपरिवर्तनका काल, ऐसैं जाननां। इहां उक्तं च गाथा है ताका अर्थ– मिथ्यात्वकरि जीव या भावसंसारविषैं भ्रमता सर्व प्रकृति स्थिति अनुभाग प्रदेशबंधके जेते स्थान हैं ते सर्वही पाये। ऐसैं पंचप्रकार संसारतैं जे जीव रहित भये सिद्ध भये ते मुक्तजीव कहिये। इहां संसारीनिका पहलै ग्रहण कीया है। जातैं मुक्तका नाम संसारपूर्वक है। तथा संसारीनिके भेद बहुत हैं। तथा संसारी जीव अनुभवगोचर हैं। मुक्त अत्यंतपरोक्ष है। ऐसाभी हेतुतैं संसारीनिका पहलै ग्रहण कीया है ॥

आगें कहै हैं, जो, ए संसारी जीव हैं ते दोय प्रकार हैं ताका सूत्र—

॥ समनस्कामनस्काः ॥ ११ ॥

याका अर्थ— संसारी जीव हैं ते समनस्क कहिये मनसहित अमनस्क कहिये मनरहित ऐसैं दोय प्रकार हैं ॥ तहां मन दोय प्रकार है; द्रव्यमन, भावमन। तहां पुद्गलविपाकी कर्मप्रकृतिके उदयकी है अपेक्षा जाकूं ऐसा हृदयस्थानविषैं फूले कमलकै आकार सूक्ष्म पुद्गलका प्रचयरूप तिष्ठै है सो तौ द्रव्यमन है। बहुरि वीर्यांतराय तथा नोइंद्रियावरण नामा ज्ञानावरणीय कर्मके क्षयोपशमकी है अपेक्षा जाकै ऐसा आत्माके विशुद्धि सो भावमन है। तिस मनकरि सहित होय ते तौ समनस्क हैं। बहुरि जिनिकै मन विद्यमान नांही है ते अमनस्क हैं। ऐसैं मनके सद्भाव अभावकरि संसारीनिके दोय भेद हो हैं। इहां समासविषैं समनस्कका पूर्वनिपात है, सो पूज्य प्रधानपणातें है। जातें समनस्ककै गुणदोषका विचारसहितपणां है, तातें प्रधान है ॥

आगें फेरि संसारी जीवनिके भेदकी प्राप्तिके अर्थि सूत्र कहै हैं—

॥ संसारिणस्त्रसस्थावराः ॥ १२ ॥

याका अर्थ— संसारी जीव हैं ते त्रस हैं तथा स्थावर हैं ऐसे दोय प्रकार हैं ॥ इहां कोई कहै

सूत्रविषैं संसारीका ग्रहण निरर्थक है। जातैं पहलै सूत्रमें संसारीका नाम कह्या है, तातैं प्रकरणतैंही जानिये है। ताका समाधान, जो, निरर्थक नांही। जातैं पहलै याकै अनंतर सूत्र है, तामैं समनस्क अमनस्क कहे, ते संसारी ऐसै जाननेके अर्थि हैं। जो पूर्वसूत्रका विशेषण न करिये तौ ताकै पूर्वै सूत्र "संसारिणो मुक्ताश्च„ ऐसा है, सो इस सूत्रका यथासंख्य संबंध होय तब समनस्क तौ संसारी अमनस्क मुक्त ऐसा अनिष्ट अर्थ होय। तातैं इस सूत्रमैं संसारीका आदिविषैं ग्रहण युक्त है॥ बहुरि यहु पूर्वापेक्षभी है, तैसैंही अगलीभी अपेक्षा है। जातैं संसारी दोय प्रकारके हैं त्रस हैं स्थावर हैं। तहां त्रस नामा नामकर्मकी प्रकृतिके उदयके वशतैं भये ते त्रस हैं। बहुरि स्थावरनामा नामकर्मकी प्रकृतिके उदयके वशतैं भये ते स्थावर हैं। इहां कोई कहै; इनि शब्दनिका अर्थ तौ ऐसा है, पीडित होय भयसहित होय भागै चालै ते त्रस बहुरि तिष्ठनेहीका स्वभाव जिनिका होय ते स्थावर सो ऐसा अर्थही क्यौं न कहौ? ताका समाधान ऐसा कहे, आगमतैं विरोध आवै है। आगमविषैं ऐसा कह्या है, कायानुवादविषैं जो त्रस नाम द्वींद्रियतैं लगाय सयोगकेवलीपर्यंत है। तातैं चलने न चलनेकी अपेक्षातैं त्रस स्थावरपणां नाही है। कर्मोदयकी अपेक्षाहीतैं है। बहुरि इस सूत्रमैं त्रसका ग्रहण आदिविषैं कीया है सो याकै अक्षर अल्प है तथा पूज्य प्रधान है तातैं है।

पूज्यपणा सर्व उपयोग याकै संभवै है ताकी अपेक्षा है ॥

इहां विशेष; जो, चलनेहीकी अपेक्षा त्रस कहिये तौ पवनादिक त्रस ठहरै, गर्भादिकविषैं स्थावरही ठहरै। बहुरि तिष्ठनेहीकी अपेक्षा स्थावर कहिये तौ पवनादिक स्थावर न ठहरै, तातैं कर्मोदय अपेक्षाही युक्त है। बहुरि सर्वजीवनिकूं स्थावरही कहिये त्रस न कहिये। जातैं जीव क्रियातैं रहित सर्वगति है तौ जीवतत्त्वके नाना भेद न ठहरै। तातैं क्रियासहित कथंचित् असर्वगतिहि माननां। बहुरि सर्वजीवनिकूं त्रसही मानिये स्थावर न मानिये तौ वनस्पतिकायिकादिक जीव न ठहरै। जातैं चलतेकूंही जीव कहै तब सूता मूर्च्छित अंडेमैं तिष्ठताभी जीव न ठहरै। जो कहै तिनिका आकारविशेष है, तातैं जीव हैं तौ ऐसै वनस्पतिकेभी जलादि आहार पावने न पावनेतैं हरित होना सूकी जाना ऐसैं लक्षणतैं जानिये ए जीव हैं। तातैं स्थावर त्रस दोऊही भेद माननां युक्त है ॥

आगैं, त्रसका भेद पहली कहना अनुक्रम है, ताकूं उलंघ्य एकेंद्रियस्थावरके भेद प्रतिपत्तिकै अर्थि सूत्र कहै हैं। जातैं एकेंद्रियके भेद बहुत नाहीं कहने हैं। तातैं तिनिकूं पहली कहि जाय है–

## ॥ पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतयः स्थावराः ॥ १३ ॥

याका अर्थ— पृथिवी अप् तेज वायु वनस्पति ए पंच स्थावर जीव हैं॥ स्थावर नामा नामकर्मकी प्रकृतिके भेद पृथिवीकायिकादि कहे। ताके उदयके निमित्ततैं जीवनिकै पृथिवीकायिकादिक संज्ञा जाननी। इनिके शब्द पृथनादिक धातुनितैं निपजै हैं। तौभी रूढिके वशतैं पृथनादिक कहिये विस्तारादिक अर्थकी इहां अपेक्षा न करणी। इनि पृथिवी आदिके आर्ष कहिये ऋषिनिके आगमविषैं च्यारि च्यारि भेद कहे हैं। सोही कहिये पृथिवी, पृथिवीकाय, पृथिवीकायिक, पृथिवीजीव। अप्, अप्काय, अप्कायिक, अप्जीव। तेज, तेजकाय, तेजकायिक, तेजजीव। वायु, वायुकाय, वायुकायिक, वायुजीव। वनस्पति, वनस्पतिकाय, वनस्पतिकायिक, वनस्पतिजीव ऐसैं। तहां अचेतनपुद्गल अपने स्वभावहीतैं कठिणता आदि गुणसहित है ताकूं तौ पृथिवी कहिये। जातैं अचेतनपणांतैं पृथिवीकाय नामकर्म प्रकृतिके उदयविनाभी प्रथनक्रिया जो फैलाना आदि क्रिया ताकरि सहित पृथिवी हैहीं। अथवा दूसरा अर्थ यहु, जो, जामैं अगिले तीनूं भेद पाइये ऐसा सामान्यकूंभी पृथिवी कहिये। बहुरि पृथिवीकायिक जीव जामैं था सो मूवा ताका शरीर रह्या ताकूं पृथिवीकाय कहिये। जैसैं मूवा मनुष्यका काय होय तैसैं। बहुरि पृथिवीकाय जाकै

होय ऐसा जीव ताकूं पृथिवीकायिक कहिये । सो यहु, पृथिवी शरीरके संबंधसहित है। बहुरि पृथिवीकायनामानामकर्मकी प्रकृतिका जाकै उदय आया अन्यकायके शरीरतैं छूट्या जेतैं पृथिवीकाय शरीर नांही ग्रहण कीया जेतैं अंतरालमैं कार्मणयोगमैं तिष्ठै तेतैं ताकूं पृथिवीजीव कहिये। ऐसैंही अप्कायादिकविषैं अर्थ लगा लेणां ॥ ए पांच स्थावरजीव हैं। तिनिकै प्राण च्यारि। स्पर्शनेंद्रियप्राण, कायबलप्राण, उच्छ्वासनिश्वासप्राण, आयुप्राण ऐसैं ॥ इहां विशेष जो, केवलज्ञानतैं लगाय अनादिकर्मसंयोगतैं घटतैं घटतैं ज्ञानका अपकर्ष करिये तब सूक्ष्मज्ञान एकेंद्रियनिकै रहै है। इहां प्रश्न, जो, घटतैं घटतैं जडही क्यों न रह्या? ताकूं कहिये घटना तौ आपहीविषैं कहिये। जड तौ अन्य द्रव्य है। जातैं प्रध्वंसाभाव सत्त्वहीकै कहिये। बहुरि सत्त्वका अत्यंत अभावभी युक्त नांही। कोई कहै, कर्मका अत्यंत अभाव कैसैं है? ताकूं कहिये कर्मरूप पुद्गल भये थे तिनिका कर्मभावका नाश होय पुद्गलपरमाणूंनिका तौ अभाव न भया। ऐसैं एकेंद्रियनिविषैं ज्ञानका परम अपकर्ष निश्चय कीजिये। तातैं स्थावरजीवनिका सद्भाव युक्त है ॥

आगैं कहै हैं, जो, त्रसजीव कोन हैं? ऐसैं पूछै सूत्र कहै हैं—

॥ द्वीन्द्रियादयस्त्रसाः ॥ १४ ॥

याका अर्थ— द्वींद्रियजीवनैं आदि देकरि तेइंद्रिय चौइंद्रिय पंचेंद्रिय ऐसै त्रसजीव हैं ॥ दोय हैं इंद्रिय जाकै ताकूं द्वींद्रिय कहिये। बहुरि द्वींद्रिय हैं आदि जिनिकै ते द्वींद्रियादिक कहिये। इहां आदिशब्द है सो आगमविषैं इनिकी व्यवस्था है, ताका वाचक कहिये हैं। द्वींद्रिय त्रींद्रिय चतुरिंद्रिय पंचेंद्रिय ऐसै। इहां तद्गुणसंविज्ञान समासका ग्रहण है। तातैं द्वींद्रियकाभी ग्रहण करनां। जातैं या समासमैं आदिकाभी पदार्थ ग्रहण हो है। बहुरि पूछै है, इनिके प्राण केते केते हैं? तहां कहिये हैं। द्वींद्रियके छह प्राण हैं। च्यारि तौ एकेंद्रियकै पहलै कहे तेही लैणे। बहुरि रसना इंद्रिय बहुरि वचनबल ये दोय अधिक कीये छह भये। बहुरि त्रींद्रियकै घ्राण इंद्रियकरि अधिक सात प्राण हैं। बहुरि चतुरिंद्रियके चक्षु इन्द्रियकरि अधिक आठ प्राण हैं। बहुरि पंचेंद्रियके तिर्यंचनिविषैं असंज्ञीकै तो कर्ण इंद्रियकरि अधिक नव हैं। बहुरि संज्ञीके मनबलकरि अधिक दश प्राण हैं। ऐसै पांच सूत्रनिकरि सर्व संसारी जीव कहे। इहां कोई पूछै, विग्रहगति अंतरालमैं इंद्रिय नाही तिनिका ग्रहण कैसै भया? तहां कहिये, जो, त्रसस्थावर नामकर्मका उदय विग्रहगतिमैंभी है। तिस विना होय तौ मुक्तजीव ठहरै, तातैं तेभी आय गये ॥

आगैं, द्वींद्रिय आदि ऐसा कह्या तहां आदिशब्दमैं कहांताई गिणनां? ताकी संख्याकी

मर्यादा जनावनेकूं नियमका सूत्र कहै हैं—

॥ पञ्चेन्द्रियाणि ॥ १५ ॥

याका अर्थ— इंद्रिय पांच हैं ॥ इंद्रियशब्दका अर्थ तौ पहलै कह्याही था, जो इंद्र कहिये आत्मा संसारी जीव ताका लिंग कहिये जनावनेका चिन्ह। तथा इंद्र जो नामकर्म ताकरि रचे जे आकार ते इंद्रिय हैं। बहुरि पंच शब्दकरि नियम किया, जो इंद्रिय पांचही हैं, हीनाधिक नाही। इहां अन्यमती कहै, जो, कर्मइंद्रिय कहिये वचन हाथ पायु उपस्थ इनिकाभी ग्रहण चाहिये। ताकूं कहिये, इहां न चाहिये। जातैं इहां आत्माका उपयोगका प्रकरण है। तातैं उपयोगके कारणही ग्रहण चाहिये। क्रियाके साधन नाही कहे। जो क्रियासाधनभी कहिये तौ अनवस्था आवै। अंगोपांग नामा नामकर्मनैं रचे जे क्रियाके साधन ते सर्वही ग्रहण कीये चाहिये। वचनादिक पांचही ग्रहण कैसै होय? ॥

आगैं, तिनि इंद्रियनिके भेद दिखावनेकूं सूत्र कहै हैं—

॥ द्विविधानि ॥ १६ ॥

याका अर्थ— जे इंद्रिय कहे ते द्रव्येंद्रिय भावेंद्रियकरि दोय प्रकार हैं ॥ इहां विधशब्द है सो

प्रकारवाची है। ताका समास ऐसा होय है, दोय प्रकार जाके ताकूं द्विविध कहिये दोय प्रकार हैं। ऐसा अर्थ भया। ते कौन? द्रव्येंद्रिय भावेंद्रिय ऐसें ॥

तहां द्रव्येंद्रियके स्वरूपका निर्णयके अर्थि सूत्र कहै हैं—

॥ निर्वृत्युपकरणे द्रव्येन्द्रियम् ॥ १७ ॥

याका अर्थ-- निर्वृति उपकरण ऐसै दोय प्रकार द्रव्येंद्रिय है ॥ तहां जो कर्मकरि रची होय ताकूं निर्वृति कहिये। सो दोय प्रकार है। बाह्य निर्वृति अभ्यंतर निर्वृति। तहां जो उत्सेध अंगुलकै असंख्यातवै भाग परिणाम शुध्द जे आत्माके प्रदेश, ते न्यारे न्यारे नेत्र आदि इंद्रियनिके आकारकरि अवस्थित होय तिनिकी वृत्ति सो तौ अभ्यंतरनिर्वृति है। बहुरि तिनि आत्माके प्रदेशनिविषैं इंद्रिय है नाम जिनिके ऐसै जे न्यारे न्यारे आकार नामकर्मके उदयकरि निपजाये हैं अवस्थाविशेष जिनिकै ऐसे ते पुद्गलके संचय समूह सो बाह्यनिर्वृति है। बहुरि जो निर्वृतीका उपकार करै सो उपकरणभी दोय प्रकार है। अभ्यंतर उपकरण बाह्य उपकरण। तहां काला धोला जो नेत्रनिविषैं मंडल गोलाकार आदि है सो तौ अभ्यंतर है। बहुरि वांफणी तथा नेत्र जाकै ढकै ऐसे डोला इत्यादि बाह्य उपकरण है। तैसेही अन्य इंद्रियके जानने ॥